दसवेआलियं

उत्तरज्झयणाणि

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा

आगम-सुत्त ग्रन्थमाला

ग्रन्थ-१

दसवेआलियं
तह
उत्तरज्झयणाणि

वाचना प्रमुख
आचार्य तुलसी

सम्पादक
मुनि नथमल
(निकाय-सचिव)

प्रकाशक
जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा
(आगम-साहित्य प्रकाशन समिति)
३, पोर्चुगीज चर्च स्ट्रीट
कलकत्ता-१

प्रबन्ध-व्यवस्थापक :

श्रीचन्द रामपुरिया, बी०कॉम०, बी०एल०

संयोजक,

आगम-साहित्य प्रकाशन समिति

प्रकाशक

आदर्श साहित्य संघ

चूरू (राजस्थान)

अर्थ-सहायक

सरावगी चेरिटेबल फण्ड

७, लोअर राउडन स्ट्रीट,

कलकत्ता

प्रकाशन-तिथि

मर्यादा-महोत्सव

माघ सुदी सप्तमी, सं० २०२३

प्रति-संख्या

१,१००

पृष्ठ-संख्या

८३२

ग्रन्थानुक्रम

ग्रन्थानुक्रम

समर्पण

पवाहिया जेण सुयस्स धारा,
गणे समत्थे मम माणसे वि।
जो हेउभूओ स्स पवायणस्स,
कालुस्स तस्स प्पणिहाण पुव्व ॥

जिसने श्रुत की धार बहाई,
सकल सघ मे मेरे मन मे।
हेतुभूत श्रुत-सम्पादन मे,
कालुगणी को विमल भाव से ॥

विनयावनत
आचार्य तुलसी

अन्तस्तोष

अन्तस्तोष अनिर्वचनीय होता है, उस माली का जो अपने हाथो से उप्त और सिंचित द्रुम-निकुज को पल्लवित, पुष्पित और फलित हुआ देखता है, उस कलाकार का जो अपनी तूलिका से निराकार को साकार हुआ देखता है और उस कल्पनाकार का जो अपनी कल्पना को अपने प्रयत्नो से प्राणवान् बना देखता है। चिरकाल से मेरा मन इस कल्पना से भरा था कि जैन-आगमो का शोध-पूर्ण सम्पादन हो और मेरे जीवन के बहुश्रमी क्षण उसमे लगे। सकल्प फलवान् बना और वैसा ही हुआ। मुझे केन्द्र मान मेरा धर्म-परिवार उस कार्य मे सलग्न हो गया। अतः मेरे इस अन्तस्तोष मे मै उन सबको समभागी बनाना चाहता हूँ, जो इस प्रवृत्ति मे संविभागी रहे है। सक्षेप मे वह सविभाग इस प्रकार है :—

सम्पादक		: मुनि नथमल (निकाय-सचिव)
	सहयोगी	: मुनि दुलहराज
पाठ-सशोधन	„	: मुनि सुदर्शन
	„	: मुनि मधुकर
	„	: मुनि हीरालाल
शब्दानुक्रम	„	: मुनि श्रीचन्द्र
	„	: मुनि हनुमानमल (सरदारशहर)
विषयानुक्रम	„	: मुनि रूपचन्द्र

सविभाग हमारा धर्म है। जिन-जिन ने इस गुरुतर प्रवृत्ति मे उन्मुक्त भाव से अपना सविभाग समर्पित किया है, उन सबको मै आशीर्वाद देता हूँ और कामना करता हूँ कि उनका भविष्य इस महान् कार्य का भविष्य बने।

—आचार्य तुलसी

प्रकाशकीय

परम श्रद्धास्पद पूज्य आचार्य श्री तुलसी की प्रकल्पित आगम-सम्पादन की रूपरेखा में छः ग्रन्थ-मालाओं की योजना है। योजना का रूप सम्पादकीय मे दिया हुआ है। "आगम-सुत्त ग्रन्थ-माला" इन ग्रन्थ-मालाओं मे से एक है। इस ग्रन्थ-माला मे आगमों के संशोधित मूलपाठ पाठान्तर सहित प्रस्तुत किये जायेंगे।

प्रस्तुत पुस्तक उक्त ग्रन्थ-माला का प्रथम ग्रन्थ है। इसमे दशवैकालिक और उत्तराध्ययन—इन दोनों मूल-सूत्रों के सशोधित पाठ-मात्र प्रकाशित हो रहे हैं। सशोधित पाठों के साथ-साथ नीचे पाद-टिप्पणों मे पाठान्तर दिये गये हैं।

प्रथम परिशिष्ट मे दशवैकालिक शब्द-सूची एवं दूसरे परिशिष्ट मे उत्तराध्ययन शब्द-सूची विस्तृत रूप मे दी गई है।

उत्तराध्ययन मे प्रसगवश उल्लिखित व्यक्ति, देश, नगर, पर्वत, समुद्र, नदी, उद्यान, सिक्का, आवास, शस्त्र, धातु, रत्न, वनस्पति, प्राणी आदि के नामों की सूची तीसरे परिशिष्ट के अन्तगत दी गई है।

अन्त मे तीन शुद्धि और आपूरक पत्र है, जिनमे मूलपाठ, पाठान्तर और शब्द-सूची विषयक मुद्रण की भूलों का संशोधन उपस्थित करते हुए तद्विषयक जो नई सामग्री प्राप्त हुई, वह दे दी गई है।

दोनों आगमों की पद-विभक्त विस्तृत विषय-सूची ग्रन्थों के महत्त्वपूर्ण विषयों को निकालने मे सहायक होगी।

भूमिका और सम्पादकीय सक्षेप मे दोनों सूत्रों का सुन्दर परिचय दे देते हैं।

इस आगम-सुत्त ग्रन्थ-माला का मूल उद्देश्य विद्वानों के सम्मुख मूल आगमों के सशोधित पाठ भावी शोध-खोज के लिए प्रस्तुत करना है। इसी दृष्टि से प्रस्तुत ग्रन्थ-माला का यह प्रथम ग्रन्थ आपके हाथों मे है।

इस ग्रन्थ के प्रकाशन का भार समिति की ओर से सरदारशहर-निवासी श्रीमान् मदनचन्दजी गोठी को सौंपा गया था। निरन्तर अस्वस्थ रहने पर भी उन्हों

जैन श्वेताम्बर तेरापन्थी महासभा के अन्तर्गत गठित समिति के द्वारा आगम-साहित्य प्रकाशन का कार्य ज्यो-ज्यों आगे बढ रहा है, त्यो-त्यो मेरे हृदय मे आनन्द का पारावार नही है। मै तो अपने जीवन की एक साध ही पूरी होते हुए देख रहा हूँ।

आचार्य श्री एक युग-पुरुष हैं। जहाँ एक ओर जन-मानस की आध्यात्मिक और नैतिक चेतना की जागृति के व्यापक आन्दोलनो मे उनके अमूल्य जीवन-क्षण लग रहे है, वहाँ दूसरी ओर भारतीय श्रमण-साहित्य और सस्कृति के मूल संदेश को जन-व्यापी बनाने का उनका उपक्रम भी अनन्य है। उनकी ओर से हो रही भारतीय साहित्य और सस्कृति की अमूल्य सेवाएँ हमारी कृतज्ञता को सहज स्फुरित करती है।

आगम-साहित्य प्रकाशन समिति
[जैन श्वेताम्बर तेरापन्थी महासभा]
३, पोर्चुगीज चर्च स्ट्रीट, कलकत्ता-१
दि० १ फरवरी, १९६७

श्रीचन्द रामपुरिया
सयोजक

है ? बडी बात यह है कि आचार्य श्री ने उसमे प्राण-सचार मेरी और मेरे सहयोगी साधु-साध्वियो की असमर्थ अगुलियो द्वारा कराने का प्रयत्न किया है। सम्पादन-कार्य मे हमे आचार्य श्री का आशीर्वाद ही प्राप्त नही है किन्तु मार्ग-दर्शन और सक्रिय योग भी प्राप्त है। आचार्यवर ने इस कार्य को प्राथमिकता दी है और इसकी परिपूर्णता के लिए अपना पर्याप्त समय दिया है। उनके मार्ग-दर्शन, चिन्तन और प्रोत्साहन का सबल पा हम अनेक दुस्तर धाराओ का पार पाने मे समर्थ हुए हैं।

आगम-सम्पादन की रूपरेखा

आगम साहित्य के अध्येता दोनो प्रकार के लोग है—विद्वद्-जन और साधारण-जन। दोनो को दृष्टि मे रख कर हमने इस कार्य को छह ग्रन्थ-मालाओ मे ग्रथित किया है। उसका आकार यह है :—

१ आगम-सुत्त ग्रन्थ-माला— इस ग्रन्थ-माला मे आगमो के मूलपाठ, पाठान्तर, शब्दानुक्रम आदि होगे।

२ आगम ग्रन्थ-माला— इस ग्रन्थ माला मे आगमो के मूलपाठ, पाठान्तर, सस्कृत छाया, अनुवाद, पद्यानुक्रम या सूत्रानुक्रम आदि होगे।

३ आगम-अनुसन्धान ग्रन्थ-माला—इस ग्रन्थ-माला मे आगमो के टिप्पण होगे।

४ आगम-अनुशीलन ग्रन्थ माला—इस ग्रन्थ-माला मे आगमो के समीक्षात्मक अध्ययन होगे।

५ आगम-कथा ग्रन्थ-माला— इस ग्रन्थ-माला मे आगमो से सम्बन्धित कथाओ का सकलन होगा।

६ वर्गीकृत आगम ग्रन्थ-माला— इस ग्रन्थ-माला मे आगमो के वर्गीकृत और सक्षिप्त सस्करण होगे।

शब्दान्तर और रूपान्तर

व्याकरण और आर्ष-प्रयोग-सिद्ध शब्दान्तर एव रूपान्तर भाषा शास्त्रीय अध्ययन की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है। इसलिए उन्हे पाठान्तर से पृथक् रखा है।

अध्ययन-१

स्थल	मूलपाठ	शब्दान्तर और रूपान्तर	प्रति
१।१	उक्किट्ठ	उक्कट्ठ	ख,ग,घ,अचू
२।२	आवियइ	आवियती	अचू,जिचू
३।१	मुत्ता	मुक्का	अचू
३।२	साहुणो	साहवो	अचू
४।३	अहागडेसु	अहागडेहि	अचू
४।३	रीयति	रीयते	घ,जिचू
४।४	पुप्फेसु	पुप्फेहिं	अचू,जिचू
४।४	भमरा	भमरो	ख
५।१	महु °	मधु °	अचू,जिचू

अध्ययन-२

स्थल	मूलपाठ	शब्दान्तर और रूपान्तर	प्रति
२।२	इत्थीओ	इत्थिओ	ख
२।४	चाइ	चागि	अचू
४।१	पेहाए	पेहाइ	क,ख
४।२	निस्सरई	नीसरई	अचू,जिचू
४।४	विणएज्ज	विणइज्ज	क,ख,ग
५।१	आयावयाही	आयावयाहि	अचू,जिचू
५।१	सोउमल्ल	सोगमल्ल, सोगुमल्ल	क,ख,ग,जिचू,घ
५।२	कमाही	कमाहि	जिचू,अचू
६।३	वन्तय	वतग	अचू
६।३	भोत्तु	भुत्तु	ग
८।१	रायस्स	राइस्स	ग
९।२	दच्छसि		
१०।२	सजयाए		

११।१	करेन्ति	करति, करिंति	ख,ग,क,घ
११।३	भोगेसु	भोगेहि	अचू

अध्ययन-३

१।१	सुट्ठिअप्पाण	सुट्ठितप्पाण	अचू
२।३	राइभत्ते	रायभत्ते	ग,जिचू
४।१	नालीय	नालीए, णालीया	ख,अचू
४।३	पाणहा	पाहणा	ख,अचू,जिचू
५।३	निसेज्जा	निसज्जा	ख
६।३	तत्तानिव्वुड-भोइत्त	तत्तअनिव्वुड-भोतीत	ख,अचू
९।१	धूवणेत्ति	धूवणित्ति	ख
९।२	वत्थीकम्म	बत्थीकम्म, पत्थीकम्म	ख, अचू
९।४	गायाभंग	गायब्भग	जिचू
१२।१	गिम्हेसु	गिम्हासु	अचू
१२।३	° सलीणा	° सल्लीणा	जिचू
१३।१	° रिऊ	° रिवू	अचू
१३।२	धुय °	धूअ °	ख,ग
१३।२	जिइंदिया	जियदिया	ग
१४।२	दुस्सहाइ	दूसहाइ	जिचू
१४।३	इत्थ	एत्थ	क

अध्ययन-४

सू० ९	अभिक्कत	पडिक्कत अभिकत पडिकतं	ख
,, १०	दड	डड	अचू,जिचू
,, १०	समारभेज्जा	समारभेज्जा	अचू,जिचू
,, १०	करत	करेत	अचू
,, ११	गरिहामि	गरहामि	अचू
,, १६	राइ	राय	क

सू० १८	किलिंचेण	कलिंचेण	ख,ग,घ,जिचू
,, १८	सलागाए व सलाग	सिलागाए व सिलाग	ख,ग
,, १९	ससिणिद्ध	ससणिद्ध ससिणद्व	क, अचू,ख
,, २१	विहुयणेण	विहुवणेण	अचू, जिचू
,, २३	पिवीलियं	पिपीलियं	जिचू
,, २३	हत्थंसि वा	हत्थेंसि वा	अचू,पा
१०।४	नाहिइ	नाहीइ,नाही	ख,ग,घ
१२।१	याणाइ	याणेइ,याणइ	ग,अचू
१२।४	नाहिइ	नाहीइ, नाहीय	क,ख,घ,ग
१३।१	वियाणाइ	वियाणेइ,वियाणाउ	ग,अचू
१६।३	निव्विदए	निव्विदिय,निव्विदउ	क,ग,अचू
२५।४	हवइ	भवइ	क,घ
२६।३	पहोइस्स	पहोयस्स	ख
२६।२	° साइस्स	° सायस्स	ख
२६।४,२७।४	सुग्गइ	सुगइ, सोगगइ	घ,अचू,जिचू
२७।३	जिण	जिणि	क,घ

अध्ययन-५(१)

३।३	वज्जतो	वज्जेतो	क,ग,अचू, जिचू
४।१	ओवाय	उवाय	ख
४।२	विज्जल	विजल	हाटी, जिचू
८।२	पडतीए	पडतिए	अचू
१०।१	अणायणे	अणाययणे	अचू
१३।३	इंदियाणि	इंदियाइं, इंदियाय	क,ग
१६।२	रहस्सा	रहसा	क,ख,ग,हाटी
२३।४	अयंपिरो	अयंपुरो	अचू
२५।२	वच्चंस्स	वुच्चंस्स	

२६।१	दग-मट्टिय	दग-मट्टी	ग
२७।२	आहरे	आहारे	क,ग,घ
२८।१	आहरती	आहरेती	अचू
२८।३	देतिय	दिंतिय, दतिय	क,ग,घ,ग
३३।१	ससिणिद्धे	ससणिद्धे	क
३४।२	कुक्कुस	कुक्कस	ग
४०।४	पुणट्ठए	पुणट्ठए	घ, अचू
४२।१	पिज्जेमाणी	पेज्जमाणी,पज्जेमाणी	जिचू,अचू
४५।१	दग-वारएण	दग-वारेण	क,हाटी
४६।१	उब्भिदिया	उब्भिदिय	क,ख,ग,घ
५७।३	उम्मीस	उम्मिस	क,अचू,जिचू
६७।३	मच	मच	क,ख,ग,घ,अचू
७१।३	सक्कुलि	सकुलि	ख
७३।२	अणिमिस	अणमिस	ख,ग
७३।३	अत्थिय	अच्छिय	अचू, जिचू
७३।४	सिबलि	सबलि, सबिल	घ,ख
७४।२	धम्मिए	धम्मए	घ
७७।३	भवेज्जा	हव्विज्जा	ख
७७।४	रोयए	रोइए, रोवए	ग,ख
७८।४	तण्ह	तण्ह	ख
८१।२	अचित्त	अच्चित्त	क, अचू
८५।१	निक्खिवे	निखिवे	क,ख,ग
९०।२	अव्वक्खित्तेण	अवक्खित्तेण	अचू
९६।२	एक्कओ	एगओ, इक्कओ	घ,ख,ग
९७।३	एय	एय	अचू
९८।३	उल्ल	अल्ल	घ
१००।४	सोग्गड	सोगड, सुग्गड	अचू,ख,ग

अध्ययन-५(२)

१।३	दुगध	दुग्गध	अचू
२।३	अयावयट्ठा	आयावयट्ठा	क,ख,ग
३।३	° उत्तेण	° वुत्तेण	अचू
५।२	पडिलेहसि	पडिलेहिसि	ख
५।४	गरिहसि	गिरिहसि,गिरिहिसि,गरहसि	ग,ख,अचू
७।३	त उज्जुयं	त-ओजुय	ख,घ
१०।२	किविण	किवण	ग
१३।२	नियत्तिए	नियत्तए	ख,ग
१३।४	व	वा	अचू
१४।३	सच्चित्त	सचित्त	घ,अचू,जिचू
२१।३	नोम	नियम	ख
२२।३	° पिन्नाग	° पन्नाग	ख
२४।३	विहेलग	विभेलग, विहेलग	अचू,ख
२५।४	ऊसढ	उस्सढ	अचू
२६।१	इत्थिय	इत्थि	अचू
३२।१	अत्तट्ठ	अत्तट्ठा	क,ख,ग,घ
३७।१	पिया	पियए	हाटी,जिचू
४६।१	वय	वई	अचू
४७।२	मूयय	मूयग	ख,ग,घ
५०।३	° हिदिए	° हिइदिए	क,घ,जिचू

अध्ययन-६

१३।३	मेत्त	मित्त	क,ख,ग,घ
१८।१	लोभस्सेसो,अणुफासो	लोभस्सेसणुफासे, लोभस्सेसणफासो, लोभस्सेसणुफासो	क,घ ग,ख

२०।२	नाय °	नाइ °	क,ग
२०।४	इइ	इय	क,ख,ग,घ
२४।३	दिया	दिवा	अचू
३७।३	विईउ °	वीउ °, वितु °	ग,अचू
५१।२	° घोयण	° धोवण	क,ख,अचू
५१।३	छन्नति	छिन्नति, छिप्पति	क,ख,ग,हाटी
५२।१	पच्छा °	पच्छे °	अचू
५७।४	पडिकोहो	परिकोहो, पलिकोहो	अचू
६०।३	वोक्कतो	वुक्कतो, वक्कतो	क,ग,ख
६१।२	भिलुगासु	भिलगासु	क,ख,घ
६१।४	° प्पिलावए	° पलावए, ° प्पलावए	ख,ग,घ,हाटी
६३।३	° व्वट्ट °	° वट्ट °	क,ग
६४।१	नगिणस्स	निगणस्स, नगणस्स, नगणिस्स, णिगिणस्स	क,घ,ग,अचू
६७।४	नवाइ पावाइं	नवाणि पावाणि	अचू
६८।३	उउप्पसन्ने	उडुपसण्णे	अचू

अध्ययन-७

२।३	ऽणाइन्ना	अणाइण्णा	अचू
५।४	पुण	पुणो,पुण	अचू,ख
८।१	कालम्मी	कालम्मि	ख
१२।२	पडगे त्ति	पडग त्ति पडगु त्ति	क,ग,घ
१२।३	रोगि त्ति	रोग त्ति	ग
१२।४	चोरे त्ति	चोरु त्ति	घ
१३।१	वट्ठेण	अट्ठेण	क,ख,ग,घ
१४।२	वसुले त्ति	वसुल त्ति	घ
१४।३	दम्मए दुहए	दुम्मए दुहए	ख

५३।१	अतलिक्खे	अतलिक्ख, अतलिक्ख	घ,हाटी,जीचू,ख
५६।३	धुन्न	धुत्त	घ

अध्ययन-८

२।४	इय	डय	ख
५।१	निसिए	निसीए	घ
६।२	विहुयणेण	विहुवणेण	जिचू
६।३	वीएज्ज	वीए	अचू
६।४	पोग्गल	पुग्गल	क,ख,ग,घ
१४।१	कयराइ	कतमाणि	अचू
१६।३	अप्पमत्तो	अप्पमत्ते	अचू
१८।३	पडिलेहित्ता	पडिलेहित्तु	अचू
१६।२	पाणट्ठा	पाणत्था	अचू
२०।४	मग्हिइ	मरुहति	अचू
२३।२	अयपिरो	अयपुरो	अचू
२५।१	सतुट्ठे	सतुट्ठो	अचू
२५।२	सुहरे	सुभरे	ख,घ
२६।१	अतितिणे	अतिंतणे	क,ग
३५।१	पीलेइ	पीडेइ	ख,ग,जिचू,हाटी
३६।१	अणिग्गहीया	अणिग्गिहिया	अचू
४०।१	गाडणिए	गायणिए	ख,ग,हाटी
४०।१	पउजे	पयुजे	अचू
४०।३	कुम्मो	कुम्मु,कुम्मे	क,ख,ग,घ,अचू
४१।३	मिहो	मिथु	अचू
४२।४	अट्ठ	अत्य	अचू
४६।३	पिट्ठि	पिट्ठी	अचू
४८।३	अयपिर	अयपुर	अचू

५३।१	अतलिक्खे	अतलिक्ख, अतलिक्ख	घ,हाटी,जीचू,ख
५६।३	धुन्न	धुत्त	घ

अध्ययन-८

२।४	इय	इय	ख
५।१	निसिए	निसीए	घ
६।२	विहुयणेण	विहुवणेण	जिचू
६।३	वीएज्ज	वीए	अचू
६।४	पोग्गल	पुग्गल	क,ख,ग,घ
१४।१	कयराइ	कतमाणि	अचू
१६।३	अप्पमत्तो	अप्पमत्ते	अचू
१८।३	पडिलेहित्ता	पडिलेहित्तु	अचू
१९।२	पाणट्ठा	पाणत्था	अचू
२०।४	मग्गिहइ	मरुहति	अचू
२३।२	अयपिरो	अयपुरो	अचू
२५।१	मतुट्ठे	सतुट्ठो	अचू
२५।२	सुहरे	मुभरे	ख,घ
२६।१	अतितिणे	अतिंतणे	क,ग
३५।१	पीलेइ	पीडेइ	ख,ग,जिचू,हाटी
३६।१	अणिग्गहीया	अणिग्गिहिया	अचू
४०।१	राइणिए	गायणिए	ख,ग,हाटी
४०।१	पउजे	पयुजे	अचू
४०।३	कुम्मो	कुम्मु,कुम्मे	क,ख,ग,घ,अचू
४१।३	भिहो	मिधु	अचू
४२।४	अट्ठ	अत्य	अचू
४३।३	पिट्ठि	पिट्ठी	अचू
४८।३	अयपिर	अयपुर	अचू

१५।२	माउस्सिय	माउसिउ, माउसिय	क,ख,ग,घ
१५।४	नत्तुणिए	नत्तुणिय, नत्तुणइ, नत्तुणिइ	घ,क,ग,ख
१६।१	अन्नेत्ति	अन्नत्ति	ग
१८।३	भाइणोज्जति	भायणिज्जति	ख
१८।४	नत्तुणिय	नत्तुणइ, नत्तुणिइ	ग,ख
१९।१	हले त्ति	हल त्ति, हरे त्ति	ग,घ,अचू
२१।१	मणुस्स	मणुस, मणस	क,ग,घ,ख
२२।२	नगोसिव	सरीसव	ख,ग
२३।१	परिवुड्ढे	परिवुड्ढ,परिवूढ	क,ग,ख,अचू,जिचू,हाटो
२४।३	० जोग त्ति	० जोगि त्ति	ख,ग;
२५।२	वेगू	वेणू	ख
२६।२	नारणाण गिहाण	तोरणाणि गिहाणि	क,ग
२७।१	दरिसणि	दरिसण	ग,घ,ख
		फलाणि	अचू
		निव्वडिमा,निव्वत्तिमा, निवट्टिमा	जिचू,अचू,ख
		रूवि त्ति	क,ख,ग
		सुतित्थे,सुत्तितित्थ	ग,घ,ख
		० पाहडा	अचू
		मते	अचू
		पयत्ति	क,घ
		पक्क त्ति	क,ग,घ
		मुक्किय	ख
		नहेवऽसजत	अचू
		मावज्जो	अचू
		वाउ ०	ख
		० वुट्ठि	क,ख,ग

५।३।१	अतलिक्खे	अतलिक्ख, अतलिक्ख	घ,हाटी,जीचू,ख
५।६।३	धुन्न	धुत्त	घ

अध्ययन-८

२।४	इय	इय	ख
५।१	निसिए	निसीए	घ
६।२	विहुयणेण	विहुवणेण	जिचू
६।३	वीएज्ज	वीए	अचू
६।४	पोग्गल	पुग्गल	क,ख,ग,घ
१४।१	कयराड	कतमाणि	अचू
१६।३	अप्पमत्तो	अप्पमत्ते	अचू
१८।३	पडिलेहित्ता	पडिलेहित्तु	अचू
१६।२	पाणट्ठा	पाणत्था	अचू
२०।४	मग्गिहइ	मरुहति	अचू
२३।२	अयपिरो	अयपुरो	अचू
२५।१	मतुट्ठे	मतुट्ठो	अचू
२५।२	सुहरे	सुभरे	ख,घ
२६।१	अतितिणे	अतिंतणे	क,ग
३५।१	पीलेइ	पीडेइ	ख,ग,जिचू,हाटी
३६।१	अणिग्गहीया	अणिग्गिहिया	अचू
४०।१	गाडणिए	गायणिए	ख,ग,हाटी
४०।१	पउजे	पयुजे	अचू
४०।३	कुम्मो	कुम्मु,कुम्मे	क,ख,ग,घ अचू
४१।३	मिहो	मिध	अचू
४२।४	अट्ठ	अन्य	अचू
४६।३	पिट्ठि	पिट्ठी	अचू
४८।३	अयपिर	अयपुर	अचू

[illegible]	व[illegible]	वाय, वय	जिचू,ख
[illegible]	विग्गहिओ	विग्गहओ	ख
[illegible]	पलिच्छिन्न	पलिच्छिन्न	घ,अचू,जिचू
[illegible]	मणन्नेसु	मणुन्नेसु	क,ख,ग,घ
[illegible]	तण्हो	तिण्हो	क
[illegible]	सी[illegible]	सीत	अचू
[illegible]	जमि	जमे	अचू
[illegible]	चन्दिमा	चदिमि	क,ख,जिचू
		अप्पसुय	ख,ग
		पावक	अचू
		जस्सतिय	अचू
		तस्सतिय	अचू
		वुद्धीए	ख
		जुते	क,ग
		मेहावि	ख
		नग्ग	अचू
		सक्कारेति	अचू
		हेउहि	ख,ग
		वित्ति	क,ख,घ
		ओघ ०	क,ख,हाटी
		गाय ०	ख,ग
		नीय ०	घ,जिचू

८।२	दुम्मणिय	दुम्मणय	ग
१०।२	अपिसुणे	अपिस्सुणे	क,ख,ग

अध्ययन-९(४)

२।४	° यट्ठिए	° यत्थीए	अचू
७	आरुहतेहि	आरुहतिहि	अचू

अध्ययन-१०

४।२	निस्सियाण	निसियाण	क,ख,ग
६।२	हवेज्ज	भवेज्ज	अचू
७।४	वय	वइ	क,अचू
८।३	होही	होहिइ	अचू
१२।१	मसाणे	मुसाणे	अचू
१२।२	भायए	भाए	अचू
१८।१	वएज्जासि	वएज्जाहि	ख
१८।२	जेणन्नो	जेणन्नु, जेणन्न	क,घ,ख,ग

चूलिका-१

सू०१स्थान२	इत्तरिया	इत्तिरिया	ख,अचू
,, ,, ६	पडियाइयण	पडिआयणं, पडिआययण	जिचू,ख,ग,घ
,, ,, ६	वहाय	वहाए	अचू
,, ,, १८	वेयइत्ता	वेइत्ता	क,ख,गघ
,, ,, १८	अवेइयत्ता	अवेइत्ता	क,ख,ग,घ
२।१	जया	जहा	क
५।८	मेट्ठि °	मिट्ठि °	क,ख,ग,घ, हाटी
६।३	गल्ल	गल्लि	ख,घ
६।३	गिल्लित्ता	गल्लित्ता	ख,ग
१०।८	° निग्य	° नग्य	क,घ,हाटी
१०।४	माग्गिनो	माल्लिनो	क,ग

२५।२	निरट्ठ	निरत्थ	क्वचित्
२६।३	एगित्थिए	एगत्थिए	उ
३६।१	सुकडे त्ति	सुक्कडि त्ति	ऋ
३६।३	सुलट्ठे त्ति	सुलट्ठि त्ति	उ
४०।४	तोत्त	तुत्त	चू, ऋ
४१।४	पुणोत्ति	पुणिन्ति	उ
		पुणत्ति	ऋ
४२।४	गरह	गरिह	उ, ऋ
४४।३	मुकय	मुकड	अ

अध्ययन-२

सू० ३	दिगिछा	दिगछा	अ, उ
८।१	उसिणपरियावेण	उसिणप्परियावे०	उ, ऋ
२४।२	पडिसजले	पडम जले	उ, ऋ

अध्ययन-३

३।४	आहाकम्मेहिं	अहाकम्मेहि	अ, स, सु
२०।४	सासए	सासवे	उ

अध्ययन-४

३।२	किच्चइ	कच्चई	उ, क
५।२	परत्था	परत्थ	चू
६।२	वीससे	विस्ससे	चू
६।४	भारुण्ड	भारड	उ, ऋ, बृ
१३।३	दुगुछमाणो	दुगछमाणो	ऋ

अध्ययन-५

३।२	असइ	असय	उ
८।४	भूयग्गाम	भूयगाम	उ, ऋ, बृ
१६।८	धुत्ते व	धुत्ते वा	अ, उ, ऋ
२२।८	कमई	कम्मई	अ

कओ	उ,ऋ
जेण पुणो	अ
वइ-काय	उ
विचिकिच्छा	ऋ
इत्थी	अ
सथवित्थीहिं	अ
कुवियं रुदित	अ
निडए	अ,आ,इ
तहावरे	ऋ
छुब्भित्ता	उ
राय	स
पिच्चत्थ	अ,उ,ऋ
मण	स
मिच्छादिट्ठी	बृ
महड्डिओ	स
निमृदणो	उ
निमूअणो	ऋ
भवइ	अ
नीग्इ	अ
वणिमिमाउ	ऋ
अणाहेज्जो	अ
अणाढिओ	ऋ
अणाढिज्जो	म

१८।४	तण्हाए	तिण्हाइ	उ
२०।२	सपाहेओ	सपाहेज्जो	अ
		सपाहिज्जो	स
२०।४	तण्हा	तिण्हा	उ
२२।८	अवउज्झइ	अवयज्झइ	अ
२३।४	तुब्मेहि	तुहेहि	अ
२६।२	परिच्चाओ	परित्ताओ	उ
३५।२	महाभरो	महब्भरो	उ,ऋ
३५।३	गुरुओ	गरुओ	अ
३८।१	अही	अहे	अ
५२।२	सिम्बलि	सावलि	अ
५४।३	फालिओ	फाडिओ	अ,उ
७३।१	एगभूओ	एगब्भूओ	आ
८५।३	अम्म	अम्ब	उ

अध्ययन-२०

३५।१	ततो ह	तोह	ऋ
३७।२	दुहाण	दुक्खाण	अ

अध्ययन-२१

४।२	पगवई	पमूयई	अ
१५।८	गन्ह	गरिह	उ

अध्ययन-२२

१३।२	उत्तिमाए	उत्तमाए	ऋ
४८।२	दिच्छसि	दच्छसि	क्वचित्
[illegible]।२	सजयाए	संजयाए	स

ववकजडा	उ,ऋ
णिहणिऊण	अ
ओवायओ	अ

आहार उवहि	अ
वीइए	अ,उ,ऋ
विच्छिन्ने	अ

उत्तिमट्ठ	अ
पजलियडा	अ
ताडन्ति	अ
सिणाइओ	अ
मुक्के उ गोलए	उ,ऋ

निस्सोहिया	अ
पचमी	उ
आसाढमासे	अ
वयसाहेसु	अ
विइयनइयमि	उ,ऋ
वितिए	अ
विइय	
छट्ठी	
पसटिए	
पडिक्कमित्ता	

अध्ययन-२७

३।२	विहम्माणो	विहिम्माणो	उ,ऋ
६।२	एगेऽत्थ	एगित्थ	उ
		एगत्थ	ऋ

अध्ययन-२८

१६।२	आणारुई	आणरुई	उ,ऋ
३४।४	एवमब्भतरो	एमेवब्भतरो	अ
		एवमब्भितरो	उ,ऋ

अध्ययन-२९

सू० १	रोयइत्ता फासइत्ता पालइत्ता	रोइत्ता फासित्ता पालित्ता	ऋ,स
सू० १	तीरइत्ता	तीरित्ता	इ
सू० १	आराहइत्ता	आराहित्ता	ऋ
सू० १	गरहणया	गरिहणया	उ
सू० ३	सिद्धिमग्गे	सिद्धिमग्ग	अ,उ,ऋ
सू० ५	विणइत्ता	विणयइत्ता	इ
सू० ६	मिच्छादसण	मिच्छादरिसण	अ
सू० ८	अपुरक्कार	अपुरेक्कार	अ
सू० १५	थवथुइ	थयथुइ	अ,उ,ऋ
सू० ३३	विणियट्टणयाए ण	विणिवट्टणयाए ण	अ,उ
सू० ७३	आणापाणु	आणापाण	ऋ
सू० ७३	वेयणिज्ज	वेयणिय	अ

अध्ययन-३०

१८।१	रच्छासु व	रत्थासु य	अ
२०।१	पोरुसीण	पोरिसीण	अ

अध्ययन-३१

५।२	तेरिच्छ	तेरिक्ख	अ

बृ
अ
उ
अ
उ
उ,ऋ
अ
अ
अ
अ
स
अ
अ
अ
अ,ऋ
उ,ऋ
उ,ऋ

उ,ऋ
म

अ,ऋ
ऊ,ऋ
उ,ऋ
उ,ऋ

३४।२	तेत्तीस	तित्तीसा	ऋ
६०।१	अत	अतो	उ,ऋ

अध्ययन-३५

४।१	चित्तहर	चित्तधर	उ,ऋ
४।३	पडुरुल्लोय	पडरुल्लोय	अ
८।१	कुज्जा	कुव्विज्जा	उ,ऋ
२१।१	निम्ममो निरहंकारो	निम्ममे निरहंकारे	अ,आ,इ,स

अध्ययन-३६

११।१	पुहत्तेग	पुहत्तेण	स
३६।१	गुरुए	गरुए	स
५५।३	वोन्दि	वोंदि	अ
		वुंदि	उ
		वुंदि	ऋ
६१।१	पण्डुरा	पण्डरा	अ
९९।३	मुसुण्ढी	मुसण्ढी	अ
१४६।८	ढिंकुणे कुकुणे	ढिंकुणे कुकणे	उ,ऋ
१४७।१	सिगिरीडी	सिगिरिडि	अ
१४७।२	नंदावत्ते	नंदापत्ते	अ
१४८।२	विच्छिए	विच्छुए	उ
१४९।४	विन्ही	विन्ही	ऋ
२०६।३	दिसा	दिसि	ऋ
२२८।४	चउद्दस	चोद्दस	अ
२३७।४	[illegible]	[illegible]	उ,ऋ
२४०।१	[illegible]	अणुत्तीस	स

चौतीसवे अध्ययन मे 'पद्मलेश्या' के लिए 'पम्हलेस्सा' शब्द का प्रयोग हुआ है। 'पम्ह' शब्द संस्कृत 'पक्ष्म' का प्राकृत रूपान्तर है। 'पद्म' शब्द के दो प्राकृत रूप बनते है—'पउम' और 'पम्म'। किन्तु 'पम्ह' रूप नही बनता। गोम्मटसार के लेश्या मार्गणाधिकार मे पद्मलेश्या के लिए 'पम्म' और 'पउम'—दोनो शब्द प्रयुक्त हुए हैं।[1] हमने 'पम्ह' शब्द ही रखा है। क्योकि पाठ-सशोधन मे प्रयुक्त या अन्य किसी भी आदर्श मे 'पम्म' या 'पउम' शब्द नही मिला।

दशवैकालिक और उत्तराध्ययन के उद्धृत पाठ

प्रारम्भ से ही दशवैकालिक और उत्तराध्ययन—ये दोनो सूत्र बहुचर्चित रहे है। अनेक आचार्यो ने अपनी-अपनी रचनाओ मे स्थान-स्थान पर इन्हे उद्धृत किया है। ये उद्धृत पाठ शब्द और भाषा की दृष्टि से कुछ परिवर्तित रूप मे प्राप्त होते है। यह भिन्नता क्षेत्र, काल और परम्परा के भेद के कारण हुई, ऐसा प्रतीत होता है। इन भिन्नताओ के कुछेक उदाहरण ये है :—

मूल पाठ—

वितहं पि तहामुत्तिं जं गिरं भासए नरो।
तम्हा सो पुट्ठो पावेणं किं पुण जो मुसं वए ? ॥ (दशवैकालिक ७।५)

बृहत्कल्प भाष्य, भाग २, पृष्ठ २६० पर उद्धृत पाठ—

वितहं पि तहामुत्ति, जो तहा भासए नरो।
सो वि ता पुट्ठो पावेगं, कि पुण जो मुसं वए ? ॥

मूल पाठ—

तिण्हमन्नयरागस्स निसेज्जा जस्स कप्पई।
जराए अभिभूयस्स वाहियस्स तवस्सिणो ॥ (दशवैकालिक ६।५९)

बृहत्कल्प भाष्य, भाग २, पृष्ठ ३७८ पर उद्धृत पाठ—

तिण्हमन्नयरागस्स, निसिज्जा जस्स कप्पई।
जराए अभिभूयस्स, वाहियस्सा तवस्सिणो ॥

१—गोम्मटसार (जीवकाण्ड), गाथा ४९२, ५०२।

मूल पाठ—

नगिणस्स वा वि मुंडस्स दीहरोमनहंसिणो ।
मेहुणा उवसंतस्स किं विभूसाए कारियं ? ॥ (दशवैकालिक ६।६४)

मूलाराधना, आश्वास ४, श्लोक ३३३, विजयोदया टीका, पृष्ठ ६११ मे उद्धृत पाठ—

णग्गणस्स य मुण्डस्स य, दीहलोमणखस्स य ।
मेहुणादो विरत्तस्स, किं विभूसा करिस्सदि ? ॥

मूल पाठ—

अचेलगो य जो धम्मो जो इमो सन्तरुत्तरो ।
देसिओ वद्धमाणेण पासेण य महाजसा ॥
एगकज्जपवन्नाणं विसेसे किं नु कारणं ? ।
लिंगे दुविहे मेहावि ! कहं विप्पच्चओ न ते ? ॥ (उत्तराध्ययन २३।२६,३०)

मूलाराधना, आश्वास ४, श्लोक ३३३, विजयोदया टीका, पृष्ठ ६११ मे उद्धृत पाठ—

आचेलक्को य जो धम्मो, जो वाय पुण रुत्तरो ।
देसिदो वड्ढमाणेण, पासेण य महप्पणा ॥
एग धम्मे पवत्ताणं, दुविधा लिंग-कप्पणा ।
उभएसिं पदिट्ठाण, महं संसय मागदा ॥

पाठान्तर की लम्बी परम्परा

आज हमे जो पाठान्तर उपलब्ध हो रहे हैं, उनके प्रधान कारण चार है—

(१) परम्परा-भेद
(२) लिपि-दोष
(३) मूल पाठ और व्याख्या का सम्मि
(४) व्याख्या का पाठ-रूप मे परिवर्त

(१) परम्परा-भेद,

वीर-निर्वाण की सहस्र

उस समय जो पाठान्तर प्रचलित थे, उन्हे सकलित कर लिया गया। वे आगमो की व्याख्याओ मे अब भी सुरक्षित है।[१]

अगस्त्य चूर्णि के रचना-काल मे भी परम्परागत पाठ-भेद प्रचलित थे। वहाँ अनेक स्थलो मे मतान्तरो का उल्लेख हुआ है।[२] जिनदास चूर्णि की भी यही स्थिति है। टीका-सम्मत पाठ तो इनमे बहुत भिन्न पड जाते है। दीपिकाकार टीका से भी आगे बढ जाते है। जिन श्लोको की व्याख्या टीका मे नही है, उन्हे दीपिकाकार मूल सूत्र मान उनकी व्याख्या करते है।

चूर्णिकार और टीकाकार के बीच जो पाठ-भेद है, उसका कारण परम्परा-भेद है। किन्तु दीपिका मे जो पाठ-भेद है, उसका कारण परम्परा-भेद नही जान पडता। वह लिपिकर्त्ता मे सम्बन्धित है। आदर्शों के लेखक प्राय मुनि रहे है। वे व्याख्यान भी देते थे। व्याख्यान-काल मे जो प्रासगिक श्लोक और गाथाएँ कही जाती, वे उसी स्थान पर लिख ली जाती और आगे चल कर वे ही लम्बे काल मे मूल मे घुस जाती। दशवैकालिक और उत्तराध्ययन के आदर्शों मे ऐसा हुआ है। दशवैकालिक निर्युक्ति का निम्न श्लोक मूल के साथ लिखा गया है—

वयछक्क कायछक्क, अकप्पो गिहिभायण।
पलियकनिसेज्जा य, सिणाण सोहवज्जण॥ (हाटी, पत्र १९६)

इसी प्रकार उत्तराध्ययन २४।१२ के पश्चात् एक गाथा मूल आदर्श मे लिखी हुई प्राप्त होती है। जैसे—

सरम्भो सरम्भो, परितावकरो भवे समारम्भो।
आरम्भो उद्दवओ, सुद्धनयाण तु सव्वेसि॥

ऐसे पाठान्तरो मे स्मृतिभ्रश का भी योग रहा है। जो मुनि कण्ठस्थ-पाठ के आधार पर मूल-पाठ लिखते, उनके आदर्शों मे स्मृति-दोष के कारण अक्षरो व

१–जिनदास चूर्णि पृष्ठ २०४ :
नागज्जुणिया तु एवं पढंति—'एव तु सगुणप्पेही अगुणाण विवज्जए'।
२–देखो—दसवैआलियं, भाग २ मे ३।१३ ५।१।३, ६।५४ के टिप्पण।

इसी प्रकार महाव्रतो के सूत्र-पाठ मे भी कुछ सम्मिश्रण होने का उल्लेख मिलता है।[1]

(४) व्याख्या का पाठ रूप मे परिवर्तन

उत्तराध्ययन २२।२४ मे 'पचमुट्ठीहिं' ऐसा पाठ आया है। वास्तव मे यह पाठ 'पचट्ठा' था। 'अट्ठा' का अर्थ है 'मुष्टि'। पच अट्ठा अर्थात् पचमुष्टि। पचट्ठा शब्द अपरिचित था। बृहद्वृत्ति (पत्र ४९२) मे पचट्ठा का अर्थ पचमुष्टि है। कालान्तर मे यह व्याख्यागत अर्थ ही मूल पाठ वन गया।

अन्य आगमो मे भी ऐसे अनेक उदाहरण हमे प्राप्त हुए है।

दशवैकालिक : प्रति परिचय

क : दशवैकालिक पाठ और अवचूरी (हस्त-लिखित)

यह प्रति हमारे 'सघीय सग्रह' की है। इसके पृष्ठ १७ व पत्र ३४ है। प्रत्येक पत्र लगभग १०। इच लम्बा व ४। इच चौडा है। प्रत्येक पृष्ठ मे पाठ की पक्तिया १२-१३ व प्रत्येक पक्ति मे ४६ से ५३ तक अक्षर है। अवचूरी पाठ के चारो तरफ लिखी हुई है। प्रति काली स्याही से व गाथाओ की सख्या लाल स्याही से लिखी हुई है। प्रति के अन्त मे लेखक की निम्नलिखित प्रशस्ति (पुष्पिका) है :

> ।।१० दशवैकालिक समाप्तमिति ।।छ।। सवत् १५०३ वर्षे आपाढ मासे कृष्ण पक्षे चतुर्थी दिने शनिवारे ।। दशवै लिखित ।। सुन्दरसवेगगणि योग्य ।।

ख : दशवैकालिक पाठ और अवचूरी (हस्त-लिखित)

यह प्रति भी हमारे 'सघीय सग्रह' की है। इसके पत्र १९ व पृष्ठ ३८ है। प्रत्येक पत्र लगभग १०। इच लम्बा व ४। इच चौडा है। प्रत्येक पृष्ठ मे पाठ की पक्तिया १३ व प्रत्येक पक्ति मे ४८ से ४९ तक अक्षर है। अवचूरी पाठ के चारों

१—अगस्त्य चूर्णि :
केति सुत्तमिद पढन्ति, केति वृत्तिगत विसेसिंति, जहा से त पाणातिवाते चउव्विहे त जहा दव्वतो, खेत्ततो, कालतो, भावतो।

तरफ लिखी हुई है। पाठ के अक्षर बड़े तथा अवचूरी के अक्षर छोटे है। प्रति काली स्याही से व गाथाओ की सख्या लाल स्याही से लिखी हुई है। प्रति के अन्त मे लेखक की निम्नलिखित प्रशस्ति (पुष्पिका) है :

सवत् १४९६ वर्षे वैशाख मासे प्रतिपदाया तिथौ रविवासरे ॥ लिखित कर्म्मचन्द्रेण ॥

ग : दशवैकालिक पाठ और अवचूरी (हस्त-लिखित)

यह प्रति भी हमारे 'सघीय सग्रह' की है। इसके पत्र १६ व पृष्ठ ३२ है। प्रत्येक पत्र १०। इच लम्बा व ४। इच चौडा है। प्रत्येक पृष्ठ मे पाठ की पक्तियाँ १४ व प्रत्येक पक्ति मे ५२ से ५७ तक अक्षर है। अवचूरी पाठ के चारो तरफ लिखी हुई है। पाठ के अक्षर बडे तथा अवचूरी के अक्षर छोटे है। प्रति काली स्याही से व गाथाओ की सख्या व पद लाल स्याही से लिखे गए है। प्रति के अन्त मे लेखक की निम्न प्रशस्ति (पुष्पिका) है :

दसवेयालिय सुयक्खधो समत्तो ।।बा।। शिवमस्तुचिर विजीयात् ।।

सवत् १४०० वर्षे भाद्रपद सुदि ११ तिथौ शुक्रवासरे समस्त देशाधिदेशे श्री मालवकाख्ये तन्मध्यवर्त्तिन्या महापुर्यामवत्या पातसाह श्री महसुदर राज्ये प० श्री विशालकीर्ति पूज्यानां पादप्रसादाद्देपाकेन लिखितमिति।

घ : दशवैकालिक पाठ और अवचूरी (हस्त-लिखित)

यह प्रति 'गधैया सग्रहालय', सरदारशहर की है। इसके पत्र ३२ व पृष्ठ ६४ है। प्रत्येक पत्र १०। इच लम्बा व ४। इच चौडा है। प्रत्येक पृष्ठ मे पाठ की पक्तियाँ ८ से १३ व प्रत्येक पक्ति मे २९ से ३२ तक अक्षर है। अवचूरी पाठ के चारो तरफ लिखी हुई है। पाठ के अक्षर बडे तथा अवचूरी के अक्षर छोटे है। प्रति काली स्याही से व गाथाओ के सख्याक लाल स्याही से लिखे हुए है। अनुमानतः १४वी शताब्दी की लिखी हुई होनी चाहिए। प्रति के अन्त मे लेखक की निम्न प्रशस्ति (पुष्पिका) है :

इति श्री दसवैकालिक सूत्र समाप्त। लिखित ॥ बा० श्री साधु विजयगणिभिः कल्याणमस्तु सर्व-जतोः ॥ लेखकपाठकयोः भद्र भूयात् ॥

अ, अचू० : अगस्त्यसिंह स्थविर कृत (जैसलमेर भण्डारस्थ) ताड़पत्रीय दशवैकालिक चूर्णि

इसकी फोटो-प्रिन्ट प्रति 'सेठिया पुस्तकालय', सुजानगढ़ की है। इसकी पत्र सख्या १६५ व पृष्ठ ३३० हैं। पत्र क्रमांक सख्या १७७ से ३४२ तक है। फोटो-प्रिन्ट पत्र-सख्या ३६ तथा एक पृष्ठ मे करीब ६-१० पृष्ठो के फोटो है। किसी मे ७-८ भी है। प्रत्येक पत्र १४ इच लम्बा व ३ इच चौड़ा है। प्रत्येक पत्र मे ४ या ५ पक्तियाँ है। कही पक्तियाँ अधूरी है। प्रत्येक पक्ति मे १४८ के करीब अक्षर हैं। यह फोटो-प्रिन्ट प्रति मुनि श्री पुण्यविजयजी से उपलब्ध हुई।

आ, अचू०पा० : अगस्त्यसिंह पाठान्तर

ज, जिचू० : जिनदास महत्तर कृत दशवैकालिक की चूर्णि (मुद्रित)

श्री ऋषभदेवजी केशरीमलजी पेढी—मुकाम रतलाम, जैनबन्धु प्रिन्टिग प्रेस इन्दौर, वि० स० १९८९ मे प्रकाशित। पृष्ठ ३८०।

जा, जिचू० पा० : जिनदास चूर्णि पाठान्तर

ह, हाटी० : हारिभद्रीय दशवैकालिक की टीका (मुद्रित)

शाह नगीन भाई घेला भाई जव्हेरी, ४२६ जव्हेरी बाजार द्वारा निर्णय-सागर मुद्रणालय कोल भाट गली बम्बई-२३ मे मुद्रापित प्रकाशित। विक्रम सवत् १९७४। पत्र २८६।

हा, हाटी० पा० : हारिभद्रीय वृत्ति के पाठान्तर

उत्तराध्ययन : प्रति परिचय

अ : मूल पाठ सावचूरी (हस्त-लिखित)

प्रशस्ति (पुष्पिका) है :

॥ इति षट्त्रिंशदुत्तराध्ययना नामवचूरि समाप्ताः ॥ श्री रस्तु ॥

स० १५३८ वर्षे विशाख सुदि १० रवि लिषित ॥ चिर नदतु ॥१॥१

आ : उत्तराध्ययन मूल पाठ (हस्त-लिखित)

यह प्रति छापर निवासी मोहनलाल दुधोडिया के सग्रहालय की है। इसके पत्र ८९ व पृष्ठ १७८ हैं। प्रत्येक पत्र १० इच लम्बा व ४। इच चौडा है। प्रत्येक पृष्ठ मे ११ पक्तियाँ व प्रत्येक पक्ति मे अक्षर लगभग ३२ से ४० तक हैं। अक्षर वडे तथा पढने मे स्पष्ट हैं। प्रति काली स्याही से व लेखक की प्रशस्ति लाल स्याही से लिखी हुई है। प्रशस्ति निम्न प्रकार है :

॥ संवत् १५९१ वर्षे श्री पत्तनपुरवरे श्री जिनवल्लभ सूरि सताने श्री खरतर गच्छेश नभोगण दिनकर करणि सैद्धान्तिक सिरोमणि श्रीजिनभद्र सूरि श्री जिनचन्द्र सूरि तत्पट्ट प्रतिष्ठित श्री जिनभद्र सूरि पट्ट पूर्वाचिल सहस्रकरावतार भाग्य सौभाग्य भगो सुभग भालस्थल भट्टारक प्रभु श्री श्री श्री जिनहस सूरि पट्टे श्री श्री श्री जिनमाणिक्य सूरिभिः सार्वभोगैः वा० आणद नदन गणाय प्रसादी कृतेयं प्रति।

इ : उत्तराध्ययन मूल (हस्तलिखित)

यह प्रति छापर निवासी मोहनलाल दुघोडिया के सग्रहालय की है। इसके पत्र ३८ व पृष्ठ ७६ है। प्रत्येक पत्र १० इच लम्बा व ४ इंच चौडा है। प्रत्येकपृष्ठ मे १७ पक्तियाँ व प्रत्येक पक्ति मे अक्षर लगभग ५०-५१ है। अक्षर वडे तथा पढने मे स्पष्ट है। प्रति काली स्याही से लिखी गई है। यह प्रति अनुमानतः १६ वी शताब्दी मे लिखी गई है। प्रति के अन्त मे लेखक की निम्नलिखित प्रशस्ति है :

॥ इति श्रीमदुत्तराध्ययन श्रुतस्कधः समाप्तः ॥ परमाप्त प्रणीतः ॥ छ ॥ निर्युक्तिकार एतन्माहात्म्यमाह ॥ जे किर भवसिद्धीया। परित्त संसारियाय जे भव्वा। ते किर पढति एए छत्तीस उत्तरज्झाए तम्हा जिण पन्नत्ते। अणतगम पज्जवेहि सजुत्ते। अज्झाए जह जोग। गुरुप्पसाया अहिज्जिज्जा ॥२॥ जो ज्जागविहीइ वहित्ता एए जो लिहइ सुत्त अत्थ व ॥ भासेइय भवियजणो

सो पालइ निम्मल विउला ॥३॥ जम्हाउत्तो एए कट्ट विसमन्ति विवेन्-तियम्मि । सोलकिच्चगइ भव्वो ॥ पुव्वत्तिर्सी एव भासन्ति ॥४॥छ॥ शुभ भवतु ॥श्री॥

ड उत्तराध्ययन पाठ व अवचूरी सहित (हस्त-लिखित)

यह प्रति जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, सरदारशहर की है। अनुमानतः सं० १५०० में लिखी हुई है। इसके पत्र ५९ व पृष्ठ ११८ हैं। पत्र १० इंच लम्बे और ४॥ इंच चौड़े हैं। पत्र के दोनों तरफ १ इंच का मार्जिन है। पाठ और अवचूरी काली स्याही से लिखे हुए हैं। श्लोकांक तथा मार्जिन की रेखाएँ लाल स्याही से हैं। दोनों तरफ के मार्जिन के मध्य भाग में पाठ और चारों तरफ अवचूरी है। प्रत्येक पृष्ठ में पाठ की न्यूनतम ८ और अधिकतम १५ पंक्तियाँ हैं। प्रति के अन्त में निम्नलिखित प्रशस्ति है :

इति श्री उत्तराध्ययनावचूरिः समाप्ता ॥छ॥ श्री रस्तु ॥छ॥ ए प्रति सं० श्री विद्यासागर सूरि परिवारीया शिष्य गुणलाभ कर्मसागरे प्रति लिखी केल्लकवल्ल रहित सह।

ग. उत्तराध्ययन पाठ व अवचूरी सहित (हस्त-लिखित)

यह प्रति जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, सरदारशहर की है। विक्रमाब्द १५३५ में लिखी गई है। इसके पत्र ७९ व पृष्ठ १५८ हैं। प्रत्येक पत्र १०। इंच लम्बा और ४॥ इंच चौड़ा है। यह प्रति काली स्याही से स्पष्ट लिखित है। इसके श्लोकांक तथा दोनों तरफ का मार्जिन लाल स्याही से है। प्रत्येक पृष्ठ में पाठ की न्यूनतम ६ और अधिकतम १३ पंक्तियाँ हैं। अवचूरी मार्जिन तथा पाठ के ऊपर और नीचे के भाग में लिखी हुई है। अवचूरी के अक्षर से पाठ के अक्षर लगभग ड्योढे बड़े हैं। प्रति के अन्त में निम्नलिखित प्रशस्ति है :

लिखिता श्री उत्तराध्ययनावचूरिः स्वपरोपकृत्यैः ॥ १ शुभ भवतु ॥१॥
सं० १५३५ वर्षे आसोज सुदि ५ भोमे अद्येह श्री।

स उत्तराध्ययन सर्वार्थसिद्धि टीका सहित (हस्त-लिखित)

यह प्रति छापर निवासी मोहनलालजी दुधोड़िया के संग्रहालय की है।

इसके पत्र ३२३ और पृष्ठ ६४६ हैं किन्तु प्रारम्भ के १६ पत्र प्राप्त नहीं हैं। प्रति बहुत प्राचीन है। अनुमानतः १६ शताब्दी मे लिखी हुई होनी चाहिए। पत्र इतने जीर्ण हैं कि कभी-कभी हाथ के स्पर्श से ही खिरने लगते हैं। प्रति प्रायः बहुत शुद्ध लिखी हुई है। प्रत्येक पत्र १०।। इञ्च लम्बा व ४। इञ्च चौडा है। प्रत्येक पृष्ठ मे १५ पंक्तियाँ व प्रत्येक पक्ति मे लगभग ५३-५४ अक्षर हैं। टीका और पाठ समान अक्षर मे ही लिखा हुआ है।

सु सुखबोधा टीका, नेमिचन्द्राचार्य कृत (मुद्रित)

प्रकाशक :—देवचन्द्र लालभाई।

वृ बृहद्वृत्ति 'शान्त्याचार्य कृत' (मुद्रित-निर्णयसागर प्रेस, बम्बई)

प्रकाशक :—देवचन्द्र लालभाई जैन पुस्तकोद्धारे ग्रन्थाक ३३।

चू चूर्णि (गोपालिक महत्तर शिष्य कृत)

श्रेष्ठि देवचन्द्र लालभाई जैन पुस्तकोद्धारे, ग्रथांक ३३।

मोहमयीपत्तने वीर सम्वत् २४४२।

कृतज्ञता-ज्ञापन

जैन-परम्परा मे वाचना का इतिहास बहुत प्राचीन है। आज से १५०० वर्ष पूर्व तक आगम की चार वाचनाएँ हो चुकी हैं। देवर्द्धिगणी के बाद कोई सुनियोजित आगम-वाचना नही हुई। उनके वाचना-काल मे जो आगम लिखे गए थे, वे इस लम्बी अवधि मे बहुत ही अव्यवस्थित हो गए हैं। उनकी पुनर्व्यवस्था के लिए आज फिर एक सुनियोजित वाचना की अपेक्षा थी। आचार्य श्री तुलसी ने सुनियोजित सामूहिक वाचना के लिए प्रयत्न भी किया था, परन्तु वह पूर्ण नही हो सका। अन्ततः हम इसी निष्कर्ष पर पहुचे कि हमारी वाचना अनुसन्धानपूर्ण, गवेषणापूर्ण, तटस्थ दृष्टि-समन्वित तथा सपरिश्रम होगी तो वह अपने आप सामूहिक हो जाएगी। इसी निर्णय के आधार पर हमारा यह आगम-वाचना का कार्य प्रारम्भ हुआ।

हमारी इस वाचना के प्रमुख आचार्य श्री तुलसी हैं। वाचना का अर्थ अध्यापन है। हमारी इस प्रवृत्ति मे अध्यापन-कर्म के अनेक अग है—पाठ का

अनुसंधान, भाषान्तरण, समीक्षात्मक अध्ययन, तुलनात्मक अध्ययन आदि-आदि। इन सभी प्रवृत्तियों में आचार्य श्री का हमें सक्रिय योग, मार्ग-दर्शन और प्रोत्साहन प्राप्त है। यही हमारा इस गुरुतर कार्य में प्रवृत्त होने का शक्ति-बीज है।

मैं आचार्य श्री के प्रति कृतज्ञता-ज्ञापन कर भार-मुक्त होऊँ, उसकी अपेक्षा अच्छा है कि अग्रिम कार्य के लिए उनके आशीर्वाद का शक्ति-सबल पा और अधिक भारी बनूं।

प्रस्तुत ग्रन्थ के सम्पादन में मुनि दुलहराजजी का अविरल योग रहा है।

पाठ-संपादन के कार्य में मुनि सुदर्शनजी, मुनि मधुकरजी और मुनि हीरालालजी ने श्रम और निष्ठापूर्वक योग दिया है।

शब्दानुक्रम आदि कार्य में मुनि श्रीचन्द्रजी 'कमल' अत्यन्त दत्तचित्तता से लगे रहे हैं। मुनि हनुमानमलजी (सरदारशहर) का भी उसमें उल्लेखनीय योग रहा है।

विषयानुक्रम मुनि रूपचन्द्रजी ने तैयार किया है।

कार्य-निष्पत्ति में इनके योग का मूल्यांकन करते हुए मैं इनके प्रति आभार व्यक्त करता हूँ।

इस कार्य में स्वर्गीय श्री मदनचन्दजी गोठी, आगम-सम्पादन-समिति के संयोजक श्री श्रीचन्दजी रामपुरिया, आदर्श साहित्य संघ के संचालक व व्यवस्थापक श्री हनूतमलजी सुराणा और जयचन्दलालजी दफ्तरी का भी अविरल योग रहा है। आदर्श साहित्य संघ की सहयुक्त सामग्री ने इस दिशा में महत्त्वपूर्ण कार्य किया है।

एक लक्ष्य के लिए समान गति से चलने वालों की समप्रवृत्ति में योग-दान की परम्परा का उल्लेख व्यवहार-पूर्ति मात्र है। वास्तव में यह हम सबका पवित्र कर्त्तव्य है और उसी का हम सबने पालन किया है।

बीदासर (राजस्थान) —मुनि नथमल

१५, अगस्त, १९६६

भूमिका का विषयानुक्रम

२ : मूल-सूत्र

दशवैकालिक और उत्तराध्ययन गणधर-कृत नही है, इसलिए अग-वाह्य है। इन्हे 'मूल' क्यो माना गया, इसका कोई प्राचीन उल्लेख उपलब्ध नही है। अनेक विद्वानो ने 'मूल' शब्द की अनेक आनुमानिक व्याख्याएँ की है। "दशवैकालिक एक समीक्षात्मक अध्ययन" मे इनका उल्लेख हम कर चुके है।

प्रो० विन्टरनित्ज ने 'मूल' शब्द को 'मूल ग्रन्थ' के अर्थ मे स्वीकृत किया है। उनका अभिप्राय यह है—इन सूत्रो पर अनेक टीकाएँ है। इनसे 'मूल ग्रन्थ' का भेद करने के लिए इन्हें 'मूल-सूत्र' कहा गया।[१] यह प्रामाणिक नही है। प्रो० विन्टरनित्ज ने पिण्डनिर्युक्ति को भी 'मूल-वर्ग' मे सम्मिलित किया है। किन्तु उसकी अनेक टीकाएँ नही है। यदि अनेक टीकाएँ होने के कारण ही 'मूल-सूत्र' की सज्ञा दी गई तो पिण्डनिर्युक्ति इस वर्ग मे नही आ सकती।

डॉ० सरपेन्टियर[२], डॉ० ग्यारीनो[३] और प्रो० पटवर्धन[४] ने 'मूल-सूत्र' का अर्थ 'भगवान् महावीर के मूल शब्दो का संग्रह' किया है। किन्तु यह भी संगत नही है।

१—ए हिस्ट्री ऑफ इण्डियन लिटरेचर, भाग-२, पृ० ४६६, पाद-टिप्पणी-१

Why these texts are called "root-Sūtras" is not quite clear Generally the word mūla is used in the sense of "fundamental text" in contradistinction to the commentary Now as there are old and important commentaries in existence precisely in the case of these texts, they were probably termed "Mūla-texts"

२—दी उत्तराध्ययन सूत्र, भूमिका, पृ० ३२.

In the Buddhist work Mahāvyutpatti 245, 1265 mūlagrantha seems to mean 'original text', i e the words of Buddha himself Consequently there can be no doubt whatsoever that the Jains too may have used mūla in the sense of 'original text', and perhaps not so much in opposition to the later abridgments and commentaries as merely to denote the actual words of Mahāvīra himself

३—ला रिलीजीयन द'जेन, पृ० ७९

The word Mūla-Sūtra is translated as "trates originaux"

४—दी दशवैकालिक सूत्र ए स्टडी, पृ० १६

We find however the word Mūla often used in the sense of original text", and it is but reasonble to hold that the

भगवान् महावीर के मूल शब्दो के कारण ही किसी आगम को 'मूल' सज्ञा दी जाय तो वह आचाराग के प्रथम श्रुतस्कंध को ही दी जा सकती है। वह सबसे प्राचीन और महावीर के मूल शब्दो का सकलन है ।

दशवैकालिक और उत्तराध्ययन मुनि की जीवन-चर्या के प्रारम्भ में मूलभूत सहायक बनते है तथा आगमो का अध्ययन इन्ही के पठन से प्रारम्भ होता है। इसीलिए इन्हें 'मूल-सूत्र' की मान्यता मिली, ऐसा प्रतीत होता है। डॉ० सुब्रिंग का अभिमत भी यही है।[1]

हमारा दूसरा अभिमत यह है कि इनमें मुनि के मूल गुणो—महाव्रत, समिति आदि का निरूपण है। इस दृष्टि से इन्हें 'मूल-सूत्र' की सज्ञा दी गई।

३ : मूलाचार और मूल-सूत्र

'मूलाचार' आचार्य वट्टकेर की रचना है।[2] उससे भी उक्त अभिमत की पुष्टि होती है। मूलाचार में मुनि के मूल आचार का निरूपण है। उसमें उत्तराध्ययन के अनेक श्लोक सगृहीत है।[3]

---

word Mūla appearing in the expression Mūlasūtra has got the same sense Thus the term Mūlasūtra would mean "the original text", i e, "the text containing the original words of Mahāvīra (as received directly from his mouth)" And as a matter of fact we find, that the style of Mūlasūtras Nos 1 and 3 (उत्तराध्ययन and दशवैकालिक) as sufficiently ancient to justify the claim made in their favour by their original title, that they represent and preserve the original words of Mahāvīra

१—दसवेयालिय सुत्त, भूमिका, पृ० ३

Together with the Uttarajjhāyā (commonly called Uttarajjhayana Sutta) the Āvassaganijjuti and the Pindanijjutti it forms a small group of texts called Mūlasutta This designation seems to mean that these four works are intended to serve the Jain monks and nuns in the beginning (मूल) of their career

२—मुनि कल्याणविजयजी गणी ने 'श्रमण भगवान् महावीर' पृ० ३४३ पर 'मूलाचार' का रचना-काल विक्रम की सातवी शताब्दी के आस-पास माना है।

३—मूलाचार, ४।६९ मिलाइए—उत्तराध्ययन, ३६।२५७
" ४।७० " " ३६।२५८
" ४।७२ " " ३६।२६०
" ४।७३ " " ३६।२६१

दशवैकालिक, उत्तराध्ययन, आवश्यक तथा ओघनिर्युक्ति-पिण्डनिर्युक्ति को 'मूल-सूत्र' वर्ग मे स्थापित करने वाले आचार्य के मन में वही कल्पना रही है, जो कल्पना आचार्य वट्टकेर के मन मे 'मूलाचार' के अधिकार-निर्माण मे रही है। 'मूल-सूत्रो' की विषय-वस्तु मे जो अधिकार तुलनीय है, वे ये है—

(१) मूल-गुणाधिकार	मिलाइए—दशवैकालिक, उत्तराध्ययन
(४) समाचाराधिकार	मिलाइए—ओघनिर्युक्ति
(६) पिण्ड-शुद्धि अधिकार	मिलाइए—पिण्डनिर्युक्ति
(७) षडावश्यकाधिकार	मिलाइए—आवश्यक

इस सादृश्य के आधार पर दशवैकालिक, उत्तराध्ययन आदि को 'मूल-सूत्र' वर्ग मे रखने का हेतु बुद्धिगम्य हो जाता है।

४ : मूल-सूत्र वर्ग की कल्पना और श्रुत-पुरुष

'मूल-सूत्र' वर्ग की कल्पना का एक कारण श्रुत-पुरुष (आगम-पुरुष) भी हो सकता है। नदी-चूर्णि में श्रुत-पुरुष की कल्पना की गई है। पुरुष के शरीर मे बारह अग होते है—दो पैर, दो जघाएँ, दो ऊरु, दो गात्रार्ध (उदर और पीठ), दो भुजाएँ, ग्रीवा और शिर। आगम-साहित्य में जो बारह अग है, वे ही श्रुत-पुरुष के बारह अग है।[1] अग-बाह्य श्रुत-पुरुष के उपाग स्थानीय है। यह परिकल्पना अग-प्रविष्ट और अग-बाह्य—इन दो आगमिक वर्गो के आधार पर हुई है। इसमें 'मूल' और 'छेद' की कोई चर्चा नही है। हरिभद्रसूरि (विक्रम की ८ वी शताब्दी) और आचार्य मलयगिरि (विक्रम की १३ वी शताब्दी) के समय तक भी श्रुत-पुरुष की कल्पना में अग-प्रविष्ट और अग-बाह्य—ये दो ही परिपार्श्व रहे है। इन दोनो आचार्यो ने चूर्णि का अनुसरण किया है। उसमे कोई नई बात नही जोडी है।[2] आचार्य मलयगिरि ने तो अग-प्रविष्ट तथा आचाराग आदि को भी 'मूल-भूत' कहा है।[3] श्रुत-पुरुष की प्राचीन रेखा-कृतियो मे अग-प्रविष्ट श्रुत की स्थापना इस प्रकार है —

१—नदी चूर्णि, पृ० ४७

इच्चेतस्स सुतपुरिसस्स ज सुत अंगभागठितं तं अगपविट्ठं भण्णइ।

२—नंदी, हारिभद्रीय वृत्ति, पृ० ९०।

३—नदी, मलयगिरीया वृत्ति, पत्र २०३

यद् गणधरदेवकृत तदगप्रविष्टं मूलभूतमित्यर्थ, गणधरदेवा हि मूलभूतमाचारादिकं श्रुतमुपरचयन्ति।

१—दायाँ पैर = आचारांग
२—बायाँ पैर = सूत्रकृतांग
३—दाईं जंघा = स्थानांग
४—बाईं जंघा = समवायांग
५—दायाँ ऊरु = भगवती
६—बायाँ ऊरु = ज्ञाताधर्मकथा
७—उदर = उपासकदशा
८—पीठ = अन्तकृद्दशा
९—दाईं भुजा = अनुत्तरोपपातिकदशा
१०—बाईं भुजा = प्रश्नव्याकरण
११—ग्रीवा = विपाक
१२—सिर = दृष्टिवाद

इस स्थापना के अनुसार भी मूल-स्थानीय (चरण-स्थानीय) आचारांग और सूत्रकृतांग है।[1]

श्रुत-पुरुष की अन्य रेखा-कृतियों में स्थापना भिन्न प्रकार से मिलती है। उनमें मूल-स्थानीय चार सूत्र हैं—आवश्यक, दशवैकालिक, पिण्डनिर्युक्ति और उत्तराध्ययन। नंदी और अनुयोगद्वार को व्याख्या-ग्रन्थों (या चूलिका-सूत्रों) के रूप में 'मूल' से भी नीचे प्रदर्शित किया है।[2]

५ : अध्ययन-क्रम का परिवर्तन और मूल-सूत्र

आगमिक-अध्ययन के क्रम मे जो परिवर्तन हुआ, उससे भी इसकी पुष्टि होती है। दशवैकालिक की रचना से पूर्व आचाराग के बाद उत्तराध्ययन पढा जाता था। दशवैकालिक की रचना होने के पश्चात् दशवैकालिक के बाद उत्तराध्ययन पढा जाने लगा।[1]

प्राचीन काल मे आचाराग के प्रथम अध्ययन 'शास्त्र-परिज्ञा' का अध्ययन करा कर शैक्ष की उपस्थापना की जाती थी और फिर वह दशवैकालिक के चतुर्थ अध्ययन 'षड्जीवनिका' का अध्ययन करा कर की जाने लगी।[2]

प्राचीन काल में आचाराग के द्वितीय अध्ययन के पंचम उद्देशक के 'आमगन्ध' सूत्र का अध्ययन करने के बाद मुनि 'पिण्डकल्पी' होता था। फिर वह दशवैकालिक के पाँचवें अध्ययन 'पिण्डैषणा' के अध्ययन के पश्चात् 'पिण्डकल्पी' होने लगा।[3]

ये तीनो तथ्य इस बात के साक्षी है कि एक समय आचाराग का स्थान दशवैकालिक ने ले लिया। आचार की जानकारी के लिए आचाराग मूल-भूत था, वैसे ही दशवैकालिक भी आचार-ज्ञान के लिए मूल-भूत बन गया। सभव है आदि में पढे जाने के कारण तथा मुनि की अनेक मूल-भूत प्रवृत्तियो के उद्बोधक होने के कारण इन्हें 'मूल-सूत्र' की सज्ञा दी गई।

६ : मूल-सूत्रों की सख्या

१—उपाध्याय समयसुन्दर ने 'सामाचारी शतक' में (इसकी रचना विक्रम सं० १६७२ मे हुई थी) 'मूल-सूत्र' चार माने है—(१) दशवैकालिक, (२) ओघनिर्युक्ति, (३) पिण्डनिर्युक्ति और (४) उत्तराध्ययन।

१—व्यवहार भाष्य, उद्देशक ३, गाथा १७६.

आयारस्स उ उवरि, उत्तरज्झयणा उ आसि पुव्वं तु।
दसवेयालिय उवरि, इयाणि कि ते न होती उ॥

२—वही, उद्देशक ३, गाथा १७४

पुव्वं सत्थपरिण्णा, अधीय पढियाइ होउ उवट्ठवणा।
इण्हि छज्जीवणया, कि सा उ न होउ उवट्ठवणा॥

३—वही, उद्देशक ३, गाथा १७५

बितिंयमि बंभचेरे, पचमउद्देस आमगंधम्मि।
सुत्तमि पिंडकप्पी, इइ पुण पिंडेसणाएओ॥

२—भावप्रभसूरि (१८ वी शताब्दी) ने भी 'मूल-सूत्र' चार माने है—(१) उत्तराध्ययन, (२) आवश्यक, (३) पिण्डनिर्युक्ति-ओघनिर्युक्ति और (४) दशवैकालिक।[1] ये नाम उपाध्याय समयसुन्दर के नामो से भिन्न है। इसमें पिण्डनिर्युक्ति और ओघनिर्युक्ति को एक मानकर 'आवश्यक' को भी 'मूल-सूत्र' माना गया है।

३—स्थानकवासी[2] और तेरापन्थ[3] सम्प्रदाय मे उत्तराध्ययन, दशवैकालिक, नदी और अनुयोगद्वार—इन चार सूत्रो को 'मूल' माना गया है।

४—आधुनिक विद्वानो ने 'मूल सूत्रो' की संख्या और क्रम-व्यवस्था निम्न प्रकार मानी है

(क) प्रो० वेबर और प्रो० बूलर—उत्तराध्ययन, आवश्यक और दशवैकालिक को 'मूल-सूत्र' ठहराते है।

(ख) डॉ० सरपेन्टियर, डॉ० विन्टरनित्ज और डॉ० ग्यारिनो—उत्तराध्ययन, आवश्यक, दशवैकालिक और पिण्डनिर्युक्ति को 'मूल-सूत्र' मानते है।

(ग) डॉ० सुब्रिंग—उत्तराध्ययन, दशवैकालिक, आवश्यक, पिण्डनिर्युक्ति और ओघनिर्युक्ति को 'मूल-सूत्रो' की सज्ञा देते है।[4]

(घ) प्रो० हीरालाल कापडिया—आवश्यक, उत्तराध्ययन, दशवैकालिक, दशवैकालिक चूलिकाएँ, पिण्डनिर्युक्ति और ओघनिर्युक्ति को 'मूल-सूत्र' कहते है।[5]

उक्त सब अभिमतो को संकलित करने पर 'मूल-सूत्रो' की संख्या आठ हो जाती है—आवश्यक, दशवैकालिक, दशवैकालिक-चूलिकाएँ, उत्तराध्ययन, पिण्डनिर्युक्ति, ओघनिर्युक्ति, अनुयोगद्वार और नदी।

आगमो के वर्गीकरण में आवश्यक का स्थान बहुत महत्त्वपूर्ण है। अनग-प्रविष्ट आगमो के दो विभाग किए गए है। उनमे पहला आवश्यक और दूसरा आवश्यक-व्यतिरिक्त है। दशवैकालिक, उत्तराध्ययन आदि आगम दूसरे विभाग के अन्तर्गत है, जब कि आवश्यक का अपना स्वतंत्र स्थान है। इसलिए इसे 'मूल-सूत्रों' की सख्या में सम्मिलित करने का कोई हेतु प्रस्तुत नही है।

१—जैनधर्मवरस्तोत्र, श्लोक ३० की स्वोपज्ञ वृत्ति—अथ उत्तराध्ययन-आवश्यक-पिण्डनिर्युक्ति तथा ओघनिर्युक्ति-दशवैकालिक—इति चत्वारि मूलसूत्राणि।
२—श्री रत्नमुनि स्मृति ग्रन्थ, आगम और व्याख्या साहित्य, पृष्ठ २७।
३—श्रीमज्जयाचार्य कृत प्रश्नोत्तर तत्त्वबोध, आगमाधिकार, पृ० ७३-७४।
४—ए हिस्ट्री ऑफ दी केनोनिकल लिटरेचर ऑफ दी जैन्स, पृष्ठ ४४-४५।
५—वही, पृ० ४८।

ओघनिर्युक्ति और पिण्डनिर्युक्ति—ये दोनो आगम नही है, किन्तु व्याख्या-ग्रन्थ है। पिण्डनिर्युक्ति दशवैकालिक के पाँचवें अध्ययन—पिण्डैषणा—की व्याख्या है। ओघनिर्युक्ति ओघ-समाचारी की व्याख्या है। यह आवश्यक निर्युक्ति का एक अश है। विस्तृत कलेवर होने के कारण इसे पृथक्-ग्रन्थ का रूप दिया गया।[1] इसलिए इन्हें 'मूल-सूत्रो' की संख्या मे सम्मिलित करने की अपेक्षा दशवैकालिक और आवश्यक के सहायक ग्रन्थो के रूप में स्वीकार करना अधिक सगत लगता है।

अनुयोगद्वार और नदी—ये दोनो चूलिका-सूत्र है। इन्हें 'मूल-सूत्र' वर्ग में रखने का कोई हेतु उपलब्ध नही है। सम्भव है बत्तीस सूत्रो की मान्यता के साथ (वि० १६ वी शताब्दी मे) इन्हे 'मूल-सूत्र' वर्ग मे रखा गया। श्रीमज्जयाचार्य ने पूर्व प्रचलित परम्परा के अनुसार अनुयोगद्वार और नदी को 'मूल-सूत्र' माना है। किन्तु इस पर उन्होंने अपनी ओर से कोई मीमासा नही की है।

इस प्रकार 'मूल-सूत्र' की सख्या दो रह जाती है—दशवैकालिक और उत्तराध्ययन।

७ : मूल-सूत्रों का विभाजन-काल

दशवैकालिक की निर्युक्ति, चूर्णि और हारिभद्रीय वृत्ति मे मूल-सूत्रो की कोई चर्चा नही है।

इसी प्रकार उत्तराध्ययन की निर्युक्ति, चूर्णि और शान्त्याचार्य कृत बृहद् वृत्ति मे भी उसकी कोई चर्चा नहीं है।

इससे यह स्पष्ट है कि विक्रम की ११ वी शताब्दी तक 'मूल-सूत्र' वर्ग की-स्थापना नही हुई थी।

धनपाल का अस्तित्व-काल ग्यारहवी शताब्दी है। उन्होने 'श्रावक-विधि' में पैंतालीस आगमो का उल्लेख किया है।[2] इससे यह अनुमान होता है कि धनपाल से पहले ही आगमो की सख्या पैंतालीस निर्धारित हो चुकी थी। प्रद्युम्नसूरि (वि० की १३ वी शताब्दी) कृत विचारसार-प्रकरण मे भी आगमो की सख्या पैतालीस है, किन्तु इनमें अग-उपाग विभाग नही है। उसमे ग्यारह अग और चौंतिस ग्रन्थो का उल्लेख किया है।[3]

१-आवश्यक निर्युक्ति, गाथा ६६५, वृत्ति पत्र ३४१
साम्प्रतमोघनिर्युक्तिर्वक्तव्या, सा च महत्वात् पृथग्ग्रन्थान्तररूपा कृता।

२-समयसुन्दर गणी विरचित श्री गाथासहस्री मे धनपाल कृत 'श्रावक विधि' का उद्धरण है। उसमे पाठ आता है—पणयालीस आगम (श्लोक २९७, पृ० १८)।

३-विचारसार गाथा ३४४-३५१।

प्रभावक-चरित मे अग, उपाग, मूल और छेद—आगमो के ये चार विभाग प्राप्त है।[1] यह विक्रम संवत् १३३४ की रचना है।

इससे यह फलित होता है कि 'मूल-सूत्र' वर्ग की स्थापना चौदहवी शताब्दी के पूर्वार्द्ध में हो चुकी थी। फिर उपाध्याय समयसुन्दर के सामाचारी शतक मे इसका उल्लेख प्राप्त होता है।[2]

८ : दशवैकालिक और उत्तराध्ययन का स्थान

जैन-आगमो मे दशवैकालिक और उत्तराध्ययन का स्थान बहुत महत्त्वपूर्ण है। श्वेताम्बर और दिगम्बर—दोनो परम्पराओ के आचार्यों ने इनका बार-बार उल्लेख किया है। दिगम्बर-साहित्य मे अंग-बाह्य के चौदह प्रकार बतलाए गए है। उनमें सातवाँ दशवैकालिक और आठवाँ उत्तराध्ययन है।[3]

श्वेताम्बर-साहित्य में अग-बाह्य श्रुत के दो मुख्य विभाग है—(१) कालिक और (२) उत्कालिक। कालिक सूत्रो की गणना में पहला स्थान उत्तराध्ययन का और उत्कालिक सूत्रो की गणना मे पहला स्थान दशवैकालिक का है।[4]

९ : दशवैकालिक : आकार और विषय-वस्तु

दशवैकालिक के दस अध्ययन है और चूँकि वह विकाल मे रचा गया, इसलिए इसका नाम दशवैकालिक रखा गया। इसके कर्त्ता श्रुतकेवली शय्यभव है। अपने पुत्र—शिष्य मनक के लिए उन्होने इसकी रचना की। वीर सम्वत् ७२ के आस-पास 'चम्पा' मे इसकी रचना हुई।

१—प्रभावक चरितम्, दूसरा आर्यरक्षित प्रबन्ध

ततश्चतुर्विध. कार्योऽनुयोगोऽत परं मया।
ततोऽङ्गोपाङ्गमूलाख्यग्रन्थच्छेदकृतागम ॥२४१॥

२—सामाचारी शतक, पत्र ७६।

३—(क) कषायपाहुड (जयधवला सहित) भाग १, पृष्ठ १३।२५
दसवेयालियं उत्तरज्झयणं।

(ख) गोम्मटसार (जीव-काण्ड), गाथा ३६७
दसवेयालं च उत्तरज्झयणं।

४—नंदी, सूत्र ४३
से कि तं कालियं? कालियं अणेगविहं पण्णत्त, तंजहा—उत्तरज्झयणाइं
से कि तं उक्कालियं? उक्कालियं अणेगविहं पण्णत्तं, तंजहा—दसवेयालियं

इसकी दो चूलिकाएँ है। अध्ययनो के नाम, श्लोक, सख्या और विषय इस प्रकार है —

अध्ययन	श्लोक	सूत्र	विषय
१ द्रुमपुष्पिका[1]	५		धर्म-प्रशसा और माधुकरी वृत्ति।
२ श्रामण्यपूर्वक	११		सयम में धृति और उसकी साधना।
३ क्षुल्लकाचार	१५		आचार और अनाचार का विवेक।
४ धर्म-प्रज्ञप्ति या षड्जीवनिका	२८	२३	जीव-सयम तथा आत्म-सयम का विचार।
५ पिण्डैषणा	१५०		गवेषणा, ग्रहणैषणा और भोगैषणा की शुद्धि।
६ महाचार	६८		महाचार का निरूपण।
७ वाक्यशुद्धि	५७		भाषा-विवेक।
८ आचार-प्रणिधि	६३		आचार का प्रणिधान।
९ विनय-समाधि	६२	७	विनय का निरूपण।
१० सभिक्षु	२१		भिक्षु के स्वरूप का वर्णन।
चूलिका			
१ रतिवाक्या	१८	१	सयम में अस्थिर होने पर पुन स्थिरीकरण का उपदेश।
२ विविक्तचर्या	१६		विविक्तचर्या का उपदेश।

निर्युक्तिकार के अनुसार दशवैकालिक का समावेश चरण-करणानुयोग में होता है। इसका फलित अर्थ यह है कि इसका प्रतिपाद्य आचार है। वह दो प्रकार का होता है—(१) चरण—व्रत आदि और (२) करण—पिण्ड-विशुद्धि आदि।[2]

धवला के अनुसार दशवैकालिक आचार और गोचर की विधि का वर्णन करने वाला सूत्र है।[3] अगपण्णत्ति के अनुसार इसका विषय गोचर-विधि और पिण्ड-विशुद्धि

१—तत्त्वार्थवृत्ति श्रुतसागरीय, मे इसका नाम 'वृक्षकुसुम' दिया है—देखिए पृ० ११ पा० टि० २।

२—दशवैकालिक निर्युक्ति, गाथा ४

अपुहुत्तपुहुत्ताइ, निद्दिसिउ एत्थ होइ अहिगारो।
चरणकरणाणुओगेण, तस्स दारा इमे हुति॥

३—षट्खण्डागम, सत्प्ररूपणा (१।१।१), पृ० ९७

दसवेयालिय आयार-गोयर-विहि वण्णेइ।

है ।[1] तत्त्वार्थवृत्ति श्रुतसागरीय मे इसे वृक्ष-कुसुम आदि का भेद-कथक और यतियो के आचार का कथक कहा है ।[2]

उक्त प्रतिपादन से दशवैकालिक का स्थूल रूप हमारे सामने प्रस्तुत हो जाता है, किन्तु आचार्य शय्यभव ने आचार-गोचर की प्ररूपणा के साथ-साथ अनेक महत्त्वपूर्ण विषयो का निरूपण किया है । जीव-विद्या, योग-विद्या आदि के अनेक सूक्ष्म-बीज इसमें विद्यमान है।

१० : दशवैकालिक : निर्यूहण कृति

रचना दो प्रकार की होती है—स्वतत्र और निर्यूहण । दशवैकालिक निर्यूहण कृति है, स्वतन्त्र नही । आचार्य शय्यभव श्रुतकेवली थे । उन्होने विभिन्न पूर्वो से इसका निर्यूहण किया—यह एक मान्यता है ।

दशवैकालिक की निर्युक्ति के अनुसार चौथा अध्ययन—आत्मप्रवाद पूर्व से, पाँचवाँ अध्ययन—कर्मप्रवाद पूर्व से, सातवाँ अध्ययन—सत्यप्रवाद पूर्व से और शेष सभी अध्ययन—प्रत्याख्यान पूर्व की तीसरी वस्तु से उद्धृत किए गए है ।[3]

दूसरी मान्यता के अनुसार इसका निर्यूहण गणिपिटक द्वादशागी से किया गया है ।[4] किस अध्ययन का किस अग से उद्धरण किया गया, इसका कोई उल्लेख प्राप्त नहो है । किन्तु तीसरे अध्ययन का विषय सूत्रकृताग १।६ से प्राप्त होता है । चतुर्थ अध्ययन का विषय भी सूत्रकृताग १।११।७,८ तथा आचाराग १।१।१ का क्वचित् सक्षेप और क्वचित् विस्तार है। पाँचवें अध्ययन का विषय आचाराग के दूसरे अध्ययन लोक-विजय

१–अंगपण्णत्ति, ३।२४ ·

जदि गोचरस्स विहि, पिडविसुद्धि च ज परूवेहि ।
दसवेआलिय सुत्तं, दह काला जत्थ संवुत्ता ॥

२–तत्त्वार्थवृत्ति श्रुतसागरीय, पृष्ठ ६७

वृक्षकुसुमादीना दशाना भेदकथकं यतीनामाचारकथकच दशवैकालिकम् ।

३–दशवैकालिक निर्युक्ति, गाथा, १६,१७

आयप्पवायपुव्वा, निज्जूढा होइ धम्मपन्नत्ती ।
कम्मप्पवायपुव्वा, पिडस्स उ एसणा तिविहा ॥
सच्चप्पवायपुव्वा, निज्जूढा होइ वक्कसुद्धी उ ।
अवसेसा निज्जूढा, नवमस्स उ तइयवत्थूओ ॥

४–वही, गाथा १८

बीओऽवि अ आएसो, गणिपिडगाओ दुवालसगाओ ।
एअं किर णिज्जूढं, मणगस्स अणुग्गहट्ठाए ॥

के पाँचवें उद्देशक और आठवें विमोह अध्ययन के दूसरे उद्देशक से प्राप्त होता है। छठा अध्ययन समवायांग समवाय १८ के "वयछक्कं कायछक्कं, अकप्पो गिहिभायणं। पलियंक निसिज्जा य, सिणाणं सोभवज्जणं॥" श्लोक का विस्तार है। सातवें अध्ययन के बीज आचारांग १।१।६।५ में मिलते है। आठवें अध्ययन का आंशिक विषय स्थानांग ८।५९८,६०१,६१५ से मिलता है। आंशिक तुलना अन्यत्र भी प्राप्त होती है।[1]

आचारांग के दूसरे श्रुतस्कंध की प्रथम चूला के अध्ययन १ और ४ से क्रमशः इसके पाँचवें और सातवें अध्ययन की तुलना होती है। किन्तु हमारे अभिमत मे वह दशवैकालिक के बाद का निर्यूहण है। इसके दूसरे, नवें तथा दसवें अध्ययन का विषय उत्तराध्ययन के प्रथम और पन्द्रहवें अध्ययन से तुलित होता है। किन्तु वह अंग-बाह्य आगम है।

यह सूत्र श्वेताम्बर और दिगम्बर दोनो परम्पराओ में मान्य रहा है। इसके कर्तृत्व के विषय मे भी श्वेताम्बर-साहित्य में प्रामाणिक ऊहापोह है। श्वेताम्बर आचार्यो ने इस पर निर्युक्ति, भाष्य, चूर्णि, टीका, दीपिका, अवचूरि आदि-आदि व्याख्या-ग्रन्थ लिखे है।

दिगम्बर-परम्परा मे भी यह सूत्र प्रिय रहा है। धवला, जयधवला, तत्त्वार्थवार्तिक (राजवार्तिक), तत्त्वार्थवृत्ति श्रुतसागरीय आदि में इस विषय का उल्लेख मिलता है। परन्तु इसके निश्चित कर्तृत्व तथा स्वरूप का कही भी विवरण प्राप्त नही होता। इसके कर्तृत्व का उल्लेख करते हुए आरातीयैराचार्यैर्निर्यूढ—इतना मात्र सकेत देते है। कब तक यह सूत्र उनको मान्य रहा और कब से यह अमान्य हुआ—यह प्रश्न आज भी असमाहित है।

११ : दशवैकालिक : व्याकरण-विमर्श

प्रस्तुत सूत्र में अलाक्षणिक (व्याकरण-असिद्ध) मकार के अनेक प्रयोग मिलते है—वत्थगन्धमलंकारं (२।२), आहारमाईणि (६।४६), निक्खम्ममाणाए (१०।१)।

विभक्ति और वचन के व्यत्यय भी मिलते है—पीडए (७।२८)—यहाँ चतुर्थी के अर्थ में प्रथमा विभक्ति है। वुद्धवयणे (१०।६)—यहाँ तृतीया के अर्थ में सप्तमी विभक्ति है।

अच्छन्दा जे न भुजन्ति, न से चाइ त्ति वुच्चइ (२।२)—यहाँ 'भुजन्ति' वहुवचन है और 'से चाइ' एकवचन है।

इस प्रकार कुछेक उदाहरण हमने प्रस्तुत किए है। विस्तार के लिए देखें—"दशवैकालिक : एक समीक्षात्मक अध्ययन", अध्ययन १ व्याकरण-विमर्श।

१२ : दशवैकालिक : भाषा की दृष्टि से

इसमे अर्धमागधी और जैन-महाराष्ट्री आदि के सवलित प्रयोग है। 'हत्थंसि वा', 'पायंसि वा' (४। सूत्र २३) में अर्धमागधी के प्रयोग है। प्राकृत में सप्तमी के एकवचन के दो रूप वनते है—'हत्थे, हत्थम्मि'।[1] 'हत्थसि' यह अर्धमागधी मे वनता है। 'जे' (२।३), 'करेमि' (४। सूत्र १०)—इनमें 'ओकार' के स्थान में जो 'एकार' है, वह अर्धमागधी का लक्षण है।[2]

मणसा (८।३) जोगसा (८।१७)—ये अर्धमागधी के प्रयोग है। प्राकृत में ये नही मिलते।

वहवे (७।४८)—वहु शब्द का प्रथमा का वहुवचन, जसोकामी (२।७), दोच्चे (४।सूत्र १२), तच्चे (४।सूत्र १३), सोच्चा (४।११), लद्धूण (५।२।४७), ऊसंढं (५।२।२५), संवुड (५।१।८३), परिवुड (६।१।१५), कड (४। २०), कट्टु (चूलिका १।१४) आदि-आदि तथा मकार के अलाक्षणिक प्रयोग—ये सब अर्धमागधी के प्रयोग हैं, जिन्हें हेमचन्द्र ने अपने प्राकृत-व्याकरण में आर्षप्रयोग कहा है। हियट्ठयाए (४।सूत्र १७)—यहाँ स्वार्थ मे 'या' और 'य' के स्थान मे 'एकार' का प्रयोग है, जो प्राकृत-सिद्ध नही है। तेइंदिया में 'ति' का 'ते' हुआ है। यह अर्धमागधी का प्रयोग है।[3] कही शौरसेनी के लक्षण भी मिलते है जैसे—अत्तवं (आत्मवान्) (८।४८)। यहाँ 'न' को 'म' किया है, जो शौरसेनी में होता है।[4]

१–हेमशब्दानुशासन, ८।३।११ डे म्मि डे।

२–वही, ८।४।२८७.
अत एत्सौ पुंसि मागध्याम्।

३–प्राकृत भाषाओं का व्याकरण
पैरा ४३८, पृष्ठ ६५१।

४–हेमशब्दानुशासन, ८।४।२६४ मो वा।

दशवैकालिक की द्वितीय चूर्णि के अन्त में कोई प्रशस्ति नहीं है और न ग्रन्थकार का नाम ही उपलब्ध है। पारंपरिक अनुश्रुति से यह जिनदास महत्तर कृत मानी जाती है।

उत्तराध्ययन (अ० ३०) चूर्णि पृ० २७४ मे एक उल्लेख आता है—"पष्ठोऽपि चित्तो नानाप्रकारो प्रकीर्णतपोऽभिधीयते, तदन्यत्राभिहित, शेष दशवैकालिकचूर्णौ अभिहितम्।" इस वाक्य से दशवैकालिक और उत्तराध्ययन की चूर्णियाँ एक-कर्तृक प्रतीत होती है। दशवैकालिक चूर्णि (पृ० २१) मे इत्वरिक तप का वर्णन बहुत सक्षिप्त रूप मे किया गया है। शेष वर्णन विस्तृत है। उत्तराध्ययन चूर्णि (पृ० २७४) मे इत्वरिक तप के पाँच प्रकारो का संक्षिप्त वर्णन किया गया है। छठे प्रकीर्ण तप के कही अन्यत्र वर्णन करने की सूचना दी है और शेष वर्णन दशवैकालिक चूर्णि मे किया गया है—ऐसा लिखा है।

दशवैकालिक (१।१) की चूर्णि मे पृ० २१ से ३७ तक तप का विस्तृत वर्णन मिलता है। इसीलिए उत्तराध्ययन मे उन्होने इसकी पुनरुक्ति नही की। सही अर्थ मे तप का इतना विस्तृत वर्णन उत्तराध्ययन के तपोध्ययन (अ० ३०) की चूर्णि में करना चाहिए था किन्तु दशवैकालिक चूर्णि की रचना पहले की थी। वहाँ प्रथम अध्ययन के प्रथम श्लोक मे आए 'तप' शब्द का विशद वर्णन कर डाला। इसीलिए उत्तराध्ययन मे, जो दशवैकालिक की चूर्णि मे नहीं था, उसी का उल्लेख कर शेष के लिए दशवैकालिक चूर्णि में अभिहित की सूचना दे दी।

मुनि श्री पुण्यविजयजी के मतानुसार अगस्त्यसिंह की चूर्णि का रचना-काल विक्रम की तीसरी शताब्दी के आस-पास है।[1]

अगस्त्यसिंह स्थविर ने अपनी चूर्णि मे तत्त्वार्थसूत्र, आवश्यकनिर्युक्ति, ओघनिर्युक्ति, व्यवहारभाष्य, कल्पभाष्य आदि ग्रन्थो का उल्लेख किया है। इनमे अन्तिम रचनाएँ भाष्य है। उनके रचना-काल के आधार पर अगस्त्यसिंह का समय पुन अन्वेषणीय है।

अगस्त्यसिंह ने पुस्तक रखने की औत्सर्गिक और आपवादिक—दोनो विधियो की चर्चा की है।[2] इस चर्चा का आरम्भ जब देवर्द्धिगणी ने आगम पुस्तकारूढ किए तब या उसके आस-पास हुआ होगा। अगस्त्यसिंह यदि देवर्द्धिगणी के उत्तरवर्त्ती और जिनदास के पूर्ववर्ती हो तो इनका समय विक्रम की ५-६ठी शताब्दी हो जाता है।

१—बृहत्कल्प भाष्य, भाग ६, आमुख पृष्ठ ४।

२—दशवैकालिक १।१ अगस्त्य चूर्णि

उच्चारणं सजमो—पोत्थएसु घेप्पतेसु असजमो महाघणमोल्लेसु वा दूसेसु, वज्जणं तु संजमो, कालं पडुच्च चरणकरणट्ठं अव्वोच्छित्तिनिमित्त गेण्हतस्स संजमो भवति।

और पायचन्द्र सूरि तथा धर्मसिंह मुनि (विक्रम की १८वी शताब्दी) ने गुजराती-राजस्थानी-मिश्रित भाषा में टब्बा लिखा। किन्तु इनमे कोई उल्लेखनीय नया चिन्तन और स्पष्टीकरण नही है। ये सब सामयिक उपयोगिता की दृष्टि से रचे गए है। अत इसकी महत्त्वपूर्ण व्याख्याएँ तीन ही है—(१) अगस्त्य चूर्णि, (२) जिनदास चूर्णि और (३) हारिभद्रीय वृत्ति।

अगस्त्यसिंह स्थविर का चूर्णि इन सबमे प्राचीनतम है, इसलिए यह सर्वाधिक मूल-स्पर्शी है। जिनदास महत्तर अगस्त्यसिंह स्थविर के आस-पास भी चलते ह और कही-कही इनसे दूर भी चले जाते है। टीकाकार तो कही-कही बहुत दूर चले जाते है।[1]

लगता है चूर्णि के रचना-काल मे भी दशवैकालिक की परम्परा अविच्छिन्न नही रही थी। अगस्त्यसिंह स्थविर ने अनेक स्थलो पर अर्थ के कई विकल्प किए है। उन्हे देखकर सहज ही जान पडता है कि वे मूल अर्थ के बारे में असंदिग्ध नही है।

आर्य सुहस्ती ने एक बार जो आचार-शैथिल्य की परम्परा का सूत्रपात किया वह आगे चल कर उग्र बन गया। ज्यो-ज्यो जैन आचार्य लोक-सग्रह की ओर अधिक झुके, त्यो-त्यो अपवादो की बाढ-सी आ गई। वीर-निर्वाण की नवी शताब्दी (८५०) में चैत्यवास का प्रारम्भ हुआ। इसके बाद शिथिलाचार की परम्परा बहुत ही उग्र हो गई। देवर्द्धिगणी क्षमाश्रमण (वीर-निर्वाण की दसवीं शताब्दी) के बाद चैत्यवास का प्रभुत्व बढा और वह जैन परम्परा पर छा गया। अभयदेव सूरि ने इस स्थिति का चित्रण इन शब्दो मे किया है—"देवर्द्धिगणी क्षमाश्रमण तक की परम्परा को मैं भाव-परम्परा मानता हू। इसके बाद शिथिलाचारियो ने अनेक द्रव्य-परम्पराओ का प्रवर्तन कर दिया।"[2] आचार-शैथिल्य की परम्परा मे जो ग्रन्थ लिखे गए, उनमे ऐसे अपवाद भी हैं जो आगम मे प्राप्त नही है। प्रस्तुत आगम की चूर्णि और टीका तात्कालिक वातावरण मे मुक्त नही है। इन्हे पढते समय इस तथ्य को नही भूल जाना चाहिए।

उत्सर्ग की भाँति अपवाद भी मान्य होते ह। पर उनकी भी एक निश्चित सीमा है। जिनका बनाया हुआ आगम प्रमाण होता है, उन्ही के किए अपवाद मान्य हो सकते ह। वर्तमान मे जो व्याख्याएँ उपलब्ध है, वे चौदहपूर्वी या दसपूर्वी की नही हैं, इसलिए उन्हें आगम (अर्थागम) की कोटि में नही रखा जा सकता।

१—उदाहरण के लिए देखे दशवैकालिक, भाग २, पृष्ठ २६६, टिप्पण १७७।

२—आगम अट्ठुत्तरी, गाथा १४

देवड्ढिखमासमणजा, परंपरं भावओ वियाणेमि।
सिढिलायारे ठविया, दव्वेण परंपरा बहुहा॥

परम्परा मिटी नही। कुछ आगमो के पाठ-भेद केवल आगमो की व्याख्याओ मे उपलब्ध है। व्याख्याकार—'नागार्जुनीयास्तु एव पठन्ति' लिखकर उसका निर्देश करते रहे है और कुछ आगमो के पाठ-भेद मूल से ही सम्बद्ध रहे, इस कारण से उनका परम्परा-भेद चलता ही रहा। दशवैकालिक सम्भवत इसी दूसरी कोटि का आगम है। इसकी उपलब्ध व्याख्याओ मे सबसे प्राचीन व्याख्या अगस्त्य चूर्णि है। उसमे अनेक स्थलो पर परम्परा-भेद का उल्लेख है।[1] इस सारी वस्तु-सामग्री को देखते हुए लगता है कि चूर्णिकार और टीकाकार के सामने भिन्न-भिन्न परम्परा के आदर्श रहे है और टीकाकार ने अपनी परम्परा के आदर्श और व्याख्या-पद्धति को महत्त्व दिया हो तथा सम्भव है कि परम्परा-भेद के कारण चूर्णियो की उपेक्षा की हो। कल्पना की इस भूमिका पर पहुँचने के बाद चूर्णि एवं टीका के पाठ और अर्थ के भेद की पहेली सुलझ जाती है।

दशवैकालिक के रचना-काल, रचना-शैली, व्याकरण-विमर्श, छन्द-विमर्श आदि विषयो की विस्तृत चर्चा हम 'दशवैकालिक एक समीक्षात्मक अध्ययन' मे कर चुके है। यहाँ हम उत्तराध्ययन के बारे मे कुछ विस्तार से विचार करेंगे।

१४ : उत्तराध्ययन

आलोच्यमान आगम का नाम 'उत्तराध्ययन' है। इसमें दो शब्द है—'उत्तर' और 'अध्ययन'। समवायाग के—'छत्तीस उत्तरज्झयणा'[2]—इस वाक्य मे उत्तराध्ययन के 'छत्तीस अध्ययन' प्रतिपादित नही हुए है, किन्तु 'छत्तीस उत्तर अध्ययन' प्रतिपादित हुए हैं। नदी मे भी 'उत्तरज्झयणाणि' यह बहुवचनात्मक नाम मिलता है।[3] उत्तराध्ययन के अतिम श्लोक मे भी—'छत्तीस उत्तरज्झाए'—ऐसा बहुवचनात्मक नाम मिलता है।[4] निर्युक्तिकार ने 'उत्तराध्ययन' का बहुवचन में प्रयोग किया है।[5] चूर्णिकार ने छत्तीस

१—देखिए—दशवैकालिक, भाग २, पृष्ठ २२१, टिप्पण २९ तथा पृष्ठ ३५२, टिप्पण ७८।

२—समवायांग, समवाय ३६।

३—नंदी, सूत्र ४३।

४—उत्तराध्ययन ३६।२६८।

५—उत्तराध्ययन निर्युक्ति, गाथा ४
देखिये पृ० २१, पा० टि० ४।

धवलाकार (वि० ६ वी शताब्दी) के मतानुसार 'उत्तराध्ययन' उत्तर-पदो का वर्णन करता है। यह 'उत्तर' शब्द समाधान सूचक है।[1]

अगपण्णत्ति (वि० १६ वी शताब्दी) से 'उत्तर' शब्द के दो अर्थ फलित होते है—

(१) उत्तरकाल—किसी ग्रन्थ के पश्चात् पढे जाने वाले अध्ययन।

(२) उत्तर—प्रश्नो का उत्तर देने वाले अध्ययन।[2]

ये अर्थ भी 'उत्तर' और 'अध्ययनो' के सम्बन्ध की वास्तविकता पर प्रकाश डालते है।

उत्तराध्ययन में प्रश्नोत्तर-शैली से लिखित पाँच अध्ययन है—६,१६,२३,२५ और २६। आशिक रूप मे कुछ प्रश्नोत्तर अन्य अध्ययनो में भी है। इस दृष्टि से 'उत्तर' का समाधान-सूचक अर्थ संगत होते हुए भी पूर्णत व्याप्त नही है।

'उत्तरकाल' वाची अर्थ सगत होने के साथ-साथ पूर्णत व्याप्त भी है, इसलिए इस 'उत्तर' का मुख्य अर्थ यही प्रतीत होता है।

१५ : उत्तराध्ययन : रचना-काल और कर्तृत्व

उत्तराध्ययन एक कृति है। कोई भी कृति शाश्वत नही होती, इसलिए यह प्रश्न भी स्वाभाविक है कि इसका कर्त्ता कौन है ? इस प्रश्न पर सर्व प्रथम निर्युक्तिकार ने विचार किया है। चूर्णिकार ने भी इस प्रश्न को स्पष्ट शब्दो में उठाया है।[3] निर्युक्तिकार की दृष्टि में उत्तराध्ययन एक-कर्तृक नही है। उनके मतानुसार उत्तराध्ययन के अध्ययन, कर्तृत्व की दृष्टि से, चार वर्गो में विभक्त होते है—

(१) अगप्रभव

(२) जिन-भाषित

(३) प्रत्येकबुद्ध-भाषित

(४) सवाद-समुत्थित[4]

१—धवला, पृष्ठ ९७ (सहारनपुर प्रति, लिखित)
उत्तरज्झयणं उत्तरपदाणि वण्णेइ।

२—अंगपण्णत्ति ३।२५,२६
उत्तराणि अहिज्जंति, उत्तरज्झयण पदं जिणिदेहि।

३—उत्तराध्ययन चूर्णि, पृष्ठ ६
एयाणि पुण उत्तरज्झयणाणि कओ केण वा भासियाणित्ति ?

४—उत्तराध्ययन निर्युक्ति, गाथा ४
अंगप्पभवा जिणभासिया य पत्तेयबुद्धसवाया।
बंधे मुक्खे य कया छत्तीस उत्तरज्झयणा॥

निर्युक्ति मे दूसरे अध्ययन को कर्मप्रवाद-पूर्व से निर्यूढ माना गया है और इसके प्रारम्भिक वाक्य से यह फलित होता है कि वह जिन-भाषित है।

निर्युक्तिकार के चार वर्गो से कर्तृत्व पर कोई प्रकाश नही पडता, किन्तु विषय-वस्तु पर प्रकाश पडता है। दसवें अध्ययन की विषय-वस्तु भगवान् महावीर द्वारा कथित है। किन्तु उस अध्ययन के कर्त्ता भगवान् महावीर नही हैं—यह उस अध्ययन के अतिम वाक्य—'बुद्धस्स निसम्म भासिय'—से स्पष्ट है। इसी प्रकार दूसरे और उनतीसवें अध्ययन के प्रारम्भिक वाक्यो से भी यही तथ्य प्रकट होता है। छठे अध्ययन के अतिम श्लोक से भी यही सूचित होता है—

एवं से उदाहु अणुत्तरनाणी अणुत्तरदंसी अणुत्तरनाणदंसणधरे।
अरहा नायपुत्ते भगवं वेसालिए वियाहिए॥ (६।१७)

प्रत्येकबुद्ध-भाषित अध्ययन प्रत्येकबुद्ध-विरचित नही है। आठवें अध्ययन के अतिम श्लोक से इस अभिमत की पुष्टि होती हैं—

इइ एस धम्मे अक्खाए कविलेणं च विसुद्धपन्नेणं।
तरिहिन्ति जे उ काहिन्ति तेहि आराहिया दुवे लोगे॥ (८।२०)

सवाद-समुत्थित अध्ययन, नवाँ और तेईसवाँ भी नमि तया केशि-गौतम द्वारा विरचित नही है। इसका समर्थन भी उनके अन्तिम श्लोको से होता है—

एवं करेन्ति संबुद्धा पंडिया पवियक्खणा।
विणियट्टन्ति भोगेसु जहा से नमी रायरिसि॥ (९।६२)
तोसिया परिसा सव्वा सम्मग्गं समुवट्ठिया।
संथुया ते पसीयन्तु भयवं केसिगोयमे॥ (२३।८९)

इस प्रकार हम देखते है कि निर्युक्तिकार के चार वर्गो से इतना ही फलित होता कि भगवान् महावीर, कपिल, नमि और केशि-गौतम—इनके उपदेशो, उपदेश-गाथाओ या सवादो को आधार बनाकर ये अध्ययन रचे गए है। वे कब और किसके द्वारा रचे गए—इस प्रश्न का निर्युक्ति में कोई उत्तर प्राप्त नही है। चूर्णि और बृहद्वृत्ति में भी नही है। अन्य किसी साधन से भी प्रस्तुत सूत्र के कर्त्ता का नाम ज्ञात नही हो सका है। इसके रचना-काल की मीमासा मे हम इतना जान सकते है कि ये अध्ययन विभिन्न युगो मे हुए अनेक ऋषियो द्वारा उद्गीत है।

साख्य, न्याय, वैशेषिक आदि दर्शन ई० पू० ५ वी शताब्दी से लेकर ई० पू० पहली शताब्दी तक व्यवस्थित रूप धारण कर चुके थे। भगवद्गीता और उत्तरवर्ती उपनिषदो का निर्माण ई० पू० ५०० के लगभग हुआ था। आत्मा, पुनर्जन्म, मोक्ष, कर्म, ससार की क्षणभंगुरता, वैराग्य व सन्यास की चर्चा इस युग में विशेष विकसित हुई थी।

आर्य रक्षित सूरि (वि० शती प्रथम) ने आगमो के चार वर्ग किए—

(१) चरण-करणानुयोग (३) गणितानुयोग
(२) धर्मकथानुयोग (४) द्रव्यानुयोग

इस वर्गीकरण मे उत्तराध्ययन धर्मकथानुयोग के अन्तर्गत गृहीत है।[1] पर आचारात्मकअध्ययन चरण-करणानुयोग मे तथा सैद्धान्तिक अध्ययन द्रव्यानुयोग मे समाते है। इस प्रकार उत्तराध्ययन का वर्तमान स्वरूप अनेक अनुयोगो का सम्मिश्रण है। यह सम्मिश्रण देवर्द्धिगणी के सकलन-काल मे हुआ, यह बहुत सभव है।

कुछ विद्वानो का अभिमत है कि उत्तराध्ययन के पहले अठारह अध्ययन प्राचीन है और उत्तरवर्ती अठारह अध्ययन अर्वाचीन। किन्तु इस अभिमत की पुष्टि के लिए उन्होने कोई निश्चित हेतु प्रस्तुत नही किया है। यह हो सकता है कि कुछ उत्तरवर्ती अध्ययन अर्वाचीन हो, किन्तु सारे उत्तरवर्ती अध्ययन अर्वाचीन है, ऐसा मानने के लिए कोई कारण प्राप्त नही है। इकतीसवें अध्ययन में आचाराग, सूत्रकृताग आदि प्राचीन आगमो के साथ-साथ दशाश्रुतस्कन्ध, बृहत्कल्प, व्यवहार और निशीथ जैसे अर्वाचीन आगमो के नाम भी उपलब्ध होते है।[2] ये श्रुतकेवली भद्रबाहु (वीर-निर्वाण दूसरी शती) द्वारा निर्यूढ या कृत है।[3] इसलिए प्रस्तुत अध्ययन भद्रबाहु के बाद की रचना है।

१—उत्तराध्ययन चूर्णि, पृष्ठ १ :
अत्र धम्माणुयोगेनाधिकार ।

२—उत्तराध्ययन, ३१।१६-१८ :
तेवीसइ सूयगडे, रूवाहिएसु सुरेसु अ।
जे भिक्खू जयई निच्चं, से न अच्छइ मण्डले ॥
पणवीसभावणाहि, उद्देसेसु दसाइणं।
जे भिक्खू जयई निच्चं, से न अच्छइ मण्डले ॥
अणगारगुणेहि च, पकप्पम्मि तहेव य।
जे भिक्खू जयई निच्चं, से न अच्छइ मण्डले ॥

३—(क) दशाश्रुतस्कन्ध निर्युक्ति, गाथा १
वंदामि भद्दबाहुं, पाईणं चरिमसयलसुयणाणि।
सुत्तस्स कारगमिसि, दसासु कप्पे य ववहारे ॥

(ख) पंचकल्प भाष्य, गाथा २३, चूर्णि :
तेण भगवता आयारपकप्प दसाकप्प ववहारा य नवमपुव्वनीसंदभूता निज्जूढा ।

ठाइसवें अध्ययन मे अग और अग-बाह्य—इन दो आगमिक विभागो के अति-रिक्त ग्यारह अग प्रकीर्णक और दृष्टिवाद का उल्लेख भी मिलता है।[1] प्राचीन आगमो मे चौदह पूर्व ग्यारह अगो या बारह अगो के अध्ययन का वर्णन मिलता है। किन्तु अग-बाह्य या प्रकीर्णक श्रुत के अध्ययन का वर्णन नही मिलता, इसलिए यह अध्ययन भी उत्तरकालीन आगम-व्यवस्था के आस-पास की रचना प्रतीत होती है।

इस अध्ययन मे द्रव्य, गुण तथा पर्याय की परिभाषाएँ भी है। इनकी तुलना वैशेषिक दर्शन के द्रव्य, गुण और कर्म से की जा सकती है—

उत्तराध्ययन[2]	वैशेषिक दर्शन[3]
(१) द्रव्य— गुणाणमासओ दव्वं	(१) द्रव्य— क्रियागुणवत् समवायिकारणमिति द्रव्यलक्षणम्।
(२) गुण— एगदव्वस्सिया गुणा	(२) गुण— द्रव्याश्रय्यगुणवान् सयोगविभागेष्वकारणमनपेक्ष इति गुणलक्षणम्।
(३) पर्याय— लक्खणं पज्जवाणं तु उभओ अस्सिया भवे।	(३) कर्म— एकद्रव्यमगुण सयोगविभागेष्वनपेक्षकारणमिति कर्म-लक्षणम्।

...न मे द्रव्य, गुण और पर्याय की परिभाषा प्रथम बार उत्तराध्ययन में ...गमो में विवरणात्मक अर्थ ही अधिक मिलते है, सक्षिप्त परिभाषाएँ ...। इनकी पूर्ति व्याख्या-ग्रन्थो से होती है। उत्तराध्ययन मे ये परिभाषाएँ ...। प्रस्तुत अध्ययन के कर्त्ता वैशेषिक दर्शन की उक्त परिभाषाओ से ...त प्रतीत होता है। इसलिए यह अध्ययन भी अर्वाचीन संकलन में ...का अनुमान होता है। उत्तराध्ययन के प्राचीन सस्करण में कितने अध्ययन ...र्वाचीन सस्करण में कितने अध्ययन सकलित किए गये, यह निश्चय पूर्वक ...। किन्तु स्थूल रूप में इतना कहा जा सकता है कि प्राचीन सस्करण ...भाग या और अर्वाचीन परिवर्द्धन का मुख्य भाग सैद्धान्तिक है।

उत्तराध्ययन की विषय-वस्तु का उल्लेख श्वेताम्बर और दिगम्बर दोनो परम्पराओ मे मिलता है।

'जैन सिद्धान्त भवन', आरा (बिहार) मे प्राप्त धवला की प्रति (पत्र ५४५) मे मिलता है—"उत्तराध्ययन में उद्‌गम, उत्पादन और एषणा से सम्बन्धित दोषो के प्रायश्चित्तो का विधान है।"[1]

अंगपण्णत्ति में लिखा है—"बाईस परीषहो और चार प्रकार के उपसर्गों के सहन का विधान, उसका फल तथा इस प्रश्न का यह उत्तर है—यह उत्तराध्ययन का प्रतिपाद्य विषय है।"[2]

धवला मे यह भी लिखा है कि उत्तराध्ययन उत्तरपदो का वर्णन करता है।[3]

हरिवंश पुराण (वि० सं० ८४०) मे लिखा है कि उत्तराध्ययन मे वीर-निर्वाणगमन का वर्णन है।[4]

इस प्रकार दिगम्बर-साहित्य मे उत्तराध्ययन की विषय-वस्तु का जो वर्णन मिलता है, उसकी संगति उत्तराध्ययन के वर्तमान स्वरूप से नही होती। अगपण्णत्ति का विषय-वर्णन आंशिक रूप से सगत होता है। जैसे—

(१) बाईस परीषहो के सहन का विधान, देखिए—दूसरा अध्ययन।

(२) प्रश्नो के उत्तर, देखिए—उन्तीसवाँ अध्ययन।

प्रायश्चित्त विधि के वर्णन तथा महावीर के निर्वाण-प्राप्ति के वर्णन की वर्तमान उत्तराध्ययन के साथ कोई संगति नही। सभव है इन लेखको के सामने उत्ताराध्ययन का कोई दूसरा संस्करण रहा है या भ्रान्त अनुश्रुति के आधार पर ऐसा लिखा है।

दिगम्बर-साहित्य से एक बात निश्चित रूप से फलित होती है कि उत्तराध्ययन

१–उत्तरज्झयणं उग्गम्मुप्पायणेसणदोसगयपायच्छित्तविहाण कालादि विसेसिद वण्णेदि।

२–अंगपण्णत्ति, ३।२५,२६

उत्तराणि अहिज्जति, उत्तरज्झयण मदं जिणिदेहि।
वावीसपरीसहाण, उवसग्गाण च सहणविहि॥
वण्णेदि तप्फलमवि, एव पण्हे च उत्तर एवं।
कहदि गुरुसीसयाण, पइण्णिय अट्ठम तं खु॥

३–धवला, पृष्ठ ९७ (सहारनपुर प्रति)

उत्तरज्झयण उत्तरपदाणि वण्णेइ।

४–हरिवंश पुराण, १०।१३४ .

उत्तराध्ययनं वीर-निर्वाणगमन तथा।

गया प्रकीर्णक है। इसका अर्थ यह हुआ कि वह आरातीय आचार्यों (गणधरों के उत्तरकालीन आचार्यों) की रचना है।[1]

श्वेताम्बर-साहित्य मे उत्तराध्ययन की विषय-वस्तु का वर्णन वही मिलता है, जो वर्तमान उत्तराध्ययन मे प्राप्त है।[2]

वीर-निर्वाण की पहली शताब्दी की पूर्ति के साथ-साथ दशवैकालिक की रचना हो चुकी थी। उत्तराध्ययन उससे पूर्ववर्ती रचना है। वह आचाराग के बाद पढा जाने लगा था। उसे अपनी विशेषता के कारण थोडे समय में ही महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त हो चुका था। इस स्थिति के सदर्भ में यह अनुमान किया जा सकता है कि उत्तराध्ययन के प्रारम्भिक सस्करण की सकलना वीर-निर्वाण की पहली शताब्दी के पूर्वार्द्ध में ही हो चुकी थी।

उत्तराध्ययन के प्रारम्भिक सस्करण की प्राचीनता असदिग्ध है। उसकी प्राचीनता जानने के दो साधन है —

(१) भाषा-प्रयोग और

(२) सिद्धान्त।

इतनी सप्राणता के साथ प्रतिपादन नही हो सकता। इमी तथ्य के आधार पर कहा जा सकता है कि ये अध्ययन महावीर-कालीन अथवा उनके परिपार्श्व-कालीन है। सभव है कुछ अध्ययन पूर्ववर्ती भी हो।

चिकित्सा का वर्जन (२।३२,३३), परिकर्म का वर्जन (अध्ययन १९), अचेलकता का प्रतिपादन (२।३४,३५, २३।२९) तथा अचेलकता और सचेलकता की सामजस्यपूर्ण स्थिति का स्वीकार (२।१२,१३)—ये सभी जैन आचार की प्राचीनतम परम्परा के अवशेष है जो उत्तरवर्ती साहित्य मे नवीन परम्पराओ की पृष्ठभूमि में प्रश्न-चिह्न बने हुए हैं।

उत्तराध्ययन अपने मूल रूप में धर्मकथानुयोग है। इसके कथा-भाग मे भगवान् महावीर के उत्तरकालीन किसी भी राजा, मुनि या व्यक्ति का नाम नही है। इससे भी यह ज्ञात होता है कि इसका प्रारम्भिक संस्करण भगवान् महावीर के निर्वाण-काल के आस-पास ही सकलित हो गया था।

१६ : क्या उत्तराध्ययन भगवान् महावीर की अंतिम वाणी है ?

कल्पसूत्र में बताया गया है कि भगवान् महावीर कल्याणफल-विपाक वाले ५५ अध्ययनो, पाप-फल वाले ५५ अध्ययनो तथा ३६ अपृष्ट-व्याकरणो का व्याकरण कर 'प्रधान' नामक अध्ययन का निरूपण करते-करते सिद्ध-बुद्ध-मुक्त हो गए।[1]

उपर्युक्त उद्धरण के आधार पर यह माना जाता है कि छत्तीस अपृष्ट-व्याकरण वस्तुत उत्तराध्ययन के छत्तीस अध्ययन ही है। उत्तराध्ययन के अंतिम श्लोक (३६।२६८) से इसकी पुष्टि की जाती है—

इइ पाउकरे बुद्धे, नायए परिनिव्वुए।
छत्तीसं उत्तरज्झाए, भवसिद्धीयसमए॥

चूर्णिकार ने इसका अर्थ निम्न प्रकार किया है—ज्ञातकुल में उत्पन्न वर्द्धमान स्वामी छत्तीस उत्तराध्ययनो का प्रकाशन या प्रज्ञापन कर परिनिर्वाण को प्राप्त हुए।[2]

१—कल्पसूत्र, सूत्र १४६

पच्चूसकालसमयंसि सपलियकनिसन्ने पणपन्नं अज्झयणाइं कल्लाण-फलविवागाइं पणपन्न अज्झयणाइं पावफलविवागाइ छत्तीसं च अपुट्ठवागरणाइं वागरित्ता पधाणं नाम अज्झयणं विभावेमाणे २ कालगए वितिक्कते समुज्जाए छिन्नजाइजरामरणबंधणे सिद्धे बुद्धे मुत्ते अंतकडे परिनिव्वुडे सव्वदुक्खप्पहीणे।

२—उत्तराध्ययन चूर्णि, पृष्ठ २८३

इति परिसमाप्तौ उपप्रदर्शने च, प्रादु प्रकाशे, प्रकाशीकृत्य—प्रज्ञापयित्वा बुद्ध—अवगतार्थ ज्ञातक—ज्ञातकुलसमुद्भव वर्द्धमानस्वामी, तत परिनिर्वाण गत, किं प्रज्ञापयित्वा ?, षट्त्रिंशदुत्तराध्ययनानि।

फल-विपाक वाले अध्ययनो तथा ५५ पाप-फल-विपाक वाले अध्ययनो का व्याकरण कर परिनिर्वृत हुए ।[1] समवायाग के छत्तीसवें समवाय मे भी इसकी कोई चर्चा नही है ।

उत्तराध्ययन की रचना तथा 'इइ एस धम्मे अक्खाए, कविलेग च विसुद्धपन्नेण' जैसे उल्लेखो से यह प्रमाणित नही होता कि ये सब अध्ययन महावीर के द्वारा निरूपित है। निर्युक्ति के साक्ष्य से इसकी चर्चा हम पहले कर चुके है । अठारहवें अध्ययन के चौबीसवें श्लोक के प्रथम दो चरण वे ही है, जो छत्तीसवें अध्ययन के अंतिम श्लोक के है—

१८।२४	३६।२६८
इइ पाउकरे बुद्धे	इइ पाउकरे बुद्धे
नायए परिनिव्वुडे ।	नायए परिनिव्वुए ।
विज्जाचरणसंपन्ने	छत्तीस उत्तरज्झाए
सच्चे सच्चपरक्कमे ॥	भवसिद्धीयसमए ॥

अठारहवें अध्ययन के चौबीसवें श्लोक के पूर्वार्द्ध का जो अर्थ वृत्तिकार ने किया है, वही अर्थ छत्तीसवें श्लोक के पूर्वार्द्ध का होना चाहिए। वृत्तिकार ने चौबीसवें श्लोक के पूर्वार्द्ध की व्याख्या इस प्रकार की है—बुद्ध (अवगत तत्त्व), परिनिर्वृत (शीतीभूत), ज्ञातपुत्र महावीर ने इस तत्त्व का प्रज्ञापन किया है।[2] इस अर्थ के सदर्भ मे जब हम छत्तीसवें अध्ययन के अंतिम श्लोक को पढते है, तब उससे यह फलित नही होता कि ज्ञातपुत्र महावीर छत्तीस अध्ययनो का प्रज्ञापन कर परिनिर्वाण को प्राप्त हुए ।

महावीर की परम्परा में जो अर्थ-प्रतिपादन होता है, वह उनकी धर्मदेशना के आधार पर होता है । इसी पारपरिक सत्य का उल्लेख उत्तराध्ययन के सकलनकर्त्ता ने अन्तिम श्लोक मे किया है ।

१७ : महावीर-वाणी का प्रतिनिधि सूत्र

अविकल उत्तराध्ययन भगवान् महावीर की प्रत्यक्ष वाणी भले न हो, किन्तु उसमे भगवान् महावीर की वाणी का जिस समीचीन पद्धति से सगुम्फन हुआ है, उसे देख कर सहज ही यह कहने को मन ललचा उठता है कि यह महावीर-वाणी का प्रतिनिधि सूत्र है।

अहिंसा, अपरिग्रह आदि तत्त्व नवीन नही है और भगवान् महावीर के समय मे भी नवीन नही थे। उनसे पहले अनेक तीर्थङ्कर और धर्माचार्य उनका प्रयोग कर चुके थे ।

१—समवायांग, समवाय ५५ ।

२—उत्तराध्ययन बृहद्वृत्ति, पत्र ४४४

इत्येवंरूपं 'पाउकरे'त्ति प्रादुरकार्षीत्—प्रकटितवान् 'बुद्ध' अवगततत्त्व सन् ज्ञात एव ज्ञातकः—जगत्प्रतीत क्षत्रियो वा, स चेह प्रस्तावान्महावीर एव, 'परिनिर्वृत' कषायानलविध्यापनात्समन्ताच्छीतीभूत ।

१८ : उत्तराध्ययन : आकार और विषय-वस्तु

उत्तराध्ययन के छत्तीस अध्ययन है। यह सकलित सूत्र है। इसका प्रारम्भिक मंकलन वीर-निर्वाण की पहली शताब्दी के पूर्वार्द्ध में हुआ। उत्तरकालीन सस्करण देवर्द्धिगणी के समय मे सम्पन्न हुआ। वर्तमान अध्ययनो के नाम समवायाग तथा उत्तराध्ययन निर्युक्ति मे मिलते है। उनमे क्वचित् थोडा अन्तर भी है—

	समवायाग[1]	उत्तराध्ययन निर्युक्ति[2]
१	विणयसुय	विणयसुय
२	परीसह	परीसह
३	चाउरगिज्ज	चउरगिज्ज
४	असखय	असखय
५	अकाममरणिज्ज	अकाममरण
६	पुरिसविज्जा	नियठ (खुड्डागनियठ[3])
७	उरब्भिज्ज	ओरब्भ
८	काविलिज्ज	काविलिज्ज
९	नमिपव्वज्जा	णमिपव्वज्जा
१०	दुमपत्तयं	दुमपत्तय
११	वहुसुयपूजा	वहुसुयपुज्ज
१२	हरिएसिज्ज	हरिएस
१३	चित्तसंभूय	चित्तसभूइ
१४	उसुकारिज्ज	उसुआरिज्ज

१—समवायांग, समवाय ३६।

२—उत्तराध्ययन निर्युक्ति, गाथा १३-१७।

३—वही, गाथा २४३

एसा खलु निज्जुत्ती खुड्डागनियंठसुत्तस्स।

१८ : उत्तराध्ययन : आकार और विषय-वस्तु

उत्तराध्ययन के छत्तीस अध्ययन है। यह सकलित सूत्र है। इसका प्रारम्भिक मकलन वीर-निर्वाण की पहली शताब्दी के पूर्वार्द्ध मे हुआ। उत्तरकालीन सस्करण देवर्द्धिगणी के समय मे सम्पन्न हुआ। वर्तमान अध्ययनो के नाम समवायाग तथा उत्तराध्ययन निर्युक्ति में मिलते है। उनमें क्वचित् थोडा अन्तर भी है—

	समवायाग[1]	उत्तराध्ययन निर्युक्ति[2]
१	विणयसुय	विणयसुय
२	परीसह	परीसह
३	चाउरगिज्जं	चउरगिज्ज
४	असखयं	असंखय
५	अकाममरणिज्ज	अकाममरणं
६	पुरिसविज्जा	नियंठ (खुड्डागनियंठ[3])
७	उरब्भिज्ज	ओरब्भं
८	काविलिज्जं	काविलिज्जं
९	नमिपव्वज्जा	णमिपव्वज्जा
१०	दुमपत्तयं	दुमपत्तयं
११	बहुसुयपूजा	बहुसुयपुज्जं
१२	हरिएसिज्ज	हरिएस
१३	चित्तसंभूय	चित्तसंभूइ
१४	उसुकारिज्जं	उसुआरिज्जं

१—समवायांग, समवाय ३६।

२—उत्तराध्ययन निर्युक्ति, गाथा १३-१७।

३—वही, गाथा २४३.

एसा खलु निज्जुत्ती खुड्डागनियंठसुत्तस्स।

निर्युक्ति के अनुसार छत्तीस अध्ययनो का विषय-वर्णन इस प्रकार है[1]

अध्ययन	श्लोक	सूत्र	विषय
१	४८		विनय
२	४६	३	प्राप्त कष्ट-सहन का विधान ।
३	२०		चार दुर्लभ अगो का प्रतिपादन ।
४	१३		प्रमाद और अप्रमाद का प्रतिपादन ।
५	३२		मरण-विभक्ति—अकाम और सकाम मरण ।
६	१७		विद्या और आचरण ।

१—उत्तराध्ययन निर्युक्ति, गाथा १८-२७

पढमे विणओ बीए परिसहा दुल्लहंगया तइय ।
अहिगारो य चउत्थे होइ पमायप्पमाएत्ति ॥
मरणविभत्ती पुण पंचमम्मि विज्जा चरण च छट्ठअज्झयणे ।
रसगेहिपरिच्चाओ सत्तमे अट्ठमि अलाभे ॥
निक्कपया य नवमे दसमे अणुसासणोवमा भणिया ।
इक्कारसमे पूया तवरिद्धी चेव बारसमे ॥
तेरसमे अ नियाण अनियाण चेव होइ चउदसमे ।
भिक्खुगुणा पन्नरसे सोलसमे बंभगुत्तीओ ॥
पावाण वज्जणा खलु सत्तरसे भोगिड्ढिविजहणट्ठारे ।
एगुणि अप्परिकम्मे अणाहया चेव वीसइमे ॥
चरिया य विचित्ता इक्कवीसि बावीसिमे थिर चरण ।
तेवीसइमे धम्मो चउवीसइमे य समिइओ ॥
बंभगुण पन्नवीसे सामायारी य होइ छव्वीसे ।
सत्तावीसे असढया अट्ठावीसे य मुक्खगई ॥
एगुणतीस आवस्सगप्पमाओ तवो अ होइ तीसइमे ।
चरण च इक्कतीसे बत्तीसि पमायठाणाइ ॥
तेत्तीसइमे कम्मं चउतीसइमे य हुति लेसाओ ।
भिक्खुगुणा पणतीसे जीवाजीवा य छत्तिसे ॥
उत्तरज्झयणाणेसो पिडत्थो वण्णिओ समासेण ।
इत्तो इक्किक्क पुण अज्झयण कित्तइस्सामि ॥

निर्युक्तिकार ने उत्तराध्ययन के प्रतिपाद्य के संक्षिप्त संकेत प्रस्तुत किए हैं। इनसे एक स्थूल सी रूपरेखा हमारे सामने आ जाती है। विस्तार में जाएँ तो उत्तराध्ययन का प्रतिपाद्य बहुत विशद है। भगवान् पार्श्व और भगवान् महावीर की धर्म-देशनाओं का स्पष्ट चित्रण यहाँ मिलता है। वैदिक और श्रमण संस्कृति के मतवादों का संवादात्मक शैली में इतना व्यवस्थित प्रतिपादन अन्य आगमों में नहीं है। इसमें धर्म-कथाओं, आध्यात्मिक-उपदेशों तथा दार्शनिक-सिद्धान्तों का आकर्षक योग है। इसे भगवान् महावीर की विचार-धारा का प्रतिनिधि सूत्र कहा जा सकता है।

१९ : उत्तराध्ययन की कथाएँ : तुलनात्मक दृष्टिकोण

भारतीय धर्मों की अनेक साहित्यिक शाखाएँ हैं। उनमें अनेक कथाएँ एक जैसी हैं। प्रस्तुत सूत्र में चार कथाएँ ऐसी हैं, जो किंचित् रूपान्तर के साथ महाभारत और बौद्ध-साहित्य में मिलती हैं। जैसे—

उत्तराध्ययन	महाभारत	जातक
१ हरिकेश बल (अ० १२)	×	मातंग (सं० ४९७)
२ चित्त-संभूत (अ० १३)	×	चित्तसंभूत (सं० ४९८)
३ इषुकारीय (अ० १४)	शान्तिपर्व, अ० १७५ शान्तिपर्व, अ० २७७	हस्तिपाल (सं० ५०९)
४ नमि-प्रव्रज्या (अ० ९)	शान्तिपर्व, अ० १७८ तथा अ० २७६	महाजनक (सं० ५३९)

इनके सादृश्य का कारण पूर्व कालीन 'श्रमण-साहित्य' का स्वीकरण है। प्रत्येक-बुद्धों द्वारा रचित प्रकरण हजारों की संख्या में प्रचलित थे। उन्होंने भारतीय साहित्य की प्रत्येक धारा को प्रभावित किया था। मार्कण्डेय पुराण के पिता-पुत्र संवाद की तुलना उत्तराध्ययन के चौदहवें इषुकारीय अध्ययन गत पिता-पुत्र संवाद से करने पर दोनों का स्रोत एक ही परम्परा से प्राप्त होता है। इसकी विस्तृत चर्चा हमने 'उत्तराध्ययन : एक समीक्षात्मक अध्ययन' में की है।

२० : उत्तराध्ययन : व्याकरण-विमर्श

वर्तमान प्राकृत व्याकरण की अपेक्षा प्राचीन आगमों में कुछ विशिष्ट प्रयोग उपलब्ध होते हैं। उत्तराध्ययन भी उसी कोटि का आगम है। इसके अनेक स्थलों में विभक्ति-विहीन शब्द प्रयोग हैं। अनेक स्थलों में ह्रस्व का दीर्घीकरण और दीर्घ का ह्रस्वीकरण है। संस्कृत तुल्य तथा प्राकृत व्याकरण से असिद्ध संधि-प्रयोग प्राप्त होते हैं। विभक्ति, वचन आदि का व्यत्यय भी विपुल मात्रा में मिलता है। इसमें समालोच्य शब्द भी प्रयुक्त हैं।

वचन-व्यत्यय :

विहन्नइ (२।६)—यहाँ वहुवचन के स्थान पर एकवचन हे ।

आहु (१२।२५)—यहाँ एकवचन के स्थान पर वहुवचन हे ।

त (३६।४८)—यहाँ वहुवचन के स्थान पर एकवचन हे ।

परित्तससारी (३६।२६०)—यहाँ वहुवचन के स्थान पर एकवचन है ।

अलाक्षणिक :

फरसु+आईहिं	=	फरसुमाईहिं १९।६६
मुट्ठि+आईहिं	=	मुट्ठिमाईहिं १९।६७
असजत्	=	सजए २१।२०

समालोच्य शब्द :

अप्पायके (३।१८)—यहाँ 'अप्प' का प्रचलित अर्थ 'अल्प' प्राप्त नही होता । यहाँ यह शब्द निपेधार्थ मे प्रयुक्त हैं ।

मुदिट्ठं (१२।३८), सुजट्ठ (१२।४०)—इन दोनो मे ममान प्रयोग चाहिए । मभव है 'सुदिट्ठ' के स्थान में लिपि-दोप से 'मुजट्ठं' हो गया हो ।

भवताम् = भवयाण (१२।१०)

२१ : उत्तराध्ययन : भापा की दृष्टि से

उत्तराध्ययन की भापा प्राकृत है । भरत मुनि ने अपने नाट्यशास्त्र मे सात प्राकृतो का उल्लेख किया है—मागधी, आवन्ती, प्राच्या, शौरसेनी, अर्द्धमागधी, वाल्हीका और दाक्षिणात्या ।[1]

१—नाट्यशास्त्र, १७।४८
मागध्यवन्तिजा प्राच्या शौरसेन्यर्द्धमागधी ।
वाल्हीका दाक्षिणात्याश्च सप्तभाषा. प्रकीर्तिता ॥

क्षेत्र की दृष्टि से अर्द्धमागधी उस भाषा का नाम है, जो आधे मगध में अर्थात् मगध के पश्चिमी भाग में व्यवहृत थी। इसमें मागधी भाषा के लक्षण प्राप्त थे, इसलिये प्रवृत्ति की दृष्टि से भी संभव है इसे अर्द्धमागधी कहा गया। भाषा-शास्त्रियों के अनुसार मागधी की तीन मुख्य विशेषताएँ है—

(१) प्रथमा विभक्ति के एकवचन में 'ओकार' के स्थान पर 'एकार' होना।

(२) 'र' का 'ल' होना।

(३) 'ष', 'स' के स्थान पर 'श' होना।

अर्द्धमागधी मे प्रथम विशेषता बहुलता से मिलती है, दूसरी कही-कही मिलती है और तीसरी प्राय नही मिलती।

जब जैन मुनि पूर्वी भारत से हट कर पश्चिमी भारत मे विहार करने लगे तब उनकी मुख्य भाषा महाराष्ट्री-प्राकृत हो गई। अर्द्धमागधी और मागधी मे लिखे हुए आगम भी उससे प्रभावित हुए। प्राकृत के सभी रूपो में महाराष्ट्री ने उत्कर्ष भी प्राप्त कर लिया। महाकवि दण्डी ने भी इसका उल्लेख किया है—"महाराष्ट्राश्रया, प्रकृष्टं प्राकृत विदु"[1]।

फिर भी जैन आचार्यो को आगमो की मूल भाषा की विस्मृति नही हुई। वे समय के विविध परिवर्तो में भी इसी तथ्य की पुनरावृत्ति करते रहे है कि आगमो की मूल भाषा अर्द्धमागधी है। प्रज्ञापना में अर्द्धमागधी भाषा बोलने वाले को 'भाषा-आर्य' कहा गया है।[2] स्थानाग[3] और अनुयोगद्वार[4] मे संस्कृत तथा प्राकृत को ऋषिभाषित कहा गया है। आचार्य हरिभद्र सूरि ने भाषा-आर्य की व्याख्या मे संस्कृत और जोडा है।[5] कुछ आचार्य पूर्वो की भाषा भी संस्कृत मानते है।[6] इन सब तथ्यो के अध्ययन के उपरान्त भी हम इस तथ्य की विस्मृति नही कर सकते कि प्राचीन आगमो की भाषा अर्द्धमागधी थी।

१—काव्यादर्श, १।३४।

२—प्रज्ञापना, पद १, सूत्र ३७. भासारिया जे णं अद्धमागहाए भासाए भासेति।

३—स्थानांग ७।३।५५३, गाथा २८.

सक्कता पागता चेव, दुहा भणितीओ आहिया।
सरमंडलंमि गिज्जंते, पसत्था इसिभासिता॥

४—अनुयोगद्वार, सूत्र १२७ गाथा ५३ :

सक्कया पायया चेव, भणिईओ होंति दोण्णि वा।
सरमंडलम्मि गिज्जंते, पसत्था इसिभासिआ॥

५—तत्त्वार्थ सूत्र ३।१५, हारिभद्रीय वृत्ति पृष्ठ १८०

शिष्टा-सर्वातिशयसम्पन्ना गणधरादय तेषां भाषा संस्कृताऽर्धमागधिकादिका च।

६—प्रभावक चरित, पृष्ठ ५८, वृद्धवादिसूरि चरित, श्लोक ११३

चतुर्दशापि पूर्वाणि संस्कृतानि पुराऽभवन्।

अर्द्धमागधी और महाराष्ट्री

उत्तराध्ययन की भाषा महाराष्ट्री से प्रभावित अर्द्धमागधी है। अर्द्धमागधी और

महाराष्ट्री

'क' का प्राय लुक् होता है—

अज्झावयाण (१२।१६)

'ग' का प्राय लुक् होता है—

भोए (१४।३७)

'च' और 'ज' का प्राय लुक् होता है-

समुवाय (१४।३७)

बीयाइ (१२।१२)

'त' का प्राय लुक् होता है—

पुरोहिय (१४।३७)

'द' का प्राय लुक् होता है—

विइयाणि (१२।१३)

'प' का प्राय लुक् होता है—

तउय (३६।७३)

'य' का प्राय लुक् होता है—

काए (३६।८२)

आउ (७।१०)

'व' का प्राय लुक् होता है—

चेय (२४।१६)

प्रथमा के एकवचन मे 'ओकार' होता है—

मणगुत्तो (१२।३)

शब्द-भेद—

अर्द्धमागधी	महाराष्ट्री
कम्मुणा	कम्मेण
वेयसा (२५।१६)	वेयाण
विसालिसेहि (३।१४)	विसरिसेहिं
दुवालसग (२४।३)	वारसग (२३।७)
गेही (६।४)	गिद्धी
सोही (३।१२)	सुद्धी
तेगिच्छ (२।३३)	चीइच्छ
मिलेक्खुया (१०।१६)	मिलिच्छा, मिच्छा
माहणा (१२।१३)	वम्हणो (२५।१६)
पडुप्पन्न (२६।सू०१३)	पच्चुप्पन्न (७।६)

उत्तराध्ययन मे अर्द्धमागधी के साथ-साथ महाराष्ट्री-प्राकृत के प्रयोग भी मिलते हैं। इसलिए भाषा की दृष्टि से इसे भाषा-द्वय की मिश्रित कृति कहा जा सकता है।

२२ : उत्तराध्ययन के व्याख्या-ग्रन्थ

जैन आगमो मे उत्तराध्ययन सर्वाधिक प्रिय आगम है। उसकी प्रियता का कारण उसके सरस कथानक, सरस सवाद और सरस रचना-शैली है। उसकी सर्वाधिक प्रियता के साक्ष्य व्यापक अध्ययन-अध्यापन और विशाल व्याख्या-ग्रन्थ हैं। जितने व्याख्या-ग्रन्थ उत्तराध्ययन के हैं, उतने अन्य किसी आगम के नही हैं।

१—निर्युक्ति :

यह उत्तराध्ययन के प्राप्त व्याख्या-ग्रन्थो मे सर्वाधिक प्राचीन है। इसमें ५५७ गाथाएँ हैं। यह लघु कृति है, किन्तु इसमे अनेक महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ उपलब्ध हैं। इसलिए यह उत्तरवर्ती सभी व्याख्या-ग्रन्थो की आधार-भित्ति रही है। इसके कर्ता द्वितीय भद्रबाहु (वि० छठी शताब्दी) हैं।

४—सुखबोधा :

यह बृहद्वृत्ति से समुद्धृत लघु वृत्ति है। इसके कर्त्ता नेमिचन्द्र सूरि है। सूरिपद-प्राप्ति से पूर्व इनका नाम देवेन्द्र था। इस वृत्ति का रचना-काल विक्रम सं० ११२९ है।

५—सर्वार्थसिद्धि :

इसके रचयिता भावविजय है। इसका रचना-काल विक्रम संवत् १६७९ है। इसमें कथाएँ पद्यबद्ध है।

इनके अतिरिक्त और भी व्याख्या-ग्रन्थ उपलब्ध होते है। वे सारे के सारे प्राय इन्ही मुख्य व्याख्या-ग्रन्थो के उपजीवी है। हम उनका संक्षिप्त परिचय—नाम, कर्त्ता और रचना-काल के विवरण-सहित—नीचे प्रस्तुत कर रहे है[1]

६—अवचूरि	ज्ञानसागर	वि० स० १६४१
७—वृत्ति	कमल संयम	,, १५५४
८—दीपिका	उदयसागर	,, १५४६
९—लघुवृत्ति	खरतर तपोरत्नवाचक	,, १५५०
१०—वृत्ति	कीर्तिवल्लभ	,, १५५२
११—वृत्ति	विनयहंस	,, १५६७-८१
१२—टीका	अजितदेव सूरि	,, १६२८
१३—दीपिका	हर्षकुल	१६ वी शताब्दी
१४—अवचूरि	अजितदेव सूरि	
१५—टीका दीपिका	माणिक्यशेखर सूरि	
१६—दीपिका	लक्ष्मीवल्लभ	१८ वी शताब्दी
१७—वृत्ति-टीका	हर्षनन्दन	वि० सं० १७११
१८—वृत्ति	शान्तिभद्राचार्य	
१९—टीका	मुनिचन्द्र सूरि	
२०—अवचूरि	ज्ञानशीलगणी	
२१—अवचूरि		वि० सं० १४९१
२२—बालावबोध	समरचन्द्र	
२३—बालावबोध	कमललाभ	१६ वी शताब्दी
२४—बालावबोध	मानविजय	वि० सं० १७४१

१—जैनभारती (वर्ष ७, अंक ३३, पृ० ५६५-६८) मे प्रकाशित श्री अगरचन्दजी नाहटा के उत्तराध्ययन सूत्र और उसकी टीकाएँ लेख पर आधृत।

भूमिका में प्रयुक्त ग्रन्थों की तालिका

१ *अनुयोगद्वार* (वि० स० २०१६) ले० आर्यरक्षित सूरि
(प्र० देवचन्द्र लालभाई पुस्तकोद्धार फण्ड, बम्बई)

२ *आगम अट्ठुत्तरी* ले० अभयदेव सूरि

३ *आगम पुरुषनु रहस्य, श्री* (वि०स० २०१०) ले० मुनि अभयसागर
(प्र० श्री गोडजी मित्र मडल, बम्बई)

४ *आगमाधिकार* ले०श्रीमज्जयाचार्य
(अप्रकाशित)

५ *आचाराग सूत्रम्* (वि० स० २००७) अनु० मुनि सौभाग्यमलजी
(प्र० श्री जैन साहित्य समिति, नयापुरा, उज्जैन)

६ *आवश्यक निर्युक्ति* (वि० स० १९८४) ले० भद्रबाहु स्वामी (द्वितीय)
(प्र० आगमोदय समिति, बम्बई)

७ *आवश्यकवृत्ति* (वि० स० १९८८) ले० मलयगिरि
(प्र० आगमोदय समिति, बम्बई)

८ *उत्तराध्ययन चूर्णि* (वि० स० १९८९) ले० जिनदासगणि महत्तर
(प्र० श्री ऋषभदेव केसरीमलजी
श्री श्वे० सस्था, इन्दौर)

९ *उत्तराध्ययन निर्युक्ति* भा० १-३ (वि०स० १९७२) ले० भद्रबाहु (द्वितीय)
(प्र० देवचन्द्र लालभाई जैन पुस्तकोद्धार भाडागार संस्था)

१० *उत्तराध्ययन बृहद्वृत्ति* (वि०स० १९७२) ले० वादिवेताल शान्ति सूरि
(भा० १-३)
(प्र० देवचन्द्र लालभाई पुस्तकोद्धार भाडागार सस्था)

११ *उत्तराध्ययन सूत्र एक समीक्षात्मक अध्ययन* वाचना-प्रमुख आचार्य तुलसी
(अप्रकाशित)

१२ *उत्तराध्ययन सूत्र*- टी ([illegible] भाग) (सन् १९२२) स० जार्ल चार्पेन्टियर
(प्र० उपसाला विश्वविद्यालय)

२७ *तत्त्वार्थवार्त्तिक* (राजवार्त्तिक) (वि०सं०२०००) ले० अकलकदेव
(प्र० भारतीय ज्ञानपीठ, काशी)

२८ *तत्त्वार्थवृत्ति* (श्रुतसागरीय) (वि०सं०२०००) ले० श्रुतसागर
(प्र० भारतीय ज्ञानपीठ, काशी) स० प्रो० महेन्द्रकुमार जैन

२९ *तत्त्वार्थवृत्ति* (हारिभद्रीय) (वि०सं०१९९२) ले० हरिभद्र
(प्र० ऋषभदेव केसरीमल जैन श्री श्वे० संस्था, रतलाम) स० आनन्दसागर सूरि

३० *दशवेआलिय* (भाग २) (वि०स०२०२०) वाचना-प्रमुख आचार्य तुलसी
(प्र० श्री जैन श्वे० तेरापथी महासभा, कलकत्ता)

३१ *दशवैकालिक एक समीक्षात्मक अध्ययन* वाचना-प्रमुख आचार्य तुलसी
(यन्त्रस्थ)

३२ *दशवैकालिक चूर्णि* (अगस्त्य) ले० स्थविर अगस्त्यसिंह
(अप्रकाशित)

३३ *दशवैकालिक चूर्णि* (जिनदास) (वि०स०१९८९) ले० जिनदास महत्तर
(प्र० ऋषभदेव केशरीमल जैन श्री श्वे० सस्था, रतलाम)

३४ *दशवैकालिक दीपिका* (वि०स०१९७५) ले० समयसुन्दर उपाध्याय
(प्र० श्री जिनयश सूरिजी ग्रन्थमाला समिति, खभात)

३५ *दशवैकालिक निर्युक्ति* (वि०स०१९७४) ले० भद्रबाहु (द्वितीय)
(प्र० देवचन्द्र लालभाई जैन पुस्तकोद्धार भण्डागार सस्था)

३६ *दशवैकालिक वृत्ति* (हारिभद्रीय) (वि०स०१९७४) ले० हरिभद्र
(प्र० देवचन्द्र लालभाई जैन पुस्तकोद्धार भण्डागार सस्था)

३७ *दसवेयालिय सुत्त* (सन् १९३२) ले० डॉ० वाल्थर शूब्रिंग
(प्र० सेठ आनन्दजी कल्याणजी, अहमदाबाद)

३८ *दशवैकालिक सूत्र, ए स्टडी, दी* (सन् १९३३) ले० प्रो०पट्टवर्द्धन एम०ए०
(प्र० विलिंगटन कालेज, सांगली)

३९ *दशाश्रुतस्कन्ध निर्युक्ति* (वि०स०२०११) ले० भद्रबाहु (द्वितीय)
(प्र० पन्यास मणिविजयजी गणि ग्रन्थमाला) स० विजय कुमुदसूरीश्वरजी

४० *देशीनाममाला* (द्वितीय संस्करण) (सन् १९३८) ले० आचार्य हेमचन्द्र
(प्र० बम्बई संस्कृत सीरीज)

५६ *बृहत्कल्प सूत्राम्* (भाष्य निर्युक्ति सहित) (सन् १६३३ से १६३८) ले० भद्रबाहु
(प्र० श्री जैन आत्मानन्द सभा, भावनगर, (सौराष्ट्र) स० पुण्यविजयजी

५७ *महाभारत* (प्रथम सस्करण) ले० महर्षि वेदव्यास
(प्र० गीताप्रेस, गोरखपुर)

५८ *मार्कण्डेय पुराण* (वि०स०२०१८) ले० कृष्ण द्वैपायन
(प्र० गुरुमडल ग्रन्थमाला, मनसुखराय मोर, कलकत्ता)

५६ *मूलाचार* (वि०स०२४८४) ले० वट्टकेर आचाय
(प्र० सूरत भाण्डागार ग्रन्थमाला समिति, अनु० जिनदास पार्श्वनाथ फुडकुले शास्त्री फलटन, जि० उत्तरसतारा)

६० *मूलाचार* (वि०स०१६७७) ले० वट्टकेर आचार्य
(प्र० जैन ग्रन्थमाला समिति) स०प०पन्नालाल न्याय-काव्यतीर्थ
स०प०गजाधरलाल

६१ *मूलाराधना* (टीका-विजयोदया) ले० अपराजित सूरि

६२ *रत्नमुनि स्मृति ग्रन्थ* (वि०स०२००१) स० विजय मुनि
(प्र० गुरुदेव स्मृतिग्रन्थ ग्रन्थमाला समिति, लोहामंडी, आगरा) डॉ० हरिशकर शर्मा

६३ *रिलीजियन द जैन्स* अनु० डॉ० ग्यारीनो

६४ *व्यवहारभाष्य* (वि०स०१६६४) सशोधक मुनि माणक
(प्र० वकील केशवलाल प्रेमचन्द, भावनगर)

६५ *विचारलेस* (विचारसार प्रकरण) ले० प्रद्युम्न सूरि

६६ *वैशेषिक दर्शन* (सन् १६५४, द्वितीय सस्करण) ले० दर्शनानन्द सरस्वती
(प्र० पुस्तक भण्डार, बरेली)

६७ *स्थानाग* (द्वितीय सस्करण, स०१६५४)
(प्र० माणिकचन्द चुन्नीलाल, अहमदाबाद)

६८ *समवायाग सूत्रम्* (वि०स०१६७४)
(प्र० आगमोदय समिति)

६६ *सामाचारीशतक* (वि०स०१६६६) ले० समयसुन्दरगणी
(प्र० झवेरी मूलचन्द हीराचंद भगत, बम्बई)

७० *सिद्धान्तस्तवसोत* ले० जिनप्रभ सूरि

४१ धवला (ष
(प्र० जैन स

४२ नन्दी चूर्ि
(प्र० ऋषभ

४३ नन्दी वृत्ि
(प्र० आगमो

४४ नन्दी वृत्ि
(प्र० ऋषभद

४५ नन्दी सुत्त
(प्र० सन्मति

४६ नन्दी सूत्र
(वि०स०१
(प्र० श्रीमद

४७ नाट्यशा
(प्र० गायक

४८ प्रथम द्वा

४९ प्रभावकच
(प्र० सिंघी

५० प्रज्ञापना
(प्र० आगम

५१ पचकल्प

५२ पचकल्प

५३ प्राकृत भा
(प्र० विहार

५४ पातजल
(प्र० निर्णय

५५ पिण्ड नि
(प्र० आगम

५६ *बृहत्कल्प सूत्रम्* (भाष्य निर्युक्ति सहित) (सन् १९३३ से १९३८) ले० भद्रबाहु
(प्र० श्री जैन आत्मानन्द सभा, भावनगर, (सौराष्ट्र) स० पुण्यविजयजी

५७ *महाभारत* (प्रथम संस्करण) ले० महर्षि वेदव्यास
(प्र० गीताप्रेस, गोरखपुर)

५८ *मार्कण्डेय पुराण* (वि०सं०२०१८) ले० कृष्ण द्वैपायन
(प्र० गुरुमडल ग्रन्थमाला, मनसुखराय मोर, कलकत्ता)

५९ *मूलाचार* (वि०सं०२४८४) ले० वट्टकेर आचार्य
(प्र० सूरत भाण्डागार ग्रन्थमाला समिति, अनु० जिनदास पार्श्वनाथ फुडकुले शास्त्री फलटन, जि० उत्तरसतारा)

६० *मूलाचार* (वि०सं०१९७७) ले० वट्टकेर आचार्य
(प्र० जैन ग्रन्थमाला समिति) स०प०पन्नालाल न्याय-काव्यतीर्थ
स०प०गजाधरलाल

६१ *मूलाराधना* (टीका-विजयोदया) ले० अपराजित सूरि

६२ *रत्नमुनि स्मृति ग्रन्थ* (वि०सं०२००१) स० विजय मुनि
(प्र० गुरुदेव स्मृतिग्रन्थ ग्रन्थमाला समिति,
लोहामडी, आगरा) डॉ० हरिशंकर शर्मा

६३ *रिलीजियन द जैन्स* अनु० डॉ० ग्यारीनो

६४ *व्यवहारभाष्य* (वि०सं०१९९४) संशोधक मुनि माणक
(प्र० वकील केशवलाल प्रेमचन्द, भावनगर)

६५ *विचारलेस* (विचारसार प्रकरण) ले० प्रद्युम्न सूरि

६६ *वैशेषिक दर्शन* (सन् १९५४, द्वितीय संस्करण) ले० दर्शनानन्द सरस्वती
(प्र० पुस्तक भण्डार, बरेली)

६७ *स्थानाग* (द्वितीय संस्करण, सं०१९५४)
(प्र० माणिकचन्द चुन्नीलाल, अहमदाबाद)

६८ *समवायाग सूत्रम्* (वि०सं०१९७४)
(प्र० आगमोदय समिति)

६९ *सामाचारीशतक* (वि०सं०१९९९) ले० समयसुन्दरगणी
(प्र० झवेरी मूलचन्द हीराचद भगत, बम्बई)

७० *सिद्धान्तस्तवज्ञोत* ले० जिनप्रभ सूरि

७१ *सूत्रकृतांग* (सं० १९७३)
(प्र० आगमोदय समिति)

७२ *षड्भाषाचन्द्रिका*

७३ *हरिवंश पुराण* (दो भाग) (ग्रन्थांक ३२, ३३) ले० जिनसेन
(प्र० माणिकचन्द दिगम्बर जैन ग्रन्थमाला) स० प० दरबारीलाल

७४ *हिस्ट्री ऑफ इण्डियन लिटरेचर* (भाग-२) (सन् १९३३)
(प्र० कलकत्ता विश्वविद्यालय) ले० मोरीं विन्टरनित्ज, पी-एच०डी०

७५ *हिस्ट्री ऑफ दी केनोनिकल लिटरेचर*
ऑफ दी जैन्स, ए (सन् १९४१) ले० एच०आर०कापडिया
(प्र० हीरालाल रसिकदास कापडिया, गोपीपुरा, सूरत)

७६ *हेमशब्दानुशासन* (स १९६२) ले० आचार्य हेमचन्द्र सूरि
(प्र० सेठ मनसुख भाई पोरवाड डायमंड जुबली
प्रिन्टिंग प्रेस, सालापोस दरवाजा, अहमदाबाद)

७७ *श्रमण भगवान् महावीर* (वि०सं०१९९८) ले० प० कल्याणविजयजी गणी
(प्र० श्री क० वि० शास्त्रसंग्रह समिति, जालोर)

७८ *श्रावक विधि* ले० धनपाल

*

दसवेआलियं : विषय-सूची

****

उत्तरज्झयणं : विषय-सूची

उत्तरज्झयणं : विषय-सूची

पढमं अज्झयणं

दुमपुप्फिया

धम्मो मंगलमुक्किट्ठं अहिंसा संजमो तवो ।
देवा वि तं नमंसंति जस्स धम्मे सया मणो ॥ १ ॥

जहा दुमस्स पुप्फेसु भमरो आवियइ रसं ।
न य पुप्फं किलामेइ सो य पीणेइ अप्पयं ॥ २ ॥

एमेए समणा मुत्ता जे लोए संति साहुणो ।
विहंगमा व पुप्फेसु दाणभत्तेसणे रया ॥ ३ ॥

वयं च वित्तिं लब्भामो न य कोइ उवहम्मई ।
अहागडेसु रीयंति पुप्फेसु भमरा जहा ॥ ४ ॥

महुकारसमा बुद्धा जे भवंति अणिस्सिया ।
नाणापिंडरया दंता तेण वुच्चंति साहुणो ॥ ५ ॥

त्ति बेमि ॥

बीअ अज्झयण

सामण्णपुव्वयं

'कह नु कुज्जा'[1] सामंण्ण जो कामे न निवारए ।
पए पए विसीयतो सकप्पस्स वसं गओ ॥ १ ॥

वत्थगन्धमलकार इत्थीओ सयणाणि य ।
अच्छन्दा जे न भुजन्ति न से चाइ त्ति वुच्चइ ॥ २ ॥

जे य[2] कन्ते पिए भोए लद्धे विपिट्ठिकुव्वई[3] ।
साहीणे चयइ भोए[4] से हु चाइ त्ति वुच्चइ ॥ ३ ॥

समाए[5] पेहाए परिव्वयतो
सिया मणो निस्सरई बहिद्धा ।
न सा मह नोवि अह पि तीसे
इच्चेव ताओ विणएज्ज राग ॥ ४ ॥

आयावयाही चय सोउमल्ल
कामे कमाही कमिय खु दुक्खं ।
'छिन्दाहि दोस विणएज्ज राग'[6]
एव सुही होहिसि संपराए ॥ ५ ॥

१—[illegible] कुज्जा (आ, जा, हा), कइज्ह कुज्जा (आ, ज, हा),
[illegible] कुज्जा (जा), कह स कुज्जा (आ), कह णु कुज्जा (जा)।
२—[illegible] (अ)।
३—[illegible]° (अ) विप्पिट्ठि° (ख), विप्पिट्ठ° (ग)।
४—[illegible] (अ)।
५—[illegible] (अ)।
६—[illegible] [illegible]हि दोस (अ)।

पक्खन्दे जलियं जोइं धूमकेउं दुरासयं ।
नेच्छन्ति वन्तयं भोत्तुं[1] कुले जाया अगन्धणे ॥ ६ ॥

धिरत्थु 'ते जसोकामी'[2] जो तं जीवियकारणा ।
वन्तं इच्छसि आवेउं सेयं ते मरणं भवे ॥ ७ ॥

अहं च भोयरायस्स[3] तं चऽसि अन्धगवण्हिणो ।
मा 'कुले गन्धणा' 'होमो संजमं निहुओ चर ॥ ८ ॥

जइ तं काहिसि भावं जा जा दच्छसि नारिओ ।
वायाइद्धो व्व हडो[4] अट्ठिअप्पा भविस्ससि ॥ ९ ॥

तीसे सो वयणं सोच्चा संजयाए सुभासियं ।
अंकुसेण जहा नागो धम्मे संपडिवाइओ ॥ १० ॥

एवं करेन्ति संबुद्धा[5] पण्डिया पवियक्खणा ।
विणियट्टन्ति भोगेसु जहा से पुरिसोत्तमो[6] ॥ ११ ॥

—त्ति बेमि ॥

*

बीअं अज्झयणं

सामण्णपुव्वयं

'कहं नु कुज्जा'[1] सामण्णं जो कामे न निवारए।
पए पए विसीयंतो संकप्पस्स वसं गओ॥ १॥

वत्थगन्धमलंकारं इत्थीओ सयणाणि य।
अच्छन्दा जे न भुंजन्ति न से चाइ त्ति वुच्चइ॥ २॥

जे य[2] कन्ते पिए भोए लद्धे विपिट्ठिकुव्वई[3]।
साहीणे चयइ भोए[4] से हु चाइ त्ति वुच्चइ॥ ३॥

समाए[5] पेहाए परिव्वयंतो
सिया मणो निस्सरई बहिद्धा।
न सा महं नोवि अहं पि तीसे
इच्चेव ताओ विणएज्ज रागं॥ ४॥

आयावयाही चय सोउमल्लं
कामे कमाही कमियं खु दुक्खं।
'छिन्दाहि दोसं विणएज्ज रागं'[6]
एवं सुही होहिसि संपराए॥ ५॥

१—[illegible] कुज्जा (आ, जा, हा), कइज्ह कुज्जा (आ, ज, हा),
कह न कुज्जा (जा) कह स कुज्जा (आ), कह णु कुज्जा (जा)।
२—उ (अ)।
३—विपिट्ठ° (अ), विप्पिट्ठि° (ख), विप्पिट्ठ° (ग)।
४—[illegible] (अ)।
५—[illegible] (अ)।
६—[illegible] दोसं (अ)।

तइय अज्झयण

खुड्डियायारकहा

सजमे सुट्ठिअप्पाण विप्पमुक्काण ताइण ।
तेसिमेयमणाइण्ण निग्गथाण महेसिण ॥ १ ॥

उद्देसिय कीयगड नियागमभिहडाणि य ।
राइभत्ते सिणाणे य गधमल्ले य वीयणे ॥ २ ॥

सन्निही गिहिमत्ते य रायपिंडे किमिच्छए ।
सवाहणा दतपहोयणा य सपुच्छणा[1] देहपलोयणा य ॥ ३ ॥

अट्ठावए य[2] नालीय छत्तस्स य धारणट्ठाए ।
तेगिच्छ पाणहा पाए समारभ च जोइणो ॥ ४ ॥

सेज्जायरपिंड च 'आसदीपलियकए'[3] ।
गिहतरनिसेज्जा य गायस्सुव्वट्टणाणि य ॥ ५ ॥

गिहिणो वेयावडिय 'जा य आजीववित्तिया'[4] ।
तत्तानिव्वुडभोइत्त आउरस्सरणाणि[5] य ॥ ६ ॥

मूलए सिगवेरे य उच्छुखडे अनिव्वुडे ।
कदे मूले य सच्चित्ते फले बीए य आमए ॥ ७ ॥

सोवच्चले सिंधवे लोणे रोमालोणे[1] य आमए।
सामुद्दे पसुखारे य कालालोणे य आमए ॥ ८ ॥
धूवणेत्ति वमणे य वत्थीकम्म विरेयणे।
अजणे दतवणे य गायाभगविभूसणे ॥ ९ ॥
सव्वमेयमणाइण्ण निग्गथाण महेसिण।
'सजमम्मि य[2] जुत्ताणं'[3] लहुभूयविहारिण[4] ॥ १० ॥
पचासवपरिन्नाया तिगुत्ता छसु सजया।
पचनिग्गहणा धीरा[5] निग्गथा उज्जुदसिणो ॥ ११ ॥
आयावयति गिम्हेसु हेमतेसु अवाउडा।
वासासु पडिसलीणा सजया सुसमाहिया ॥ १२ ॥
परीसहरिऊदता धुयमोहा जिइदिया।
सव्वदुक्खप्पहीणट्ठा 'पक्कमति महेसिणो'[6] ॥ १३ ॥
[7]दुक्कराइ करेत्ताण दुस्सहाइ सहेत्तु य।
केइत्थ देवलोएसु केई सिज्झति नीरया ॥ १४ ॥
खवित्ता पुव्वकम्माइ सजमेण तवेण य।
सिद्धिमग्गमणुप्पत्ता ताइणो परिनिव्वुडा[8] ॥ १५ ॥
—त्ति बेमि ॥

*

१—रुमा० (अ, घ, ज)।
२—उ (अ)।
३—सजप अणुपालता (ज)।
४—०विहारिणो (ज)।
५—वीरा (अ)।
६—ते वदति सिवं गतिं (अ), परक्कमंति महेसिणो (ज)।
७—अगस्त्यचूर्णी में श्लोक १४ और १५ पाठान्तर रूप में स्वीकृत हैं।
८—परिनिव्वुड (क, ख, घ, हा), परिनिव्वुडे (ख), परिनिव्वुए (ह)।

तइयं अज्झयणं

खुड्डियायारकहा

संजमे सुट्ठिअप्पाणं विप्पमुक्काण ताइणं ।
तेसिमेयमणाइण्णं निग्गंथाण महेसिणं ॥ १ ॥

उद्देसियं कीयगडं नियागमभिहडाणि य ।
राइभत्ते सिणाणे य गंधमल्ले य वीयणे ॥ २ ॥

सन्निही गिहिमत्ते य रायपिंडे किमिच्छए ।
संबाहणा दंतपहोयणा य संपुच्छणा[1] देहपलोयणा य ॥ ३ ॥

अट्ठावए य[2] नालीय छत्तस्स य धारणट्ठाए ।
तेगिच्छं पाणहा पाए समारंभं च जोइणो ॥ ४ ॥

सेज्जायरपिंडं च 'आसंदीपलियंकए'[3] ।
गिहंतरनिसेज्जा य गायस्सुव्वट्टणाणि य ॥ ५ ॥

गिहिणो वेयावडियं 'जा य आजीववित्तिया'[4] ।
तत्तानिव्वुडभोइत्तं आउरस्सरणाणि[5] य ॥ ६ ॥

मूलए सिंगबेरे य उच्छुखंडे अनिव्वुडे ।
कंदे मूले य सच्चित्ते फले बीए य आमए ॥ ७ ॥

सोवच्चले सिंधवे लोणे रोमालोणे[1] य आमए ।
सामुद्दे पंसुखारे य कालालोणे य आमए ॥ ८ ॥
धूवणेत्ति वमणे य वत्थीकम्म विरेयणे ।
अंजणे दंतवणे य गायाभंगविभूसणे ॥ ९ ॥
सव्वमेयमणाइण्णं निग्गंथाण महेसिणं ।
'संजमम्मि य[2] जुत्ताणं'[3] लहुभूयविहारिणं[4] ॥ १० ॥
पंचासवपरिन्नाया तिगुत्ता छसु संजया ।
पंचनिग्गहणा धीरा[5] निग्गंथा उज्जुदंसिणो ॥ ११ ॥
आयावयंति गिम्हेसु हेमंतेसु अवाउडा ।
वासासु पडिसंलीणा संजया सुसमाहिया ॥ १२ ॥
परीसहरिऊदंता धुयमोहा जिइंदिया ।
सव्वदुक्खप्पहीणट्ठा 'पक्कमंति महेसिणो'[6] ॥ १३ ॥
[7]दुक्कराइं करेत्ताणं दुस्सहाइं सहेत्तु य ।
केइत्थ देवलोएसु केई सिज्झंति नीरया ॥ १४ ॥
खवित्ता पुव्वकम्माइं संजमेण तवेण य ।
सिद्धिमग्गमणुप्पत्ता ताइणो परिनिव्वुडा[8] ॥ १५ ॥
—त्ति बेमि ॥

*

१—रुमा० (अ, घ, ज)।
२—उ (अ)।
३—संजम अणुपालंता (ज)।
४—०विहारिणो (ज)।
५—वीरा (अ)।
६—ते वदंति सिवं गतिं (अ), परक्कमंति महेसिणो (ज)।
७—अगस्त्यचूर्णि में श्लोक १४ और १५ पाठान्तर रूप में स्वीकृत हैं।
८—परिनिव्वुड (क, ख, घ, हा), परिनिव्वुडे (ख), परिनिव्वुए (ह)।

चउत्थ अज्झयणं

छज्जीवणिया

सुयं मे 'आउस! तेणं'[1] भगवया एवमक्खाय—इह खलु छज्जीवणिया नामज्झयण समणेण भगवया महावीरेण कासवेण पवेइया सुयक्खाया सुपन्नत्ता। सेयं मे अहिज्जिउ अज्झयण धम्मपन्नत्ती ॥ सू० १ ॥

कयरा खलु सा छज्जीवणिया नामज्झयण समणेणं भगवया महावीरेण कासवेण पवेइया सुयक्खाया सुपन्नत्ता? सेय मे अहिज्जिउ अज्झयण धम्मपन्नत्ती ॥ सू० २ ॥

इमा खलु सा छज्जीवणिया नामज्झयण समणेण भगवया महावीरेण कासवेण पवेइया सुयक्खाया सुपन्नत्ता। सेय मे अहिज्जिउ अज्झयण धम्मपन्नत्ती त जहा—पुढविकाइया आउकाइया तेउकाइया वाउकाइया वणस्सइकाइया तसकाइया ॥ सू० ३ ॥

पुढवी चित्तमंतमक्खाया[2] अणेगजीवा पुढोसत्ता अन्नत्थ सत्थपरिणएणं ॥ सू० ४ ॥

आऊ चित्तमंतमक्खाया अणेगजीवा पुढोसत्ता अन्नत्थ सत्थपरिणएणं ॥ सू० ५ ॥

तेऊ चित्तमंतमक्खाया अणेगजीवा पुढोसत्ता अन्नत्थ

वाऊ चित्तमतमक्खाया अणेगजीवा पुढोसत्ता अन्नत्थ सत्थपरिणएणं ॥ सू० ७ ॥

वणस्सई चित्तमतमक्खाया अणेगजीवा पुढोसत्ता अन्नत्थ सत्थपरिणएणं, त जहा—अग्गबीया मूलबीया पोरबीया खध-बीया बीयरुहा सम्मुच्छिमा तणलया वणस्सइकाइया सबीया चित्तमतमक्खाया, अणेगजीवा, पुढोसत्ता अन्नत्थ सत्थपरिणएणं ॥ सू० ८ ॥

से जे पुण इमे अणेगे बहवे तसा पाणा त जहा—अडया पोयया जराउया रसया ससेइमा[1] सम्मुच्छिमा उब्भिया उववाइया। जेसि केसिचि[2] पाणाणं अभिक्कत पडिक्कंतं संकुचिय पसारियं रुय भत तसिय पलाइयं आगइगइविन्नाया—जे य कीडपयगा जा य कुथुपिवीलिया 'सव्वे बेइदिया सव्वे तेइदिया सव्वे चउरिंदिया सव्वे पचिदिया सव्वे तिरिक्खजोणिया सव्वे नेरइया सव्वे मणुया सव्वे देवा सव्वे पाणा'[3] परमाहम्मिया[4] एसो[5] खलु छट्ठो जीव-निकाओ तसकाओ त्ति पवुच्चई ॥ सू० ९ ॥

इच्चेसि[6] छण्ह जीवनिकायाणं नेवसय दंड समारभेज्जा नेवन्नेहि दड समारभावेज्जा दड समारभते वि अन्ने न समणुजाणेज्जा[7]

१—ससेयगा (जिचू)।
२—केसिं च (ख)।
३—सव्वे नेरइया, सव्वे पचेंदिया, सव्वे तिरिक्ख जोणिया, सव्वे मणुया, सव्वे देवा, सव्वे पाणा (जिचू)।
सव्वे देवा, सव्वे असुरा, सव्वे नेरइया, सव्वे पचिंदियतिरिक्खजोणिया, सव्वे मणुस्सा, सव्वे पाणा (अचू)।
४—परधम्मित्ता (जिचू पा०, जिचू पा०)।
५—× (अचू)।
६—इच्चेतेहिं (जिचू, अचू)।
७—समणुजाणामि (क, ख, ग, अचू, सू १० से २२ तक)।

जावज्जीवाए तिविह तिविहेण 'मणेण वायाए काएणं'[1] न करेमि न कारवेमि करंत पि अन्न न समणुजाणामि तस्स भते। पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाण वोसिरामि ॥ सू० १० ॥

पढमे भते! महव्वए[2] पाणाइवायाओ वेरमणं सव्व भते! पाणाइवाय पच्चक्खामि—से सुहुम वा बायर वा तस वा 'थावर वा'[3] नेव सयं पाणे अइवाएज्जा[4] नेवन्नेहि पाणे अइवायावेज्जा[5] पाणे अइवायते वि अन्ने न समणुजाणेज्जा जावज्जीवाए तिविहं तिविहेण मणेण वायाए काएण न करेमि न कारवेमि करंतं पि अन्न न समणुजाणामि। तस्स भते! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाण वोसिरामि।

पढमे भते! महव्वए उवट्ठिओमि[6] सव्वाओ पाणाइवायाओ वेरमण ॥ सू० ११ ॥

अहावरे दोच्चे भते! महव्वए मुसावायाओ वेरमण सव्वं भते! मुसावाय पच्चक्खामि—से कोहा वा लोहा वा भया वा हासा वा नेव सयं मुसं वएज्जा[7] नेवन्नेहिं मुस वायावेज्जा[8] मुस वयंते वि अन्ने न समणुजाणेज्जा जावज्जीवाए तिविह तिविहेण मणेण वायाए काएण न करेमि न कारवेमि करत पि अन्न न

समणुजाणामि। तस्स भते! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि।

दोच्चे भते! महव्वए उवट्ठिओमि सव्वाओ मुसावायाओ वेरमणं ॥ सू० १२ ॥

अहावरे तच्चे भते! महव्वए अदिन्नादाणाओ वेरमण सव्व भते! अदिन्नादाण पच्चक्खामि से गामे वा नगरे वा रण्णे[1] वा अप्पं वा बहुं वा अणुं वा थूलं वा चित्तमंतं वा अचित्तमंत वा, नेव सयं अदिन्न गेण्हेज्जा नेवन्नेहि अदिन्न गेण्हावेज्जा अदिन्नं गेण्हते वि अन्ने न समणुजाणेज्जा जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेण वायाए काएण न करेमि न कारवेमि करतं पि अन्न न समणु-जाणामि। तस्स भंते! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाण वोसिरामि।

तच्चे भते! महव्वए उवट्ठिओमि सव्वाओ अदिन्नादाणाओ वेरमण ॥ सू० १३ ॥

अहावरे चउत्थे भते! महव्वए मेहुणाओ वेरमण सव्व भते! मेहुण पच्चक्खामि—से दिव्वं वा माणुसं वा तिरिक्खजोणियं वा, नेव सय मेहुण सेवेज्जा नेवन्नेहिं मेहुण सेवावेज्जा मेहुण सेवते वि अन्ने न समणुजाणेज्जा जावज्जीवाए तिविह तिविहेण मणेण वायाए काएण न करेमि न कारवेमि करतं पि अन्न न समणुजाणामि। तस्स भते! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाण वोसिरामि।

चउत्थे भते! महव्वए उवट्ठिओमि सव्वाओ मेहुणाओ वेरमण ॥ सू० १४ ॥

१—अरण्णे (अचू)।

समणुजाणेज्जा जावज्जीवाए तिविह तिविहेण मणेण वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करत पि अन्न न समणुजाणामि। तस्स भते! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाण वोसिरामि ॥ सू० २१ ॥

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सजयविरय-पडिहयपच्चक्खायपावकम्मे दिया वा राओ वा एगओ वा परिसागओ वा सुत्ते वा जागरमाणे वा—से बीएसु वा वीयपइट्ठिएसु[1] वा रूढेसु वा रूढपइट्ठिएसु वा जाएसु वा जायपइट्ठिएसु वा हरिएसु वा हरियपइट्ठिएसु वा छिन्नेसु वा 'छिन्नपइट्ठिएसु वा'[2] सच्चित्तकोलपडिनिस्सिएसु वा, न गच्छेज्जा न चिट्ठेज्जा न निसीएज्जा न तुयट्टेज्जा अन्न न गच्छावेज्जा न चिट्ठावेज्जा न निसीयावेज्जा न तुयट्टावेज्जा अन्न गच्छत वा चिट्ठत वा निसीयत वा तुयट्टत वा न समणुजाणेज्जा जावज्जीवाए तिविह तिविहेण मणेण वायाए काएण न करेमि न कारवेमि करत पि अन्न न समणुजाणामि। तस्स भते! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाण वोसिरामि ॥ सू० २२ ॥

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सजयविरय-पडिहयपच्चक्खायपावकम्मे दिया वा राओ वा एगओ वा परिसागओ वा सुत्ते वा जागरमाणे वा—से कीड वा पयग वा कुथु वा पिवीलिय वा हत्थसि वा पायसि वा "बाहुसि वा ऊरुसि वा 'उदरसि वा सीससि वा वत्थसि वा 'पडिग्गहसि वा'[3] रयहरणसि वा'[4] गोच्छगंसि वा उडगसि वा दडगसि वा

१—वीयपइट्ठेसु (क ख ग, घ)।
२—छिन्नपइट्ठिएसु वा सच्चित्तेसु वा (क ख ग घ ह)।
३—पडिग्गहसि वा कबलसि वा पाय पुछगसि वा (क ख ग)।
४—उदरसि वा वत्थसि वा रयहरणसि वा (ह)।

पीढगंसि वा"[1] फलगंसि वा सेज्जंसि वा संथारगंसि वा अन्नयरंसि वा तहप्पगारे उवगरणजाए तओ संजयामेव पडिलेहिय पडिलेहिय पमज्जिय पमज्जिय एगंतमवणेज्जा नो णं संघायमावज्जेज्जा ॥ सू० २३ ॥

अजयं चरमाणो उ[2] पाणभूयाइं हिंसई[3] ।
बंधई[4] पावयं कम्मं तं से होइ कडुयं फलं ॥ १ ॥
अजयं चिट्ठमाणो उ पाणभूयाइं हिंसई ।
बंधई पावयं कम्मं तं से होइ कडुयं फलं ॥ २ ॥
अजयं आसमाणो उ पाणभूयाइं हिंसई ।
बंधई पावयं कम्मं तं से होइ कडुयं फलं ॥ ३ ॥
अजयं सयमाणो उ पाणभूयाइं हिंसई ।
बंधई पावयं कम्मं तं से होइ कडुयं फलं ॥ ४ ॥
अजयं भुंजमाणो उ पाणभूयाइं हिंसई ।
बंधई पावयं कम्मं तं से होइ कडुयं फलं ॥ ५ ॥
अजयं भासमाणो उ पाणभूयाइं हिंसई ।
बंधई पावयं कम्मं तं से होइ कडुयं फलं ॥ ६ ॥
कहं चरे? कहं चिट्ठे? कहमासे? कहं सए?
कहं भुंजन्तो भासन्तो पावं कम्मं न बंधई? ॥ ७ ॥
जयं चरे जयं चिट्ठे जयमासे जयं सए ।
जयं भुंजन्तो भासन्तो पावं कम्मं न बंधई ॥ ८ ॥
सव्वभूयप्पभूयस्स सम्मं भूयाइं पासओ ।
पिहियासवस्स दंतस्स पावं कम्मं न बंधई ॥ ९ ॥

१—बाहंसि वा उदसीससि वा उरुंसि वा उदरंसि वा पातंसि वा रयहरणंसि वा गोच्छगंसि वा इंडासि वा कवलंसि वा उड्डुयंसि वा पीढगंसि वा (अ)।

२—य (ख ग)। गाथा १ से ६ तक।

३—हिंसओ (अ, ज)। गाथा १ से ६ में।

४—बज्झइ (अ)। गाथा १ से ६ व ९ में।

पढम नाण तओ दया एव चिट्ठइ सव्वसजए ।
अन्नाणी किं काही ? किंवा नाहिइ छेय पावग ? ॥१०॥
सोच्चा जाणइ कल्लाण सोच्चा जाणइ पावग ? ।
उभय पि जाणई सोच्चा ज छेय त समायरे ॥११॥
जो जीवे वि न याणाइ अजीवे वि न याणई ।
जीवाजीवे अयाणतो कह सो नाहिइ सजम ? ॥१२॥
जो जीवे वि वियाणाइ अजीवे वि वियाणई ।
जीवाजीवे वियाणतो सो हु नाहिइ सजम ॥१३॥
जया 'जीवे अजीवे'[1] य दो वि एए वियाणई ।
तया गइ बहुविह सव्वजीवाण जाणई ॥१४॥
जया गइ बहुविह सव्वजीवाण जाणई ।
तया पुण्ण च पाव च बध मोक्ख च जाणई ॥१५॥
जया पुण्ण च पाव च बध मोक्ख च जाणई ।
तया निव्विदए भोए जे दिव्वे जे य माणुसे ॥१६॥
जया निव्विदए भोए जे दिव्वे जे य माणुसे ।
तया चयइ[2] सजोग सब्भितरबाहिर ॥१७॥
जया चयइ[2] सजोग सब्भितरबाहिर ।
तया मुडे भवित्ताण पव्वइए[3] अणगारिय ॥१८॥
जया मुडे भवित्ताण पव्वइए[3] अणगारिय ।
तया सवरमुक्किट्ठ धम्म फासे[4] अणुत्तर ॥१९॥
जया सवरमुक्किट्ठ धम्म फासे[4] अणुत्तर ।
तया धुणइ कम्मरय अबोहिकलुस कड ॥२०॥

१—जीवमजीवे (क ख, ग, घ)।
२—जहइ (अ ज)।
३—पव्वए (ग) पव्वाति (अ)।
४—फासेइ (अ ज) फासइ (घ)।

जया धुणइ कम्मरयं अबोहिकलुसं कडं ।
तया सव्वत्तगं[1] नाणं दंसणं चाभिगच्छई ॥२१॥
जया सव्वत्तगं नाणं दंसणं चाभिगच्छई ।
तया लोगमलोगं च जिणो जाणइ केवली ॥२२॥
जया लोगमलोगं च जिणो जाणइ केवली ।
तया जोगे निरुंभित्ता सेलेसिं पडिवज्जई ॥२३॥
जया जोगे निरुंभित्ता सेलेसिं पडिवज्जई ।
तया कम्मं खवित्ताणं सिद्धिं गच्छइ नीरओ ॥२४॥
जया कम्मं खवित्ताणं सिद्धिं गच्छइ नीरओ ।
तया लोगमत्थयत्थो सिद्धो हवइ सासओ ॥२५॥
सुहसायगस्स[2] समणस्स
सायाउलगस्स निगामसाइस्स ।
उच्छोलणापहोइस्स
दुलहा सुग्गइ तारिसगस्स ॥२६॥
तवोगुणपहाणस्स
उज्जुमइ खंतिसंजमरयस्स ।
परीसहे जिणंतस्स
सुलहा सुग्गइ तारिसगस्स ॥२७॥
[पच्छा वि ते पयाया
खिप्पं गच्छन्ति अमरभवणाइं ।
जेसिं पिओ तवो संजमो य
खन्ती य बम्भचेरं च ॥][3]

१—सव्वत्थगं (ज)।
२—सुहसीलगस्स (अ), सुहसायगस्स (आ)।
३—यह गाथा (क, ख, ग, घ) प्रतियों में है किन्तु चूर्णिद्वय व टीका में व्याख्यात नहीं है।

इच्चेयं छज्जीवणियं
सम्मद्दिट्ठी सया जए ।
दुलहं[1] लभित्तु सामण्णं
कम्मुणा न विराहेज्जासि ॥२८॥
—त्ति बेमि ॥

*

१—दुल्लह (ज), दुल्लभ (अ)।

पञ्चम अज्झयण

पिंडेसणा (पढमोद्देसो)

संपत्ते भिक्खकालम्मि[1] असंभतो अमुच्छिओ ।
इमेण कमजोगेण भत्तपाणं गवेसए ॥ १ ॥

से गामे वा नगरे वा गोयरग्गगओ मुणी ।
चरे मंदमणुव्विग्गो अव्वक्खित्तेण[2] चेयसा ॥ २ ॥

पुरओ[3] जुगमायाए[4] पेहमाणो महिं चरे ।
वज्जंतो बीयहरियाइं पाणे य दगमट्टियं ॥ ३ ॥

ओवायं विसमं खाणुं विज्जलं परिवज्जए ।
संकमेण न गच्छेज्जा विज्जमाणे परक्कमे ॥ ४ ॥

पवडन्ते व से तत्थ पक्खलन्ते व संजए ।
हिंसेज्ज पाणभूयाइं[5] तसे अदुव थावरे ॥ ५ ॥

तम्हा तेण न गच्छेज्जा संजए सुसमाहिए ।
सइ अन्नेण मग्गेण जयमेव परक्कमे ॥[6] ६ ॥

१—भिक्खु ० (क, ग)।
२—अवक्खित्तेण (अ), अव्विक्खित्तेण (ग)।
३—सव्वतो (आ, जा)।
४—०मायाय (जा), ०मादाय (आ)।
५—०भूतेय (अ, ज)।
६—श्लोक ६ के पश्चात् अगस्त्यचूर्णि में निम्न श्लोक का (जो कि कुछ परिवर्तन के साथ ६५वें, ६६वें श्लोक के प्रथम दो-दो चरण हैं) उल्लेख है (अयं केसिंचि सिलोगो उवरिं भण्णिहिति)—
चलं कट्ठं सिलं वावि इट्टालं वावि संकमो ।
न तेग भिक्ख ... दिट्ठो तत्थ असंजमो ।

इंगाल छारियं रासिं तुसरासिं च गोमयं।
'ससरक्खेहिं पाएहिं'[1] संजओ तं 'न अक्कमे'[2] ॥ ७ ॥
न चरेज्ज वासे वासंते महियाए व[3] पडंतीए।
महावाए व वायंते तिरिच्छसंपाइमेसु वा ॥ ८ ॥
न चरेज्ज वेससामंते बंभचेरवसाणुए[4]।
बंभयारिस्स दंतस्स होज्जा तत्थ विसोत्तिया ॥ ९ ॥
अणायणे चरंतस्स संसग्गीए अभिक्खणं।
होज्ज वयाणं पीला सामण्णम्मि य संसओ ॥१०॥
तम्हा एयं वियाणित्ता दोसं दुग्गइवड्ढणं।
वज्जए वेससामंतं मुणी एगंतमस्सिए ॥११॥
साणं सूइयं[5] गाविं दित्तं गोणं हयं गयं।
संडिब्भं कलहं जुद्धं दूरओ परिवज्जए ॥१२॥
अणुन्नए नावणए अप्पहिट्ठे अणाउले।
इंदियाणि जहाभागं[6] दमइत्ता मुणी चरे ॥१३॥
दवदवस्स न गच्छेज्जा भासमाणो य[7] गोयरे।
हसंतो नाभिगच्छेज्जा कुलं उच्चावयं सया ॥१४॥
आलोयं थिग्गलं दारं संधिं दगभवणाणि य।
चरंतो न विणिज्झाए संकट्ठाणं विवज्जए ॥१५॥
रन्नो गिहवईणं च 'रहस्सारक्खियाण'[8] य।
संकिलेसकरं ठाणं दूरओ परिवज्जए ॥१६॥

१—ससरक्खेण पाएण (अ)।
२—न्ऽइक्कमे (क, ख, ग घ)।
३— × (अ)।
४—बंभचारि° (आ) °वत्ताए (ह)।
५—सूयं (क, ख ग, घ, ह) सूवियं (ज)।
६—जहाभावं (ज)।
७—व (ह)। ८—रहस्सारक्खियाणि (ख)।

पडिकुट्ठकुलं न पविसे मामगं परिवज्जए ।
अचियत्तकुलं न पविसे चियत्तं पविसे कुलं ॥१७॥
साणीपावारपिहियं अप्पणा नावपंगुरे ।
कवाडं नो पणोल्लेज्जा ओग्गहंसि अजाइया ॥१८॥
गोयरग्गपविट्ठो उ वच्चमुत्तं न धारए ।
ओगासं फासुयं नच्चा अणुन्नविय वोसिरे ॥१९॥
नीयदुवारं तमसं कोट्ठगं परिवज्जए ।
अचक्खुविसओ जत्थ पाणा दुप्पडिलेहगा ॥२०॥
जत्थ पुप्फाइ बीयाइ विप्पइण्णाइ कोट्ठए ।
अहुणोवलित्तं उल्लं दट्ठूण परिवज्जए ॥२१॥
एलगं दारगं साणं वच्छगं वावि कोट्ठए ।
उल्लंघिया न पविसे विऊहित्ताण व संजए ॥२२॥
असंसत्तं पलोएज्जा नाइदूरावलोयए ।
उप्फुल्लं न विणिज्झाए नियट्टेज्ज अयंपिरो ॥२३॥
अइभूमिं न गच्छेज्जा गोयरग्गगओ मुणी ।
कुलस्स भूमिं जाणित्ता मियं भूमिं परक्कमे ॥२४॥
तत्थेव पडिलेहेज्जा भूमिभागं वियक्खणो ।
सिणाणस्स य वच्चस्स संलोगं परिवज्जए ॥२५॥
'दगमट्टियआयाणे'[1] बीयाणि हरियाणि य[2] ।
परिवज्जंतो चिट्ठेज्जा सव्विंदियसमाहिए ॥२६॥
तत्थ से चिट्ठमाणस्स आहरे पाणभोयणं ।
अकप्पियं न इच्छेज्जा[3] पडिगाहेज्ज कप्पियं ॥२७॥

१—°आयाणे (क ख, ग, घ)।
२—वा (अ)।
३—गिण्हेज्जा (क घ, ह)।

आहरंती सिया तत्थ परिसाडेज्ज भोयणं ।
देतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिस ॥२८॥

सम्मद्दमाणी पाणाणि बीयाणि हरियाणि य ।
असजमकरिं नच्चा तारिस[1] परिवज्जए ॥२९॥

साहट्टु निक्खिवित्ताण सच्चित्त घट्टियाण[2] य ।
तहेव समणट्ठाए उदग सपणोल्लिया ॥३०॥

आगाहइत्ता[3] चलइत्ता आहरे पाणभोयणं ।
देतिय पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिस ॥३१॥

पुरेकम्मेण हत्थेण दव्वीए भायणेण वा ।
देतिय पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिस ॥३२॥

[एव उदओल्ले ससिणिद्धे ससरक्खे मट्टिया ऊसे ।
हरियाले हिंगुलए मणोसिला अजणे लोणे ॥३३॥
गेरुय वण्णिय सेडिय सोरट्ठिय पिट्ठ कुक्कुस कए य ।
उक्कट्ठमससट्टे ससट्टे चेव वोधव्वे ॥३४॥][4]

१—तारिसि (ह) ।
२—घट्टियाणि (क, ख, ग) ।
३—ओगाहइत्ता (अ, ज, ह) ।
४—अगस्त्य चूर्णि मे गाथा ३३-३४ के स्थान मे सतरह श्लोक हैं
१—उदउल्लेण हत्थेण दव्वीए भायणेण वा ।
देंतिय पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिस ॥
२—ससिणिद्धेण हत्थेण
३—ससरक्खेण ,, ,,
४—मट्टियागतेण ,,
५—ऊसगतेण ,,
६—हारतालगतेण
७—हिंगोलएगतेण
८—मणोसिलागतेण ,,
९—अजणगतेण
१०—लोणगतेण हत्थेण
११—गेरुयगतेण ,,
१२—वण्णियगतेण ,,
१३—सेडियगतेण ,, ,,
१४—सोरट्ठियगतेण ,,
१५—पिट्ठगतेण ,, ,,
१६—कुक्कुसगतेण ,,
१७—उक्कुट्ठगतेण ,,

असंसट्ठेण हत्थेण दव्वीए भायणेण वा ।
दिज्जमाणं न इच्छेज्जा पच्छाकम्मं जहिं भवे ॥३५॥
संसट्ठेण हत्थेण दव्वीए भायणेण वा ।
दिज्जमाणं पडिच्छेज्जा जं तत्थेसणियं भवे ॥३६॥
दोण्हं तु भुंजमाणाणं एगो तत्थ निमंतए ।
दिज्जमाणं न इच्छेज्जा छंदं से पडिलेहए ॥३७॥
दोण्हं तु भुंजमाणाणं दोवि तत्थ निमंतए ।
दिज्जमाणं पडिच्छेज्जा जं तत्थेसणियं भवे ॥३८॥
गुव्विणीए उवन्नत्थं विविहं पाणभोयणं ।
भुज्जमाणं[1] विवज्जेज्जा भुत्तसेसं पडिच्छए ॥३९॥
सिया य समणट्ठाए गुव्विणी कालमासिणी ।
उट्ठिया वा निसीएज्जा निसन्ना वा पुणुट्ठए ॥४०॥
'तं भवे भत्तपाणं तु संजयाण अकप्पियं ।'[2]
देंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥४१॥
'थणगं पिज्जेमाणी दारगं वा कुमारियं ।'[2]
तं निक्खिवित्तु रोयंतं आहरे पाणभोयणं ॥४२॥
तं भवे भत्तपाणं तु संजयाण अकप्पियं ।
देंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥४३॥
जं भवे भत्तपाणं तु कप्पाकप्पम्मि संकियं ।
देंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥४४॥
दगवारएण पिहियं नीसाए पीढएण वा ।
लोढेण वा वि लेवेण सिलेसेण व केणई ॥४५॥

१—भुंजमाणं (क, ख, ग, घ, ज)।

२—अगस्त्य चूर्णी में श्लोक ४१ ४३ के प्रथम दो चरण नहीं हैं—पुव्व भणित सुत्त सिलोगद्ध वितीए अणुस्सरिज्जति "देंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पति तारिसं" एवं दिवड्ढ सिलोगो (अ)।

त च उब्भिदिया देज्जा समणट्ठाए व दावए।
देतिय पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥४६॥

असण पाणग वा वि खाइम साइम तहा।
ज जाणेज्ज सुणेज्जा वा दाणट्ठा पगड इम ॥४७॥

'त भवे'[1] भत्तपाण तु सजयाण अकप्पिय।
देतिय पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिस ॥४८॥

असण पाणग वा वि खाइम साइम तहा।
ज जाणेज्ज सुणेज्जा वा पुण्णट्ठा पगड इम ॥४९॥

त भवे भत्तपाण तु सजयाण अकप्पिय।
देतिय पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिस ॥५०॥

असण पाणग वा वि खाइम साइम तहा।
ज जाणेज्ज सुणेज्जा वा वणिमट्ठा पगड इम ॥५१॥
त भवे भत्तपाण तु सजयाण अकप्पियं।
देतिय पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिस ॥५२॥
असण पाणग वा वि खाइम साइम तहा।
ज जाणेज्ज सुणेज्जा वा समणट्ठा पगड इम ॥५३॥
त भवे भत्तपाण तु सजयाण अकप्पिय।
देतिय पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिस ॥५४॥
उद्देसिय कीयगड पूईकम्म च आहड।
अज्झोयर पामिच्च मीसजायं 'च वज्जए'[2] ॥५५॥
उग्गम से पुच्छेज्जा कस्सट्ठा केण वा कडं?।
सोच्चा निस्सकिय सुद्धं पडिगाहेज्ज सजए ॥५६॥

१—तारिस (अ, क ह)।
२—विवज्जए (अ, ज)।

बहु-अट्ठियं पुग्गलं अणिमिसं वा बहु-कंटयं ।
अत्थियं तिंदुयं बिल्लं उच्छुखंडं व[1] सिंबलिं ॥७३॥

अप्पे सिया भोयणजाए बहु-उज्झिय-धम्मिए ।
देतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥७४॥

तहेवुच्चावयं पाणं अदुवा वारधोयणं ।
संसेइमं चाउलोदगं अहुणाधोयं विवज्जए ॥७५॥

जं जाणेज्ज चिराधोयं मईए दंसणेण वा ।
पडिपुच्छिऊण सोच्चा वा जं च निस्संकियं भवे ॥७६॥

अजीवं परिणयं नच्चा पडिगाहेज्ज संजए ।
अह संकियं भवेज्जा आसाइत्ताण रोयए ॥७७॥

थोवमासायणट्ठाए हत्थगम्मि दलाहि मे ।
मा मे अच्चंबिलं पूइं नालं तण्हं विणित्तए ॥७८॥

तं च अच्चंबिलं पूइं नालं तण्हं विणित्तए ।
देंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥७९॥

तं च होज्ज अकामेणं विमणेण पडिच्छियं ।
तं अप्पणा न पिबे[2] नो वि अन्नस्स दावए ॥८०॥

एगंतमवक्कमित्ता अचित्तं पडिलेहिया ।
जयं परिट्ठवेज्जा परिट्ठप्प[3] पडिक्कमे ॥८१॥

सिया य गोयरग्गगओ इच्छेज्जा परिभोत्तुयं ।
कोट्ठगं भित्तिमूलं वा पडिलेहित्ताण फासुयं ॥८२॥

अणुन्नवेत्तु मेहावी पडिच्छन्नम्मि संवुडे ।
हत्थगं संपमज्जित्ता तत्थ भुंजेज्ज संजए ॥८३॥

असण पाणग वा वि खाइमं साइम तहा ।
पुप्फेसु होज्ज उम्मीस बीएसु हरिएसु वा ॥५७॥
'त भवे'[1] भत्तपाण तु सजयाण अकप्पियं ।
देतिय पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिस ॥५८॥
असण पाणग वा वि खाइम साइम तहा ।
उदगम्मि होज्ज निक्खित्त उत्तिगपणगेसु वा ॥५९॥
'त भवे'[1] भत्तपाण तु सजयाण अकप्पियं ।
देतिय पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥६०॥
असण पाणग वा वि खाइम साइम तहा ।
'तेउम्मि'[2] होज्ज निक्खित्त त च संघट्टिया दए ॥६१॥
त भवे भत्तपाण तु सजयाण अकप्पियं ।
देतिय पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिस ॥६२॥
[एव उस्सक्किया ओसक्किया उज्जालिया पज्जालिया निव्वाविया ।
उस्सिचिया निस्सिचिया ओवत्तिया ओयारिया दए ॥६३॥][3]

१—तारिसं (अ, क, ह) ।
२—अगणिम्मि (अ) ।
३—अगस्त्यचूर्णि में गाथा ६३ के स्थान पर निम्न अट्ठारह श्लोक हैं—
१—असण पागग वावि खाइप साइम तहा ।
ते उम्मि होज्ज निक्खित त च उस्सक्किया दए ॥
२—त भवे भत्तपाण तु सजयाण अकप्पिय ।
देंतिय पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिस ॥
३— त च ओसक्किया दए ॥
५— त च उज्जालिया ,, ॥
७— त च निव्वाविया ,, ॥
९— त च उस्सिचिया ,, ॥
११— त च उक्कड्ढिया ,, ॥
१३— त च निस्सिचिया ,, ॥
१५— त च ओवत्तिया ,, ॥
१७— त च ओयारिया ,, ॥
श्लोक ४ ६, ८, १०, १२, १४,१६, १८ ठीक दूसरे श्लोक की तरह हैं ।

तं भवे भत्तपाण तु संजयाण अकप्पियं ।
देतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिस ॥६४॥
'होज्ज कट्ठं सिलं वा वि इट्टालं वा वि एगया ।
ठविय सकमट्ठाए त च होज्ज चलाचल ॥६५॥'[1]
'न तेण भिक्खू गच्छेज्जा दिट्ठो तत्थ असंजमो ।'[2]
गंभीरं झुसिरं चेव सव्विदियसमाहिए ॥६६॥
निस्सेणि फलगं पीढ उस्सवित्ताणमारुहे ।
मचं कीलं च पासाय समणट्ठाए व दावए ॥६७॥
दुरूहमाणी[3] पवडेज्जा हत्थं पायं व लूसए ।
पुढविजीवे[4] वि हिंसेज्जा जे य[5] तन्निस्सिया जगा ॥६८॥
'एयारिसे महादोसे जाणिऊण महेसिणो ।'[6]
तम्हा[7] मालोहड भिक्ख न 'पडिगेण्हति संजया'[8] ॥६९॥
कदं मूलं पलव वा आम छिन्नं व सन्निर ।
तुवागं सिंगवेर च आमग परिवज्जए ॥७०॥
तहेव सत्तुचुण्णाइं कोलचुण्णाइ आवणे ।
सक्कुलि फाणियं पूयं अन्न वा वि तहाविह ॥७१॥
विक्कायमाणं पसढ रएण परिफासिय ।
देतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिस ॥७२॥

१—अगस्त्य चूर्णि में यह श्लोक यहाँ नहीं है। किन्तु इसी उद्देशक के छठे श्लोक के पश्चात् है।
२—६६वें श्लोक के प्रथम दो चरण अगस्त्य चूर्णि मे व्याख्यात नहीं है।
३—दुरूहमाणे (अ)।
४—पुढवि काय (अ ज,)
५—वा (अ)।
६—६९वें श्लोक के प्रथम दो चरण अगस्त्य चूर्णि मे व्याख्यात नहीं हैं।
७—हदि (हा)।
८—पडिगाहेज्ज सजए (अ)।

बहु-अट्ठियं पुग्गलं अणिमिसं वा बहु-कंटयं ।
अत्थियं तिंदुयं बिल्लं उच्छुखंडं व[1] सिंबलिं ॥७३॥
अप्पे सिया भोयणजाए बहु-उज्झियं-धम्मिए ।
देंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥७४॥
तहेवुच्चावयं पाणं अदुवा वारधोयणं ।
संसेइमं चाउलोदगं अहुणाधोयं विवज्जए ॥७५॥
जं जाणेज्ज चिराधोयं मईए दंसणेण वा ।
पडिपुच्छिऊण सोच्चा वा जं च निस्संकियं भवे ॥७६॥
अजीवं परिणयं नच्चा पडिगाहेज्ज संजए ।
अह संकियं भवेज्जा आसाइत्ताण रोयए ॥७७॥
थोवमासायणट्ठाए हत्थगम्मि दलाहि मे ।
मा मे अच्चंबिलं पूइं नालं तण्हं विणित्तए ॥७८॥
तं च अच्चंबिलं पूइं नालं तण्हं विणित्तए ।
देंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥७९॥
तं च होज्ज अकामेणं विमणेण पडिच्छियं ।
तं 'अप्पणा न पिबे'[2] नो वि अन्नस्स दावए ॥८०॥
एगंतमवक्कमित्ता अचित्तं पडिलेहिया ।
जयं परिट्ठवेज्जा परिट्ठप्प[3] पडिक्कमे ॥८१॥
सिया य गोयरग्गगओ इच्छेज्जा परिभोत्तुयं ।
कोट्ठगं भित्तिमूलं वा पडिलेहित्ताण फासुयं ॥८२॥
अणुन्नवेत्तु मेहावी पडिच्छन्नम्मि संवुडे ।
हत्थगं संपमज्जित्ता तत्थ भुंजेज्ज संजए ॥८३॥

१—च (क, ख, घ)।
२—अप्पणा वि न पिबे (अ)।
३—पडिट्ठप्प (ह)।

तत्थ से भुजमाणस्स अट्ठियं कटओ सिया ।
तण-कट्ठ-सक्कर वा वि अन्न 'वा वि'[1] तहाविह ॥८४॥
तं उक्खिवित्तु न निक्खिवे आसएण न छड्डुए ।
हत्थेण त गहेऊणं एगतमवक्कमे ॥८५॥
एगंतमवक्कमित्ता अचित्त पडिलेहिया ।
जय परिट्ठवेज्जा परिट्टप्प[2] पडिक्कम्मे ॥८६॥
सिया य भिक्खू इच्छेज्जा सेज्जमागम्म भोत्तुय ।
सपिंडपायमागम्म उड्डुय[3] पडिलेहिया ॥८७॥
विणएण पविसित्ता सगासे गुरुणो मुणी ।
इरियावहियमायाय[4] आगओ य पडिक्कमे ॥८८॥
आभोएत्ताण नीसेसं अइयार[5] जहक्कम ।
गमणागमणे चेव भत्तपाणे व[6] सजए ॥८९॥
उज्जुप्पन्नो अणुव्विग्गो अव्वक्खित्तेण चेयसा ।
आलोए गुरुसगासे ज जहा गहिय भवे ॥९०॥
न सम्ममालोइयं होज्जा पुव्वि पच्छा व ज कडं ।
पुणो पडिक्कमे तस्स वोसट्ठो चिंतए इम ॥९१॥
अहो जिणेहि असावज्जा वित्ती साहूण देसिया ।
मोक्खसाहणहेउस्स साहुदेहस्स धारणा ॥९२॥
नमोक्कारेण पारेत्ता करेत्ता जिणसथव ।
सज्झायं पट्ठवेत्ताण वीसमेज्ज खण मुणी ॥९३॥

१—चापि (ह) ।
२—पडिट्ठप्प (ह) ।
३—उण्णयं (अ) ।
४—० मायाए (ख) ।
५—अइयारं च (क ग घ ह) ।
६—च (क. ख ग घ ह) ।

वीसमंतो इमं चिंते हियमट्ठं लाभमट्ठिओ ।
जइ मे अणुग्गहं कुज्जा साहू होज्जामि तारिओ ॥९४॥
साहवो तो चियत्तेणं निमंतेज्ज जहक्कमं ।
जइ तत्थ केइ[1] इच्छेज्जा तेहिं सद्धिं तु भुंजए ॥९५॥
अह कोइ न इच्छेज्जा तओ भुंजेज्ज एक्कओ ।
आलोए[2] भायणे साहू जयं 'अपरिसाडयं'[3] ॥९६॥
तित्तगं व कडुयं व कसायं
अंबिलं व[4] महुरं लवणं वा ।
एयं लद्धमन्नट्ठ-पउत्तं
महु-घयं व भुंजेज्ज संजए ॥९७॥
अरसं विरसं वा वि सूइयं[5] वा असूइयं ।
उल्लं वा जइ वा सुक्कं मन्थु-कुम्मास-भोयणं ॥९८॥
उप्पण्णं नाइहीलेज्जा अप्पं पि[6] बहु फासुयं ।
मुहालद्धं मुहाजीवी भुंजेज्जा दोसवज्जियं ॥९९॥
दुल्लहा उ[7] मुहादाई मुहाजीवी वि दुल्लहा ।
मुहादाई मुहाजीवी दो वि गच्छंति सोग्गइं ॥१००॥
—त्ति बेमि ॥

*

१—कोइ (अ) ।
२—आलोय (अ ज) ।
३—अपरिसाडिय (क ख, ग, घ, ज) ।
४— (ग घ) ।
५—सूचियं (ज) ।
६—वा (क ख ग घ, ह) ।
७—हु (ज) ।

पचम अज्झयण

पिंडेसणा (बीओ उद्देसो)

पडिग्गह सलिहित्ताण लेव-मायाए[1] संजए ।
दुगध वा सुगध वा सव्व भुजे न छड्डुए[2] ॥ १ ॥
सेज्जा निसीहियाए समावन्नो व[3] गोयरे ।
अयावयट्ठा भोच्चाण जइ तेण न सथरे ॥ २ ॥
तओ कारणमुप्पन्ने भत्तपाण गवेसए ।
विहिणा पुव्व-उत्तेण इमेण उत्तरेण य ॥ ३ ॥
कालेण निक्खमे भिक्खू 'कालेण य[4]' पडिक्कमे ।
अकाल च विवज्जेत्ता काले कालं समायरे ॥ ४ ॥
अकाले चरसि भिक्खू काल न पडिलेहसि ।
अप्पाण च किलामेसि सन्निवेसं च गरिहसि ॥ ५ ॥
सइ काले चरे भिक्खू कुज्जा पुरिसकारिय ।
अलाभो त्ति न सोएज्जा तवो त्ति अहियासए ॥ ६ ॥
तहेवुच्चावया पाणा भत्तट्ठाए समागया ।
त-उज्जुय न गच्छेज्जा जयमेव परक्कमे ॥ ७ ॥
गोयरग्ग-पविट्ठो उ[5] न निसीएज्ज कत्थई ।
कह च न पबधेज्जा चिट्ठित्ताण व संजए ॥ ८ ॥
अग्गल फलिह दार कवाडं वा वि सजए ।
अवलविया न चिट्ठेज्जा गोयरग्गगओ मुणी ॥ ९ ॥

१—० मायाय (ग), मादाय (आ), मायाइ (ख)।
२—उज्झए (ह)।
३—य (क, ख, ग)।
४—कालेणे व (अ)।
५—य (ग)।

समण माहण वा वि किविणं वा वणीमगं ।
'उवसकमत भत्तट्ठा पाणट्ठाए व सजए'[1] ॥१०॥
त अइक्कमित्तु[2] न पविसे न चिट्ठे 'चक्खु-गोयरे'[3] ।
'एगतमवक्कमित्ता तत्थ चिट्ठेज्ज सजए'[1] ॥११॥
वणीमगस्स वा तस्स दायगस्सुभयस्स वा ।
अप्पत्तिय सिया होज्जा लहुत्त[4] पवयणस्स वा ॥१२॥
पडिसेहिए व दिन्ने[5] वा तओ तम्मि नियत्तिए ।
उवसकमेज्ज भत्तट्ठा पाणट्ठाए व संजए ॥१३॥
उप्पल पउम वा वि कुमुय वा मगदतिय ।
अन्न वा पुप्फ सच्चित्त त च सलुचिया दए ॥१४॥
'त भवे'[6] भत्तपाण तु सजयाण अकप्पियं ।
देतिय पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥१५॥
उप्पल पउम वा वि कुमुय वा मगदतिय ।
अन्न वा पुप्फ सच्चित्त त च सम्मद्दिया दए ॥१६॥
'त भवे भत्तपाण तु सजयाण अकप्पिय'[7] ।
देतिय पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिस ॥१७॥
सालुय वा विरालिय कुमुदुप्पलनालिय[8] ।
मुणालिय सासवनालिय उच्छुखड अनिव्वुड ॥१८॥

१—अगस्त्य चूर्णि में दस और ग्यारह श्लोक के अन्तिम दो दो चरण व्याख्यात नहीं हैं ।
२—अइक्कम्म (अ) ।
३—चक्खु फासओ (अ) ।
४—लहुयत्त (घ) ।
५—दिन्ने (अ) ।
६—तारिस (ह), एतस्स सिलोगस्स प्रागेण पच्चद्धध पढंति (अ) ।
७—अगस्त्य चूर्णि में ये दो चरण व्याख्यात नहीं हैं ।
८—कुमुय उप्पल० (क, ख ग, घ) ।

तरुणगं वा पवालं रुक्खस्स तणगस्स वा ।
अन्नस्स वा वि हरियस्स आमगं परिवज्जए ॥१९॥

तरुणियं व छिवाडिं आमियं भज्जियं सइं ।
देंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥२०॥

तहा कोलमणुस्सिन्नं वेलुयं कासवनालियं ।
तिलपप्पडगं नीमं आमगं परिवज्जए ॥२१॥

तहेव चाउलं पिट्ठं वियडं वा तत्तनिव्वुडं ।
तिलपिट्ठ पूइ पिन्नागं आमगं परिवज्जए ॥२२॥

कविट्ठं माउलिंगं च मूलगं 'मूलगत्तियं'[1] ।
आमं असत्थपरिणयं मणसा वि न पत्थए ॥२३॥

तहेव फलमंथूणि बीयमंथूणि जाणिया ।
बिहेलगं पियालं च आमगं परिवज्जए ॥२४॥

समुयाणं चरे भिक्खू कुलं उच्चावयं सया ।
नीयं कुलमइक्कम्म ऊसढं नाभिधारए ॥२५॥

अदीणो वित्तिमेसेज्जा न विसीएज्ज पंडिए ।
अमुच्छिओ भोयणम्मि मायन्ने एसणारए ॥२६॥

बहुं परघरे अत्थि विविहं खाइमसाइमं ।
न तत्थ पंडिओ कुप्पे इच्छा देज्ज परो न वा ॥२७॥

सयणासण वत्थं वा भत्तपाणं व संजए ।
अदेंतस्स न कुप्पेज्जा पच्चक्खे वि य दीसओ ॥२८॥

इत्थियं पुरिसं वा वि डहरं वा महल्लगं ।
वंदमाणो[2] न जाएज्जा नो य णं फरुसं वए ॥२९॥

१—मूलवत्तियं (घ, ह) ।
२—वंदमाणं (अ, क, ख, ग, घ, ज, ह) , वदमाणो (आ, जा, ह) ।

जे न वदे न से कुप्पे वदिओ न समुक्कसे ।
एवमन्नेसमाणस्स सामण्णमणुचिट्ठई ॥३०॥

सिया एगइओ लद्धु[1] लोभेण विणिगूहई ।
मा मेयं दाइयं संतं दट्ठूण सयमायए ॥३१॥

अत्तट्ठगुरुओ लुद्धो बहुं पावं पकुव्वई ।
दुत्तोसओ य से होइ निव्वाणं च न गच्छई ॥३२॥

सिया एगइओ लद्धु विविहं पाणभोयणं ।
भद्दगं भद्दगं भोच्चा विवण्णं विरसमाहरे ॥३३॥

जाणंतु ता इमे समणा आययट्ठी अयं मुणी ।
संतुट्ठो सेवई पंतं लूहवित्ती सुतोसओ ॥३४॥

पूयणट्ठी[2] जसोकामी माणसम्माणकामए ।
बहुं पसवई पावं मायासल्लं 'च कुव्वई'[3] ॥३५॥

सुरं वा मेरगं वा वि अन्नं वा मज्जगं रसं ।
ससक्खं न पिबे भिक्खू जसं सारक्खमप्पणो ॥३६॥

पिया एगइओ तेणो न मे कोइ वियाणई ।
तस्स पस्सह दोसाइं नियडिं च सुणेह मे ॥३७॥

वड्ढई सोंडिया तस्स मायमोसं च भिक्खुणो ।
अयसो य अनिव्वाणं[4] सययं च असाहुया ॥३८॥

निच्चुव्विग्गो जहा तेणो अत्तकम्मेहिं दुम्मई ।
तारिसो मरणंते वि नाराहेइ संवरं ॥३९॥

आयरिए नाराहेइ समणे यावि तारिसो ।
गिहत्था वि णं गरहंति जेण जाणंति तारिसं ॥४०॥

१—लद्धं (ख)।
२—पूयाट्ठी (क ख, ग घ, ह)।
३—[illegible] (ख) वि कुव्वइ (ज)।
४—[illegible] (ज)।

'एव तु अगुणप्पेही गुणाण च विवज्जओ ।
तारिसो मरणते वि नाराहेइ संवरं ॥४१॥'[1]

तवं कुव्वइ मेहावी पणीयं वज्जए रसं ।
मज्जप्पमायविरओ तवस्सी अइउक्कसो ॥४२॥

तस्स पस्सह कल्लाण अणेगसाहुपूइय[2] ।
विउल अत्थसंजुत्तं कित्तइस्सं सुणेह मे ॥४३॥

एव 'तु गुणप्पेही'[3] अगुणाण 'च विवज्जओ'[4] ।
तारिसो मरणंते वि आराहेइ संवर ॥४४॥

आयरिए आराहेइ समणे यावि तारिसो ।
गिहत्था वि ण पूयंति जेण जाणंति तारिसं ॥४५॥

तवतेणे वयतेणे रूवतेणे य जे नरे ।
आयारभावतेणे य कुव्वइ देवकिब्बिसं ॥४६॥

लद्धूण वि देवत्त उववन्नो देवकिब्बिसे ।
तत्था वि से न याणाइ किं मे किच्चा ईम फल ? ॥४७॥

तत्तो वि से चइत्ताण लब्भिही एलमूयय ।
नरय तिरिक्खजोणिं वा बोही जत्थ सुदुलहा ॥४८॥

एय च दोस दट्ठूण नायपुत्तेण भासिय ।
अणुमाय पि मेहावी मायामोसं विवज्जए ॥४९॥

१—यह श्लोक चूर्णिद्वय में व्याख्यात नहीं है।
२—°णेगा० (ज)।
३—°त्त गु°प्पेही (ह), अगुणप्पेही (जा)।
४—°विवज्जए (अ क, जा)।

सिक्खिऊण भिक्खेसणसोहिं
सजयाण बुद्धाण सगासे ।
तत्थ भिक्खू सुप्पणिहिंदिए
तिव्वलज्ज गुणवं विहरेज्जासि ॥५०॥
—त्ति बेमि ॥

छट्ठमज्झयणं

महायारकहा

नाणदंसणसंपन्नं संजमे य तवे रयं ।
गणिमागमसंपन्न उज्जाणम्मि समोसढं ॥ १ ॥

रायाणो रायमच्चा य माहणा अदुव खत्तिया ।
पुच्छंति निहुअप्पाणो कहं भे आयारगोयरो ? ॥२॥

तेसिं सो निहुओ दंतो सव्वभूयसुहावहो ।
सिक्खाए सुसमाउत्तो आइक्खइ वियक्खणो ॥ ३ ॥

हंदि धम्मत्थकामाण निग्गंथाण सुणेह मे ।
आयारगोयर भीमं सयल दुरहिट्ठिय ॥ ४ ॥

नन्नत्थ एरिस वुत्त ज लोए परमदुच्चरं ।
विउलट्ठाणभाइस्स[1] न भूय न भविस्सई ॥ ५ ॥

सखुड्डगवियत्ताण वाहियाण च जे गुणा ।
अखडफुडिया[2] कायव्वा त सुणेह जहा तहा ॥ ६ ॥

दस अट्ठ य ठाणाइं जाइ बालोऽवरज्झई ।
तत्थ अन्नयरे ठाणे निग्गंथत्ताओ भस्सई ॥ ७ ॥

[वयछक्कं कायछक्कं अकप्पो गिहिभायण ।
पलियंक निसेज्जा य सिणाण सोहवज्जणं ॥][3]

१—° भाविस्स (अ) ।
२—° फुडा (ज) ° फुल्ला (अ) ।
३—यह श्लोक (क, ख, ग, घ) प्रतियों में है किन्तु चूर्णिद्वय व टीका में व्याख्यात नहीं है ।

तम्हा एयं वियाणित्ता दोसं दुग्गइवड्ढणं ।
पुढविकायसमारंभं जावज्जीवाए वज्जए ॥२८॥

आउकायं न हिंसंति मणसा वयसा कायसा ।
तिविहेण करणजोएण संजया सुसमाहिया ॥२९॥

आउकायं विहिंसंतो हिंसई उ तयस्सिए ।
तसे य विविहे पाणे चक्खुसे य अचक्खुसे ॥३०॥

तम्हा एयं वियाणित्ता दोसं दुग्गइवड्ढणं ।
आउकायसमारंभं जावज्जीवाए वज्जए ॥३१॥

जायतेयं न इच्छंति पावगं जलइत्तए ।
तिक्खमन्नयरं सत्थं सव्वओ वि दुरासयं ॥३२॥

पाईणं पडिणं वा वि उड्ढं अणुदिसामवि ।
अहे दाहिणओ वा वि दहे उत्तरओ वि य ॥३३॥

भूयाणमेसमाघाओ हव्ववाहो न संसओ ।
तं पईवपयावट्ठा[1] संजया किंचि नारभे ॥३४॥

तम्हा एयं वियाणित्ता दोसं दुग्गइवड्ढणं ।
तेउकायसमारंभं[2] जावज्जीवाए वज्जए ॥३५॥

अनिलस्स समारंभं बुद्धा मन्नंति तारिसं ।
सावज्जबहुलं चेयं नेयं ताईहिं सेवियं ॥३६॥

तालियंटेण पत्तेण साहाविहुयणेण वा ।
न ते वीइउमिच्छंति 'वीयावेऊण वा परं'[3] ॥३७॥

जं पि वत्थं व पायं वा कंबलं पायपुंछणं ।
न ते वायमुईरंति[4] जयं परिहरंति य ॥३८॥

१—[illegible] (ग)।
२—[illegible] (क ख)।
३—[illegible] (क)।
४—[illegible] (ग, घ)।

तम्हा एयं वियाणित्ता दोस दुग्गइवड्ढणं ।
वाउकायसमारंभ जावज्जीवाए वज्जए ॥३९॥

वणस्सइं न हिंसति मणसा वयसा कायसा ।
तिविहेण करणजोएण सजया सुसमाहिया ॥४०॥

वणस्सइं विहिंसतो हिसई उ तयस्सिए ।
तसे य विविहे पाणे चक्खुसे य अचक्खुसे ॥४१॥

तम्हा एयं वियाणित्ता दोसं दुग्गइवड्ढणं ।
वणस्सइसमारंभ जावज्जीवाए वज्जए ॥४२॥

तसकाय न हिंसति मणसा वयसा कायसा ।
तिविहेण करणजोएण संजया सुसमाहिया ॥४३॥

तसकाय विहिंसतो हिसई उ तयस्सिए ।
तसे य विविहे पाणे चक्खुसे य अचक्खुसे ॥४४॥

तम्हा एय वियाणित्ता दोस दुग्गइवड्ढण ।
तसकायसमारभ जावज्जीवाए वज्जए ॥४५॥

जाइ चत्तारिऽभोज्जाइ इसिणाहारमाईणि[1] ।
ताइ तु विवज्जतो सजम अणुपालए ॥४६॥

पिंड सेज्जं च वत्थ च चउत्थ पायमेव य ।
अकप्पिय न इच्छेज्जा पडिगाहेज्ज कप्पियं ॥४७॥

जे नियाग ममायंति कीयमुद्देसियाहड ।
वह ते समणुजाणंति इइ वुत्त महेसिणा ॥४८॥

तम्हा असणपाणाइ कीयमुद्देसियाहड ।
वज्जयंति ठियप्पाणो निग्गंथा धम्मजीविणो ॥४९॥

१—अत्ता° (ख)।

कसेसु कसपाएसु 'कुडमोएसु'[1] वा पुणो ।
भुजंतो असणपाणाइ आयारा परिभस्सइ ॥५०॥

सीओदगसमारभे मत्तधोयणछड्डुणे ।
जाइ छन्नति[2] भूयाइ दिट्ठो तत्थ असंजमो ॥५१॥

पच्छाकम्मं पुरेकम्मं सिया तत्थ न कप्पई ।
एयमट्ठं न भुजंति निग्गथा गिहिभायणे ॥५२॥

आसंदीपलियकेसु मंचमासालएसु वा ।
अणायरियमज्जाणं आसइत्तु सइत्तु वा ॥५३॥

'नासंदीपलियकेसु न निसेज्जा न पीढए ।
निग्गथाऽपडिलेहाए बुद्धवुत्तमहिट्ठगा ॥५४॥'[3]

गभीरविजया एए पाणा दुप्पडिलेहगा ।
आसंदीपलियका[4] य एयमट्ठं विवज्जिया ॥५५॥

गोयरग्गपविट्ठस्स निसेज्जा जस्स कप्पई ।
इमेरिसमणायारं आवज्जइ अबोहियं ॥५६॥

विवत्ती बंभचेरस्स पाणाणं अवहे[5] वहो ।
वणीमगपडिग्घाओ पडिकोहो अगारिणं ॥५७॥

अगुत्ती बंभचेरस्स इत्थीओ यावि[6] संकणं ।
कुसीलवड्ढणं ठाणं दूरओ परिवज्जए ॥५८॥

१—कुडमोएसु (अ, जा)।
२—छिन्नंति (क, ख, ग) छिप्पंति (ह)।
३—नासंदीपलियकेसु एस सिलोगो केसिंचि णेव अत्थि (अ), जिनदास चूर्णि में भी यह श्लोक व्याख्यात नहीं है।
४—°पलियंके (क, ग), °पलियके (ख)।
५—[illegible] (क, ख, ग, घ, ह)।
६—[illegible] (क, ख, ग, घ, ङ)।

तिण्हमन्नयरागस्स निसेज्जा जस्स कप्पई।
जराए अभिभूयस्स वाहियस्स तवस्सिणो ॥५९॥

वाहिओ वा अरोगी वा सिणाण जो उ पत्थए।
वोक्कंतो होइ आयारो जढो हवइ सजमो ॥६०॥

सतिमे सुहुमा पाणा घसासु भिलुगासु य।
जे उ[1] भिक्खू सिणायंतो वियडेणुप्पिलावए ॥६१॥

तम्हा ते न सिणायति सीएण उसिणेण वा।
जावज्जीव वय घोर असिणाणमहिट्ठगा ॥६२॥

सिणाण अदुवा कक्क लोद्ध पउमगाणि य।
गायस्सुव्वट्टणट्ठाए नायरति कयाइ वि ॥६३॥

नगिणस्स वा वि मुडस्स दीहरोमनहसिणो।
मेहुणा उवसतस्स कि विभूसाए कारियं? ॥६४॥

विभूसावत्तिय भिक्खू कम्मं बधइ चिक्कण।
ससारसायरे घोरे जेण पडइ[2] दुरुत्तरे ॥६५॥

विभूसावत्तिय चेय बुद्धा मन्नति तारिस।
सावज्जबहुल चेय नेयं ताईहिं सेविय ॥६६॥

खवेति अप्पाणममोहदसिणो
तवे रया सजम अज्जवे गुणे।
धुणति पावाइं पुरेकडाइ
नवाइ पावाइं न ते करेंति ॥६७॥

१—ए (ख)।
२—न्ता (छ)।

सओवसंता अममा अकिंचणा
सविज्जविज्जाणुगया जससिणो ।
उउप्पसन्ने विमले व चंदिमा
सिद्धिं विमाणाइ उवेंति[1] ताइणो ॥६८॥
—त्ति बेमि ॥

*

१—वयति (क, ग)।

सत्तमज्झयण

वक्कसुद्धि

चउण्ह खलु भासाण परिसखाय पन्नवं।
दोण्ह तु विणय[1] सिक्खे दो न भासेज्ज सव्वसो ॥ १ ॥
जा य[2] सच्चा अवत्तव्वा सच्चामोसा य जा मुसा।
जा य बुद्धेहिऽणाइन्ना न त भासेज्ज पन्नवं ॥ २ ॥
असच्चमोस सच्च च अणवज्जमकक्कस।
समुप्पेहमसदिद्ध गिर भासेज्ज पन्नव ॥ ३ ॥
एय च अट्ठमन्न वा ज तु नामेइ सासय।
स भास सच्चमोस पि[3] त पि धीरो विवज्जए ॥ ४ ॥
वितह पि तहामुत्ति ज गिर भासए नरो।
तम्हा सो पुट्ठो पावेण किं पुण जो मुस वए ? ॥ ५ ॥
तम्हा गच्छामो वक्खामो अमुग वा णे भविस्सई।
अह वा ण करिस्सामि एसो वा ण करिस्सई ॥ ६ ॥
एवमाई उ जा भासा एसकालम्मि सकिया।
सपयाईयमट्ठे वा त पि धीरो विवज्जए ॥ ७ ॥
'अईयम्मि य कालम्मी पच्चुप्पन्नमणागए।
जमट्ठ तु न जाणेज्जा एवमेय ति नो वए ॥ ८ ॥
अईयम्मि य कालम्मी पच्चुप्पन्नमणागए।
जत्थ सका भवे तं तु एवमेय ति नो वए ॥ ९ ॥

१—विणयं (छ) विनयं (अ)।
२—जा (छ)।
३—च (ख)।

अईयम्मि य कालम्मी पच्चुप्पन्नमणागए ।
निस्संकियं भवे जं तु 'एवमेयं ति निद्दिसे'[1] ॥१०॥[2]

तहेव फरुसा भासा गुरुभूओवघाइणी ।
सच्चा वि सा न वत्तव्वा जओ पावस्स आगमो ॥११॥

तहेव काणं काणे त्ति पंडगं पंडगे त्ति वा ।
वाहियं वा वि रोगि त्ति तेणं चोरे त्ति नो वए ॥१२॥

एएणन्नेण वट्ठेण[3] परो जेणुवहम्मई ।
आयारभावदोसन्नू[4] न तं भासेज्ज पन्नवं ॥१३॥

तहेव होले गोले त्ति साणे वा वसुले त्ति य ।
दमए दुहए वा[5] वि नेवं[6] भासेज्ज पन्नवं ॥१४॥

अज्जिए पज्जिए वा वि अम्मो माउस्सिय त्ति य ।
पिउस्सिए भाइणेज्ज त्ति धूए नत्तुणिए त्ति य ॥१५॥

हले हले त्ति अन्ने त्ति भट्टे सामिणि गोमिणि ।
होले गोले वसुले त्ति इत्थियं नेवमालवे ॥१६॥

१—थोवं थोवं तु निद्दिसे (हा)।
२—श्लोक ८, ९ व १० के स्थान पर चूर्णिद्वय में निम्न श्लोक हैं :—
तहेवऽणागतं अट्ठं जं वऽण्णं मणु(ण) वधारियं ।
संकितं पडुपण्णं वा 'एवमेयं' ति णो वदे ॥ ८ ।
तहेवऽणागतं अट्ठं जं वण्णं मु(म) वधारियं ।
नीसंकितं पडुपण्णं थाव थावाए णिद्दिसे ॥ ९ ॥ (अ)।
तं तहेव अइयंमि कालम्मिऽणवधारियं ।
जं चण्णं संकियं वावि 'एवमेयं' ति नो वए ॥ ८ ॥
तहेवाणागयं अट्ठं जं होइ उवहारियं ।
निस्संकियं पडुप्पन्ने 'एवमेयं' ति निद्दिसे ॥ ९ ॥ (जि)।
३—अट्ठेण (क, ख, ग, घ)।
४—°दोसेण (अ)।
५—चा (ह)।
६—नेयं (ख)।

नामधिज्जेण णं बूया इत्थीगोत्तेण वा पुणो ।
जहारिहमभिगिज्झ आलवेज्ज लवेज्ज वा ॥१७॥

अज्जए पज्जए वा वि बप्पो चुल्लपिउ त्ति य ।
माउला भाइणेज्ज त्ति पुत्ते नत्तुणिय त्ति य ॥१८॥

हे हो हले त्ति अन्ने त्ति भट्टा सामिय गोमिए ।
होल गोल वसुले त्ति पुरिसं नेवमालवे ॥१९॥

नामवेज्जेण ण बूया पुरिसगोत्तेण वा पुणो ।
जहारिहमभिगिज्झ आलवेज्ज लवेज्ज वा ॥२०॥

पंचिंदियाण पाणाण एस इत्थी अय पुमं ।
जाव ण न विजाणेज्जा ताव जाइ त्ति आलवे ॥२१॥

तहेव मणुस्स पसु पक्खि वा वि सरीसिवं ।
थूले पमेइले वज्झे पाइमे त्ति य नो वए ॥२२॥

परिवुड्ढे त्ति ण बूया बूया उवचिए त्ति य ।
सजाए पीणिए वा वि महाकाए त्ति आलवे ॥२३॥

तहेव गाओ दुज्झाओ दम्मा गोरहग त्ति य ।
वाहिमा रहजोग त्ति नेवं भासेज्ज पन्नवं ॥२४॥

जुव गवे त्ति ण बूया धेणु रसदय त्ति य ।
रहस्से महल्लए[1] वा वि वए संवहणे त्ति य ॥२५॥

तहेव गंतुमुज्जाणं पव्वयाणि वणाणि य ।
रुक्खा महल्ल पेहाए नेव भासेज्ज पन्नव ॥२६॥

अलं पासायखंभाण तोरणाण गिहाण य ।
फलिहग्गलनावाण अल उदगदोणिण ॥२७॥

१—महल्लए (अ उ)।

पीढए चगबेरे य नगले मइय सिया।
जतलट्ठी व नाभी वा गंडिया[1] व अल सिया ॥२८॥

आसण सयण जाण होज्जा वा 'किंचुवस्सए'[2]।
भूओवघाइणिं भास नेव भासेज्ज पन्नव ॥२९॥

तहेव गंतुमुज्जाण पव्वयाणि वणाणि य।
रुक्खा महल्ल पेहाए एव भासेज्ज पन्नव ॥३०॥

जाइमता इमे रुक्खा दीहवट्टा महालया।
पयायसाला विडिमा[3] वए दरिसणि त्ति य ॥३१॥

तहा फलाइ पक्काइ पायखज्जाइ नो वए।
वेलोइयाइ टालाइं वेहिमाइ त्ति नो वए ॥३२॥

असथडा इमे अबा बहुनिवट्टिमा फला।
वएज्ज बहुसभूया भूयरूव त्ति वा पुणो ॥३३॥

तहेवोसहीओ पक्काओ नीलियाओ छवीइय।
लाइमा भज्जिमाओ त्ति पिहुखज्ज त्ति नो वए ॥३४॥

रूढा[4] बहुसभूया थिरा ऊसढा[5] वि य।
गब्भियाओ पसूयाओ ससाराओ[6] त्ति आलवे ॥३५॥

तहेव सखडिं नच्चा 'किच्चं कज्जं'[7] ति नो वए।
तेणग वा वि वज्झे त्ति सुतित्थ त्ति य आवगा ॥३६॥

१—दंडिया (क, ख, ग)।
२—किं तुवस्सए (ख)।
३—पडिमा (ख)।
४—विरूढा (ज)।
५—उस्सडा (अ), उस्सिया (ज)।
६—ससाराओ (ह)।
७—करणिजति (घ)।

सखडिं सखडिं बूया 'पणियट्ठ त्ति'[1] तेणगं।
बहुसमाणि तित्थाणि आवगाण वियागरे ॥३७॥
तहा नईओ पुण्णाओ 'कायतिज्ज त्ति'[2] नो वए।
नावाहिं तारिमाओ ति पाणिपेज्ज त्ति नो वए ॥३८॥
बहुवाहडा अगाहा बहुसलिलुप्पिलोदगा।
बहुवित्थडोदगा यावि एवं भासेज्ज पन्नव ॥३९॥[3]
तहेव सावज्जं जोग परस्सट्ठाए निट्ठियं।
कीरमाण ति वा नच्चा सावज्जं न लवे मुणी ॥४०॥
सुकडे त्ति सुपक्के त्ति सुछिन्ने सुहडे मडे।
सुनिट्ठिए सुलट्ठे त्ति सावज्ज वज्जए मुणी ॥४१॥
पयत्तपक्के त्ति व पक्कमालवे।
पयत्तछिन्न त्ति व छिन्नमालवे।
पयत्तलट्ठ त्ति व कम्महेउय,
'पहारगाढ'[4] त्ति व गाढमालवे ॥४२॥
सव्वुक्कस परग्घ वा अउल नत्थि एरिसं।
अवक्कियमवत्तव्व[5] अचियत्त चेव नो वए ॥४३॥
सव्वमेय वइस्सामि सव्वमेय त्ति नो वए।
अणुवीइ सव्व सव्वत्थ एव भासेज्ज पन्नव ॥४४॥
सुक्कीय वा सुविक्कीय अकेज्ज केज्जमेव वा।
इमं गेण्ह इम मुंच पणिय नो वियागरे ॥४५॥

१—पणियट्ठ त्ति (ख ग घ)।
२—काय पेज्ज त्ति (क) काय तेज्ज त्ति (अ) काय पेज्ज त्ति (जा)।
३—अगस्त्य चूर्णि में श्लोक ३६ ३७ के स्थान में ३८ ३९ और ३८, ३९ के स्थान में ३६ ३७ इस प्रकार दो श्लोकों का व्यत्यय है।
४—गाढप्पहार (क ख, ह)।
५—अवक्किय० (ख ग)· अवक्किय० (क)।

अप्पग्घे वा महग्घे वा कए वा विक्कए वि वा ।
पणियट्ठे समुप्पन्ने अणवज्जं वियागरे ॥४६॥

तहेवासंजयं धीरो आस एहि करेहि वा ।
सय चिट्ठ वयाहि त्ति नेव भासेज्ज पन्नवं ॥४७॥

बहवे इमे असाहू लोए वुच्चंति साहुणो ।
न लवे असाहुं साहु त्ति साहुं साहु त्ति आलवे ॥४८॥

नाणदंसणसंपन्नं संजमे य तवे रयं ।
एवं गुणसमाउत्तं संजयं साहुमालवे ॥४९॥

देवाणं मणुयाणं च तिरियाणं च वुग्गहे[1] ।
अमुयाणं जओ होउ मा वा होउ त्ति नो वए ॥५०॥

वाओ वुट्ठं व सीउण्हं खेमं धायं सिवं ति वा ।
कया णु होज्ज एयाणि मा वा होउ त्ति नो वए ॥५१॥

तहेव मेहं व नहं व माणवं
न देव देव त्ति गिरं वएज्जा ।
समुच्छिए उन्नए वा पओए
वएज्ज वा वुट्ठ बलाहए त्ति ॥५२॥

अंतलिक्खे त्ति णं बूया गुज्झाणुचरियं त्ति य ।
रिद्धिमंतं नरं दिस्स रिद्धिमंतं ति आलवे ॥५३॥

तहेव सावज्जणुमोयणी गिरा
ओहारिणी जा य परोवघाइणी ।
से कोह लोह भयसा[2] व माणवो[3]
न हासमाणो वि गिरं वएज्जा ॥५४॥

१—विग्गहे (ह) ।
२—भय-हास (ख, ज, ह) ।
३—माणवा (ख) ।

सवक्कसुद्धिं[1] समुपेहिया मुणी
गिरं च दुट्ठं परिवज्जए सया ।
मियं अदुट्ठं अणुवीइ भासए
सयाण मज्झे लहई पसंसण ॥५५॥
भासाए दोसे य गुणे य जाणिया
तीसे य दुट्ठे परिवज्जए[2] सया ।
छसु संजए सामणिए सया जए
वएज्ज बुद्धे हियमाणुलोमियं ॥५६॥
परिक्खभासी सुसमाहिइंदिए
चउक्कसायावगए अणिस्सिए ।
स निद्धुणे धुन्नमल पुरेकडं
आराहए लोगमिणं तहा पर ॥५७॥
—त्ति बेमि ॥

*

१—सवक्क° (क, घ), सुव्वक्क° (ख, ग)।
२—विवज्जगो (क)।

अट्ठमज्झयण

आयारपणिही

अयारप्पणिहिं लद्धु जहा कायव्व भिक्खुणा ।
त भे उदाहरिस्सामि आणुपुव्वि सुणेह मे ॥ १ ॥
पुढवि दग अगणि मारुय तणरुक्ख सबीयगा ।
तसा य पाणा जीव त्ति इइ वुत्त महेसिणा ॥ २ ॥
तेसिं अच्छणजोएण निच्च होयव्वय सिया ।
मणसा कायवक्केण एव भवइ सजए ॥ ३ ॥
पुढविं भित्तिं सिल लेलु नेव भिंदे न सलिहे ।
तिविहेण करणजोएण सजए सुसमाहिए ॥ ४ ॥
सुद्धपुढवीए[1] न निसिए ससरक्खम्मि य आसणे ।
पमज्जित्तु निसीएज्जा जाइत्ता जस्स ओग्गह ॥ ५ ॥
सीओदग न सेवेज्जा सिलावुट्ठ[2] हिमाणि य ।
उसिणोदग तत्तफासुय पडिगाहेज्ज सजए ॥ ६ ॥
उदउल्ल अप्पणो काय नेव पुछे न सलिहे ।
समुप्पेह[3] तहाभूयं नो ण सघट्टए मुणी ॥ ७ ॥
इगाल अगणिं अच्चिं अलाय व सजोइय ।
न उजेज्जा न घट्टेज्जा नो णं निव्वावए मुणी ॥ ८ ॥
तालियटेण पत्तेण साहाविहुयणेण वा ।
न वीएज्ज अप्पणो काय बाहिर वा वि पोग्गल ॥ ९ ॥

१— ० पुढवी (ख) ।
२— ० वुट्ठिं (क, ख) ।
३—समुप्पेहे (अ, ज) ।

तणरुक्ख[1] न छिंदेज्जा फल मूलं व कस्सई ।
आमग विविह बीय मणसा वि न पत्थए ॥१०॥

गहणेसु[2] न चिट्ठेज्जा बीएसु हरिएसु वा ।
उदगम्मि तहा निच्चं उत्तिगपणगेसु वा ॥११॥

तसे पाणे न हिंसेज्जा वाया अदुव कम्मुणा ।
उवरओ सव्वभूएसु पासेज्ज विविह जग ॥१२॥

अट्ठ सुहुमाइं 'पेहाए'[3] 'जाइं जाणित्तु संजए'[4] ।
दयाहिगारी भूएसु आस चिट्ठ सएहि वा ॥१३॥

कयराइ अट्ठ सुहुमाइ जाइ पुच्छेज्ज संजए ।
इमाइ ताइ मेहावी आइक्खेज्ज वियक्खणो ॥१४॥

सिणेह पुप्फसुहुम च पाणुत्तिंग तहेव य ।
पणग बीय हरिय च अंडसुहुमं च अट्ठमं ॥१५॥

एवमेयाणि जाणित्ता सव्वभावेण संजए ।
अप्पमत्तो जए निच्च सव्विदियसमाहिए ॥१६॥

धुव च पडिलेहेज्जा जोगसा पायकंबलं ।
सेज्जमुच्चारभूमिं च सथार अदुवासणं ॥१७॥

उच्चार पासवण खेलं सिंघाणजल्लियं ।
फासुय पडिलेहित्ता परिट्ठावेज्ज संजए ॥१८॥

पविसित्तु परागारं पाणट्ठा भोयणस्स वा ।
जय चिट्ठे मियं भासे ण[5] य रूवेसु मण करे ॥१९॥

१—°रुक्खे (अ)।
२—गहणंसि (अ)।
३—पेहाणि (अ)।
४—पडिलेहित्तु संजए (अ)।
५—[illegible] (अ)।

वहुं सुणेइ कण्णेहिं वहु अच्छीहिं पेच्छइ[1] ।
न य दिट्ठ सुय सव्व भिक्खू अक्खाउमरिहइ ॥२०॥

सुय वा जइ वा दिट्ठं न लवेज्जोवघाइय ।
न य केणइ[2] उवाएण गिहिजोग समायरे ॥२१॥

निट्ठाणं रसनिज्जूढ भद्दग पावग ति वा ।
पुट्ठो वा वि अपुट्ठो वा लाभालाभ न निद्दिसे ॥२२॥

न य भोयणम्मि गिद्धो चरे उछ अयपिरो ।
अफासुयं न भुंजेज्जा कीयमुद्देसियाहड ॥२३॥

सन्निहिं च न कुव्वेज्जा अणुमाय पि सजए ।
मुहाजीवी असवद्धे हवेज्ज जगनिस्सिए ॥२४॥

लूहवित्ती सुसतुट्ठे अप्पिच्छे सुहरे सिया ।
आसुरत्त न गच्छेज्जा सोच्चाण जिणसासण ॥२५॥

कण्णसोक्खेहिं सद्देहि पेम नाभिनिवेसए ।
दारुण कक्कस फास काएण अहियासए ॥२६॥

खुह पिवास दुस्सेज्ज सीउण्ह अरई भय ।
अहियासे अव्वहिओ देहे[3] दुक्ख महाफल ॥२७॥

अत्थगयम्मि आइच्चे पुरत्था य अणुग्गए ।
आहारमइय[4] सव्व मणसा वि न पत्थए ॥२८॥

अतिंतिणे अचवले अप्पभासी[5] मियासणे ।
हवेज्ज उयरे दते थोवं लद्धु न खिसए ॥२९॥

१—पासति (अ) ।
२—कोइ (ज) , केण (ख, घ) ।
३—देह (क, ख, घ) ।
३—°माइयं (क) ।
५—°वादी (अ, ज) ।

न बाहिरं परिभवे अत्ताण न समुक्कसे ।
सुयलाभे न मज्जेज्जा जच्चा तवसिबुद्धिए ॥३०॥

से जाणमजाण वा कट्टु आहम्मिय पय ।
संवरे खिप्पमप्पाण बीय तं न समायरे ॥३१॥

अणायार परक्कम्म नेव गूहे न निण्हवे ।
सुई सया वियडभावे असंसत्ते जिइदिए ॥३२॥

अमोह वयण कुज्जा आयरियस्स महप्पणो ।
तं परिगिज्झ वायाए कम्मुणा उववायए ॥३३॥

अधुव जीविय नच्चा सिद्धिमग्ग वियाणिया ।
विणियट्टेज्ज[1] भोगेसु आउ परिमियमप्पणो ॥३४॥

[बल थामं च पेहाए सद्धामारोगमप्पणो ।
खेत्त काल च विन्नाय तहप्पाण निजुजए ॥][2]

जरा जाव न पीलेइ वाही जाव न वड्ढई ।
जाविंदिया न हायंति ताव धम्म समायरे ॥३५॥

कोह माण च माय च लोभ च पापवड्ढण ।
वमे चत्तारि दोसे उ इच्छन्तो हियमप्पणो ॥३६॥

कोहो पीइ पणासेइ माणो विणयनासणो ।
माया मित्ताणि नासेइ लोहो सव्वविणासणो ॥३७॥

उवसमेण हणे कोह माणं मद्दवया जिणे ।
मायं चज्जवभावेण लोभ सतोसओ[3] जिणे ॥३८॥

दिट्ठं मियं असदिद्धं पडिपुन्नं वियजियं।
अयपिरमणुव्विग्गं भासं निसिर अत्तवं ॥४८॥
आयारपन्नत्तिधरं दिट्ठिवायमहिज्जगं।
वइविक्खलियं नच्चा न तं उवहसे मुणी ॥४९॥
नक्खत्तं सुमिणं जोगं निमित्तं मंत भेसजं।
गिहिणो तं न आइक्खे भूयाहिगरणं पयं ॥५०॥
अन्नट्ठं पगडं लयणं भएज्ज सयणासणं।
उच्चारभूमिसंपन्नं इत्थीपसुविवज्जियं ॥५१॥
विवित्ता य भवे सेज्जा नारीणं न लवे कहं।
गिहिसंथवं न कुज्जा कुज्जा साहूहि संथवं ॥५२॥
जहा कुक्कुडपोयस्स निच्चं कुललओ भयं।
एवं खु बंभयारिस्स इत्थीविग्गहओ भयं ॥५३॥
चित्तभित्तिं न निज्झाए नारिं वा सुअलंकियं।
भक्खरं पिव दट्ठूणं दिट्ठिं पडिसमाहरे ॥५४॥
हत्थपायपडिच्छिन्नं कण्णनासविगप्पियं।
अवि वाससइं नारिं 'बंभयारी विवज्जए'[1] ॥५५॥
विभूसा इत्थिसंसग्गी पणीयरसभोयणं[2]।
नरस्सत्तगवेसिस्स विसं तालउडं जहा ॥५६॥
अंगपच्चंगसंठाणं चारुल्लवियपेहियं[3]।
इत्थीणं तं न निज्झाए कामरागविवड्ढणं ॥५७॥
विसएसु मणुन्नेसु पेमं नाभिनिवेसए।
अणिच्चं तेसिं विन्नाय परिणामं पोग्गलाण उ[4] ॥५८॥

1—[illegible] परिवज्जए (ख)।
2—[illegible] रसं (क, ख, ग)।
3—[illegible]० (ख, ग)।
4—[illegible] (क, ख, ग, घ)।

नवम अज्झयण

विणयसमाही (पढमो उद्देसो)

थंभा व कोहा व मयप्पमाया
गुरुस्सगासे विणयं न सिक्खे[1] ।
सो चेव उ तस्स अभूइभावो
फलं व कीयस्स वहाय होइ ॥ १ ॥

जे यावि मंदि त्ति गुरुं विइत्ता
डहरे इमे अप्पसुए त्ति नच्चा ।
हीलंति मिच्छं पडिवज्जमाणा
करेंति आसायण ते गुरूणं ॥ २ ॥

पगईए मंदा वि भवंति एगे
डहरा वि य जे सुयबुद्धोववेया ।
आयारमंता गुणसुट्ठिअप्पा
जे हीलिया सिहिरिव भास कुज्जा ॥ ३ ॥

जे यावि नागं डहरं ति नच्चा
आसायए से अहियाय होइ ।
एवायरियं पि हु हीलयंतो
नियच्छई जाइपहं खु मंदे ॥ ४ ॥

आसीविसो यावि[2] परं सुरुट्ठो
किं जीवनासाओ[3] परं नु कुज्जा ।
आयरियपाया पुण अप्पसन्ना
अबोहिआसायण नत्थि मोक्खो ॥ ५ ॥

१—[illegible] ([illegible])।
२—[illegible] ([illegible])।
३—[illegible]° ([illegible]) [illegible]° ([illegible])।

पोग्गलाण परीणामं तेसिं नच्चा जहा तहा ।
विणीयतण्हो विहरे सीईभूएण अप्पणा ॥५९॥

जाए सद्धाए निक्खंतो परियायट्ठाणमुत्तमं ।
तमेव अणुपालेज्जा गुणे आयरियसम्मए ॥६०॥

तवं चिमं संजमजोगयं च
सज्झायजोगं च सया अहिट्ठए ।
सूरे व सेणाए समत्तमाउहे
अलमप्पणो होइ अलं परेसिं ॥६१॥

सज्झायसज्झाणरयस्स ताइणो
अपावभावस्स तवे रयस्स ।
विसुज्झई जं सि मलं पुरेकडं
समीरियं रुप्पमलं व जोइणा ॥६२॥

से तारिसे दुक्खसहे जिइंदिए
सुएण जुत्ते अममे अकिंचणे ।
विरायई कम्मघणम्मि अवगए
कसिणब्भपुडावगमे व चंदिमा ॥६३॥

—त्ति बेमि ॥

नवम अज्झयणं

विणयसमाही (पढमो उद्देसो)

थंभा व कोहा व मयप्पमाया
गुरुस्सगासे विणय न सिक्ख[1] ।
सो चेव उ तस्स अभूइभावो
फलं व कीयस्स वहाय होइ ॥ १ ॥

जे यावि मदि त्ति गुरुं विइत्ता
डहरे इमे अप्पसुए त्ति नच्चा ।
हीलंति मिच्छं पडिवज्जमाणा
करेति आसायण ते गुरूणं ॥ २ ॥

पगईए मदा वि भवति एगे
डहरा वि य जे सुयबुद्धोववेया ।
आयारमंता गुण सुट्ठिअप्पा
जे हीलिया सिहिरिव भास कुज्जा ॥३॥

जे यावि नाग डहर ति नच्चा
आसायए से अहियाय होइ ।
एवायरियं पि हु हीलयंतो
नियच्छई जाइपह खु मदे ॥ ४ ॥

आसीविसो यावि[2] पर सुरुट्ठो
किं जीवनासाओ[3] परं नु कुज्जा ।
आयरियपाया पुण अप्पसन्ना
अवोहिआसायण नत्थि मोक्खो ॥ ५ ॥

१—[illegible] (अ उ हा)।
२—[illegible] (क ख, ग ज)।
३—[illegible]० (घ) जीवित० (ङ)।

जो पावगं जलियमवक्कमेज्जा
आसीविसं वा वि हु कोवएज्जा ।
जो वा विसं खायइ जीवियट्ठी
एसोवमासायणया गुरूणं ॥ ६ ॥

सिया हु से पावय नो डहेज्जा
आसीविसो वा कुविओ न भक्खे ।
सिया विसं हालहलं न मारे
न यावि मोक्खो गुरुहीलणाए ॥ ७ ॥

जो पव्वयं सिरसा भेत्तुमिच्छे
सुत्तं व सीहं पडिबोहएज्जा ।
जो वा दए सत्तिअग्गे पहारं
एसोवमासायणया गुरूणं ॥ ८ ॥

सिया हु सीसेण गिरिं पि भिंदे
सिया हु सीहो कुविओ न भक्खे ।
सिया न भिंदेज्ज व सत्तिअग्गं
न यावि मोक्खो गुरुहीलणाए ॥ ९ ॥

आयरियपाया पुण अप्पसन्ना
अबोहिआसायण नत्थि मोक्खो ।
तम्हा अणाबाहसुहाभिकंखी
गुरुप्पसायाभिमुहो रमेज्जा ॥१०॥

जहाहियग्गी जलणं नमंसे
नाणाहुईमंतपयाभिसित्तं ।
एवायरियं उवचिट्ठएज्जा
अणंतनाणोवगओ वि संतो ॥११॥

जस्संतिए धम्मपयाइ सिक्खे
तस्सतिए वेणइय पउंजे ।
सक्कारए सिरसा पंजलीओ
कायग्गिरा भो मणसा य[1] निच्चं ॥१२॥

लज्जा दया सजम बभचेरं
कल्लाणभागिस्स विसोहिठाणं ।
जे मे गुरू सययमणुसासयति
ते ह गुरू सयय पूययामि ॥१३॥

जहा निसते तवणच्चिमाली
पभासई केवलभारह तु ।
एवायरिओ सुयसीलबुद्धिए
विरायई सुरमज्झे व इंदो ॥१४॥

जहा ससी कोमुइजोगजुत्तो
नक्खत्ततारागणपरिवुडप्पा ।
खे सोहई विमले अब्भमुक्के
एव गणी सोहइ भिक्खुमज्झे ॥१५॥

महागरा आयरिया महेसी
'समाहिजोगे सुयसीलबुद्धिए'[2] ।
सपाविउकामे अणुत्तराइ
आराहए[3] तोसए धम्मकामी ॥१६॥

सोच्चाण मेहावी सुभासियाइं
सुस्सूसए आयरियप्पमत्तो ।
आराहइत्ताण गुणे अणेगे
से पावई सिद्धिमणुत्तरं ॥१७॥
—त्ति बेमि ॥

*

नवम अज्झयण

विणयसमाही (बीओ उद्देसो)

मूलाओ खंधप्पभवो दुमस्स
खंधाओ पच्छा समुवेंति साहा।
साहप्पसाहा विरुहंति पत्ता
तओ से पुप्फं च फलं रसो य॥ १ ॥
एवं धम्मस्स विणओ मूलं परमो से मोक्खो।
जेण कित्तिं सुयं सिग्घं निस्सेसं चाभिगच्छई॥ २ ॥
जे य चंडे मिए थद्धे दुव्वाई नियडी सढे।
वुज्झइ से अविणीयप्पा कट्ठं सोयगयं जहा॥ ३ ॥
विणयं पि जो उवाएणं चोइओ कुप्पई नरो।
दिव्वं सो सिरिमेज्जंतिं दंडेण पडिसेहए॥ ४ ॥
तहेव अविणीयप्पा उववज्झा हया गया।
दीसंति दुहमेहंता आभिओगमुवट्ठिया॥ ५ ॥
तहेव सुविणीयप्पा उववज्झा हया गया।
दीसंति सुहमेहंता इड्ढिं पत्ता महायसा॥ ६ ॥
तहेव अविणीयप्पा लोगंसि नरनारिओ।
दीसंति दुहमेहंता छाया विगलितेंदिया॥ ७ ॥
दंडसत्थपरिजुण्णा असब्भवयणेहि य।
कलुणा विवन्नछंदा खुप्पिवासाए परिगया॥ ८ ॥

[आलवंते लवंते वा न निसेज्जाए पडिस्सुणे ।
मोत्तूण आसणं धीरो सुस्सूसाए पडिस्सुणे ॥]'
कालं छंदोवयारं च पडिलेहित्ताण हेउहिं ।
तेण तेण उवाएणं तं तं संपडिवायए ॥२०॥
विवत्ती अविणीयस्स संपत्ती विणियस्स य ।
जस्सेयं दुहओ नायं सिक्खं से अभिगच्छइ' ॥२१॥
जे यावि चंडे मइइड्ढिगारवे
पिसुणे नरे साहस हीणपेसणे ।
अदिट्ठधम्मे विणए अकोविए
असंविभागी न हु तस्स मोक्खो ॥२२॥
निद्देसवत्ती पुण जे गुरूणं
सुयत्थधम्मा विणयम्मि कोविया ।
तरित्तु ते ओहमिणं दुरुत्तरं
खवित्तु कम्मं गइमुत्तमं गय ॥२३॥
— त्ति बेमि ॥

*

संथारसेज्जासणभत्तपाणे
अप्पिच्छया अइलाभे वि संते ।
जो एवमप्पाणभितोसएज्जा
संतोसपाहन्नरए स पुज्जो ॥ ५ ॥

सक्का सहेउं आसाए[1] कंटया
अओमया उच्छहया नरेणं ।
अणासए जो उ सहेज्ज कंटए
वईमए कण्णसरे स पुज्जो ॥ ६ ॥

मुहुत्तदुक्खा हु[2] हवंति कंटया
अओमया ते वि तओ सुउद्धरा[3] ।
वायादुरुत्ताणि दुरुद्धराणि
वेराणुबंधीणि महब्भयाणि ॥ ७ ॥

समावयंता वयणाभिघाया
कण्णंगया दुम्मणियं जणंति ।
धम्मो त्ति किच्चा परमग्गसूरे
जिइंदिए जो सहई स पुज्जो ॥ ८ ॥

अवण्णवायं च परम्मुहस्स
पच्चक्खओ पडिणीयं च भासं ।
ओहारिणिं अप्पियकारिणिं च
भासं न भासेज्ज सया स पुज्जो ॥ ९ ॥

नवम अज्झयण

विणयसमाही (तइओ उद्देसो)

आयरिय[1] अग्गिमिवाहियग्गी
सुस्सूसमाणो पडिजागरेज्जा ।
आलोइय[2] इंगियमेव नच्चा
जो छन्दमाराहयइ स पुज्जो ॥ १ ॥

आयारमट्ठा विणयं पउंजे
सुस्सूसमाणो परिगिज्झ वक्कं ।
जहोवइट्ठं अभिकंखमाणो[3]
'गुरुं तु नासाययई'[4] स पुज्जो ॥ २ ॥

राइणिएसु विणयं पउंजे
डहरा वि य जे परियायजेट्ठा ।
नियत्तणे वट्टइ सच्चवाई
ओवायवं वक्ककरे स पुज्जो ॥ ३ ॥

अन्नायउछं चरई विसुद्धं
जवणट्ठया समुयाणं च निच्चं ।
अलद्धुयं नो परिदेवएज्जा
लद्धुं न विकत्थयई[5] स पुज्जो ॥ ४ ॥

१—आयरियग्गि (अ, क, ख, ग)।
२—आलोइय (क, ख)।
३—अभिकंखमाणा (अ, ज)।
४—जो छंदमाराहयइ (अ, ज)।
५—विकत्थई (ग) विकत्थयई (क ख, घ)।

संथारसेज्जासणभत्तपाणे
अप्पिच्छया अइलाभे वि संते ।
जो एवमप्पाणभितोसएज्जा
संतोसपाहन्न रए स पुज्जो ॥ ५ ॥

सक्का सहेउं आसाए[1] कंटया
अओमया उच्छहया नरेणं ।
अणासए जो उ सहेज्ज कंटए
वईमए कण्णसरे स पुज्जो ॥ ६ ॥

मुहुत्तदुक्खा हु[2] हवंति कंटया
अओमया ते वि तओ सुउद्धरा[3] ।
वायादुरुत्ताणि दुरुद्धराणि
वेराणुबंधीणि महब्भयाणि ॥ ७ ॥

समावयंता वयणाभिघाया
कण्णंगया दुम्मणियं जणंति ।
धम्मो त्ति किच्चा परमग्गसूरे
जिइंदिए जो सहई स पुज्जो ॥ ८ ॥

अवण्णवायं च परम्मुहस्स
पच्चक्खओ पडिणीयं च भासं ।
ओहारिणिं अप्पियकारिणिं च
भासं न भासेज्ज सया स पुज्जो ॥ ९ ॥

अलोलुए अक्कुहए अमाई
अपिसुणे यावि अदीणवित्ती ।
नो भावए नो वि य भावियप्पा
अकोउहल्ले य सया स पुज्जो ॥१०॥

गुणेहि साहू अगुणेहिऽसाहू
गिण्हाहि साहूगुण मुचऽसाहू ।
वियाणिया अप्पगमप्पएणं
जो रागदोसेहिं समो स पुज्जो ॥११॥

तहेव डहरं व महल्लगं वा
इत्थीपुमं पव्वइयं गिहिं वा ।
नो हीलए नो वि य खिंसएज्जा
थभं च कोहं च चए स पुज्जो ॥१२॥

जे माणिया सययं माणयंति
जत्तेण कन्नं व निवेसयंति ।
ते माणए माणरिहे तवस्सी
जिइंदिए सच्चरए स पुज्जो ॥१३॥

तेसिं गुरूणं गुणसागराणं
सोच्चाण मेहावि सुभासियाइं ।
चरे मुणी पचरए[1] तिगुत्तो
चउक्कसायावगए स पुज्जो ॥१४॥

गुरुमिह सययं पडियरिय मुणी
जिणमयनिउणे[1] अभिगमकुसले ।
धुणिय रयमलं पुरेकडं
भासुरमउलं गइ गय[2] ॥१५॥

—त्ति बेमि ॥

*

नवम अज्झयण

विणयसमाही (चउत्थो उद्देसो)

सुय मे आउस ! तेण भगवया एवमक्खाय—इह खलु थेरेहिं भगवन्तेहिं चत्तारि विणयसमाहिट्ठाणा पन्नत्ता ॥ सू० १ ॥

कयरे खलु ते थेरेहि भगवतेहिं चत्तारि विणयसमाहिट्ठाणा पन्नत्ता ? ॥ सू० २ ॥

इमे खलु ते थेरेहि भगवतेहि चत्तारि विणयसमाहिट्ठाणा पन्नत्ता, तजहा-- (१) विणयसमाही (२) सुयसमाही (३) तवसमाही (४) आयारसमाही ।

विणए सुए अ तवे आयारे निच्च पडिया ।
अभिरामयति अप्पाण जे भवति जिइदिया ॥ १ ॥
॥ सू० ३ ॥

चउव्विहा खलु विणयसमाही भवइ, तजहा—(१) अणुसासिज्जतो सुस्सूसइ (२) सम्म सपडिवज्जइ (३) वेयमाराहयइ (४) न य भवइ अत्तसपग्गहिए। चउत्थ पय भवइ ।

भवइ य इत्थ सिलोगो—

पेहेइ हियाणुसासण
सुस्सूसइ त च पुणो अहिट्ठए ।
न य माणमएण मज्जइ
विणयसमाही आययट्ठिए ॥ २ ॥
॥ सू० ४ ॥

चउव्विहा खलु सुयसमाही भवइ, तजहा—(१) सुय मे भविस्सइ त्ति अज्झाइयव्व भवइ (२) एगग्गचित्तो भविस्सामि त्ति अज्झाइयव्व भवइ (३) अप्पाण ठावइस्सामि त्ति अज्झाइयव्व भवइ (४) ठिओ पर ठावइस्सामि त्ति अज्झाइयव्व भवइ। चउत्थ पय भवइ।

भवइ य इत्थ सिलोगो—

नाणमेगग्गचित्तो य[1] ठिओ ठावयई पर।
सुयाणि य अहिज्जित्ता रओ सुयसमाहिए ॥ ३ ॥

॥ सू० ५ ॥

चउव्विहा खलु तवसमाही भवइ, तजहा—(१) नो इहलोगट्ठयाए तवमहिट्ठेज्जा (२) नो परलोगट्ठयाए तवमहिट्ठेज्जा (३) नो कित्तिवण्णसद्दसिलोगट्ठयाए तवमहिट्ठेज्जा (४) नन्नत्थ निज्जरट्ठयाए तवमहिट्ठेज्जा। चउत्थ पय भवइ।

भवइ य इत्थ सिलोगो—

विविहगुणतवोरए य निच्च
भवइ निरासए निज्जरट्ठिए।
तवसा धुणइ पुराणपावग
जुत्तो सया तवसमाहिए ॥ ४ ॥

॥ सू० ६ ॥

चउव्विहा खलु आयारसमाही भवइ, तजहा—(१) नो इहलोगट्ठयाए आयारमहिट्ठेज्जा (२) नो परलोगट्ठयाए आयारमहिट्ठेज्जा (३) नो कित्तिवण्णसद्दसिलोगट्ठयाए आयारमहिट्ठेज्जा (४) नन्नत्थ आरहंतेहिं हेऊहिं आयारमहिट्ठेज्जा। चउत्थ पय भवइ।

---

[1] —(ख)।

भवइ य एत्थ सिलोगो—

जिणवयणरए[1] अतिंतिणे
पडिपुण्णाययमाययट्ठिए ।
आयारसमाहिसंवुडे
भवइ य दंते भावसंधए ॥ ५ ॥
॥ सू० ७ ॥

अभिगम[2] चउरो समाहिओ[3]
सुविसुद्धो सुसमाहियप्पओ ।
विउलहियसुहावहं पुणो
कुव्वइ सो पयखेममप्पणो ॥ ६ ॥

जाइमरणाओ मुच्चई
इत्थथं[4] च चयइ[5] सव्वसो ।
सिद्धे वा भवइ सासए
देवे वा अप्परए महिड्ढिए ॥ ७ ॥

—त्ति बेमि ॥

दसमज्झयणं

स-भिक्खु

निक्खम्ममाणाए[1] बुद्धवयणे[2]
निच्चं चित्तसमाहिओ हवेज्जा।
इत्थीण वसं न यावि गच्छे
वंतं नो पडियायई जे स भिक्खू ॥१॥

पुढविं[3] न खणे न खणावए
सीओदगं न पिए[4] न पियावए[5]।
अगणिसत्थं जहा सुनिसियं
तं न जले न जलावए जे स भिक्खू ॥२॥

अनिलेण न 'वीए न वीयावए'[6]
हरियाणि न 'छिंदे न छिंदावए'[7]।
बीयाणि सया विवज्जयंतो
सच्चित्तं नाहारए जे स भिक्खू ॥३॥

वहणं तसथावराण होइ
पुढवितणकट्ठनिस्सियाणं।
तम्हा उद्देसियं न भुंजे
नो वि पए[8] न पयावए जे स भिक्खू ॥४॥

रोइय नायपुत्तवयणे
अत्तसमे मन्नेज्ज छप्पि काए।
पंच य फासे महव्वयाइं
पंचासवसंवरे[1] जे स भिक्खू ॥५॥

चत्तारि वमे सया कसाए
धुवजोगी य[2] हवेज्ज बुद्धवयणे।
अहणे निज्जायरूवरयए[3]
गिहिजोगं परिवज्जए जे स भिक्खू ॥६॥

सम्मद्दिट्ठी सया अमूढे
अत्थि हु नाणे तवे संजमे य।
तवसा धुणइ पुराणपावगं
मणवयकायसुसंवुडे जे स भिक्खू ॥७॥

तहेव असणं पाणगं वा
विविहं खाइमसाइमं लभित्ता।
होही अट्ठो सुए परे वा
तं न निहे न निहावए जे स भिक्खू ॥८॥

तहेव असणं पाणगं वा
विविहं खाइमसाइमं लभित्ता।
छंदिय साहम्मियाण भुंजे
भोच्चा सज्झायरए य जे स भिक्खू ॥९॥

न य वुग्गहियं[1] कहं कहेज्जा
न य[2] कुप्पे निहुइंदिए पसंते ।
संजमधुवजोगजुत्ते
उवसंते अविहेडए[3] जे स भिक्खू ॥१०॥

जो सहइ हु[4] गामकंटए
अक्कोसपहारतज्जणाओ य ।
भयभेरवसद्दसंपहासे[5]
समसुहदुक्खसहे य जे स भिक्खू ॥११॥

पडिमं पडिवज्जिया मसाणे
नो भायए भयभेरवाइं दिस्स[6] ।
विविहगुणतवोरए य निच्चं
न सरीरं चाभिकंखई जे स भिक्खू ॥१२॥

असइं वोसट्ठचत्तदेहे
अक्कुट्ठे व हए व लूसिए वा ।
पुढवि समे मुणी हवेज्जा
अनियाणे अकोउहल्ले[7] य जे स भिक्खू ॥१३॥

१—[illegible] (अ ह)।
२—[illegible] (क ख,ग)।
३—[illegible] (क ग)।
४—[illegible] (ग)।
५—[illegible] (क ख,ग घ ज ह)।
६—[illegible] (ख)।
७—[illegible] (ज)।

अभिभूय काएण परीसहाइ
समुद्धरे जाइपहाओ[1] अप्पय ।
विइत्तु जाईमरण महब्भय
तवे[2] रए सामणिए जे स भिक्खू ॥१४॥
हत्थसजए पायसजए
वायसजए सजइदिए ।
अज्झप्परए सुसमाहियप्पा
सुत्तत्थ च वियाणई जे स भिक्खू ॥१५॥
उवहिम्मि अमुच्छिए अगिद्धे[3]
अन्नायउछ पुलनिप्पुलाए ।
कयविक्कयसन्निहिओ[4] विरए
सव्वसंगावगए य जे स भिक्खू ॥१६॥
अलोल भिक्खू न रसेसु गिद्धे
उछ चरे जीविएनाभिकखे[5] ।
इड्ढि च सक्कारण पूयण च
चए[1] ठियप्पा अणिहे[2] जे स भिक्खू ॥१७॥
न पर वएज्जासि अय कुसीले
जेणऽन्नो कुप्पेज्ज न त वएज्जा ।
जाणिय पत्तेय पुण्णपाव
अत्ताण न समुक्कसे जे स भिक्खू ॥१८॥

न जाइमत्ते न य रूवमत्ते
न लाभमत्ते न सुएणमत्ते ।
मयाणि सव्वाणि विवज्जइत्ता[1]
धम्मज्झाणरए जे[2] स भिक्खू ॥१९॥

पवेयए अज्जपय[3] महामुणी
धम्मे ठिओ ठावयई परं पि ।
निक्खम्म वज्जेज्ज कुसीललिंग
न यावि हस्सकुहए[4] जे स भिक्खू ॥२०॥

त देहवास असुइ असासयं
सया चए[5] निच्च हियट्ठियप्पा ।
छिंदित्तु जाईमरणस्स बधण
उवेइ भिक्खू अपुणागम गइं ॥२१॥

—त्ति बेमि ॥

*

भुंजित्तु भोगाइं पसज्झ चेयसा
तहाविहं कट्टु असंजमं बहुं ।
गइं च गच्छे अणभिज्झियं[1] दुहं
बोही य से नो सुलभा पुणो पुणो ॥१४॥

इमस्स ता नेरइयस्स जंतुणो
दुहोवणीयस्स किलेसवत्तिणो ।
पलिओवमं झिज्जइ सागरोवमं
किमंग पुण मज्झ इमं मणोदुहं ? ॥१५॥

न मे चिरं दुक्खमिणं भविस्सई
असासया भोगपिवास जंतुणो ।
न चे[2] सरीरेण इमेणवेस्सई
अविस्सई[3] जीवियपज्जवेण मे ॥१६॥

जस्सेवमप्पा उ हवेज्ज निच्छिओ[1]
चएज्ज[2] देहं न उ[3] धम्मसासणं ।
तं तारिसं नो पयलेंति इंदिया
उवेंतवाया[4] व सुदंसणं गिरिं ॥१७॥

पुत्तदारपरिकिण्णो मोहसंताणसंतओ ।
पकोसन्नो जहा नागो स पच्छा परितप्पइ ॥ ८ ॥

'अज्ज आहं'[1] गणी हुंतो भावियप्पा बहुस्सुओ ।
जइ ह रमतो परियाए सामण्णे जिणदेसिए ॥ ९ ॥

देवलोगसमाणो उ[2] परियाओ महेसिण ।
रयाण अरयाणं तु[3] महानिरयसारिसो ॥१०॥

अमरोवम जाणिय सोक्खमुत्तम
रयाण परियाए तहारयाण ।
निरओवम जाणिय दुक्खमुत्तम
रमेज्ज तम्हा परियाय पडिए ॥११॥

धम्माउ भट्ठ सिरिओ ववेय[4]
जन्नग्गि विज्झायमिव प्पतेय ।
हीलंति ण दुव्विहिय कुसीला[5]
दाढुद्धिय[6] घोरविस व नाग ॥१२॥

इहेवधम्मो अयसो अकित्ती
दुन्नामधेज्ज[7] च पिहुज्जणम्मि ।
चुयस्स धम्माउ अहम्मसेविणो
सभिन्नवित्तस्स य[8] हेट्ठओ गई ॥१३॥

१—अज्जत्तेह (जा) ।
२—य (ख) ।
३—च (क, ख, ग, घ, ह) ।
४—अवेय (क, ग, घ, ह) ।
५—कुसील (अ, ज,) ।
६—दादुड्ढिय (क, ज, ह) ।
७—° गोत्त (अ, ज) ।
८—उ (क, घ) ।

भुंजित्तु भोगाइ पसज्झ चेयसा
तहाविह कट्टु असंजम बहुं ।
गइ च गच्छे अणभिज्झिय[1] दुह
बोही य से नो सुलभा पुणो पुणो ॥१४॥

इमस्स ता नेरइयस्स जंतुणो
दुहोवणीयस्स किलेसवत्तिणो ।
पलिओवम झिज्जइ सागरोवम
किमंग पुण मज्झ इम मणोदुह ? ॥१५॥

न मे चिर दुक्खमिणं भविस्सई
असासया भोगपिवास जतुणो ।
न चे[2] सरीरेण इमेणवेस्सई
अविस्सई[3] जीवियपज्जवेण मे ॥१६॥

जस्सेवमप्पा उ हवेज्ज निच्छिओ[4]
चएज्ज[5] देहं न उ[6] धम्मसासण ।
न नाग्नि नो पयलेति इदिया
उवेतवाया[7] व सुदसण गिरिं ॥१७॥

इच्चेव सपस्सिय बुद्धिम नरो
आय उवाय विविहं वियाणिया ।
काएण वाया अदु माणसेण
तिगुत्तिगुत्तो जिणवयणमहिट्ठिज्जासि[1] ॥१८॥
—त्ति बेमि ॥

*

१— °महिट्ठए (अ, ज) ।

विवित्तचरिया (बिइया चूलिया)

चूलियं तु पवक्खामि सुयं केवलिभासियं ।
जं सुणित्तु सपुन्नाणं[1] धम्मे उप्पज्जए मई ॥ १ ॥

अणुसोयपट्ठिएबहुजणम्मि पडिसोयलद्धलक्खेण ।
पडिसोयमेव अप्पा दायव्वो होउकामेण ॥ २ ॥

अणुसोयसुहोलोगो
पडिसोओ आसवो[2] सुविहियाण ।
अणुसोओ संसारो
पडिसोओ तस्स उत्तारो[3] ॥ ३ ॥

तम्हा[4] आयारपरक्कमेण संवरसमाहिबहुलेण ।
चरिया गुणा य नियमा य होंति साहूण दट्ठव्वा ॥ ४ ॥

अणिएयवासो समुयाणचरिया
अन्नायउंछं पइरिक्कया य ।
अप्पोवही कलहविवज्जणा य[5]
विहारचरिया इसिणं पसत्था ॥ ५ ॥

आइण्णओमाणविवज्जणा य
ओसन्नदिट्ठाहडभत्तपाणे[6] ।
संसट्ठकप्पेण चरेज्ज भिक्खू
तज्जायसंसट्ठ जई जएज्जा ॥ ६ ॥

अमज्जमसासि अमच्छरीया
'अभिक्खण निव्विगइ[1] गया य'[2] ।
अभिक्खण काउस्सग्गकारी
सज्झायजोगे पयओ हवेज्जा ॥ ७ ॥

न पडिन्नवेज्जा सयणासणाइ
सेज्ज निसेज्ज तह भत्तपाण ।
गामे कुले वा नगरे व देसे
ममत्तभाव[3] न 'कहिं चि'[4] कुज्जा ॥ ८ ॥

गिहिणो वेयावडिय न कुज्जा
अभिवायण वदण पूयणं च[5] ।
असकिलिट्ठेहिं सम वसेज्जा
मुणी चरित्तस्स जओ न हाणी ॥ ९ ॥

न या लभेज्जा निउण सहाय
गुणाहियं वा गुणओ समं वा ।
एक्को वि पावाइ विवज्जयतो
विहरेज्ज[6] कामेसु असज्जमाणो ॥१०॥

सवच्छर चावि परं पमाण
बीय च वास न तहिं वसेज्जा ।
सुत्तस्स मग्गेण चरेज्ज भिक्खू
सुत्तस्स अत्थो जह आणवेइ ॥११॥

१—निव्विगई (अ, घ) ।
२—अभिक्खणि व्वितियजोगया य (आ, जा) ।
३—ममत्ति ० (अ) ।
४—कहिं पि (ख) ।
५—वा (क, ख, ग, घ, ह) ।
६—चरेज्ज (अ) ।

जो पुव्वरत्तावररत्तकाले
सपिक्खई[1] अप्पगमप्पएणं ।
कि मे कड ? किं च मे किच्चसेस ?
किं सक्कणिज्ज न समायरामि ? ॥१२॥

किं मे परो पासइ ? किं व[2] अप्पा ?
किं वाहं[3] 'खलिय न विवज्जयामि'[4] ?
इच्चेव सम्म अणुपासमाणो
अणागय नो पडिवंध कुज्जा ॥१३॥

जत्थेव पासे कइ दुप्पउत्त[1]
काएण वाया अदु माणसेण ।
तत्थेव धीरो पडिसाहरेज्जा
आइन्नओ[1] खिप्पमिव[2] क्खलीण ॥१४॥

जस्सेरिसा जोग जिइदियस्स
धिइमओ सप्पुरिसस्स निच्च ।
तमाहु लोए पडिबुद्धजीवी
सो जीवइ सजमजीविएण ॥१५॥

अप्पा[1] खलु सययं रक्खियव्वो
सव्विदिएहि सुसमाहिएहिं ।
अरक्खिओ जाइपहं[2] उवेइ
सुरक्खिओ सव्वदुहाण मुच्चइ ॥१६॥
—त्ति बेमि ॥

*

१—अप्पा हु (क, ख, ग, घ)।
२—°वह (जा, आ)।

पढम अज्झयण

विणयसुयं

१–संजोगा विप्पमुक्कस्स अणगारस्स भिक्खुणो ।
विणय पाउकरिस्सामि आणुपुव्वि सुणेह मे ॥

२–आणानिद्देसकरे गुरूणमुववायकारए ।
इंगियागारसपन्ने से विणीए त्ति वुच्चई ॥

३–आणाऽनिद्देसकरे[1] गुरूणमणुववायकारए ।
पडिणीए असबुद्धे अविणीए त्ति वुच्चई ॥

४–जहा सुणी पूइकण्णी निक्कसिज्जइ सव्वसो ।
एव दुस्सील-पडिणीए मुहरी निक्कसिज्जई ॥

५–कणकुण्डग चइत्ताण[2] विट्ठं भुजइ सूयरे ।
एव सील चइत्ताण दुस्सीले रमई मिए[3] ॥

६–सुणियाऽभाव साणस्स सूयरस्स नरस्स य ।
विणए ठवेज्ज अप्पाण इच्छन्तो हियमप्पणो ॥

७–तम्हा विणयमेसेज्जा सील 'पडिलभे जओ'[4] ।
बुद्धपुत्ते नियागट्ठी न निक्कसिज्जइ कण्हुई ॥

८—निसन्ते सियाऽमुहरी[1] बुद्धाण अन्तिए सया ।
अट्ठजुत्ताणि सिक्खेज्जा निरट्ठाणि उ वज्जए ॥

९—अणुसासिओ न कुप्पेज्जा खर्ति सेविज्ज पण्डिए ।
खुड्डेहि सह ससग्गि हास कीड च वज्जए ॥

१०—मा य चण्डालिय कासी[2] बहुय मा य आलवे ।
कालेण य अहिज्जित्ता तओ झाएज्ज एगगो[3] ॥

११—आहच्च चण्डालिय कट्टु न निण्हविज्ज कयाइ वि ।
कड कडे त्ति भासेज्जा अकड नो कडे त्ति य ॥

१२—मा 'गलियस्से व'[4] कस वयणमिच्छे पुणो पुणो ।
कस व दट्ठुमाइण्णे पावग परिवज्जए[5] ॥

१३—अणासवा[6] थूलवया कुसीला
मिउ पि चण्ड पकरेंति सीसा ।
चित्ताणुया लहु दक्खोववेया
पसायए ते हु दुरासय पि ॥

१४—नापुट्ठो वागरे किंचि पुट्ठो वा नालिय वए ।
कोह असच्च कुव्वेज्जा धारेज्जा पियमप्पियं ॥

१५—'अप्पा चेव दमेयव्वो'[7] अप्पा हु खलु दुद्दमो ।
अप्पा दन्तो सुही होइ अस्सि लोए परत्थ य ॥

१—सियाअमुहरी (अ) ।
२—कुज्जा (उ) ।
३—एक्कओ (अ) ।
४—गलियस्सुव्व (उ, ऋ) , गलियस्सेव्व (अ) ।
५—पडिवज्जए (अ, वृ० पा०) ।
६—अणासुणा (वृ० पा०) ।
७—अप्पाणमेव दमए (वृ०, चू०) ।

१६—वर[1] मे अप्पादन्तो सजमेण तवेण य ।
माह परेहि दम्मन्तो बन्धणेहि वहेहि य ॥
१७—पडिणीय च बुद्धाण वाया अदुव कम्मुणा ।
आवी वा जइ वा रहस्से नेव कुज्जा कयाइ वि ॥
१८—न पक्खओ न पुरओ नेव किच्चाण पिट्ठओ ।
न जुजे ऊरुणा ऊरु सयणे नो पडिस्सुणे ॥
१९—नेव पल्हत्थियं कुज्जा पक्खपिण्ड व सजए ।
पाए पसारिए[2] वावि न चिट्ठे गुरुणन्तिए ॥
२०—आयरिएहिं वाहिन्तो[3] तुसिणीओ न कयाइ वि ।
पसायपेही[4] नियागट्ठी उवचिट्ठे गुरुं सया ॥
२१—आलवन्ते लवन्ते वा न निसीएज्ज कयाइ वि ।
चइऊणमासणं धीरो जओ जत्त[5] पडिस्सुणे ॥
२२—आसणगओ न पुच्छेज्जा नेव 'सेज्जागओ कया'[6] ।
आगम्मुक्कुडुओ सन्तो पुच्छेज्जा पंजलीउडो[7] ॥
२३—एव विणयजुत्तस्स सुत्त अत्थ च तदुभय ।
पुच्छमाणस्स सीसस्स वागरेज्ज जहासुय ॥
२४—मुसं परिहरे भिक्खू न य ओहारिणिं वए ।
भासादोसं परिहरे मायं च वज्जए सया ॥
२५—न लवेज्ज पुट्ठो सावज्जं न निरट्ठं न मम्मय ।
अप्पणट्ठा परट्ठा वा उभयस्सन्तरेण वा ॥

१—वर (अ, उ, म) ।
२—पसारे नो (बृ०) , पसारिए (बृ० पा०) ।
३—वाहित्तो (अ, आ, इ, उ) ।
४—पसायट्ठी (बृ० पा०) ।
५—जुत्त (अ, उ) ।
६—णिसिज्जागओ कयाइ (चू०) ।
७—पंजलीगडे (बृ०) , पजलीउडो (बृ० पा०) ।

२६—समरेसु अगारेसु 'सन्धीसु य महापहे'[1] ।
एगो एगित्थिए सद्धिं नेव चिट्ठे न सलवे ॥

२७—जं मे बुद्धाणुसासन्ति सीएण[2] फरुसेण वा ।
मम लाभो त्ति पेहाए पयओ तं पडिस्सुणे ॥

२८—अणुसासणमोवायं दुक्कडस्स य चोयणं[3] ।
हियं तं मन्नए पण्णो वेसं होइ असाहुणो ॥

२९—हियं विगयभया बुद्धा फरुसं पि अणुसासणं ।
वेसं तं होइ मूढाण खन्तिसोहिकर[4] पयं ॥

३०—आसणे उवचिट्ठेज्जा 'अणुच्चे अकुए'[5] थिरे ।
अप्पुट्ठाई निरुट्ठाई निसीएज्जप्पकुक्कुए ॥

३१—कालेण निक्खमे भिक्खू कालेण य पडिक्कमे ।
अकालं च विवज्जित्ता काले कालं समायरे ॥

३२—परिवाडीए न चिट्ठेज्जा भिक्खू दत्तेसणं चरे ।
पडिरूवेण एसित्ता मियं कालेण भक्खए ॥

३३—नाइदूरमणासन्ने[6] नन्नेसिं चक्खुफासओ ।
एगो चिट्ठेज्ज भत्तट्ठा लंघिया तं नइक्कमे[7] ॥

३४—नाइउच्चे व नीए वा नासन्ने नाइदूरओ ।
फासुयं परकडं पिण्डं पडिगाहेज्ज संजए ॥

१—गिहसन्धीसु महापहे (सु), गिहसंधिसु अ महापहेसु (बृ०) ।
२—सीतेण (अ), सीलेण (वृ० पा०, चू० पा०) ।
३—पेरण (वृ०), चोयणा (चू०) ।
४—° सुद्धिकर (वृ०) ।
५—अणुच्चेऽकुक्कुए (वृ०) ।
६—णाइ दूरे अणासण्णे (चू०) ।
७—न अइक्कमे (अ) ।

३५—अप्पपाणेऽप्पबीयंमि[1] पडिच्छन्नंमि संवुडे।
समय सजए भुजे जयं अपरिसाडिय[2] ॥

३६—सुकडे त्ति सुपक्के त्ति सुच्छिने सुहडे मडे।
सुणिट्ठिए सुलट्ठे त्ति सावज्जं वज्जए मुणी ॥

३७—रमए पण्डिए सासं हयं भद्द व वाहए।
बाल सम्मइ सासन्तो गलियस्सं व वाहए ॥

३८—'खड्डुया मे चवेडा मे अक्कोसा य वहा य मे'[3]।
कल्लाणमणुसासन्तो[4] पावदिट्ठि त्ति मन्नई ॥

३९—पुत्तो मे भाय नाइ त्ति साहू कल्लाण मन्नई।
पावदिट्ठी उ अप्पाणं सासं 'दासं व'[5] मन्नई ॥

४०—न कोवए आयरियं अप्पाणं पि न कोवए।
बुद्धोवघाई न सिया न सिया तोत्तगवेसए ॥

४१—आयरिय कुविय नच्चा पत्तिएण पसायए।
विज्झवेज्ज पंजलिउडो वएज्ज न पुणो त्ति य ॥

४२—धम्मज्जियं च ववहारं बुद्धेहायरियं सया।
तमायरन्तो ववहारं[6] गरहं नाभिगच्छई ॥

४३—'मणोगय वक्कगयं'[7] जाणित्तायरियस्स उ।
तं परिगिज्झ वायाए कम्मुणा उववायए ॥

१—अप्पपाणऽप्प० (अ, उ, ऋ)।
२—अप्परि० (उ, ऋ, बृ०)।
३—खड्डुयाहिं चवेडाहिं, अक्कोसेहि वहेहि य (बृ०, चू०)। खड्डुया मे चवेडा मे अक्कोसा य वहा य मे (चू० पा०, बृ० पा०)।
४—०सासन्त (बृ०, चू०)।
५—दासे त्ति (अ, आ, इ, उ, सु)।
६—मेहावी (बृ० पा०)।
७—मणोरुइ वक्करुइ (बृ० पा०, चू० पा०)।

४४—वित्ते अचोइए निच्चं[1] 'खिप्प हवइ सुचोइए'[2] ।
जहोवइट्ठं सुकयं किच्चाइं कुव्वई सया ॥

४५—नच्चा नमइ मेहावी लोए 'कित्ती से'[3] जायए ।
हवई किच्चाण सरणं भूयाणं जगई जहा ॥

४६—पुज्जा जस्स पसीयन्ति संबुद्धा पुव्वसंथुया ।
पसन्ना[4] लाभइस्सन्ति विउलं अट्ठियं सुयं ॥

४७—स पुज्जसत्थे सुविणीयसंसए
'मणोरुई[5] चिट्ठइ कम्मसंपया ।'[6]
तवोसमायारिसमाहिसंवुडे
महज्जुई पंचवयाइं पालिया ॥

४८—स देवगन्धव्वमणुस्सपूइए
चइत्तु देहं मलपंकपुव्वयं ।
सिद्धे वा हवइ सासए
देवे वा अप्परए महिड्ढिए ॥

—त्ति बेमि ॥

*

१—खिप्पं (वृ० पा०, चू० पा०) ।
२—पसन्ने थामवं करे (वृ० पा०, चू० पा०) ।
३—कित्तीय (अ, उ, ऋ), कित्ती सि (ऋ) ।
४—सपन्ना (वृ० पा०) ।
५—मणोरुइ (वृ० पा०) ।
६—मणोरुइ चिट्ठइ कम्मसंपयं (वृ० पा०), मणिच्छियं संपयमुत्तमं गया (नागार्जुनीया) ।

बीयं अज्झयण

परीसहपविभत्ती

सू० १—सुय मे, आउस ! तेणं भगवया एवमक्खायं—

इह खलु बावीस परीसहा समणेणं भगवया महावीरेण कासवेण पवेइया, जे भिक्खू सोच्चा, नच्चा, जिच्चा, अभिभूय, भिक्खायरियाए[1] परिव्वयन्तो पुट्ठो नो विहन्नेज्जा[2] ।

सू० २—कयरे ते खलु बावीसं परीसहा समणेण भगवया महावीरेणं कासवेणं पवेइया जे भिक्खू सोच्चा, नच्चा, जिच्चा, अभिभूय, भिक्खायरियाए परिव्वयन्तो पुट्ठो नो विहन्नेज्जा ?

सू० ३—इमे ते खलु बावीसं परीसहा समणेण भगवया महावीरेण कासवेण पवेइया, जे भिक्खू सोच्चा, नच्चा, जिच्चा, अभिभूय, भिक्खायरियाए परिव्वयन्तो पुट्ठो नो विहन्नेज्जा, त जहा—

१. दिगिंछापरीसहे, २. पिवासापरीसहे, ३. सीयपरीसहे, ४. उसिणपरीसहे, ५. दसमसयपरीसहे, ६. अचेलपरीसहे, ७. अरइ-परीसहे, ८. इत्थीपरीसहे, ९. चरियापरीसहे, १०. निसीहिया-परीसहे, ११. सेज्जापरीसहे, १२. अक्कोसपरीसहे,[3] १३. वहपरीसहे, १४. जायणापरीसहे, १५. अलाभपरीसहे, १६. रोगपरीसहे, १७. तणफासपरीसहे, १८. जल्लपरीसहे, १९. सक्कारपुरक्कारपरीसहे, २०. पन्नापरीसहे, २१. अन्नाणपरीसहे, २२. दंसणपरीसहे ।

१—परीसहाण पविभत्ती कासवेण पवेइया ।
तं भे उदाहरिस्सामि आणुपुव्वि सुणेह मे ॥

१—भिक्खुचरियाए (वृ०), भिक्खायरियाए (वृ० पा०) ।
२—विनिहन्नेज्जा (वृ०) ।
३—उक्कोस० (अ, ऋ) ।

(१) दिगिछापरीसहे

२—दिगिंछापरिगए[1] देहे तवस्सी भिक्खु थामव ।
न छिन्दे न छिन्दावए न पए न पयावए ॥

३—कालीपव्वगसकासे किसे धमणिसतए ।
मायन्ने असणपाणस्स अदीणमणसो चरे ॥

(२) पिवासापरीसहे

४—तओ पुट्ठो पिवासाए दोगुछी लज्जसंजए[2] ।
सीओदग न सेविज्जा वियडस्सेसणं चरे ॥

५—छिन्नावाएसु पन्थेसु आउरे सुपिवासिए[3] ।
परिसुक्कमुहेऽदीणे[4] 'तं तितिक्खे परीसह'[5] ॥

(३) सीयपरीसहे

६—चरन्त विरय लूह सीय फुसइ एगया ।
'नाइवेलं मुणी गच्छे सोच्चाण जिणसासण'[6] ॥

७—न मे निवारण अत्थि छवित्ताण न विज्जई ।
अह तु अग्गि सेवामि इइ भिक्खू न चिन्तए ॥

(४) उसिणपरीसहे

८—उसिणपरियावेण परिदाहेण तज्जिए ।
घिसु वा परियावेण साय नो परिदेवए ॥

१— ०परियावेण (वृ०) ; ०परितापेग (चू०) , ०परिगते (बृ० पा०) ।

२—लद्धसजमे (वृ० चू०) , लज्जासंजए, लज्जसंजमे (बृ० पा०) , लज्जसजते (चू० पा०) ।

३—सुप्पिवासिए (अ) , सुपिवासए (ऋ) ।

४— ०मुहद्दीणे (अ, सु) , ०मुहोदीणे (ऋ) ।

५—सव्वतो य परिव्वए (वृ० पा०) ।

६—नाइवेल विहन्निज्जा पावदिट्ठी विहन्नइ (चू०, बृ०) , नाइवेल मुणी गच्छे सोच्चाणं जिणसासण (चू० पा०, वृ० पा०) ।

९—उण्हाहितत्ते मेहावी सिणाण 'नो वि पत्थए'[1] ।
गायं नो परिसिंचेज्जा[2] न वीएज्जा य अप्पयं ॥

(५) दंसमसयपरीसहे

१०—पुट्ठो य दंसमसएहिं समरेव[3] महामुणी ।
नागो संगामसीसे वा सूरो अभिहणे परं ॥
११—न संतसे न वारेज्जा मणं पि न पओसए ।
उवेहे[4] न हणे पाणे भुंजन्ते मंससोणियं ॥

(६) अचेलपरीसहे

१२—परिजुण्णेहि वत्थेहिं होक्खामि त्ति अचेलए ।
अदुवा सचेलए होक्खं इइ भिक्खू न चिन्तए ॥
१३—'एगयाऽचेलए होइ'[5] सचेले यावि एगया ।
एयं धम्महियं नच्चा नाणी नो परिदेवए ॥

(७) अरइपरीसहे

१४—गामाणुगामं रीयन्तं अणगारं अकिंचणं ।
अरई अणुप्पविसे तं तितिक्खे परीसहं ॥
१५—अरइं पिट्ठओ किच्चा विरए आयरक्खिए ।
धम्मारामे निरारम्भे उवसन्ते मुणी चरे ॥

(८) इत्थीपरीसहे

१६—संगो एस मणुस्साणं जाओ लोगंमि इत्थिओ ।
जस्स एया परिन्नाया सुकडं[6] तस्स सामण्णं ॥

१—नाभिपत्थए (चू०, बृ०), णोऽवि पत्थए (वृ० पा०) ।
२—परिसेविज्जा (उ, ऋ) ।
३—सम एव (अ) ।
४—उवेह (उ, चू०, ऋ) ।
५—एगता अचेलगो भवति (चू०), अचेलए सयं होइ (वृ० पा०, चू० पा०) ।
६—सुकर (वृ० पा०) ।

१७—एवमादाय[1] मेहावी 'पकभूया उ इत्थिओ'[2] ।
नो ताहि विणिहन्नेज्जा[3] चरेज्जत्तगवेसए ॥

(९) चरियापरीसहे

१८—एग एव[4] चरे लाढे अभिभूय परीसहे ।
गामे वा नगरे वावि निगमे वा रायहाणिए ॥

१९—असमाणो चरे भिक्खू नेव[5] कुज्जा परिग्गह ।
असंसत्तो गिहत्थेहिं अणिएओ परिव्वए ॥

(१०) निसीहियापरीसहे

२०—सुसाणे सुन्नगारे वा रुक्खमूले व एगओ ।
अकुक्कुओ निसीएज्जा न य वित्तासए परं ॥

२१—तत्थ से चिट्ठमाणस्स[6] 'उवसग्गाभिधारए'[7] ।
संकाभीओ न गच्छेज्जा उट्ठित्ता[8] अन्नमासणं ॥

(११) सेज्जापरीसहे

२२—उच्चावयाहिं सेज्जाहिं तवस्सी भिक्खु थामवं ।
नाइवेलं विहन्नेज्जा पावदिट्ठी विहन्नई ॥

२३—पइरिक्कुवस्सयं लद्धुं कल्लाणं अदु पावगं ।
'किमेगरायं करिस्सइ'[9] एवं तत्थऽहियासए ॥

१—एवमाणाय (चू०, वृ०), एवमादाय (चू० पा०, वृ० पा०) ।
२—जहा एया लहुस्सगा (चू० पा०, वृ० पा०) ।
३—विहन्नेज्जा (अ, सु) ।
४—एगो (चू० पा०), एगे (वृ० पा०) ।
५—नेय (अ) ।
६—अच्छमाणस्स (वृ० पा०, चू०) ।
७—उवसग्गभयं भवे (वृ० पा०, चू० पा०) ।
८—उवट्ठित्ता (उ) ।
९—किं मज्झ एग रायाए (चू०) ।

(१२) अक्कोसपरीसहे

२४—अक्कोसेज्ज परो भिक्खु न तेसि पडिसजले ।
सरिसो होइ बालाण तम्हा भिक्खू न सजले ॥
२५—सोच्चाणं फरुसा भासा दारुणा गामकण्टगा ।
तुसिणीओ उवेहेज्जा न ताओ मणसीकरे ॥

(१३) वहपरीसहे

२६—हओ न सजले भिक्खू मण पि न पओसए ।
तितिक्खं परम नच्चा 'भिक्खुधम्म विचितए'[1] ॥
२७—समण सजय दन्त हणेज्जा कोइ कत्थई ।
नत्थि जीवस्स नासु त्ति 'एव पेहेज्ज सजए'[2] ॥

(१४) जायणापरीसहे

२८—दुक्कर खलु भो निच्चं अणगारस्स भिक्खुणो ।
सव्वं से जाइय होइ नत्थि किंचि अजाइय ॥
२९—गोयरग्गपविट्ठस्स पाणी नो सुप्पसारए ।
सेओ अगारवासु त्ति इइ भिक्खू न चिन्तए ॥

(१५) अलाभपरीसहे

३०—परेसु घासमेसेज्जा भोयणे परिणिट्ठिए ।
लद्धे पिण्डे अलद्धे वा नाणुतप्पेज्ज सजए[3] ॥
३१—अज्जेवाह न लब्भामि अवि लाभो सुए सिया ।
जो एव पडिसविक्खे[4] अलाभो तं न तज्जए ॥

१—°धम्मम्मि चितए (वृ०), °धम्म व चितए (वृ० पा०) ।
२—ग तं पेहे असाहुव (वृ०), न ता पेहे असाधुव (चू०), एव पीहेज्ज सजए (चू० पा०); न य पेहे असाधुय, पठन्ति च—एवं पेहिज्ज सजतो (वृ० पा०) ।
३—पडिए (अ) ।
४—पडिसंचिक्खे (सु) ।

(१६) रोगपरीसहे

३२—नच्चा उप्पइय दुक्ख वेयणाए दुहट्टिए ।
अदीणो थावए पन्न पुट्ठो तत्थहियासए ॥

३३—तेगिच्छ नाभिनन्देज्जा सचिक्खत्तगवेसए ।
एव[1] खु तस्स सामण्ण ज न कुज्जा न कारवे ॥

(१७) तणफासपरीसहे

३४—अचेलगस्स लूहस्स संजयस्स तवस्सिणो ।
तणेसु सयमाणस्स हुज्जा गायविराहणा ॥

३५—आयवस्स निवाएण अउला[2] हवइ वेयणा ।
एव[3] नच्चा न सेवन्ति तन्तुज[4] तणतज्जिया ॥

(१८) जल्लपरीसहे

३६—किलिन्नगाए[5] मेहावी पंकेण व रएण वा ।
घिंसु वा परितावेण साय नो परिदेवए ॥

३७—वेएज्ज[6] निज्जरापेही 'आरिय धम्मऽणुत्तर'[7] ।
जाव सरीरभेउ त्ति जल्ल काएण धारए[8] ।

(१९) सक्कारपुरक्कारपरीसहे

३८—अभिवायणमब्भुट्ठाण सामी कुज्जा निमन्तणं ।
जे ताइ पडिसेवन्ति न तेसिं पीहए मुणी ॥

१—एय (अ, उ, ऋ, वृ०), एव (वृ० पा०)।
२—तिउला (चू०, वृ०), अतुला, विपुला वा (वृ० पा०)।
३—एय (अ, उ, ऋ, वृ०), एव (वृ० पा०)।
४—तन्तय (चू० पा०, वृ० पा०)।
५—किलिट्ठगाए (चू० पा०, वृ० पा०)।
६—वेयज्ज (अ) वेइ त्तो, वेइज्ज, वेयतो (वृ० पा०)।
७—आयरिय धम्मनणुत्तर (स०), आरिय धम्ममणुत्तर (अ)।
८—उव्वटे (चू० वृ० पा०) धारए (चू० पा०)।

३९—अणुक्कसाई अप्पिच्छे अन्नाएसी अलोलुए ।
'रसेसु[1] नाणुगिज्झेज्जा'[2] 'नाणुतप्पेज्ज पन्नवं'[3] ॥

(२०) पन्नापरीसहे

४०—से नूणं मए पुव्वं कम्माणाणफला कडा ।
जेणाहं नाभिजाणामि पुट्ठो केणइ कण्हुई ॥

४१—अह पच्छा उइज्जन्ति कम्माणाणफला कडा ।
एवमस्सासि अप्पाणं नच्चा कम्मविवागयं ॥

(२१) अन्नाणपरीसहे

४२—निरट्ठगम्मि विरओ मेहुणाओ सुसंवुडो ।
जो सक्खं[4] नाभिजाणामि धम्मं कल्लाण पावगं ॥

४३—तवोवहाणमादाय पडिमं पडिवज्जओ[5] ।
एवं पि विहरओ मे छउमं न नियट्टई ॥

(२२) दंसणपरीसहे

४४—नत्थि नूणं परे लोए इड्ढी वावि तवस्सिणो ।
अदुवा वंचिओ मि त्ति इइ भिक्खू न चिन्तए ॥

४५—अभू जिणा अत्थि जिणा अदुवावि भविस्सई ।
मुसं ते एवमाहंसु इइ भिक्खू न चिन्तए ॥

४६—एए परीसहा सव्वे कासवेण पवेइया ।
जे भिक्खू न विहन्नेज्जा पुट्ठो केणइ कण्हुई ॥

—त्ति बेमि ॥

*

१—सरसेसु० (वृ०) ।
२—रसिएसु णालिगिज्झेज्जा (चू०) , रसेसु नाणु० (वृ० पा०, चू० पा०) ।
३—न तेसिं पीहए मु ।ी (चू०, वृ०) , नाणुतप्पेज्ज पण्णव (वृ० पा०, चू० पा०) ।
४—सपक्खं (चू०) ।
५—पडिवज्जिअ (वृ०) , पडिवज्जओ (वृ० पा०) ।

तइयं अज्झयणं

चाउरंगिज्जं

१—चत्तारि परमंगाणि दुल्लहाणीह जन्तुणो[१] ।
माणुसत्तं सुई सद्धा संजमम्मि य वीरियं ॥

२—समावन्नाण संसारे नाणागोत्तासु जाइसु ।
कम्मा नाणाविहा कट्टु पुढो[२] विस्संभिया पया ॥

३—एगया देवलोएसु नरएसु वि एगया ।
एगया आसुरं कायं आहाकम्मेहिं गच्छई ॥

४—एगया खत्तिओ होइ तओ चण्डालवोक्कसो ।
तओ कीडपयंगो य तओ कुन्थुपिवीलिया ॥

५—एवमावट्टजोणीसु पाणिणो कम्मकिब्बिसा ।
न निविज्जन्ति संसारे 'सव्वट्ठेसु व[३,४] खत्तिया ॥

६—कम्मसंगेहिं सम्मूढा दुक्खिया बहुवेयणा ।
अमाणुसासु जोणीसु विणिहम्मन्ति पाणिणो ॥

७—कम्माणं तु पहाणाए आणुपुव्वी कयाइ उ ।
जीवा सोहिमणुप्पत्ता 'आययन्ति मणुस्सयं'[५] ॥

८—माणुस्सं विग्गहं लद्धुं सुई धम्मस्स दुल्लहा ।
जं सोच्चा पडिवज्जन्ति तवं खन्तिमहिंसयं ॥

१—देहिणो (वृ० पा०, चू०) ।
२—पुणो (चू० पा०) ।
३—य (अ) वि (ऋ) ।
४—सव्वट्ठ इव (वृ० पा०, चू० पा०) ।
५—जायन्ते मणुसत्तयं (वृ० पा०) ।

९—आहच्च सवणं लद्धुं सद्धा परमदुल्लहा ।
सोच्चा नेआउयं मग्गं बहवे परिभस्सई ॥

१०—सुइं च लद्धुं सद्धं च वीरियं पुण दुल्लहं ।
बहवे रोयमाणा वि 'नो एणं'[1] पडिवज्जए ॥

११—माणुसत्तंमि आयाओ जो धम्मं सोच्च सद्दहे ।
तवस्सी वीरियं लद्धुं संवुडे निद्धुणे रयं ॥

१२—"सोही उज्जुयभूयस्स धम्मो सुद्धस्स चिट्ठई ।
निव्वाणं परमं जाइ 'घयसित्त व्व'[2] पावए ॥"[3]

१३—विगिंच[4] कम्मुणो[5] हेउं जसं संचिणु खन्तिए ।
पाढवं सरीरं हिच्चा उड्ढं पक्कमई दिसं ॥

१४—विसालिसेहिं सीलेहिं जक्खा उत्तरउत्तरा ।
महासुक्का व दिप्पन्ता मन्नन्ता अपुणच्चवं ॥

१५—अप्पिया देवकामाणं कामरूवविउव्विणो ।
उड्ढं कप्पेसु चिट्ठन्ति पुव्वा वाससया बहू ॥

१६—तत्थ ठिच्चा जहाठाणं जक्खा आउक्खए चुया ।
उवेन्ति माणुसं जोणिं से दसंगेऽभिजायई ॥

१७—खेत्तं वत्थुं हिरण्णं च पसवो दासपोरुसं ।
चत्तारि कामखन्धाणि तत्थ से उववज्जई ॥

१—नो य णं (स, सु, बृ०) ।
२—घयसत्तिव्व (उ), घयसित्तिव्व (ऋ, सु,), घयसित्ते व (बृ०) ।
३—चउद्धा संपयं लद्धुं इहेव ताव भायते ।
तेयते तेजसंपन्ने घयसित्ते व पावए ॥ (नागार्जुनीयाः) ।
४—विकिंचि (अ, आ), विकिंच (चू०), विगिंच (चू० पा०) ।
५—कम्मणो (उ, ऋ) ।

१८—मित्तव नायव[1] होइ उच्चागोए य वण्णव ।
अप्पायके महापन्ने अभिजाए जसोबले ॥
१९—भोच्चा माणुस्सए भोए अप्पडिरूवे अहाउय ।
पुव्व विसुद्धसद्धम्मे केवल बोहि बुज्झिया ॥
२०—चउरग दुल्लह मत्ता[2] सजम पडिवज्जिया ।
तवसा धुयकम्मसे सिद्धे हवइ सासए ॥
—त्ति बेमि ॥

*

१—नाइव्व (अ) नाइव (उ) ।
२—नच्चा (उ) ।

चउत्थ अज्झयण

असंखयं

१—असंखयं जीविय मा पमायए
जरोवणीयस्स हु नत्थि ताण ।
एवं[1] वियाणाहि जणे पमत्ते
कण्णू विहिंसा अजया गहिन्ति ॥

२—जे पावकम्मेहि धण मणूसा
समाययन्ती अमइ[2] गहाय ।
पहाय ते 'पास पयट्टिए'[3] नरे
वेराणुबद्धा नरयं उवेन्ति ॥

३—तेणे जहा सन्धिमुहे गहीए
सकम्मुणा किच्चइ पावकारी ।
एव पया पेच्च[4] इहं च[5] लोए
'कडाण कम्माण न मोक्ख[6] अत्थि'[7] ॥

४—ससारमावन्न परस्स अट्ठा
साहारण ज च करेइ कम्मं ।
कम्मस्स ते तस्स उ वेयकाले
न बन्धवा बन्धवयं उवेन्ति ॥

१—एण (वृ० पा०) ।
२—अमय (वृ० पा०, चू० पा०) ।
३—पासपयट्टिए (ऋ) , पासपइट्टिए (उ) ।
४—पेच्छ (वृ०) , पेच्च (वृ० पा०) ।
५—पि (चू०, वृ० पा०) ।
६—मोक्खो (वृ०, चू०) ।
७—ण कम्मुणो पीहाऽत्ति तो कयाती (वृ० पा०, चू० पा०) ।

५—वित्तेण ताण न लभे पमत्ते
इममि लोए अदुवा परत्था ।
दीवप्पणट्ठे व अणन्तमोहे
नेयाउय दट्ठुमदट्ठुमेव ॥

६—सुत्तेसु यावी पडिबुद्धजीवी
न वीससे पण्डिए आसुपन्ने ।
घोरा मुहुत्ता अबल सरीर
भारुण्डपक्खी व चरप्पमत्तो ॥

७—चरे पयाइं परिसकमाणो
ज किंचि पास इह मण्णमाणो ।
लाभन्तरे जीविय वूहइत्ता
पच्छा परिन्नाय मलावधसी ॥

८—छन्द निरोहेण उवेइ मोक्खं
आसे जहा सिक्खियवम्मधारी ।
पुव्वाइ वासाइ चरप्पमत्तो
तम्हा मुणी खिप्पमुवेइ मोक्ख ॥

९—स पुव्वमेव न लभेज्ज पच्छा
एसोवमा सासयवाइयाण ।
विसीयई सिढिले आउयमि[1]
कालोवणीए सरीरस्स भेए ॥

१०—खिप्प न सक्केइ विवेगमेउ
तम्हा समुट्ठाय पहाय कामे ।
समिच्च लोय समया महेसी
अप्पाणरक्खी चरमप्पमत्तो[2] ॥

१—आउंमि (उ)।
२—°चरप्पमत्ते (अ) चरप्पमत्तो (उ)।

११—मुहुं मुहुं मोहगुणे जयन्तं
अणेगरूवा समण चरन्त ।
फासा फुसन्ती असमजस च
न तेसु भिक्खू मणसा पउस्से ॥

१२—'मन्दा य फासा बहुलोहणिज्जा'[1]
तहप्पगारेसु मण न कुज्जा ।
रक्खेज्ज कोह विणएज्ज माण
माय न सेवे पयहेज्ज लोह ॥

१३—जे सखया तुच्छ परप्पवाई
ते पिज्जदोसाणुगया परज्झा ।
एए 'अहम्मे'त्ति दुगुछमाणो
कखे गुणे जाव सरीरभेओ ॥

—त्ति बेमि ॥

*

१—मदाउ तहा हियस्स वहुलोभणेज्जा (चू० पा०) ।

९—हिंसे बाले मुसावाई माइल्ले पिसुणे सढे ।
भुजमाणे सुर मस सेयमेय ति मन्नई ॥
१०—कायसा वयसा मत्ते वित्ते गिद्धे य इत्थिसु ।
दुहओ मल सचिणइ सिसुणागु व्व मट्टिय ॥
११—तओ पुट्ठो आयकेण गिलाणो परितप्पई ।
पभीओ परलोगस्स कम्माणुप्पेहि अप्पणो ॥
१२—सुया मे नरए ठाणा असीलाण च जा गई ।
बालाण कूरकम्माण पगाढा जत्थ वेयणा ॥
१३—तत्थोववाइय ठाण जहा मेयमणुस्सुय ।
आहाकम्मेहि गच्छन्तो सो पच्छा परितप्पई ॥
१४—जहा सागडिओ जाण सम हिच्चा महापह ।
विसम मग्गमोइण्णो[1] 'अक्खे भग्गमि'[2] सोयई ॥
१५—एव धम्म विउक्कम्म अहम्म पडिवज्जिया ।
बाले मच्चुमुह पत्ते अक्खे भग्गे व सोयई ॥
१६—तओ से मरणन्तमि बाले सन्तस्सई[3] भया ।
अकाममरण मरई धुत्ते व कलिना जिए ॥
१७—एय अकाममरण बालाण तु पवेइयं ।
एत्तो सकाममरण पण्डियाण सुणेह मे ॥
१८—मरण पि सपुण्णाण[4] जहा मेयमणुस्सुय ।
विप्पसण्णमणाघाय[5] सजयाण वुसीमओ ॥

१—मग्गमोगाढा (चू०), मग्गमोगाढो (बृ० पा०) ।
२—अक्खभग्गम्मि (बृ०), अक्खस्स भग्गे (चू०), अक्खे भग्गम्मि (बृ० पा०) ।
३—संतसई (चू०) ।
४—सुपुण्णाण (अ) ।
५—सुपसन्नेहिं अक्खाय (बृ० पा०, चू०), सुप्पसन्नमणक्खाय (बृ०) ;
विप्पसण्णमणाघाय (चू० पा०) ।

२८—ताणि ठाणाणि गच्छन्ति सिक्खित्ता संजमं तवं ।
भिक्खाए वा गिहत्थे वा जे सन्ति परिनिव्वुडा ॥

२९—तेसिं सोच्चा सपुज्जाण[1] सजयाण वुसीमओ ।
न सतसन्ति मरणन्ते सीलवन्ता बहुस्सुया ॥

३०—तुलिया विसेसमादाय दयाधम्मस्स खन्तिए ।
विप्पसीएज्ज मेहावी तहाभूएण अप्पणा ॥

३१—तओ काले अभिप्पेए सड्ढी तालिसमन्तिए ।
विणएज्ज लोमहरिस भेयं देहस्स कंखए ॥

३२—अह कालमि संपत्ते 'आघायाय समुस्सयं ।'[2]
सकाममरण मरई तिण्हमन्नयरं मुणी ॥

—त्ति बेमि ॥

*

१—सुपुज्जाण (चू०) ।

२—सुतक्खात समाहितो (चू०), आघायाए समुच्छयं (चू० पा०) ।

१९—न इम 'सव्वेग

नाणा

३—माया

नाल ते भ

४—पयमट्ट

छिन्द गेहि सिणह

५—गवास मणिक

सव्वमेय

| थावर जगम

पच्चमाणस्स कम्मेहि

६—अज्झत्थ सव्वओ सव्व दिस्स पाणे पियायए।

'न हणे पाणिणो पाण भयवेराओ उवरए ॥

७—आयाण नरय दिस्स नायएज्ज तणामवि।

'दोगुछी' अप्पणो पाए' दिन्न भुजेज्ज भोयण ॥

१—ते सव्वे दुक्खन्न जिया (न ग.जुनीया)।

२—तम्हा समिक्ख मेहावी (चू०, वृ० पा०), समिक्खा पडिए तम्हा (चू० पा०)।

३—अत्तट्ठा (वृ० पा०)।

४—भूएहिं (चू०)।

५—गेह (उ)।

६—यह श्लोक चूर्णि व टीका मे व्याख्यात नही है।

७—नो हिंसेज्ज पाणिण पाणे (चू०), नो हणे पाणिण पाणे (वृ० पा०)।

८—दोगछी (ऋ)।

९—अप्पणो पाणिपाते (चू० पा०)।

८—इहमेगे उ मन्नन्ति अप्पच्चक्खाय पावगं ।
आयरियं[1] विदित्ताण सव्वदुक्खा विमुच्चई ॥

९—भणन्ता अकरेन्ता य बन्धमोक्खपइण्णिणो ।
वायाविरियमेत्तेण समासासेन्ति अप्पयं ॥

१०—न चित्ता तायए भासा कओ विज्जाणुसासणं ? ।
विसन्ना पावकम्मेहिं[2] बाला पंडियमाणिणो ॥

११—जे केइ सरीरे सत्ता वण्णे रूवे य सव्वसो ।
'मणसा कायवक्केण'[3] सव्वे ते दुक्खसंभवा ॥

१२—आवन्ना दीहमद्धाणं संसारंमि अणंतए ।
तम्हा सव्वदिसं पस्स अप्पमत्तो परिव्वए ॥

१३—बहिया उड्ढमादाय नावकंखे कयाइ वि ।
पुव्वकम्मखयट्ठाए इमं देहं समुद्धरे ॥

१४—विविच्च[4] कम्मुणो हेउं कालकंखी परिव्वए ।
मायं पिंडस्स पाणस्स कडं लद्धूण भक्खए ॥

१५—सन्निहिं च न कुव्वेज्जा लेवमायाए संजए ।
पक्खी पत्तं समादाय निरवेक्खो[5] परिव्वए ॥

१६—एसणासमिओ लज्जू गामे अणियओ चरे ।
अप्पमत्तो पमत्तेहिं पिंडवायं गवेसए ॥

१—आयारियं (बृ० पा०, उ, सु) ।
२—पावकिच्चेहिं (बृ० पा०) ।
३—मणसा वयसा चेव (चू०, बृ०), मणसा कायवक्केण (बृ० पा०) ।
४—विगिंच (अ, आ, इ, उ, बृ० पा०) ।
५—निरवेक्खी (चू०) ।

८—इहमेगे उ मन्नन्ति अप्पच्चक्खाय पावग ।
आयरिय[1] विदित्ताण सव्वदुक्खा विमुच्चई ॥

९—भणन्ता अकरेन्ता य बन्धमोक्खपइण्णिणो ।
वायाविरियमेत्तेण समासासेन्ति अप्पय ॥

१०—न चित्ता तायए भासा कओ विज्जाणुसासण ? ।
विसन्ना पावकम्मेहिं[2] बाला पडियमाणिणो ॥

११—जे केइ सरीरे सत्ता वण्णे रूवे य सव्वसो ।
'मणसा कायवक्केणं'[3] सव्वे ते दुक्खसभवा ॥

१२—आवन्ना दीहमद्धाणं ससारमि अणतए ।
तम्हा सव्वदिस पस्स अप्पमत्तो परिव्वए ॥

१३—बहिया उड्ढमादाय नावकखे कयाइ वि ।
पुव्वकम्मखयट्ठाए इम देहं समुद्धरे ॥

१४—विविच्च[4] कम्मुणो हेउ कालकखी परिव्वए ।
मायं पिडस्स पाणस्स कड लद्धूण भक्खए ॥

१५—सन्निहिं च न कुव्वेज्जा लेवमायाए सजए ।
पक्खी पत्त समादाय निरवेक्खो[5] परिव्वए ॥

१६—एसणासमिओ लज्जू गामे अणियओ चरे ।
अप्पमत्तो पमत्तेहि पिडवाय गवेसए ॥

१—आयारिय (वृ० पा०, उ, सु) ।
२—पावकिच्चेहिं (वृ० पा०) ।
३—मणसा वयसा चेव (चू०, वृ०) , मणसा कायवक्केण (वृ० पा०) ।
४—विगिंच (अ, आ, इ, उ, वृ० पा०) ।
५—निरवेक्खी (चू०) ।

१८–'एवं से उदाहु, अणुत्तरनाणी
अणुत्तरदंसी अणुत्तरनाणदंसणधरे।
अरहा नायपुत्ते
भगवं वेसालिए वियाहिए॥''
—त्ति बेमि।'

*

सत्तम अज्झयण

उरब्भिज्जं

१—जहाएसं समुद्दिस्स कोइ पोसेज्ज एलयं ।
ओयणं 'जवसं देज्जा'[1] पोसेज्जा 'वि सयंगणे'[2] ॥
२—तओ से पुट्ठे परिवूढे जायमेए महोदरे ।
पीणिए विउले देहे आएसं परिकंखए[3] ॥
३—जाव न एइ[4] आएसे ताव जीवइ से दुही ।
अह पत्तंमि आएसे सीसं छेत्तूण भुज्जई ॥
४—जहा खलु से उरब्भे आएसाए समीहिए ।
एवं बाले अहम्मिट्ठे ईहई नरयाउयं ॥
५—हिंसे बाले[5] मुसावाई अद्धाणंमि विलोवए ।
अन्नदत्तहरे तेणे[6] माई कण्हुहरे[7] सढे ॥
६—इत्थीविसयगिद्धे य महारंभपरिग्गहे ।
भुंजमाणे सुरं मंसं परिवूढे परंदमे ॥
७—अयकक्करभोई य तुंदिल्ले चियलोहिए[8] ।
आउयं नरए कंखे जहाएसं व एलए ॥
८—आसणं सयणं जाणं वित्तं कामे य भुंजिया ।
दुस्साहडं धणं हिच्चा बहुं संचिणिया रयं ॥

१—जवसे देति (चू०) ।
२—विसयगणे (बृ० पा०, चू०) ।
३—पडि० (बृ०), परि० (बृ० पा०) ।
४—एज्जति (चू०) ।
५—कोही (बृ० पा०) ।
६—बाले (बृ०), तेणे (बृ० पा०) ।
७—किन्नुहरे (चू०) · कन्नुहरे (सु) ।
८—०सोणिए (उ, ऋ) ।

१८—तओ जिए सइं होइ दुविहं दोग्गइं गए।
दुल्लहा तस्स उम्मज्जा अद्धाए सुइरादवि॥

१९—एवं जियं[1] सपेहाए तुलिया बालं च पंडियं।
मूलियं ते पवेसन्ति माणुसं जोणिमेन्ति[2] जे॥

२०—वेमायाहिं सिक्खाहिं जे नरा गिहिसुव्वया।
उवेन्ति माणुसं जोणिं कम्मसच्चा[3] हु पाणिणो॥

२१—जेसिं तु विउला सिक्खा मूलियं ते अइच्छिया[4]।
सीलवन्ता सवीसेसा अद्दीणा जन्ति देवयं॥

२२—एवमद्दीणवं[5] भिक्खु अगारिं[6] च वियाणिया।
कहण्णु जिच्चमेलिक्खं 'जिच्चमाणे न'[7] संविदे?॥

२३—जहा कुसग्गे उदगं समुद्देण समं मिणे।
एवं माणुस्सगा कामा देवकामाण अन्तिए॥

२४—कुसग्गमेत्ता इमे कामा सन्निरुद्धम्मि आउए।
कस्स हेउं पुराकाउं[8] जोगक्खेमं न संविदे?॥

२५—इह कामाणियट्टस्स अत्तट्ठे अवरज्झई।
'सोच्चा[9] नेयाउयं मग्गं जं भुज्जो परिभस्सई'[10]॥

१—जिए (वृ०)।
२—जोणिमिन्ति (उ, चू०)।
३—कम्मसत्ता (वृ० पा०, चू० पा०)।
४—तिउच्छिया (अ), ते उट्टिया (चू०), ते अइच्छिया (चू० पा०), विउट्टिया, अतिट्टिया, अतिच्छिया (वृ०)।
५—एवं अदीणवं (चू०, वृ०)।
६—आगारिं (उ, ऋ)।
७—जिच्चमाण व (चू०)।
८—पुरोकाउं (चू०)।
९—पत्तो (वृ० पा०, चू० पा०)।
१०—पूइदेह निरोहेण भवे देवे त्ति मे सुयं (चू० पा०)।

अट्ठमं अज्झयणं

काविलीयं

१–'अधुवे असासयम्मि'[1]
संसारम्मि दुक्खपउराए।
किं नाम होज्ज तं कम्मयं
'जेणाहं दोग्गइं न गच्छेज्जा'[2] ॥

२–विजहित्तु पुव्वसंजोगं
न सिणेहं कहिंचि कुव्वेज्जा।
असिणेह सिणेहकरेहिं
दोसपओसेहिं[3] मुच्चए भिक्खू ॥

३–तो नाणदंसणसमग्गो
हियनिस्सेसाए[4] सव्वजीवाणं।
तेसिं विमोक्खणट्ठाए
भासई मुणिवरो विगयमोहो ॥

४–सव्वं गन्थं कलहं च
विप्पजहे तहाविहं[5] भिक्खू।
'सव्वेसु कामजाएसु'[6]
पासमाणो न लिप्पई ताई ॥

१—अधुवम्मि मोहगहणए (नागार्जुनीया)।
२—जेणाहं(ध) दुग्गइतो मुच्चेज्जा (चू०, वृ० पा०)।
३—दोसपएहिं (वृ०), दोसपउसेहिं (वृ० पा०)।
४—हियनिस्सेसाय (चू०, सु)।
५—तहाविहो (वृ० पा०, चू० पा०)।
६—सव्वेहिं कामजाएहिं (चू०)।

१०—'जगनिस्सिएहिं भूएहि
तसनामेहिं थावरेहिं च ।'[1]
नो तेसिमारभे दंड
मणसा वयसा कायसा चेव ॥

११—सुद्धेसणाओ नच्चाण
तत्थ ठवेज्ज भिक्खू अप्पाण ।
जायाए घासमेसेज्जा
रसगिद्धे न सिया भिक्खाए ॥

१२—पन्ताणि चेव सेवेज्जा
सीयपिंड पुराणकुम्मासं ।
अदु वुक्कस पुलाग वा
'जवणट्ठाए निसेवए'[2] मथु ॥

१३—जे लक्खण च सुविण च
अगविज्ज च जे पउजन्ति ।
न हु ते समणा वुच्चन्ति
एवं आयरिएहिं[3] अक्खाय ॥

१४—इहजीविय अणियमेत्ता
पब्भट्ठा समाहिजोएहि ।
ते कामभोगरसगिद्धा
उववज्जन्ति आसुरे काए ॥

१—जगनिस्सियाण भूयाण तसाण थावराण य । (वृ० पा०),
जगणिसित भूताण तसणामाणं च थावराण च । (चू०),
जगनिस्सितेसु थावरणामेसु भूतेसु तसणामेसु वा । (चू० पा०),
जगनिस्सिएहिं भूएहिं तसनामेहिं थावरे हिं वा । (चू०) ।
२—जवणट्ठा वा सेवए (वृ०) , जवणट्ठाए णिसेवए (वृ० पा०) ।
३—आरिएहिं (अ, वृ०) ।

१०—'जगनिस्सिएहिं भूएहि
तसनामेहि थावरेहिं च ।'[1]
नो तेसिमारभे दंडं
मणसा वयसा कायसा चेव ॥

११—सुद्धेसणाओ नच्चाण
तत्थ ठवेज्ज भिक्खू अप्पाणं ।
जायाए घासमेसेज्जा
रसगिद्धे न सिया भिक्खाए ॥

१२—पन्ताणि चेव सेवेज्जा
सीयपिंडं पुराणकुम्मासं ।
अदु वुक्कसं पुलागं वा
'जवणट्ठाए निसेवए'[2] मंथुं ॥

१३—जे लक्खणं च सुविणं च
अंगविज्जं च जे पउंजन्ति ।
न हु ते समणा वुच्चन्ति
एवं आयरिएहिं[3] अक्खायं ॥

१४—इहजीवियं अणियमेत्ता
पब्भट्ठा समाहिजोएहि ।
ते कामभोगरसगिद्धा
उववज्जन्ति आसुरे काए ॥

१—जगनिस्सियाणं भूयाणं तसाणं थावराण य । (वृ० पा०),
जगणिसितं भूताणं तसणामाणं च थावराणं च । (चू०),
जगनिस्सितेसु थावरणामेसु भूतेसु तसणामेसु वा । (चू० पा०),
जगनिस्सिएहिं भूएहिं तसनामेहिं थावरे हिं वा । (चू०) ।
२—जवणट्ठा वा सेवए (वृ०) , जवणट्ठाए णिसेवए (वृ० पा०) ।
३—आरिएहिं (अ. वृ०) ।

२०—इइ एस धम्मे अक्खाए
कविलेणं च विसुद्धपन्नेणं ।
तरिहिन्ति जे उ काहिन्ति
तेहि आराहिया दुवे लोग ॥

—त्ति बेमि ॥

*

नवम अज्झयण

नमिपव्वज्जा

१—चइऊण देवलोगाओ
उववन्नो माणुसमि लोगमि ।
उवसन्तमोहणिज्जो
सरई पोराणिय जाइ ॥
२—जाइ सरित्तु भयव
सहसबुद्धो अणुत्तरे धम्मे ।
पुत्त ठवेत्तु रज्जं
अभिणिक्खमई नमी राया ॥
३—से देवलोगसरिसे
अन्तेउरवरगओ वरे भोए ।
भुजित्तु नमी राया
बुद्धो भोगे परिच्चयई ॥
४—मिहिल सपुरजणवय
वलमोरोह च परियण सव्व ।
चिच्चा अभिनिक्खन्तो
एगन्तमहिट्ठिओ भयव ॥
५—कोलाहलगभूय
आसी मिहिलाए पव्वयन्तमि ।
तइया रायरिसिमि
नमिमि अभिणिक्खमन्तमि ॥
६—अब्भुट्ठिय रायरिसि पव्वज्जाठाणमुत्तम ।
सक्को माहणरूवेण इम वयणमब्बवी ॥

७—किण्णु भो ! अज्ज मिहिलाए कोलाहलगसंकुला ।
सुव्वन्ति दारुणा सद्दा पासाएसु गिहेसु य ? ॥

८—एयमट्ठं निसामित्ता हेऊकारणचोइओ ।
तओ नमी रायरिसी देविन्द इणमब्बवी ॥

९—मिहिलाए चेइए वच्छे सीयच्छाए मणोरमे ।
पत्तपुप्फफलोवेए बहूण बहुगुणे सया ॥

१०—वाएण हीरमाणमि चेइयमि मणोरमे ।
दुहिया असरणा अत्ता एए कन्दन्ति भो ! खगा ॥

११—एयमट्ठं निसामित्ता हेऊकारणचोइओ ।
तओ नमिं रायरिसिं देविन्दो इणमब्बवी ॥

१२—एस अग्गी य वाऊ य एय डज्झइ मन्दिर ।
भयव ! अन्तेउर तेण कीस ण नावपेक्खसि[१] ? ॥

१३—एयमट्ठ निसामित्ता हेऊकारणचोइओ ।
तओ नमो रायरिसी देविन्दं इणमब्बवी ॥

१४—सुह वसामो जीवामो जेसिं मो नत्थि किंचण ।
मिहिलाए डज्झमाणीए न मे डज्झइ किंचण ॥

१५—चत्तपुत्तकलत्तस्स निव्वावारस्स भिक्खुणो ।
पियं न विज्जई किंचि अप्पियं पि न विज्जए ॥

१६—बहुं खु मुणिणो भद्द अणगारस्स भिक्खुणो ।
सव्वओ विप्पमुक्कस्स एगन्तमणुपस्सओ ॥

१७—एयमट्ठ निसामित्ता हेऊकारणचोइओ ।
तओ नमिं रायरिसिं देविन्दो इणमब्बवी ॥

१—नावपिक्खह (अ) ।

१८—पागार कारइत्ताणं गोपुरट्टालगाणि च ।
उस्सूलगसयग्घीओ[1] तओ गच्छसि खत्तिया ॥

१९—एयमट्ठं निसामित्ता हेऊकारणचोइओ ।
तओ नमी रायरिसी देविन्दं इणमब्बवी ॥

२०—सद्धं नगरं[2] किच्चा तवसंवरमग्गलं ।
'खन्ति निउणपागारं तिगुत्तं दुप्पधंसयं'[3] ॥

२१—धणुं परक्कमं किच्चा जीवं च इरियं सया ।
धिइं च केयणं किच्चा सच्चेण पलिमन्थए[4] ॥

२२—तवनारायजुत्तेण भेत्तूण कम्मकंचुयं ।
मुणी विगयसंगामो भवाओ परिमुच्चए ॥

२३—एयमट्ठं निसामित्ता हेऊकारणचोइओ ।
तओ नमिं रायरिसिं देविन्दो इणमब्बवी ॥

२४—पासाए[5] कारइत्ताणं वद्धमाणगिहाणि य ।
बालग्गपोइयाओ य तओ गच्छसि खत्तिया ॥

२५—एयमट्ठं निसामित्ता हेऊकारणचोइओ ।
तओ नमी रायरिसी देविन्दं इणमब्बवी ॥

२६—संसयं खलु सो कुणई, जो मग्गे कुणई घरं ।
जत्थेव गन्तुमिच्छेज्जा तत्थ कुव्वेज्ज सासयं ॥

२७—एयमट्ठं निसामित्ता हेऊकारणचोइओ ।
तओ नमिं रायरिसिं देविन्दो इणमब्बवी ॥

१—उच्चूलग° (स) ।
२—नगरीं (बृ०) ।
३—खन्ति निउणं पागारं तिगुत्ति दुप्पधंसयं (बृ० पा०) ।
४—पलिकथए (चू०) ।
५—पासाय (ऋ) ।

२८—आमोसे लोमहारे य गंठिभेए य तक्करे ।
नगरस्स खेमं काऊणं तओ गच्छसि खत्तिया ! ॥

२९—एयमट्ठं निसामित्ता हेऊकारणचोइओ ।
तओ नमी रायरिसी देविन्द इणमब्बवी ॥

३०—असइं तु मणुस्सेहिं मिच्छा दण्डो पजुजई ।
अकारिणोऽत्थ बज्झन्ति मुच्चई कारओ जणो ॥

३१—एयमट्ठं निसामित्ता हेऊकारणचोइओ ।
तओ नमिं रायरिसिं देविन्दो इणमब्बवी ॥

३२—जे केइ पत्थिवा तुब्भं[1] नानमन्ति नराहिवा ! ।
वसे ते ठावइत्ताणं तओ गच्छसि खत्तिया ! ॥

३३—एयमट्ठं निसामित्ता हेऊकारणचोइओ ।
तओ नमी रायरिसी देविन्द इणमब्बवी ॥

३४—जो सहस्सं सहस्साणं सगामे दुज्जए जिणे ।
एगं जिणेज्ज अप्पाणं एस से परमो जओ ॥

३५—अप्पाणमेव जुज्झाहि किं ते जुज्झेण बज्झओ ।
अप्पाणमेव[2] अप्पाणं जइत्ता सुहमेहए ॥

३६—पञ्चिन्दियाणि कोहं माणं मायं तहेव लोहं च ।
दुज्जयं चेव अप्पाणं सव्वं अप्पे जिए जियं ॥

३७—एयमट्ठं निसामित्ता हेऊकारणचोइओ ।
तओ नमिं रायरिसिं देविन्दो इणमब्बवी ॥

३८—जइत्ता विउले जन्ने भोइत्ता समणमाहणे ।
दच्चा भोच्चा य जट्ठा य तओ गच्छसि खत्तिया ! ॥

१—तुज्झ (बृ० पा०) ।
२—अप्पणा चेव (अ) ।

३९—एयमट्ठं निसामित्ता हेऊकारणचोइओ ।
तओ नमी रायरिसी देविन्दं इणमब्बवी ॥

४०—जो सहस्सं सहस्साणं मासे मासे गवं दए ।
तस्सावि संजमो सेओ अदिन्तस्स वि किंचण ॥

४१—एयमट्ठं निसामित्ता हेऊकारणचोइओ ।
तओ नमिं रायरिसिं देविन्दो इणमब्बवी ॥

४२—घोरासमं चइत्ताणं[1] अन्नं पत्थेसि आसमं ।
इहेव पोसहरओ भवाहि मणुयाहिवा ! ॥

४३—एयमट्ठं निसामित्ता हेऊकारणचोइओ ।
तओ नमी रायरिसी देविन्दं इणमब्बवी ॥

४४—मासे मासे तु जो बालो कुसग्गेण तु[2] भुंजए ।
न सो सुयक्खायधम्मस्स कलं अग्घइ सोलसिं ॥

४५—एयमट्ठं निसामित्ता हेऊकारणचोइओ ।
तओ नमिं रायरिसिं देविन्दो इणमब्बवी ॥

४६—हिरण्णं सुवण्णं मणिमुत्तं कंसं दूसं च वाहणं[3] ।
कोसं वड्ढावइत्ताणं तओ गच्छसि खत्तिया ! ॥

४७—एयमट्ठं निसामित्ता हेऊकारणचोइओ ।
तओ नमी रायरिसी देविन्दं इणमब्बवी ॥

४८—सुवण्णरुप्पस्स उ[4] पव्वया भवे
सिया हु केलाससमा असंखया ।
नरस्स लुद्धस्स न तेहिं[5] किंचि
इच्छा उ आगाससमा अणन्तिया ॥

१—जहित्ताणं (वृ० पा०) ।
२—व (अ) ।
३—सवाहणं (वृ० पा०, चू०) ।
४—य (अ) ।
५—तेणं (वृ० पा०) ।

४९—पुढवी साली जवा चेव हिरण्ण पसुभिस्सह ।
पडिपुण्ण[1] नालमेगस्स इइ विज्ञा तव चरे ॥

५०—एयमट्ठ निसामित्ता हेऊकारणचोइओ ।
तओ नमि रायरिसिं देविन्दो इणमब्बवी ॥

५१—अच्छेरगमब्भुदए भोए चयसि[2] पत्थिवा[3] ।
असन्ते कामे पत्थेसि सकप्पेण विहन्नसि ॥

५२—एयमट्ठ निसामित्ता हेऊकारणचोइओ ।
तओ नमी रायरिसी देविन्द इणमब्बवी ॥

५३—सल्ल कामा विस कामा कामा आसीविसोवमा ।
कामे पत्थेमाणा अकामा जन्ति दोग्गइ ॥

५४—अहे वयइ कोहेण माणेण अहमा गई ।
माया गईपडिग्घाओ लोभाओ दुहओ भय ॥

५५—अवउज्झिऊण माहणरूव विउव्विऊण इन्दत्त ।
वन्दइ अभित्थुणन्तो इमाहि महुराहिं वग्गूहिं ॥

५६—अहो ते निज्जिओ कोहो अहो ते माणो पराजिओ ।
अहो ते निरक्किया माया अहो ते लोभो वसीकओ ॥

५७—अहो ते अज्जव साहु अहो ते साहु मद्दव ।
अहो ते उत्तमा खन्ती अहो ते मुत्ति उत्तमा ॥

५८—इह सि उत्तुमो भन्ते पेच्चा होहिसि उत्तमो ।
लोगुत्तमुत्तम[4] ठाण सिद्धि गच्छसि नीरओ ॥

१—सव्वत (वृ० पा०) ।
२—जहासि (वृ०) , चयसि (वृ० पा०) ।
३—खत्तिया (वृ० पा०) ।
४—लोगुत्तम मुत्तम (वृ० पा०) ।

दसमं अज्झयण

दुमपत्तयं

१—दुमपत्तए पण्डुयए जहा
निवडइ राइगणाण अच्चए।
एव मणुयाण जीविय
समयं गोयम! मा पमायए॥

२—कुसग्गे जह ओसबिन्दुए
थोव चिट्ठइ लम्बमाणए।
एवं मणुयाण जीविय
समयं गोयम! मा पमायए॥

३—'इइ इत्तरियम्मि आउए
जीवियए बहुपच्चवायए'[1]।
विहुणाहि रय पुरे कड
समय गोयम! मा पमायए॥

४—दुलहे खलु माणुसे भवे
चिरकालेण वि सव्वपाणिण।
गाढा य विवाग कम्मुणो
समय गोयम! मा पमायए॥

५—पुढविक्कायमइगओ
उक्कोस जीवो उ सवसे।
काल सखाईय
समयं गोयम! मा पमायए॥

१—एव मणुयाण जीविए
एत्तिरिए वहुपच्चवायए। (वृ० पा०)।

६—आउकायमइगओ

उक्कोस जीवो उ सवसे।
काल सखाईय
समय गोयम! मा पमायए॥

७—तेउकायमइगओ

उक्कोस जीवो उ सवसे।
कालं सखाईय
समय गोयम! मा पमायए॥

८—वाउकायमइगओ

उक्कोस जीवो उ सवसे।
काल सखाईय
समय गोयम! मा पमायए॥

९—वणस्सइकायमइगओ

उक्कोस जीवो उ सवसे।
कालमणन्तदुरन्त
समय गोयम! मा पमायए॥

१०—बेइन्दियकायमइगओ

उक्कोस जीवो उ सवसे।
काल सखिज्जसन्निय
समय गोयम! मा पमायए॥

११—तेइन्दियकायमइगओ

उक्कोस जीवो उ सवसे।
काल सखिज्जसन्निय
समयं गोयम! मा पमायए॥

१२—चउरिन्दियकायमइगओ
उक्कोस जीवो उ संवसे।
कालं संखिज्जसन्निय
समय गोयम! मा पमायए॥

१३—पंचिन्दियकायमइगओ
उक्कोस जीवो उ सवसे।
सत्तट्ठभवग्गहणे
समय गोयम! मा पमायए॥

१४—देवे नेरइए य अइगओ
उक्कोस जीवो उ संवसे।
इक्किक्कभवग्गहणे
समय गोयम! मा पमायए॥

१५—एव भवससारे
संसरइ सुहासुहेहि कम्मेहिं।
जीवो पमायबहुलो
समय गोयम! मा पमायए॥

१६—लद्धूण वि माणुसत्तण
आरिअत्त पुणरावि दुल्लह।
बहवे दसुया मिलेक्खुया
समय गोयम! मा पमायए॥

१७—लद्धूण वि आरियत्तणं
अहीणपंचिन्दियया हु दुल्लहा।
विगलिन्दियया हु दीसई
समयं गोयम! मा पमायए॥

६—आउकायमइगओ
उक्कोसं जीवो उ संवसे।
कालं सखाईय
समय गोयम। मा पमायए॥

७—तेउकायमइगओ
उक्कोस जीवो उ संवसे।
कालं संखाईयं
समय गोयम। मा पमायए॥

८—वाउकायमइगओ
उक्कोसं जीवो उ संवसे।
कालं संखाईयं
समयं गोयम। मा पमायए॥

९—वणस्सइकायमइगओ
उक्कोस जीवो उ संवसे।
कालमणन्तदुरन्तं
समयं गोयम। मा पमायए॥

१०—बेइन्दियकायमइगओ
उक्कोस जीवो उ संवसे।
काल सखिज्जसन्नियं
समयं गोयम। मा पमायए॥

११—तेइन्दियकायमइगओ
उक्कोस जीवो उ संवसे।
काल सखिज्जसन्निय
समयं गोयम! मा पमायए॥

१२—चउरिन्दियकायमइगओ
उक्कोसं [illegible] ते ।
काल संखिज्ज[illegible]
समयं [illegible] ए ॥

१३—पंचिन्दियकायमइगओ
उक्कोसं [illegible] ते ।
सत्तट्ठभवग्गहणे
समयं [illegible] ए ॥

१४—देवे नेरइए य अइ[illegible]
उक्कोसं [illegible] ते ।
इक्किक्कभवग्गहणे
समयं गोयम! मा [illegible] ॥

१५—एव भवसंसारे
संसरइ सुहासुहेहिं [illegible] ।
जीवो पमायबहुलो
समयं गोयम! मा पमायए ॥

१६—लद्धूण वि माणुसत्तं
आरिअत्तं पुणरावि दुल्लहं ।
बहवे दसुया मिलेक्खुया
समयं गोयम! मा पमायए ॥

१७—लद्धूण वि आरियत्तणं
अहीणपंचिन्दियया हु दुल्लहा ।
विगलिन्दियया हु दीसई
समयं गोयम! मा [illegible] ॥

१८—अहीणपंचिन्दियत्त पि से लहे
उत्तमधम्मसुई हु दुल्लहा ।
कुतित्थिनिसेवए[1] जणे
समयं गोयम! मा पमायए ॥

१९—लद्धूण वि उत्तम सुइ
सद्दहणा पुणरावि दुल्लहा ।
मिच्छत्तनिसेवए जणे
समय गोयम! मा पमायए ॥

२०—धम्म पि हु सद्दहन्तया
दुल्लहया[2] काएण फासया ।
इह कामगुणेहि[3] मुच्छिया
समय गोयम! मा पमायए ॥

२१—परिजूरइ ते सरीरय
केसा पण्डुरया हवन्ति ते ।
से सोयबले य हायई
समय गोयम! मा पमायए ॥

२२—परिजूरइ ते सरीरय
केसा पण्डुरया हवन्ति ते ।
से चक्खुबले य हायई
समय गोयम! मा पमायए ॥

१—कुतित्थ° (वृ० पा०, चू०) ।
२—दुल्लहा (उ) ।
३—कामगुणेसु (उ, म, वृ०) , काम गुणेहि (बृ० पा०) ।

२३—परिजूरइ ते सरीरयं
केसा पण्डुरया हवन्ति ते।
से घाणबले य हायई
समयं गोयम! मा पमायए॥

२४—परिजूरइ ते सरीरयं
केसा पण्डुरया हवन्ति ते।
से जिब्भबले य हायई
समयं गोयम! मा पमायए॥

२५—परिजूरइ ते सरीरयं
केसा पण्डुरया हवन्ति ते।
से फासबले य हायई
समयं गोयम! मा पमायए॥

२६—परिजूरइ ते सरीरयं
केसा पण्डुरया हवन्ति ते।
से सव्वबले य हायई
समयं गोयम! मा पमायए॥

२७—अरई गण्ड विसूइया
आयंका विविहा फुसन्ति ते।
विवडइ विद्धंसइ ते सरीरयं
समयं गोयम! मा पमायए॥

२८—वोछिन्द सिणेहमप्पणो
कुमुयं सारइयं व[1] पाणियं।
से सव्वसिणेहवज्जिए
समयं गोयम! मा पमायए॥

१—च (अ, उ)।

२९—चिच्चाण धणं च भारियं
पव्वइओ हि सि अणगारियं ।
मा वन्तं पुणो वि आइए
समयं गोयम ! मा पमायए ॥

३०—अवउज्झिय मित्तबन्धवं
विउलं चेव धणोहसंचयं ।
मा तं बिइयं गवेसए
समयं गोयम ! मा पमायए ॥

३१—न हु जिणे अज्ज दिस्सई
बहुमए दिस्सई मग्गदेसिए ।
संपइ नेयाउए पहे
समयं गोयम ! मा पमायए ॥

३२—अवसोहिय कण्टगापहं
ओइण्णो सि पहं महालयं ।
गच्छसि मग्गं विसोहिया
समयं गोयम ! मा पमायए ॥

३३—अबले जह भारवाहए
मा मग्गे विसमे वगाहिया ।
पच्छा पच्छाणुतावए
समयं गोयम ! मा पमायए ॥

३४—तिण्णो हु सि अण्णवं महं
किं पुण चिट्ठसि तीरमागओ ।
अभितुर पारं गमित्तए
समयं गोयम ! मा पमायए ॥

३५—अकलेवरसेणिमुस्सिया
सिद्धिं गोयम लोयं गच्छसि ।
खेम च सिवं अणुत्तरं
समयं गोयम! मा पमायए ॥

३६—बुद्धे परिनिव्वुडे चरे
गामगए नगरे व संजए ।
सन्तिमग्गं च बूहए
समयं गोयम! मा पमायए ॥

३७—बुद्धस्स निसम्म भासियं
सुकहियमट्ठपओवसोहियं ।
रागं दोसं च छिन्दिया
सिद्धिगइं गए गोयमे ॥
—त्ति बेमि ॥

*

इक्कारसम अज्झयणं

बहुस्सुयपुज्जा

१—संजोगा विप्पमुक्कस्स अणगारस्स भिक्खुणो ।
आयारं पाउकरिस्सामि आणुपुव्विं सुणेह मे ॥

२—जे यावि होइ निव्विज्जे थद्धे लुद्धे अणिग्गहे ।
अभिक्खणं उल्लवई अविणीए अबहुस्सुए ॥

३—अह पंचहिं ठाणेहिं जेहिं सिक्खा न लब्भई ।
थम्भा कोहा पमाएणं रोगेणाऽलस्सएण य ॥

४—अह अट्ठहिं ठाणेहिं सिक्खासीले त्ति वुच्चई ।
अहस्सिरे सया दन्ते न य मम्ममुदाहरे ॥

५—नासीले न विसीले न सिया अइलोलुए ।
अकोहणे सच्चरए सिक्खासीले त्ति वुच्चई ॥

६—अह चउदसहिं ठाणेहिं वट्टमाणे उ संजए ।
अविणीए वुच्चई सो उ निव्वाणं च न गच्छइ ॥

७—अभिक्खणं कोही हवइ पबन्धं च पकुव्वई ।
मेत्तिज्जमाणो वमइ सुयं लद्धूण मज्जई ॥

८—अवि पावपरिक्खेवी अवि मित्तेसु कुप्पई ।
सुप्पियस्सावि मित्तस्स रहे भासइ पावगं ॥

९—पइण्णवाई दुहिले थद्धे लुद्धे अणिग्गहे ।
असंविभागी अचियत्ते अविणीए त्ति वुच्चई ॥

१०—अह पन्नरसहिं ठाणेहिं सुविणीए त्ति वुच्चई ।
नीयावत्ती अचवले अमाई अकुऊहले ॥

११—अप्प चाऽहिक्खिवई[1] पबन्धं च न कुव्वई।
मेत्तिज्जमाणो भयई सुय लद्धु न मज्जई॥

१२—न य पावपरिक्खेवी न य मित्तेसु कुप्पई।
अप्पियस्सावि मित्तस्स रहे कल्लाण भासई॥

१३—कलहडमरवज्जए बुद्धे अभिजाइए।
हिरिमं पडिसलीणे सुविणीए त्ति वुच्चई॥

१४—वसे गुरुकुले निच्च जोगव उवहाणवं।
पियंकरे पियंवाई से सिक्ख लद्धुमरिहई॥

१५—जहा सखम्मि पयं
'निहियं दुहओ'[2] वि विरायइ।
एव बहुस्सुए भिक्खू
धम्मो कित्ती तहा सुयं॥

१६—जहा से कम्बोयाणं आइण्णे कन्थए सिया।
आसे जवेण पवरे एवं हवइ बहुस्सुए॥

१७—जहाइण्णसमारूढे सूरे दढपरक्कमे।
उभओ नन्दिघोसेणं एव हवइ बहुस्सुए॥

१८—जहा करेणुपरिकिण्णे कुजरे सट्ठिहायणे।
वलवन्ते अप्पडिहए एवं हवइ बहुस्सुए॥

१९—जहा से तिक्खसिंगे जायखन्धे विरायई।
वसहे जूहाहिवई एवं हवइ बहुस्सुए॥

२०—जहा से तिक्खदाढे उदग्गे दुप्पहंसए।
सीहे मियाण पवरे एवं हवइ बहुस्सुए॥

१—वाऽहिक्खिवइ (अ) चऽहिक्खिवइ (उ)।
२—णिखित्त उभयतो (चू०)।

२१—जहा से वासुदेवे संखचक्कगयाधरे ।
अप्पडिहयबले जोहे एवं हवइ बहुस्सुए ॥

२२—जहा से चाउरन्ते चक्कवट्टी महिड्ढिए ।
चउदसरयणाहिवई एव हवइ बहुस्सुए ॥

२३—जहा से सहस्सक्खे वज्जपाणी पुरन्दरे ।
सक्के देवाहिवई एवं हवइ बहुस्सुए ॥

२४—जहा से तिमिरविद्धंसे उत्तिट्ठन्ते दिवायरे ।
जलन्ते इव तेएण एव हवइ बहुस्सुए ॥

२५—जहा से उडुवई चन्दे नक्खत्तपरिवारिए ।
पडिपुण्णे पुण्णमासीए एवं हवइ बहुस्सुए ॥

२६—जहा से सामाइयाण[1] कोट्ठागारे सुरक्खिए ।
नाणाधन्नपडिपुण्णे एवं हवइ बहुस्सुए ॥

२७—जहा सा दुमाण पवरा जम्बू नाम सुदंसणा ।
अणाढियस्स देवस्स एवं हवइ बहुस्सुए ॥

२८—जहा सा नईण पवरा सलिला सागरंगमा ।
सीया नीलवन्तपवहा[2] एव हवइ बहुस्सुए ॥

२९—जहा से नगाण पवरे सुमहं मन्दरे गिरी ।
नाणोसहिपज्जलिए एव हवइ बहुस्सुए ॥

३०—जहा से सयंभूरमणे उदही अक्खओदए ।
नाणारयणपडिपुण्णे[3] एव हवइ बहुस्सुए ॥

१—सामाइयगाण (वृ० पा०) ।
२—°पभवा (वृ०), °पवहा (वृ० पा०) ।
३—°सपुण्णे (अ) ।

३१—समुद्दगम्भीरसमा दुरासया
अचक्किया केणइ दुप्पहंसया[1] ।
सुयस्स पुण्णा विउलस्स ताइणो
खवित्तु कम्मं गइमुत्तमं गया ॥
३२—तम्हा सुयमहिट्ठेज्जा उत्तमट्ठगवेसए[2] ।
जेणऽप्पाणं परं चेव सिद्धिं संपाउणेज्जासि ॥

—त्ति बेमि ॥

*

१—दुप्पहंसिया (चू०) ।
२—उत्तमिट्ठ० (अ) ।

बारसमं अज्झयणं

हरिएसिज्जं

१—सोवागकुलसंभूओ
गुणुत्तरधरो[1] मुणी ।
हरिएसबलो नाम
आसि भिक्खू जिइन्दिओ ॥

२—इरिएसणभासाए
उच्चारसमिईसु य ।
जओ आयाणनिक्खेवे
संजओ सुसमाहिओ ॥

३—मणगुत्तो वयगुत्तो
कायगुत्तो जिइन्दिओ ।
भिक्खट्ठा बम्भइज्जम्मि
जन्नवाडं उवट्ठिओ ॥

४—तं पासिऊणमेज्जन्तं तवेण परिसोसियं ।
पन्तोवहिउवगरणं उवहसन्ति अणारिया ॥

५—जाईमयपडिथद्धा[2] हिंसगा अजिइन्दिया ।
अबम्भचारिणो बाला इमं वयणमब्बवी ॥

६—'कयरे आगच्छइ'[3] दित्तरूवे
काले विगराले फोक्कनासे ।
ओमचेलए पंसुपिसायभूए
संकरदूसं परिहरिय कण्ठे ॥

१—अणुत्तरधरो (अ, वृ०पा०, चू०) ।
२—०पडिबद्धा (उ, वृ०पा०) ।
३—कयरे तुम एसिध (चू०), कयरे आगच्छति (चू० पा०), को रे आगच्छइ (वृ० पा०) ।

७—कयरे[1] तुमं इय अदंसणिज्जे
काए व आसाइ हमागओ सि ।
ओमचेलगा पंसुपिसायभूया
गच्छ क्खलाहि किमिहं ठिओसि ? ॥

८—जक्खो तहिं तिन्दुयरुक्खवासी
अणुकम्पओ तस्स महामुणिस्स ।
पच्छायइत्ता नियगं सरीरं
इमाइ वयणाइमुदाहरित्था ॥

९—समणो अहं सजओ बम्भयारी
विरओ धणपयणपरिग्गहाओ ।
परप्पवित्तस्स उ भिक्खकाले
अन्नस्स अट्ठा इहमागओ मि ॥

१०—वियरिज्जइ खज्जइ भुज्जई य
अन्न पभूय भवयाणमेय ।
जाणाहि मे जायणजीविणु[2] त्ति
सेसावसेस लभऊ तवस्सी ॥

११—उवक्खडभोयण माहणाण
अत्तट्ठियं सिद्धमिहेगपक्खं ।
न ऊ वय एरिसमन्नपाण
दाहामु तुज्झ किमिह ठिओ सि ? ॥

१—को रे (सु० पा०, वृ० पा०) ।
२— ० जीवणो त्ति (वृ० पा०) ।

१२–थलेसु बीयाइ ववन्ति कासगा
तहेव निन्नेसु य आससाए ।
एयाए सद्धाए दलाह मज्झ
'आराहए पुण्णमिण खु खेत्त'[1] ॥

१३–खेत्ताणि अम्ह विइयाणि लोए
जहिं पकिण्णा विरुहन्ति पुण्णा ।
जे माहणा जाइविज्जोववेया
ताइ तु खेत्ताइ सुपेसलाइं ॥

१४–कोहो य माणो य वहो य जेसि
मोसं अदत्त च परिग्गह च ।
ते माहणा जाइविज्जाविहूणा
ताइ तु खेत्ताइ सुपावयाइ ॥

१५–तुब्भेत्थ भो भावधरा[2] गिराण
अट्ठ न जाणाह अहिज्ज वेए ।
उच्चावयाइ मुणिणो चरन्ति
ताइ तु खेत्ताइ सुपेसलाइं ॥

१६–अज्भावयाण पडिकूलभासी
पभाससे किं तु सगासि अम्ह ।
अवि एय विणस्सउ अन्नपाण[3]
न य ण दहामु तुम नियण्ठा ! ॥

१—आराहगा होहिप पुण्ण खेत्त (वृ० पा०) ।
२—भारवहा (वृ० पा०) ।
३—भत्तपाण (ऋ) ।

१७–समिईहि मज्झं सुसमाहियस्स
गुत्तीहि गुत्तस्स जिइन्दियस्स ।
जइ मे न दाहित्थ अहेसणिज्जं
किमज्ज जन्नाण लहित्थ लाहं ? ॥

१८–के एत्थ खत्ता उवजोइया वा
अज्झावया वा सह खण्डिएहिं ।
एयं[1] दण्डेण फलेण हन्ता
कण्ठम्मि घेत्तूण खलेज्ज जो णं ? ॥

१९–अज्झावयाण वयणं सुणेत्ता
उद्धाइया तत्थ बहू कुमारा ।
दण्डेहि वित्तेहि कसेहि चेव
समागया तं 'इसि तालयन्ति'[2] ॥

२०–रन्नो तहिं कोसलियस्स धूया
भद्द त्ति नामेण अणिन्दियंगी ।
तं पासिया संजय हम्ममाणं
कुद्धे कुमारे परिनिव्ववेइ ॥

२१–देवाभिओगेण निओइएणं
दिन्ना मु रन्ना मणसा न झाया ।
नरिन्ददेविन्दऽभिवन्दिएण
जेणम्हि वन्ता इसिणा स एसो ॥

१–एय खु (ऋ उ), एय तु (आ)।
२–इसि ताड्यति (उ, ऋ)।

२२–एसो हु सो उग्गतवो महप्पा
जिइन्दिओ संजओ बम्भयारी ।
'जो मे'[1] तया नेच्छइ दिज्जमाणिं
पिउणा सयं कोसलिएण रन्ना ॥

२३–महाजसो एस महाणुभागो[2]
घोरव्वओ घोरपरक्कमो य ।
मा एयं हीलह अहीलणिज्जं
मा सव्वे तेएण भे निद्दहेज्जा ॥

२४–एयाइं तीसे वयणाइ सोच्चा
पत्तीइ भद्दाइ सुहासियाइं ।
इसिस्स वेयावडियट्ठयाए
जक्खा कुमारे विणिवाडयन्ति[3] ॥

२५–ते घोररूवा ठिय अन्तलिक्खे
असुरा तहिं तं जणं तालयन्ति ।
ते भिन्नदेहे रुहिरं वमन्ते
पासित्तु भद्दा इणमाहु भुज्जो ॥

२६–गिरिं नहेहिं खणह
अयं दन्तेहिं खायह ।
जायतेयं पाएहि हणह
जे भिक्खुं अवमन्नह ॥

१—जो न (उ आ०) ।
२—महाणुभावो (वृ० पा०, चू०) ।
३—विणिवारयन्ति (वृ० पा०) ।

२७–आसीविसो उग्गतवो महेसी
घोरव्वओ घोरपरक्कमो य।
अगणिं व पक्खन्द पयंगसेणा
जे भिक्खुयं भत्तकाले वहेह[1] ॥

२८–सीसेण एयं सरणं उवेह
समागया सव्वजणेण तुब्भे।
जइ इच्छह जीवियं वा धणं वा
लोगं पि एसो कुविओ डहेज्जा ॥

२९–अवहेडिय[2] पिट्ठिसउत्तमंगे
पसारियाबाहु अकम्मचेट्ठे।
निब्भेरियच्छे रुहिरं वमन्ते
उड्ढंमुहे निग्गयजीहनेत्ते ॥

३०–ते पासिया खण्डिय कट्ठभूए
विमणो विसण्णो अह माहणो सो।
इसिं पसाएइ सभारियाओ
हीलं च निन्दं च खमाह भन्ते! ॥

३१–बालेहि मूढेहि अयाणएहिं
जं हीलिया तस्स खमाह भन्ते!।
महप्पसाया इसिणो हवन्ति
न हु मुणी कोवपरा हवन्ति ॥

१–हणेह (ऋ)।
२–आविडिय (वृ० पा०)।

३२–'पुव्विं च इण्हिं च अणागयं च'[1]
मणप्पदोसो न मे अत्थि कोइ ।
जक्खा हु वेयावडियं करेन्ति,
तम्हा हु एए निहया कुमारा ॥

३३–अत्थं च धम्मं च वियाणमाणा
तुब्भे न वि कुप्पह भूइपन्ना ।
तुब्भं तु पाए सरणं उवेमो
समागया सव्वजणेण अम्हे ॥

३४–अच्चेमु ते महाभाग![2] न ते किंचि न अच्चिमो ।
भुंजाहि सालिमं कूरं नाणावंजणसंजुयं ॥

३५–इमं च मे अत्थि पभूयमन्नं
तं भुंजसू अम्ह अणुग्गहट्ठा ।
बाढं ति पडिच्छइ भत्तपाणं
मासस्स ऊ पारणए महप्पा ॥

३६–तहियं गन्धोदयपुप्फवासं
दिव्वा तहिं वसुहारा य वुट्ठा ।
पहयाओ[3] दुन्दुहीओ सुरेहिं
आगासे अहो दाणं च घुट्ठं ॥

३७–सक्खं खु दीसइ तवोविसेसो
न दीसई जाइविसेस कोई ।
'सोवागपुत्तं हरिएससाहुं'[4]
जस्सेरिसा इड्ढि महाणुभागा ॥

१—पुव्विं च पच्छा व तहेव मज्झे (वृ० पा०), पुव्विं च पच्छा व अणागयं च (चू०)।
२—महाभागा' (अ, उ, ऋ)।
३—पहया (उ, ऋ)।
४—सोवागपुत्त हरिएससाहू (वृ० पा०)।

३८—किं माहणा! जोइसमारभन्ता
उदएण सोहिं बहिया विमग्गहा ? ।
जं मग्गहा बाहिरियं विसोहिं
न तं सुदिट्ठं कुसला वयन्ति ॥

३९—कुसं च जूवं तणकट्ठमग्गिं
सायं च पायं उदगं फुसन्ता ।
पाणाइ भूयाइ विहेडयन्ता
भुज्जो वि मन्दा! पगरेह पावं ॥

४०—कहं चरे ? भिक्खु! वयं जयामो ?
पावाइ कम्माइ पणोल्लयामो ? ।
अक्खाहि णे संजय! जक्खपूइया!
कहं सुजट्ठं कुसला वयन्ति ? ॥

४१—छज्जीवकाए असमारभन्ता
मोसं अदत्तं च असेवमाणा ।
परिग्गहं इत्थिओ माणमायं
एयं परिन्नाय चरन्ति[1] दन्ता ॥

४२—सुसंवुडो[2] पंचहिं संवरेहिं
इह जीवियं अणवकंखमाणो[3] ।
वोसट्ठकाओ[4] सुइचत्तदेहो[5]
महाजयं जयई जन्नसिट्ठं ॥

१—चरेज्ज (वृ०) चरन्ति (वृ० पा०) ।
२—सुसंवुडा (उ, सु) ।
३—अणवकंखमाणा (उ, सु) ।
४—वोसट्ठकाया (उ, सु) ।
५—सुइचत्तदेहा (उ सु) ।

४३—के ते जोई? के व ते जोइठाणे?
का ते सुया? कि व[1] ते कारिसंगं?।
एहा य ते कयरा सन्ति? भिक्खू!
कयरेण होमेण हुणासि जोइं?॥

४४—तवो जोई जीवो जोइठाण
जोगा सुया सरीर कारिसग।
कम्म एहा सजमजोगसन्ती
होम हुणामी इसिण पसत्थ॥

४५—के ते हरए? के य ते सन्तितित्थे?
कहिंसि ण्हाओ व रय जहासि?।
आइक्ख णे सजय! जक्खपूइया!
इच्छामो नाउ भवओ सगासे॥

४६—धम्मे हरए बम्भे सन्तितित्थे
अणाविले अत्तपसन्नलेसे।
जहिंसि ण्हाओ विमलो विसुद्धो
सुसीइभूओ[2] पजहामि दोस॥

४७—एय सिणाण कुसलेहि दिट्ठ
महासिणाण इसिण पसत्थ।
'जहिंसि ण्हाया'[3] विमला विसुद्धा
महारिसी उत्तम ठाण पत्त॥

—त्ति बेमि॥

१—च (उ ऋ)।
२—सुसीन्भूओ (वृ० पा०)।
३—जहिं सिणाया (अ, उ, ऋ)।

तेरहवां अध्ययन

चित्तसम्भूइज्जं

१—जाईपराजिओ खलु
कासि नियाणं तु हत्थिणपुरम्मि ।
चुलणीए बम्भदत्तो
उववन्नो पउमगुम्माओ ॥

२—कम्पिल्ले सम्भूओ
चित्तो पुण जाओ पुरिमतालम्मि ।
सेट्ठिकुलम्मि विसाले
धम्मं सोऊण पव्वइओ ॥

३—कम्पिल्लम्मि य नयरे
समागया दो वि चित्तसम्भूया ।
सुहदुक्खफलविवागं
कहेन्ति ते एक्कमेक्कस्स ॥

४—चक्कवट्टी महिड्ढीओ बम्भदत्तो महायसो ।
भायरं बहुमाणेणं इमं वयणमब्बवी ॥

५—आसिमो भायरा दो वि अन्नमन्नवसाणुगा ।
अन्नमन्नमणूरत्ता अन्नमन्नहिएसिणो ॥

६—दासा दसण्णे आसी मिया कालिंजरे नगे ।
हंसा मयंगतीरे[1] सोवागा[2] कासिभूमिए ॥

१—मयंगतीरए (अ, उ, ऋ)।
२—चंडाला (उ ऋ)।

७—देवा य[1] देवलोगम्मि आसि अम्हे महिड्ढिया ।
'इमा नो'[2] छट्ठिया जाई अन्नमन्नेण जा विणा ॥

८—कम्मा नियाणप्पगडा तुमे राय विचिन्तिया ।
तेसि फलविवागेण विप्पओगमुवागया ॥

९—सच्चसोयप्पगडा कम्मा मए पुरा कडा ।
ते अज्ज परिभुजामो किं नु चित्ते वि से तहा ? ॥

१०—सव्व सुचिण्ण सफल नराण
कडाण कम्माण न मोक्ख अत्थि ।
अत्थेहि कामेहि य उत्तमेहि
आया मम पुण्णफलोववेए ॥

११—जाणासि संभूय ! महाणुभाग
महिड्ढियं पुण्णफलोववेयं ।
चित्त पि जाणाहि तहेव राय !
इड्ढी जुई तस्स वि य प्पभूया ॥

१२—महत्थरूवा वयणप्पभूया
गाहाणुगीया नरसंघमज्झे ।
जं भिक्खुणो सीलगुणोववेया
'इहऽज्जयन्ते समणो'[3] म्हि जाओ ॥

१३—उच्चोयए महु कक्के य बम्भे
पवेइया आवसहा 'य रम्मा'[4] ।
इमं गिहं चित्तधणप्पभूयं[5]
पसाहि पंचालगुणोववेयं ॥

१—वि (उ)।
२—इमा मे (बृ०) इमाणं (बृ० पा०)।
३—[illegible] (चू० पा०), इहऽज्जयन्ते सुमणो (बृ० पा०)।
४—[illegible] सुरम्मा वा (बृ० पा०)।
५—[illegible] (बृ०) धनवित्तोववेय (चू०), वित्तधणप्पभूय (बृ० पा०)।

१४—नट्टेहि गीएहि य वाइएहिं
नारीजणाइ परिवारयन्तो[1]।
भुंजाहि भोगाइ इमाइ भिक्खू।
मम रोयई पव्वज्जा हु दुक्खं॥

१५—त पुव्वनेहेण कयाणुरागं
नराहिवं कामगुणेसु गिद्धं।
धम्मस्सिओ तस्स हियाणुपेही
चित्तो इम वयणमुदाहरित्था[2]॥

१६—सव्व विलविय गीय सव्व नट्ट विडम्बियं[3]।
सव्वे आभरणा भारा सव्वे कामा दुहावहा॥

१७—'वालाभिरामेसु दुहावहेसु
न त सुहं कामगुणेसु रायं।
विरत्तकामाण तवोधणाणं
ज भिक्खुण सीलगुणे रयाणं॥'[4]

१८—नरिंद। जाई अहमा नराणं
सोवागजाई दुहओ गयाणं।
जहिं वय सव्वजणस्स वेस्सा
वसीय सोवागनिवेसणेसु॥

१९—तीसे य जाईइ उ पावियाए
वुच्छामु सोवागनिवेसणेसु।
सव्वस्स लोगस्स दुगंछणिज्जा
इहं तु कम्माइं पुरेकडाइं॥

१—परियारियतो (वृ० पा०), परियारयतो (अ, उ, ऋ)।
२—सद्द० (वृ०), वयण० (वृ० पा०)।
३—विडवा (उ, चू०)।
४—यह श्लोक चूर्णि में व्याख्यात नहीं है।

२०—सो दाणि सिं राय ! महाणुभागो
महिड्ढिओ पुण्णफलोववेओ ।
चइत्तु भोगाइ असासयाइं
'आयाणहेउ अभिणिक्खमाहि'[१] ॥

२१—इह जीविए राय ! असासयम्मि
धणियं तु पुण्णाइं अकुव्वमाणो ।
से सोयई मच्चुमुहोवणीए
धम्मं अकाऊण परंसि लोए ॥

२२—जहेह सीहो व मियं गहाय
मच्चू नरं नेइ हु अन्तकाले ।
न तस्स माया 'व पिया व भाया'[२]
कालम्मि तम्मिसहरा[३] भवंति ॥

२३—न तस्स दुक्खं विभयन्ति नाइओ
न मित्तवग्गा न सुया न बन्धवा ।
एक्को सयं पच्चणुहोइ दुक्खं
कत्तारमेव अणुजाइ कम्मं ॥

२४—चेच्चा दुपयं च चउप्पयं च
खेत्तं गिहं धणधन्नं च सव्वं ।
कम्मप्पबीओ[४] अवसो पयाइ
परं भवं सुंदरं पावगं वा ॥

१—[illegible] [illegible]चित्तयाहि (चू०) आदाण हेउ अभिणिक्खमाहि (चू० पा०),
[illegible] [illegible]चिन्तयाहि (वृ० पा०) ।
२—[illegible] (उ) ।
३—[illegible] (उ)
४—[illegible] (उ), [illegible]बीओ (ऋ) · कम्मप्पविइओ (अ) ।

२५—त इक्कग तुच्छसरीरग से
चिईगय डहिय उ पावगेण।
भज्जा य पुत्ता[1] वि य नायओ य
दायारमन्न अणुसकमन्ति॥

२६—उवणिज्जई जीवियमप्पमाय
वण्ण जरा हरइ नरस्स राय।
पंचालराया! वयण सुणाहि
मा कासि कम्माइ महालयाइ॥

२७—अह पि जाणामि 'जहेह साहू!'[2]
ज मे तुम साहसि वक्कमेय।
भोगा इमे सगकरा हवन्ति
जे दुज्जया अज्जो अम्हारिसेहिं॥

२८—हत्थिणपुरम्मि चित्ता दट्ठूण नरवइ महिड्ढिय।
कामभोगेसु गिद्धेण नियाणमसुह कड॥

२९—तस्स मे अपडिकन्तस्स इम एयारिस फल।
जाणमाणो वि ज धम्म कामभोगेसु मुच्छिओ॥

३०—नागो जहा पकजलावसन्नो
दट्ठु थल नाभिसमेइ तीर।
एव वय कामगुणेसु गिद्धा
न भिक्खुणो मग्गमणुव्वयामो॥

१—सुते (बृ०)।
२—जो इह लोगे (बृ० पा० चू०)।

३१—अच्चेइ कालो तूरन्ति राइओ
न यावि भोगा पुरिसाण निच्चा।
उविच्च भोगा पुरिसं चयन्ति[1]
दुमं जहा खीणफलं व पक्खी॥
३२—'जइ ता सि'[2] भोगे चइउं असत्तो
अज्जाइं कम्माइं करेहि रायं!।
धम्मे ठिओ सव्वपयाणुकम्पी
तो होहिसि देवो इओ विउव्वी॥
३३—न तुज्झ भोगे चइऊण बुद्धी
गिद्धो सि आरम्भपरिग्गहेसु।
मोहं कओ एत्तिउ विप्पलावो
गच्छामि राय! आमन्तिओ सि॥
३४—पंचालराया वि य बम्भदत्तो
साहुस्स तस्स[3] वयणं अकाउं।
अणुत्तरे भुंजिय कामभोगे
अणुत्तरे सो नरए पविट्ठो॥
३५—चित्तो वि कामेहि विरत्तकामो
उदग्गचारित्ततवो[4] महेसी।
अणुत्तरं संजमं पालइत्ता
अणुत्तरं सिद्धिगइं गओ॥
—त्ति बेमि॥

*

१—जहंति (चू०)।
२—जइ तंसि (उ, बृ० पा०, ऋ), जईऽसि (चू०)।
३—तस्सा (अ, आ, इ, स)।
४—उदत्त° (चू०, बृ०, सु)।

चउदसम अज्झयणं

उसुयारिज्जं

१—देवा भवित्ताण पुरे भवम्मी
केई चुया एगविमाणवासी ।
पुरे पुराणे उसुयारनामे
खाए समिद्धे मुरलोगरम्मे ॥

२—सकम्मसेसेण पुराकएणं
कुलेसु दग्गेसु[1] य ते पसूया ।
निव्विण्णससारभया जहाय
जिणिन्दमग्गं सरण पवन्ना ॥

३—पुमत्तमागम्म कुमार दो वी
पुरोहिओ तस्स जसा य पत्ती ।
विसालकित्ती य तहोसुयारो
रायत्थ देवी कमलावई य ॥

४—जाईजरामच्चुभयाभिभूया[2]
बहिंविहाराभिनिविट्ठचित्ता ।
ससारचक्कस्स विमोक्खणट्ठा
दट्ठूण ते कामगुणे विरत्ता ॥

५—पियपुत्तगा दोन्नि वि माहणस्स
सकम्मसीलस्स पुरोहियस्स ।
सरित्तु पोराणिय तत्थ जाइ
तहा मुचिण्ण तवसंजम च ॥

१—दन्नेसु (चू० वृ०) ; उग्गेसु (उ) ।
२—°भयाभिभूए (वृ० पा०) ।

६—ते कामभोगेसु असज्जमाणा
माणुस्सएसु जे यावि दिव्वा ।
मोक्खाभिकखी अभिजायसड्ढा
ताय उवागम्म इम उदाहु ॥

७—असासयं दट्ठु इम विहार
वहुअन्तराय न य दीहमाउ ।
तम्हा गिहसि न रइ लहामो
आमन्तयामो चरिस्सामु मोण ॥

८—अह तायगो तत्थ मुणीण तेसि
तवस्स वाघायकर वयासी ।
इम वय वेयविओ वयन्ति
जहा न होई असुयाण लोगो ॥

९—अहिज्ज वेए परिविस्स विप्पे
पुत्ते पडिट्ठप्प[1] गिहसि जाया ! ।
भोच्चाण भोए सह इत्थियाहि
'आरण्णगा होह मुणी पसत्था'[2] ॥

१०—सोयग्गिणा आयगुणिन्धणेणं
मोहाणिला पज्जलणाहिएण ।
सतत्तभाव परितप्पमाण
लोलुप्पमाणं वहुहा वहुं च ॥

१—परिट्ठप्प (वृ० पा०) ।
२—पच्छा वणप्पवेस पसत्थ (चू०) ।

११—पुरोहिय त कमसोऽणुणन्त[1]
निमतयन्तं च सुए धणेणं ।
जहक्कम कामगुणेहि[2] चेव
कुमारगा ते पसमिक्ख वक्क ॥

१२—वेया अहीया न भवन्ति ताण
भुत्ता दिया निन्ति तम तमेण ।
जाया य पुत्ता न हवन्ति ताण
को णाम ते अणुमन्नेज्ज[3] एयं ॥

१३—खणमेत्तसोक्खा बहुकालदुक्खा
पगामदुक्खा अणिगामसोक्खा ।
ससारमोक्खस्स विपक्खभूया
खाणी अणत्थाण उ कामभोगा ॥

१६—धण पभूय सह इत्थियाहिं
सयणा तहा कामगुणा पगामा ।
तव कए तप्पइ जस्स लोगो
त सव्व साहीणमिहेव तुब्भ ॥
१७—धणेण किं धम्मधुराहिगारे
सयणेण वा कामगुणेहि चेव ।
समणा भविस्सामु गुणोहधारी
बहिंविहारा अभिगम्म भिक्खं ॥
१८—जहा य अग्गी अरणीउऽसन्तो
खीरे घय तेल्लमहा तिलेसु ।
एमेव जाया ! सरीरसि सत्ता
समुच्छई नासइ नावचिट्ठे ॥
१९—नो इन्दियग्गेज्झ अमुत्तभावा
अमुत्तभावा वि य होइ निच्चो ।
अज्झत्थहेउ निययऽस्स बन्धो
ससारहेउ च वयन्ति बन्ध ॥
२०—जहा वय धम्ममजाणमाणा
पाव पुरा कम्ममकासि मोहा ।
ओरुज्झमाणा परिरक्खियन्ता
त नेव भुज्जो वि समायरामो ॥
२१—अब्भाहयमि लोगमि सव्वओ परिवारिए ।
'अमोहाहि पडन्तीहिं'[1] गिहसि न रइ लभे ॥
२२—केण अब्भाहओ लोगो? केण वा परिवारिओ? ।
का वा अमोहा वुत्ता? जाया ! चिंतावरो हुमि ॥

१—अमोहायए पुतीहिं (उ) ।

२३–मच्चुणाऽब्भाहओ लोगो जराए परिवारिओ।
अमोहा रयणी वुत्ता एव ताय! वियाणह॥
२४–जा जा वच्चइ रयणी न सा पडिनियत्तई।
अहम्मं कुणमाणस्स अफला जन्ति राइओ॥
२५–जा जा वच्चइ रयणी न सा पडिनियत्तई।
धम्मं च कुणमाणस्स सफला जन्ति राइओ॥
२६–एगओ संवसित्ताणं दुहओ सम्मत्तसजुया।
पच्छा जाया! गमिस्सामो भिक्खमाणा कुले कुले॥
२७–जस्सत्थि मच्चुणा सक्खं जस्स वऽत्थि[1] पलायण।
जो जाणे न मरिस्सामि सो हु कखे सुए सिया॥
२८–अज्जेव धम्म पडिवज्जयामो
जहिं पवन्ना न पुणब्भवामो।
अणागयं नेव य अत्थि किंचि
सद्धाखम णे विणइत्तु राग॥
२९–पहीणपुत्तस्स हु नत्थि वासो
वासिट्ठि! भिक्खायरियाइ कालो।
साहाहि रुक्खो लहए समाहिं
छिन्नाहि साहाहि तमेव खाणु॥
३०–पखाविहूणो व्व[2] जहेह[3] पक्खी
भिच्चाविहूणो[4] व्व[5] रणे नरिन्दो।
विवन्नसारो वणिओ व्व पोए
पहीणपुत्तो मि तहा अह पि॥

१—चऽत्थि (अ)।
२-५—व (उ, अ)।
३—जहेव (ब, उ, अ)।
४—भिच्चविहीणु (अ), भिच्चविहीणु (उ)

३६—नहेव कुचा समइक्कमन्ता
तयाणि जालाणि दलित्तु हंसा ।
पलेन्ति पुत्ता य पई य मज्झ
'ते ह'[1] कह नाणुगमिस्समेक्का ? ॥

३७—पुरोहिय त समुय सदार
सोच्चाऽभिनिक्खम्म पहाय भोए ।
कुडुम्बसार विउलुत्तम त
राय अभिक्ख समुवाय देवी ॥

३८—वन्तासी पुरिसो राय ! न सो होइ पसंसिओ ।
माहणेण परिच्चत्त धण आदाउमिच्छसि ॥

३९—सव्व जग जइ तुहं सव्व वावि धणं भवे ।
सव्व पि ते अपज्जत्त नेव ताणाय त तव ॥

४०—मरिहिसि राय ! जया तया वा
मणोरमे कामगुणे पहाय[2] ।
एक्को हु धम्मो नरदेव ! ताण
न विज्जई अन्नमिहेह किंचि ॥

४१—नाह रमे पक्खिणि पजरे वा
सताणछिन्ना चरिस्सामि मोण ।
अकिंचणा उज्जुकडा निरामिसा
परिग्गहारम्भनियत्तदोसा ॥

४२—दवग्गिणा जहा रण्णे डज्झमाणेनु जन्तुनु ।
अन्ने सत्ता पमोयन्ति रागदोसवन गया ॥

१—नेह (उ, चू०) तेह (ऋ)।
२—पहाइ (चू०)।

५२–सासणे विगयमोहाणं पुव्वि भावणभाविया।
अचिरेणेव कालेण दुक्खस्सन्तमुवागया ॥
५३–राया सह देवीए माहणो य पुरोहिओ।
माहणी दारगा चेव सव्वे ते परिनिव्वुड' ॥
—त्ति बेमि ॥

※

पनरसमं अज्झयणं

सभिक्खुयं

१—मोणं चरिस्सामि[1] समिच्च धम्मं
सहिए उज्जुकडे नियाणछिन्ने ।
संथवं जहिज्ज अकामकामे
अन्नायएसी परिव्वए जे स भिक्खू ॥

२—राओवरयं[2] चरेज्ज लाढे
विरए वेयवियाऽऽयरक्खिए ।
पन्ने अभिभूय सव्वदंसी
जे कम्हिचि[3] न मुच्छिए स भिक्खू ॥

३—अक्कोसवहं विइत्तु धीरे
मुणी चरे लाढे निच्चमायगुत्ते ।
अव्वग्गमणे असंपहिट्ठे
जे कसिणं अहियासए स भिक्खू ॥

४—पन्तं सयणासणं भइत्ता
सीउण्हं विविहं च दंसमसगं ।
अव्वग्गमणे असंपहिट्ठे
जे कसिणं अहियासए स भिक्खू ॥

५—नो सक्कियमिच्छई न पूयं
नो वि य वन्दणगं कुओ पसंसं ।
से संजए सुव्वए तवस्सी
सहिए आयगवेसए स भिक्खू ॥

१—चरिस्सामो (वृ०) ।
२—रागोवरयं (वृ०) रात्तोवरयं (वृ० पा०) ।
३—कम्हि वि (अ, उ, ऋ) ।

६—जेण पुण जहाइ जीविय
मोहं वा कसिण नियच्छई ।
नरनारिं पजहे सया तवस्सी
न य कोऊहल उवेइ स भिक्खू ॥

७—छिन्न सरं भोम अन्तलिक्ख
सुमिणं लक्खणदण्डवत्थुविज्ज ।
अंगवियार सरस्स विजय
जो विज्जाहि न जीवइ स भिक्खू ॥

८—मन्त मूल विविह वेज्जचिन्त
वमणविरेयणधूमणेत्तसिणाण ।
आउरे सरण तिगिच्छिय च
त परिन्नाय परिव्वए स भिक्खू ॥

९—खत्तियगणउग्गरायपुत्ता
माहणभोइय विविहा 'य सिप्पिणो' ।
नो तेसि वयइ सिलोगपूय
त परिन्नाय परिव्वए स भिक्खू ॥

१०—गिहिणो जे पव्वइएण दिट्ठा
अप्पव्वइएण व संथुया हविज्जा ।

११—सयणासणपाणभोयणं
विविहं खाइमसाइम परेसिं ।
अदए पडिसेहिए नियण्ठे
जे तत्थ न पउस्सई स भिक्खू ॥

१२—ज किंचि आहारपाण[1] विविह
खाइमसाइम परेसिं लद्धु ।
जो त तिविहेण नाणुकम्पे
मणवयकायसुसवुडे स भिक्खू ॥

१३—आयामग चेव जवोदण च
'सीय च सोवीरजवोदगं च'[2] ।
नो हीलए पिण्ड नीरस तु
पन्तकुलाइ परिव्वए स भिक्खू ॥

१४—सद्दा विविहा भवन्ति लोए
दिव्वा 'माणुस्सगा तहा तिरिच्छा'[3] ।
भीमा भयभेरवा उराला
जो सोच्चा न वहिज्जई[4] स भिक्खू ॥

१५—वाद विविह समिच्च लोए
सहिए खेयाणुगए य कोवियप्पा ।
पन्ने अभिभूय सव्वदसी
उवसन्ते अविहेडए[5] स भिक्खू ॥

१—वाहार० (अ) ।
२—सीय सुवीर च जवोदग च (स, सु) ।
३—माणुस्सया तिरिच्छा य (चू०) ।
४—वहिए (उ) ।
५—उविहेडए (उ) ।

१६–असिप्पजीवी[1] अगिहे अमित्ते
जिइन्दिए सव्वओ विप्पमुक्के ।
अणुक्कसाई लहुअप्पभक्खी
चेच्चा गिहं एगचरे स भिक्खू ॥

—त्ति बेमि ॥

*

सोलसम अज्झयण

बम्भचेरसमाहिठाणं

सू० १–सुय मे, आउस ! तेण भगवया एवमक्खायं—

इह खलु थेरेहिं भगवन्तेहिं दस बम्भचेरसमाहिठाणा पन्नत्ता, जे भिक्खू सोच्चा, निसम्म, सजमबहुले, संवरबहुले, समाहिबहुले, गुत्ते, गुत्तिन्दिए, गुत्तबम्भयारी सया अप्पमत्ते विहरेज्जा।

सू० २–कयरे खलु ते थेरेहिं भगवन्तेहिं दस बम्भचेरसमाहिठाणा पन्नत्ता ? जे भिक्खू सोच्चा, निसम्म, सजमबहुले, संवरबहुले, समाहिवहुले, गुत्ते, गुत्तिन्दिए, गुत्तबम्भयारी सया अप्पमत्ते विहरेज्जा ?

सू० ३–इमे खलु ते थेरेहिं भगवन्तेहि दस बम्भचेरसमाहिठाणा पन्नत्ता, जे भिक्खू सोच्चा, निसम्म, संजमबहुले, सवरबहुले, समाहिवहुले, गुत्ते, गुत्तिन्दिए, गुत्तबम्भयारी सया अप्पमत्ते विहरेज्जा, त जहा—'विवित्ताइ सयणासणाइ सेविज्जा[1], से निग्गन्थे।'[2] नो इत्थीपसुपण्डगससत्ताइ सयणासणाइ सेवित्ता हवइ, से निग्गन्थे।

त कहमिति चे ?

आयरियाह–निग्गन्थस्स खलु इत्थीपसुपण्डगससत्ताइ सयणासणाइ सेवमाणस्स वम्भयारिस्स बम्भचेरे सका वा, कखा वा, वितिगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा, भेय वा लभेज्जा, उम्माय वा पाउणिज्जा, दीहकालिय वा रोगायक हवेज्जा, केवलिपन्नत्ताओ 'वा धम्माओ'[3] भसेज्जा। तम्हा नो इत्थिपसुपण्डगसंसत्ताइ सयणासणाइ सेवित्ता हवइ, से निग्गन्थे।

१—सेविज्जा हवइ (उ)।

२—"विवित्ताइ सयणासणाइ सेविज्जा से निग्गन्थे" इतना पाठ चूर्णि में नहीं है।

३—धम्माओ (उ, इ)।

सू० ४–नो इत्थीण कह कहित्ता हवइ, से निग्गन्थे ।

त कहमिति चे ?

आयरियाह–निग्गन्थस्स खलु इत्थीण कह कहेमाणस्स, बम्भयारिस्स बम्भचेरे सका वा, कखा वा, वितिगिच्छा वा समुप्पजिज्जा, भेय वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा, दीहकालिय वा रोगायक हवेज्जा, केवलिपन्नत्ताओ वा धम्माओ भंसेज्जा । 'तम्हा नो इत्थीण'[1] कह कहेज्जा ।

सू० ५–नो इत्थीहिं[2] सद्धि सन्निसेज्जागए विहरित्ता हवइ, से निग्गन्थे ।

त कहमिति चे ?

आयरियाह—निग्गन्थस्स खलु इत्थीहिं सद्धि सन्निसेज्जागयस्स, बम्भयारिस्स बम्भचेरे संका वा, कखा वा, वितिगिच्छा वा समुप्पजिज्जा, भेय वा लभेज्जा, उम्माय वा पाउणिज्जा, दीहकालिय वा रोगायक हवेज्जा, केवलिपन्नत्ताओ वा धम्माओ भसेज्जा । तम्हा खलु नो निग्गन्थे इत्थीहिं सद्धि सन्निसेज्जागए विहरेज्जा[3] ।

सू० ६–नो इत्थीण इन्दियाइ मणोहराइं मणोरमाइ आलोइत्ता, निज्झाइत्ता हवइ, से निग्गन्थे ।

त कहमिति चे ?

आयरियाह —निग्गन्थस्स खलु इत्थीण इन्दियाइ मणोहराइ, मणोरमाइ आलोएमाणस्स निज्झायमाणस्स बम्भयारिस्स बम्भचेरे सका वा कखा वा वितिगिच्छा वा समुप्पजिज्जा, भेयं वा लभेज्जा उम्मायं वा पाउणिज्जा दीहकालिय वा रोगायक हवेज्जा केवलि-

पन्नत्ताओ वा धम्माओ भसेज्जा। तम्हा खलु 'निग्गन्थे नो'[1] इत्थीण इन्दियाइ मणोहराइ, मणोरमाइ आलोएज्जा, निज्झाएज्जा।

सू० ७–नो इत्थीणं कुड्डन्तरंसि वा, दूसन्तरसि वा, भित्तन्तरसि वा, कुइयसद्दं वा, रुइयसद्दं वा, गीयसद्द वा, हसियसद्द वा, थणियसद्द वा, कन्दियसद्द वा, विलवियसद्द वा, सुणेत्ता हवइ से निग्गन्थे।

त कहमिति चे ?

आयरियाह—निग्गन्थस्स खलु इत्थीण 'कुड्डन्तंसि वा, दूसन्तरसि वा, भित्तन्तरसि[2] वा'[3], कुइयसद्द वा, रुइयसद्दं वा, गीयसद्द वा, हसियसद्द वा, थणियसद्दं वा, कन्दियसद्द वा, विलवियसद्द वा, सुणेमाणस्स बम्भयारिस्स बम्भचेरे संका वा, कखा वा, वितिगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा, भेय वा लभेज्जा, उम्माय वा पाउणिज्जा, दीहकालिय वा रोगायक हवेज्जा, केवलिपन्नत्ताओ वा धम्माओ भसेज्जा। तम्हा खलु निग्गन्थे नो इत्थीण कुड्डन्तरसि वा, दूसन्तरसि वा, भित्तन्तरसि वा, कुइयसद्दं वा, रुइयसद्द वा, गीयसद्द वा, हसियसद्दं वा, थणियसद्द वा, कन्दियसद्दं वा, विलवियसद्द वा सुणेमाणे विहरेज्जा।

सू० ८–नो निग्गन्थे पुव्वरय, पुव्वकीलिय अणुसरित्ता हवइ, से निग्गन्थे।

त कहमिति चे ?

आयरियाह—निग्गन्थस्स खलु पुव्वरय[4], पुव्वकीलिय अणुसरमाणस्स बम्भयारिस्स बम्भचेरे सका वा, कंखा वा,

१—नो निग्गन्थे (अ)।
२– भित्ति अंतरसि वा (अ, ऋ), भित्तित्तरसि (उ)।
३—कुड्डन्तरसि वा भित्तन्तरसि वा दूसन्तरसि वा (चू०, स), कड्डतरसि वा० (अ)।
४—इत्थीण पुव्वरय (उ, ऋ)।

वितिगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा, भेयं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा, दीहकालियं वा रोगायकं हवेज्जा, केवलिपन्नत्ताओ वा धम्माओ भसेज्जा। तम्हा खलु नो निग्गन्थे पुव्वरय पुव्वकीलियं अणुसरेज्जा।

सू० ९–नो पणीय आहार आहारित्ता हवइ, से निग्गन्थे।

त कहमिति चे?

आयरियाह–निग्गन्थस्स खलु पणीय पाणभोयणं आहारेमाणस्स बम्भयारिस्स बम्भचेरे संका वा, कखा वा, वितिगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा, भेय वा लभेज्जा, उम्माय वा पाउणिज्जा, दीहकालिय वा रोगायक हवेज्जा, केवलिपन्नत्ताओ वा धम्माओ भसेज्जा। तम्हा खलु नो निग्गन्थे पणीय आहार आहारेज्जा।

सू० १०–नो अइमायाए पाणभोयण आहारेत्ता हवइ, से निग्गन्थे।

त कहमिति चे?

आयरियाह–निग्गन्थस्स खलु अइमायाए पाणभोयण आहारेमाणस्स बम्भयारिस्स बम्भचेरे संका वा, कखा वा, वितिगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा, भेय वा लभेज्जा, उम्माय वा पाउणिज्जा, दीहकालिय वा रोगायक हवेज्जा, केवलिपन्नत्ताओ वा धम्माओ भसेज्जा। तम्हा खलु नो निग्गन्थे अइमायाए पाणभोयण भुजिज्जा।

सू० ११–नो विभूसाणुवाई हवइ, से निग्गन्थे।

त कहमिति चे?

आयरियाह—विभूसावत्तिए[1], विभूसियसरीरे इत्थिजणस्स अभिलसणिज्जे हवइ। तओ णं तस्स इत्थियजणेणं अभिलसिज्जमाणस्स

वम्भचेरे सका वा, कंखा वा, वितिगिच्छा वा समुप्पज्जिजज्जा, भेयं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा, दीहकालियं वा रोगायंकं हवेज्जा, केवलिपन्नत्ताओ वा धम्माओ भसेज्जा। तम्हा खलु नो निग्गन्थे विभूसाणुवाई सिया।

सू० १२–नो सद्दरूवरसगन्धफासाणुवाई हवइ, से निग्गन्थे।

त कहमिति चे ?

आयरियाह–निग्गन्थस्स खलु सद्दरूवरसगन्धफासाणुवाइस्स वम्भयारिस्स वम्भचेरे सका वा, कखा वा, वितिगिच्छा वा समुप्पज्जिजज्जा, भेय वा लभेज्जा, उम्माय वा पाउणिज्जा, दीहकालिय वा रोगायक हवेज्जा, केवलिपन्नत्ताओ वा धम्माओ भसेज्जा। तम्हा खलु नो निग्गन्थे सद्दरूवरसगन्धफासाणुवाई हविज्जा। दसमे वम्भचेरसमाहिठाणे हवइ।

भवन्ति इत्थ सिलोगा, तं जहा—

१—ज विवित्तमणाइण्ण रहिय थीजणेण य।
वम्भचेरस्स रक्खट्ठा आलय तु निसेवए॥
२—मणपल्हायजणणि कामरागविवड्ढणि।
वम्भचेररओ भिक्खू थीकह तु विवज्जए॥
३—समं च सथव थीहिं सकह च अभिक्खण।
वम्भचेररओ भिक्खू निच्चसो परिवज्जए॥
४—अगपच्चगसठाण चारुल्लवियपेहिय।
वम्भचेररओ थीण[1] चक्खुगिज्झ विवज्जए॥
५—कुइय रुइय गीय हसिय थणियकन्दिय।
वम्भचेररओ थीण सोयगिज्झं विवज्जए॥

१—भिक्खू (क)।

६—'हास किड्ड रइ दप्पं सहसाऽवत्तासियाणि[1] य'[2]।
वम्भचेररओ थीण नाणुचिन्ते कयाइ वि ॥

७—पणीय भत्तपाण तु[3] खिप्प मयविवड्ढण ।
वम्भचेररओ भिक्खू निच्चसो परिवज्जए ॥

८—धम्मलद्ध[4] मिय काले जत्तत्थ पणिहाणव ।
नाइमत्त तु भुजेज्जा वम्भचेररओ सया ॥

९—विभूस परिवज्जेज्जा सरीरपरिमण्डण ।
वम्भचेररओ भिक्खू सिगारत्थ न धारए ॥

१०—सद्दे रूवे य गन्धे य रसे फासे तहेव य ।
पचविहे कामगुणे निच्चसो परिवज्जए ॥

११—आलओ थीजणाइण्णो थीकहा य मणोरमा ।
सथवो चेव नारीण[5] तासि इन्दियदरिसण ॥

१२—कुइय रुइय गीय हसिय[6] भुत्तासियाणि य ।
पणीय भत्तपाण च अइमाय[7] पाणभोयणं ॥

१३—गत्तभूसणमिट्ठ च कामभोगा य दुज्जया ।
नरस्सऽत्तगवेसिस्स विस तालउड जहा ॥

१४—दुज्जए कामभोगे य निच्चसो परिवज्जए ।
सकट्ठाणाणि सव्वाणि वज्जेज्जा[8] पणिहाणवं ॥

१—सहसावत्ता० (क) सहभुत्ता० (अ)।
२—हासं दप्पं रइं किड्ड सहभुत्ता० (वृ० पा०)।
३—य ([illegible]

१५–धम्मारामे चरे भिक्खू धिइम धम्मसारही ।
धम्मारामरए दन्ते बम्भचेरसमाहिए ॥
१६–देवदाणवगन्धव्वा जक्खरक्खसकिन्नरा ।
बम्भयारिं नमसन्ति दुक्कर जे करन्ति त[1] ॥
१७–एस धम्मे धुवे निअए सासए जिणदेसिए ।
सिद्धा सिज्झन्ति चाणेण सिज्झिस्सन्ति तहापरे ॥

—त्ति बेमि ॥

*

१–ते (उ)।

सत्तरसम अज्झयण

पावसमणिज्जं

१–जे 'के इमे'[1] पव्वइए नियण्ठे
धम्म सुणित्ता विणओववन्ने ।
सुदुल्लह लहिउ वोहिलाभ
विहरेज्ज पच्छा य जहासुह तु ॥

२–सेज्जा दढा पाउरण मे अत्थि
उप्पज्जई भोत्तु[2] तहेव पाउ ।
जाणामि जं वट्टइ आउसु ! त्ति
किं नाम काहामि सुएण भन्ते ! ॥

३–जे के इमे पव्वइए निद्दासीले पगामसो ।
भोच्चा पेच्चा सुह सुवइ[3] पावसमणि त्ति वुच्चई ॥

४–आयरियउवज्झाएहिं सुय विणय च गाहिए ।
ते चेव खिसई बाले पावसमणि त्ति वुच्चई ॥

५–आयरियउवज्झायाणं सम्म नो पडितप्पइ ।
अप्पडिपूयए थद्धे पावसमणि त्ति वुच्चई ॥

६–सम्मद्दमाणे पाणाणि बीयाणि हरियाणि य ।
असजए सजयमन्नमाणे पावसमणि त्ति वुच्चई ॥

७–सथार फलग पीढ निसेज्ज पायकम्बल ।
अप्पमज्जियमारुहइ पावसमणि त्ति वुच्चई ॥

८—दवदवस्स चरई पमत्ते य अभिक्खण ।
उल्लघणे य चण्डे य पावसमणि त्ति वुच्चई ॥

९—पडिलेहेइ पमत्ते अवउज्झइ पायकम्बल ।
पडिलेहणाअणाउत्ते[1] पावसमणि त्ति वुच्चई ॥

१०—पडिलेहेइ पमत्ते से किंचि हु निसामिया ।
गुरुपरिभावए[2] निच्च पावसमणि त्ति वुच्चई ॥

११—वहुमाई पमुहरे[3] थद्धे लुद्धे अणिग्गहे ।
असविभागी अचियत्ते पावसमणि त्ति वुच्चई ॥

१२—विवाद च उदीरेइ अहम्मे अत्तपन्नहा[4] ।
वुग्गहे कलहे रत्ते पावसमणि त्ति वुच्चई ॥

१३—अथिरासणे कुक्कुईए जत्थ तत्थ निसीयई ।
आसणम्मि अणाउत्ते पावसमणि त्ति वुच्चई ॥

१४—ससरक्खपाए सुवई सेज्ज न पडिलेहइ ।
सथारए अणाउत्ते पावसमणि त्ति वुच्चई ॥

१५—दुद्धदहीविगईओ आहारेइ अभिक्खण ।
अरए य तवोकम्मे पावसमणि त्ति वुच्चई ॥

१६—अत्थन्तम्मि य सूरम्मि आहारेइ अभिक्खण ।
चोइओ पडिचोएइ पावसमणि त्ति वुच्चई ॥

१७—आयरियपरिच्चाई परपासण्डसेवए ।
गाणगणिए दुब्भूए पावसमणि त्ति वुच्चई ॥

१—पडिलेहा० (स) ।
२—गुरुपरि[illegible] (उ) गुरुपरिभासए (वृ०), गुरूपरिभावए (वृ० पा०) ।
३—[illegible] (इ चू च) ।
४—अत्त[illegible] (वृ०) अत्तपन्नहा (वृ० पा०) ।
५—[illegible] (वृ० पा०) ।

१८—सय गेह परिचज्ज परगेहसि वावरे[1]।
निमित्तेण य ववहरई पावसमणि त्ति वुच्चई॥

१९—सन्नाइपिण्ड जेमेइ नेच्छई सामुदाणिय।
गिहिनिसेज्ज च वाहेइ पावसमणि त्ति वुच्चई॥

२०—एयारिसे पचकुसीलसवुडे
रूवधरे मुणिपवराण हेट्ठिमे।
अयसि लोए विसमेव गरहिए
न से इह नेव परत्थ लोए॥

२१—जे वज्जए एए सया उ दोसे
से सुव्वए होइ मुणीण मज्झे।
अयसि लोए अमय व पूइए
आराहए 'दुहओ लोगमिण'[2]॥

—त्ति बेमि॥

अट्ठारसम अज्झयण

संजइज्जं

उक्खेव-पद

१—कम्पिल्ले नयरे राया उदिण्णबलवाहणे ।
नामेण सजए नाम मिगव्व उवणिग्गए ॥

२—हयाणीए गयाणीए रहाणीए तहेव य ।
पायत्ताणीए महया सव्वओ परिवारिए[1] ॥

३—मिए छुभित्ता हयगओ कम्पिल्लुज्जाणकेसरे ।
भीए सन्ते मिए तत्थ वहेइ रसमुच्छिए ॥

४—अह केसरम्मि उज्जाणे अणगारे तवोधणे ।
सज्झायज्झाणजुत्ते धम्मज्झाणं झियायई ॥

५—अप्फोवमण्डवम्मि झायई झवियासवे[2] ।
तस्सागए मिए पास वहेई से नराहिवे ॥

६—अह आसगओ राया खिप्पमागम्म सो तहि ।
हए मिए उ पासित्ता अणगार तत्थ पासई ॥

७—अह राया तत्थ सभन्तो अणगारो मणाऽऽहओ ।
मए उ मन्दपुण्णेण रसगिद्धेण घन्तुणा[3] ॥

८—आस विसज्जइत्ताण अणगारस्स सो निवो ।
विणएण वन्दए पाए भगव ! एत्थ मे खमे ॥

९—अह मोणेण सो भगव अणगारे झाणमस्सिए ।
रायाण न पडिमन्तेइ तओ राया भयद्दुओ ॥

१०–सजओ अहमम्मीति भगव! वाहराहि मे।
कुद्धे तेएण अणगारे डहेज्ज नरकोडिओ ॥

११–अभओ 'पत्थिवा! तुब्भ अभयदाया भवाहि य।
अणिच्चे जीवलोगम्मि कि हिसाए पसज्जसि ?॥

मवोहि-पद

१२–जया सव्व परिच्चज्ज गन्तव्वमवसस्स ते।
अणिच्चे जीवलोगम्मि कि रज्जम्मि पसज्जसि ?॥

१३–जीविय चेव रूवं च विज्जुसपायचचल ।
जत्थ त मुज्झसी राय पेच्चत्थ नाववुज्झसे ॥

१४–'दाराणि य सुया चेव मित्ता य तह बन्धवा।
जीवन्तमणुजीवन्ति मय नाणुव्वयन्ति य ॥[13]

१५–नीहरन्ति मय पुत्ता पियर परमदुक्खिया।
पियरो वि तहा पुत्ते बन्धू राय! तव चरे ॥

१६–तओ तेणऽज्जिए दव्वे दारे य परिरक्खिए।
कीलन्तऽन्ने नरा राय! हट्ठतुट्ठमलकिया ॥

१७–तेणावि ज कय कम्म सुह वा जइ वा दुह।
कम्मुणा तेण सजुत्तो गच्छई उ पर भव ॥

गयनिसि-पद

१८–सोऊण तस्स सो धम्मं अणगारस्स अन्तिए।
महया संवेगनिव्वेय समावन्नो नराहिवो ॥

१९–सजओ चइउ रज्ज निक्खन्तो जिणसासणे ।
गद्दभालिस्स भगवओ अणगारस्स अन्तिए ॥
२०–चिच्चा रट्ठ पव्वइए खत्तिए परिभासइ ।
जहा ते दीसई रूव पसन्न ते तहा मणो ॥
२१–किनामे ? किंगोत्ते ? कस्सट्ठाए व माहणे ? ।
कह पडियरसी बुद्धे ? कह विणीए त्ति वुच्चसि[1] ? ॥
२२–सजओ नाम नामेण तहा गोत्तेण गोयमे ।
गद्दभाली ममायरिया विज्जाचरणपारगा ॥
२३–किरिय अकिरिय विणय
अन्नाण च महामुणी ! ।
एएहि चउहि ठाणेहिं
मेयन्ने[2] कि पभासई ? ॥
२४–इइ पाउकरे बुद्धे नायए परिनिव्वुडे ।
विज्जाचरणसपन्ने सच्चे सच्चपरक्कमे ॥
२५–पडन्ति नरए घोरे जे नरा पावकारिणो ।
दिव्व च गइ गच्छन्ति चरित्ता धम्ममारिय ॥
२६–मायावुइयमेय तु मुसाभासा निरत्थिया ।
सजममाणो वि अह वसामि इरियामि य ॥[3]
२७–सव्वे ते विइया मज्झ मिच्छादिट्ठी अणारिया ।
विज्जमाणे परे लोए सम्म जाणामि अप्पग ॥
२८–अहमासी महापाणे जुइम वरिससओवमे ।
जा सा पाली महापाली दिव्वा वरिससओवमा ॥

२९—जे चुए[1] बम्भलोगाओ माणुस्स भवमागए ।
अप्पणो य परेसिं च आउ जाणे जहा तहा ॥

३०—नाणारुइ च छन्द च परिवज्जेज्ज सजए ।
अणट्ठा जे य सव्वत्था इइ विज्जामणुसचरे ॥

३१—पडिक्कमामि पसिणाण परमन्तेहिं वा पुणो ।
अहो उट्ठिए अहोराय इइ विज्जा तव चरे ॥

३२—ज च मे पुच्छसी काले सम्म सुद्धेण[2] चेयसा ।
ताइ पाउकरे बुद्धे त नाण जिणसासणे ॥

३३—किरिय च रोयए धीरे अकिरिय परिवज्जए ।
दिट्ठीए दिट्ठिसंपन्ने धम्म चर सुदुच्चर ॥

३४—एय पुण्णपय सोच्चा अत्थधम्मोवसोहिय ।
भरहो वि भारह वास चेच्चा कामाइ पव्वए ॥

३५—सगरो वि सागरन्त भरहवास नराहिवो ।
इस्सरिय केवल हिच्चा दयाए परिनिव्वुडे[3] ॥

३६—चइत्ता भारह वासं चक्कवट्टी महिड्ढिओ ।
पव्वज्जमब्भुवगओ मघव नाम महाजसो ॥

३७—सणकुमारो मणुस्सिन्दो चक्कवट्टी महिड्ढिओ ।
पुत्त रज्जे ठवित्ताण[1] सो वि राया तव चरे ॥

३८—चइत्ता भारह वास चक्कवट्टी महिड्ढिओ ।
सन्ती सन्तिकरे लोए पत्तो गइमणुत्तर ॥

३९—इक्खागरायवसभो कुन्थू नाम नराहिवो।
विक्खायकित्ती धिइमं 'मोक्खं गओ अणुत्तरं'॥

४०—सागरन्तं जहित्ताणं 'भरहं वासं नरीसरो'।
अरो य अरयं पत्तो पत्तो गइमणुत्तरं॥

४१—चइत्ता भारहं वासं चक्कवट्टी नराहिओ।
चइत्ता उत्तमे भोए महापउमे तवं चरे॥

४२—एगच्छत्तं पसाहित्ता महिं माणनिसूरणो।
हरिसेणो मणुस्सिन्दो पत्तो गइमणुत्तरं॥

४३—अन्निओ रायसहस्सेहिं सुपरिच्चाई दमं चरे।
जयनामो जिणक्खायं पत्तो गइमणुत्तरं॥

४४—दसण्णरज्जं मुइयं चइत्ताण मुणी चरे।
दसण्णभद्दो निक्खन्तो सक्खं सक्केण चोइओ॥
[नमी नमेइ अप्पाणं सक्खं सक्केण चोइओ।
चइऊण गेहं वइदेही सामण्णे पज्जुवट्ठिओ॥]

४५—करकण्डू कलिंगेसु पचालेसु य दुम्मुहो।
नमी राया विदेहेसु गन्धारेसु य नग्गई॥

४६—एए नरिन्दवसभा निक्खन्ता जिणसासणे ।
पुत्ते रज्जे ठवित्ताणं सामण्णे पज्जुवट्ठिया ॥
४७—सोवीररायवसभो चेच्चा रज्जं मुणी चरे ।
उद्दायणो पव्वइओ पत्तो गइमणुत्तरं ॥
४८—तहेव कासीराया सेओसच्चपरक्कमे ।
कामभोगे परिच्चज्ज पहणे कम्ममहावणं ॥
४९—तहेव विजओ राया 'अणट्ठाकित्ति पव्वए' ।
रज्जं तु गुणसमिद्धं पयहित्तु महाजसो ॥
५०—तहेवुग्गं तवं किच्चा अव्वक्खित्तेण चेयसा ।
महाबलो रायरिसी अद्दाय सिरसा सिरं ॥

निगमन पद

५१—कह धीरे अहेऊहिं उम्मत्तो व्व महिं चरे ।
एए विसेसमादाय सूरा दढपरक्कमा ॥
५२—अच्चन्तनियाणखमा सच्चा मे भासिया वई ।
अतरिंसु तरन्तेगे तरिस्सन्ति अणागया ॥

१—[illegible]

५३—कहं धीरे अहेऊहिं अत्ताण[1] परियावसे ? ।
सव्वसगविनिम्मुक्के सिद्धे हवइ नीरए ॥

—त्ति बेमि ॥

*

१—अद्दाण (वृ०), अत्ताण (वृ० पा०) ।

एगूणवीसइमं अज्झयणं

मियापुत्तिज्जं

उक्खेव-पद

१—सुग्गीवे नयरे रम्मे काणणुज्जाणसोहिए ।
राया वलभद्दो त्ति मिया तस्सग्गमाहिसी ॥

२—तेसिं पुत्ते वलसिरी मियापुत्ते त्ति विस्सुए ।
अम्मापिऊण दइए जुवराया दमीसरे ॥

३—नन्दणे सो उ पासाए कीलए[1] सह इत्थिहिं ।
देवो दोगुन्दगो चेव निच्चं मुइयमाणसो ॥

४—मणिरयणकुट्टिमतले पासायालोयणट्ठिओ ।
आलोएइ नगरस्स चउक्कतियचच्चरे ॥

५—अह तत्थ अइच्छन्तं पासई समणसंजयं ।
तवनियमसंजमधरं सीलड्ढं गुणआगरं ॥

६—तं देहई मियापुत्ते दिट्ठीए अणिमिसाए उ ।
कहिं मन्नेरिसं रूवं दिट्ठपुव्वं मए पुरा ॥

७—साहुस्स दरिसणे तस्स अज्झवसाणम्मि सोहणे ।
मोहंगयस्स सन्तस्स जाईसरणं समुप्पन्नं ॥

[देवलोग चुओ सन्तो माणुसं भवमागओ ।
सन्निनाणे समुप्पन्ने जाइं सरइ पुराणयं ॥][2]

८—जाईसरणे समुप्पन्ने मियापुत्ते महिड्ढिए ।
सरई पोराणियं जाइं सामण्णं च पुराकयं ॥

९—विसएहि अरज्जन्तो रज्जन्तो सजमम्मि य ।
अम्मापियर उवागम्म इमं वयणमब्बवी ॥

१०—सुयाणि मे पच्च महव्वयाणि
नरएसु दुक्खं च तिरिक्खजोणिसु ।
निव्विण्णकामो मि[1] महण्णवाओ
अणुजाणह पव्वइस्सामि अम्मो ! ॥

११—अम्मताय ! मए भोगा भुत्ता विसफलोवमा ।
पच्छा कडुयविवागा अणुबन्धदुहावहा ॥

१२—इम सरीर अणिच्च असुइ असुइसभव ।
असासयावासमिणं दुक्खकेसाण भायण ॥

१३—असासए[2] सरीरम्मि रइ नोवलभामह ।
पच्छा पुरा व चइयव्वे फेणबुब्बुयसन्निभे ॥

१४—माणुसत्ते असारम्मि वाहीरोगाण आलए ।
जरामरणघत्थम्मि खणं पि न रमामऽह ॥

दुक्ख-पद

१५—जम्म दुक्ख जरा दुक्ख रोगा य मरणाणि य ।
अहो दुक्खो हु संसारो जत्थ कीसन्ति जन्तवो[3] ॥

१६—खेत्त वत्थु हिरण्णं च पुत्तदार च बन्धवा[4] ।
चइत्ताण इमं देह गन्तव्वमवसस्स मे ॥

१७—जहा किम्पागफलाण परिणामो न सुन्दरो ।
एव भुत्ताण भोगाणं परिणामो न सुन्दरो ॥

१—हि (स) ।
२—आसासए (अ, उ) ।
३—जन्तुणो (आ, ऋ) पाणिणो (उ, स) ।
४—बधव (उ) ।

२८–विरई अबम्भचेरस्स कामभोगरसन्नुणा ।
उग्ग महव्वय बम्भ धारेयव्व सुदुक्कर ॥
२९ धणधन्नपेसवग्गेसु परिग्गहविवज्जणं[1] ।
सव्वारम्भपरिच्चाओ निम्ममत्त सुदुक्कर ॥
३०–चउव्विहे वि आहारे राईभोयणवज्जणा ।
सन्निहीसंचओ चेव वज्जेयव्वो सुदुक्करो[2] ॥

दुक्कर-पद

३१–छुहा तण्हा य सीउण्ह दसमसगवेयणा ।
अक्कोसा दुक्खसेज्जा य तणफासा जल्लमेव य ॥
३२–तालणा तज्जणा चेव वहबन्धपरीसहा ।
दुक्ख भिक्खायरिया जायणा य अलाभया ॥
३३–कावोया जा इमा वित्ती केसलोओ य दारुणो ।
दुक्ख बम्भवय घोर धारेउ अ महप्पणो ॥
३४–सुहोइओ तुमं पुत्ता ! सुकुमालो सुमज्जिओ ।
न हु सी पभू तुम पुत्ता ! सामण्णमणुपालिउ ॥
३५–जावज्जीवमविस्सामो गुणाण तु महाभरो ।
गुरुओ लोहभारो व्व जो पुत्ता ! होइ दुव्वहो ॥
३६–आगासे गगसोउ व्व पडिसोओ व्व दुत्तरो ।
वाहाहिं सागरो चेव तरियव्वो गुणोयही ॥
३७–वालुयाकवले[3] चेव निरस्साए उ[4] संजमे ।
असिधारागमण चेव दुक्कर चरिउं तवो ॥

१–° विवज्जणा (आ, इ, ऋ) ।
२–सुदुक्कर (उ) ।
३–° कवला (अ) ।
४–व (उ) ।

३८—अहीवेगन्तदिट्ठीए चरित्ते पुत्त दुच्चरे ।
जवा लोहमया चेव चावेयव्वा सुदुक्करं ॥

३९—जहा अग्गिसिहा दित्ता पाउं होइ सुदुक्करं[1] ।
तह दुक्करं करेउं जे तारुण्णे समणत्तणं ॥

४०—जहा दुक्खं भरेउं जे होइ वायस्स कोत्थलो ।
तहा दुक्खं करेउं जे कीवेणं समणत्तणं ॥

४१—जहा तुलाए तोलेउं दुक्करं मन्दरो गिरी ।
तहा निहुयं नीसंकं दुक्करं समणत्तणं ॥

४२—जहा भुयाहिं तरिउं दुक्करं रयणागरो ।
तहा अणुवसन्तेणं दुक्करं[2] दमसागरो ॥

४३—भुंज माणुस्सए भोगे पंचलक्खणए तुमं ।
भुत्तभोगी तओ जाया । पच्छा धम्मं चरिस्ससि ॥

४४—'तं बिंत ऽम्मापियरो'[3] एवमेयं जहा फुडं ।
इह लोए निप्पिवासस्स नत्थि किंचि वि दुक्करं ॥

भवदुक्ख-पद

४५—सारीरमाणसा चेव वेयणाओ अणन्तसो ।
मए सोढाओ भीमाओ असइं दुक्खभयाणि य ॥

४६—जरामरणकन्तारे चाउरन्ते भयागरे ।
मए सोढाणि भीमाणि जम्माणि मरणाणि य ॥

नरयदुक्ख-पदं

४७—जहा इहं अगणी उण्हो 'एत्तोऽणन्तगुणे तहिं'[4] ।
नरएसु वेयणा उण्हा अस्साया वेइया मए ॥

४८—जहा 'इमं इहं'[1] सीयं 'एत्तोऽणन्तगुणं तहिं'[2] ।
नरएसु वेयणा सीया अस्साया वेइया मए ॥

४९—कन्दन्तो कन्दुकुम्भीसु उड्ढपाओ अहोसिरो ।
हुयासणे जलन्तम्मि पक्कपुव्वो अणन्तसो ॥

५०—महादवग्गिसंकासे मरुम्मि वइरवालुए ।
कलम्बवालुयाए य दड्ढपुव्वो अणन्तसो ॥

५१—रसन्तो कन्दुकुम्भीसु उड्ढं बद्धो अबन्धवो ।
करवत्तकरकयाईहिं छिन्नपुव्वो अणन्तसो ॥

५२—अइतिक्खकण्टगाइण्णे तुंगे सिम्बलिपायवे ।
खेवियं[3] पासबद्धेण कड्ढोकड्ढाहिं दुक्करं ॥

५३—महाजन्तेसु उच्छू वा आरसन्तो सुभेरवं ।
पीलिओ मि सकम्मेहिं पावकम्मो अणन्तसो ॥

५४—कूवन्तो कोलसुणएहिं
सामेहिं सबलेहि य ।
पाडिओ फालिओ छिन्नो
विप्फुरन्तो[4] अणेगसो ॥

५५—असीहि[5] अयसिवण्णाहिं
भल्लीहि पट्टिसेहि य ।
छिन्नो भिन्नो विभिन्नो य
ओइण्णो[6] पावकम्मुणा ॥

१—इहं इमं (उ, ऋ) ।
२—एत्तो ऽणन्तगुणा तहिं (वृ० पा०) ।
३—खेदियं (वृ०) ।
४—विप्फरंतो (अ, ऋ) ।
५—अरसाहिं (वृ०) असीहि (वृ० पा०) ।
६—उववण्णो (ऋ) ।

५६—अवसो लोहरहे जुत्तो जलन्ते[1] समिलाजुए।
चोइओ तोत्तजुत्तेहिं रोज्झो वा जह पाडिओ॥

५७—हुयासणे जलन्तम्मि चियासु महिसो विव।
दड्ढो पक्को य अवसो पावकम्मेहि पाविओ॥

५८—बला सडासतुण्डेहिं लोहतुण्डेहि पक्खिहिं।
विलुत्तो विलवन्तो हं ढंकगिद्धेहिऽणन्तसो॥

५९—तण्हाकिलन्तो धावन्तो पत्तो वेयरणिं नदिं।
जलं 'पाहिं ति'[2] चिन्तन्तो खुरधाराहिं विवाइओ[3]॥

६०—उण्हाभितत्तो संपत्तो असिपत्तं महावणं।
असिपत्तेहिं पडन्तेहिं छिन्नपुव्वो अणेगसो[4]॥

६१—मुग्गरेहिं मुसढीहिं सूलेहिं मुसलेहि य।
गयासं भग्गगत्तेहिं पत्तं दुक्खं अणन्तसो॥

६२—खुरेहिं तिक्खधारेहिं[5] छुरियाहिं[6] कप्पणीहि य।
कप्पिओ फालिओ छिन्नो उक्कत्तो[7] य अणेगसो[8]॥

६३—पासेहिं कूडजालेहिं मिओ वा अवसो अहं।
वाहिओ[9] बद्धरुद्धो अ 'बहुसो'[10] चेव विवाइओ॥

१—जलन (वृ० पा०)।
२—पाहं ति (वृ०)।
३—विपाडिओ (वृ०) विवाइओ (वृ० पा०)।
४, ८—अणंतसो (उ ऋ)।
५—तिक्ख दाढेहिं (उ)।
६—छुरीहिं (ऋ)।
७—उक्कित्तो (वृ० पा० सु)।
९—गहिओ (वृ० पा०)।
१०—छिन्नो (उ ऋ)।

६४—गलेहिं मगरजालेहि
मच्छो वा अवसो अहं।
उल्लिओ[1] फालिओ गहिओ
मारिओ य अणन्तसो॥

६५—वीदसएहि[2] जालेहि
लेप्पाहि सउणो विव।
गहिओ लग्गो[3] बद्धो य
मारिओ य अणन्तसो॥

६६—कुहाडफरसुमाईहि
वड्ढईहि दुमो विव।
कुट्टिओ फालिओ छिन्नो
तच्छिओ य अणन्तसो॥

६७—चवेडमुट्ठिमाईहि
कुमारेहि अयं पिव।
ताडिओ कुट्टिओ भिन्नो
चुण्णिओ य अणन्तसो॥

६८—तत्ताइ तम्बलोहाइ तउयाइं सीसयाणि य।
पाइओ कलकलन्ताइ आरसन्तो सुभेरवं॥

६९—तुहं पियाइ मसाइ खण्डाइ सोल्लगाणि य।
खाविओ मि[4] समसाइ अग्गिवण्णाइं णेगसो॥

७०—तुहं पिया सुरा सीहू मेरओ य महूणि य।
पाइओ[5] मि जलन्तीओ वसाओ रुहिराणि य॥

१—अल्लिओ (उ, ऋ)।
२—वीत्तदएहिं (ऋ), वीस देहिए (उ)।
३—भग्गो (अ)।
४—वि (ऋ)।
५—पज्जितो (वृ०)।

७१—निच्चं[1] भीएण तत्थेण दुहिएण वहिएण य ।
परमा दुहसंबद्धा वेयणा वेइया मए ॥
७२—तिव्वचण्डप्पगाढाओ घोराओ अइदुस्सहा ।
महब्भयाओ[2] भीमाओ नरएसु वेइया मए ॥
७३—जारिसा माणुसे लोए ताया! दीसन्ति वेयणा ।
एत्तो[3] अणन्तगुणिया नरएसु दुक्खवेयणा ॥
७४—सव्वभवेसु अस्साया वेयणा वेइया मए ।
निमेसन्तरमित्तं पि जं साया नत्थि वेयणा ॥

मिगचारिया-पद

७५—तं बितऽम्मापियरो छन्देणं पुत्त ! पव्वया ।
नवरं पुण सामण्णे दुक्खं निप्पडिकम्मया ॥
७६—सो बित ऽम्मापियरो! एवमेयं जहाफुड ।
पडिकम्म को कुणई अरण्णे मियपक्खिणं? ॥
७७—एगभूओ अरण्णे वा जहा उ चरई मिगे ।
एवं धम्मं चरिस्सामि संजमेण तवेण य ॥
७८—जया मिगस्स आयंको महारण्णम्मि जायई ।
अच्छन्तं रुक्खमूलम्मि को णं ताहे तिगिच्छई[4]? ॥
७९—को वा से ओसहं देई? को वा से पुच्छई सुहं? ।
को से भत्तं च 'पाणं च'[5] आहरित्तु पणामए? ॥
८०—जया य से सुही होइ तया गच्छइ गोयरं ।
भत्तपाणस्स अट्ठाए वल्लराणि सराणि य ॥

१—निच्च (उ, ऋ) ।
२—महाल्या (वृ० पा०) ।
३—तत्तो (अ) ; इत्तो (उ, ऋ) ।
४—विगिच्छई (उ) . चिगिच्छई (ऋ) ।
५—पाणं वा (ऋ) ।

८१—खाइत्ता पाणियं पाउं वल्लरेहिं सरेहि वा ।
मिगचारियं चरित्ताणं गच्छई मिगचारियं ॥
८२—एवं समुट्ठिओ भिक्खू एवमेव अणेगओ[1] ।
मिगचारियं चरित्ताणं उड्ढं पक्कमई दिसं ॥
८३—जहा मिगे एग अणेगचारी
अणेगवासे धुवगोयरे य ।
एवं मुणी गोयरियं पविट्ठे
नो हीलए नो वि य खिंसएज्जा ॥
८४—मिगचारियं चरिस्सामि एवं पुत्ता! जहासुहं ।
अम्मापिऊहिंऽणुन्नाओ जहाइ उवहिं तओ ॥
८५—मियचारियं चरिस्सामि सव्वदुक्खविमोक्खणिं ।
तुब्भेहिं अम्म!ऽणुन्नाओ गच्छ पुत्त! जहासुहं ॥

पव्वज्जा-पद

८६—एवं सो अम्मापियरो अणुमाणित्ताण बहुविहं ।
ममत्तं छिन्दई ताहे महानागो व्व कंचुयं ॥
८७—इड्ढि[2] वित्तं च मित्ते य पुत्तदारं च नायओ ।
रेणुयं व पडे लग्गं निद्धुणित्ताण निग्गओ ॥

समता-पद

८८—पञ्चमहव्वयजुत्तो
पंचसमिओ तिगुत्तिगुत्तो य ।
सब्भिन्तरबाहिरओ
तवोकम्मंसि उज्जुओ ॥

१—अणेगत्तो (अ, ऋ), अणिएयणे (वृ० पा०)।
२—इड्ढी (उ, ऋ)।

८९–निम्ममो निरहंकारो निस्संगो चत्तगारवो।
समो य सव्वभूएसु तसेसु थावरेसु य॥

९०–लाभालाभे सुहे दुक्खे जीविए मरणे तहा।
समो निन्दापसंसासु तहा माणावमाणओ॥

९१–गारवेसु कसाएसु दण्डसल्लभएसु य।
नियत्तो हाससोगाओ अनियाणो अबन्धणो॥

९२–अणिस्सिओ इहं लोए परलोए अणिस्सिओ।
वासीचन्दणकप्पो य असणे अणसणे तहा॥

९३–अप्पसत्थेहिं दारेहिं सव्वओ पिहियासवे।
अज्झप्पज्झाणजोगेहिं पसत्थदमसासणे।

९४–एव नाणेण चरणेण दंसणेण तवेण य।
भावणाहि 'य सुद्धाहिं'[1] सम्मं भावेत्तु अप्पयं॥

९५–वहुयाणि उ[2] वासाणि सामण्णमणुपालिया।
मासिएण उ[3] भत्तेण सिद्धिं पत्तो अणुत्तरं॥

निक्खेव-पदं

९६–एव करन्ति संबुद्धा[4] पण्डिया पवियक्खणा।
विणियट्टन्ति भोगेसु मियापुत्ते जहारिसी[5]॥

९७–महापभावस्स महाजसस्स
मियाइ पुत्तस्स निसम्म भासियं।
तवप्पहाणं चरियं[6] च उत्तमं
गइप्पहाणं च तिलोगविस्सुयं॥

१–विसुद्धाहि (बृ०, सु)।
२–ओ (उ)। उ (ऋ)।
३–य (उ)।
४–संपन्ना (उ, बृ०)।
५–जहामिसी (बृ०, सु)।
६–चरित्त (उ)।

१८—वियाणिया दुक्खविवद्धणं धणं
ममत्तबंधं च महब्भयावहं ।
सुहावह धम्मधुरं अणुत्तरं
धारेह निव्वाणगुणावहं[1] महं ॥
—त्ति बेमि ॥

*

१—नेव्वाणु° (अ)।

विसइमं अज्झयणं

महानियण्ठिज्जं

उक्खेव-पद

१—सिद्धाणं नमो किच्चा संजयाणं च भावओ ।
अत्थधम्मगइं[1] तच्चं अणुसट्ठिं सुणेह मे ॥
२—पभूयरयणो राया सेणिओ मगहाहिवो ।
विहारजत्तं निज्जाओ मण्डिकुच्छिसि चेइए ॥
३—नाणादुमलयाइण्णं नाणापक्खिनिसेवियं ।
नाणाकुसुमसंछन्नं उज्जाणं नन्दणोवमं ॥
४—तत्थ सो पासई साहुं संजयं सुसमाहियं ।
निसन्नं रुक्खमूलम्मि सुकुमालं सुहोइयं ॥
५—तस्स रूवं तु पासित्ता राइणो तम्मि संजए ।
अच्चन्तपरमो आसी अउलो रूवविम्हओ ॥
६—अहो ! वण्णो अहो ! रूवं अहो ! अज्जस्स सोमया ।
अहो ! खन्ती अहो ! मुत्ती अहो ! भोगे असंगया ॥
७—तस्स पाए उ वन्दित्ता काऊण य पयाहिणं ।
नाइदूरमणासन्ने[2] पंजली पडिपुच्छई ॥

अणाह-पद

८—तरुणो सि अज्जो ! पव्वइओ
भोगकालम्मि संजया ! ।
उवट्ठिओ[3] सि सामण्णे
एयमट्ठं सुणेमि ता ॥

१—°गत (उ) °दइ (बृ० पा०) ।
२—निसन्नो नाइदूरंमि (अ) ।
३—उवट्ठितो (बृ० पा०) ।

९—अणाहो मि महाराय ! नाहो मज्झ न विज्जई ।
अणुकम्पगं सुहिं वावि 'कंचि नाभिसमेमऽहं'[1] ॥

१०—तओ सो पहसिओ राया सेणिओ मगहाहिवो ।
एवं ते इड्ढिमन्तस्स कहं नाहो न विज्जई ? ॥

११—होमि नाहो भयन्ताणं ! भोगे भुंजाहि संजया ! ।
मित्तनाईपरिवुडो माणुस्सं खु सुदुल्लहं ॥

१२—अप्पणा वि अणाहो सि सेणिया ! मगहाहिवा ! ।
अप्पणा अणाहो सन्तो कहं[2] नाहो भविस्ससि ? ॥

१३—एवं वुत्तो नरिन्दो सो सुसंभन्तो सुविम्हिओ ।
वयणं अस्सुयपुव्वं साहुणा विम्हयन्निओ[3] ॥

१४—अस्सा हत्थी मणुस्सा मे पुरं अन्तेउरं च मे ।
भुंजामि माणुसे भोगे[4] आणाइस्सरियं च मे ॥

१५—एरिसे सम्पयग्गम्मि[5] सव्वकामसमप्पिए ।
कहं अणाहो भवइ ? 'मा हु भन्ते ! मुसं वए'[6] ॥

१६—न तुमं जाणे अणाहस्स अत्थं 'पोत्थं व'[7] पत्थिवा ! ।
जहा अणाहो भवई सणाहो वा नराहिवा ? ॥

१७—सुणेह मे महाराय ! अव्वक्खित्तेण[8] चेयसा ।
जहा अणाहो भवई जहा मे य पवत्तियं ॥

१—कंचीनाहि तुमे मह (वृ०, सु), कंची नाभिसमेमऽहं (वृ० पा०) ।
२—कत्तं (आ) ।
३—विम्हियन्निओ (अ, उ, ऋ) ।
४—लोए (अ) ।
५—सचयायम्मि (वृ० पा०) ।
६—भंते ! माहु मुसं वए (वृ० पा०) ।
७—उत्थं व (वृ०), पोत्थं च (अ), पोत्थं व (वृ० पा०) ।
८—अविक्खित्तेण (ऋ) ।

१८—कोसम्बी नाम नयरी पुराणपुरभेयणी[1] ।
तत्थ आसी पिया मज्झ पभूयधणसंचओ ॥

१९—पढमे वए महाराय! अउला मे अच्छिवेयणा ।
अहोत्था विउलो[2] दाहो 'सव्वंगेसु य'[3] पत्थिवा! ॥

२०—सत्थं जहा परमतिक्खं सरीरविवरन्तरे[4] ।
पवेसेज्ज[5] अरी कुद्धो एवं मे अच्छिवेयणा ॥

२१—तियं मे अन्तरिच्छं च उत्तमंगं च पीडई ।
इन्दासणिसमा घोरा वेयणा परमदारुणा ॥

२२—उवट्ठिया मे आयरिया विज्जामन्ततिगिच्छगा[6] ।
'अबीया सत्थकुसला'[7] मन्तमूलविसारया ॥

२३—ते मे तिगिच्छं कुव्वन्ति चाउप्पायं जहाहियं ।
न य दुक्खा विमोयन्ति एसा मज्झ अणाहया ॥

२४—पिया मे सव्वसारं पि दिज्जाहि मम कारणा ।
न य दुक्खा[8] विमोएइ[9] एसा मज्झ अणाहया ॥

२५—माया य[10] मे महाराय!
पुत्तसोगदुहट्टिया[11] ।
न य दुक्खा[12] विमोएइ
एसा मज्झ अणाहया ॥

१—नगराण पुडभेयण (वृ० पा०) ।
२—तिउलो (वृ०) , विउलो (वृ० पा०) ।
३—सव्वगत्तेसु (वृ) ; सव्वंगेसु य (वृ० पा) ।
४—सरीर वीय अंतरे (वृ० पा०) ।
५—आविलिज्ज (उ, वृ० पा०, ऋ) ।
६—°विगिच्छगा (ऋ) ।
७—नाना सत्थत्थ कुसला (वृ० पा०) , अधीया (अ) ।
८—दुक्खाओ (ऋ) ; दुक्खाउ (उ) ।
९—विमोयति (वृ०), एव सर्वत्र ।
१०—वि (उ) ।
११—°दुहट्टिया (वृ० पा०) ।
१२—पा० टि० ७

२६—भायरो[1] मे महाराय! सगा जेट्ठकणिट्ठगा।
न य दुक्खा[2] विमोयन्ति एसा मज्झ अणाहया॥

२७—भइणीओ मे महाराय! सगा जेट्ठकणिट्ठगा।
न य दुक्खा[3] विमोयन्ति एसा मज्झ अणाहया॥

२८—भारिया मे महाराय! 'अणुरत्ता अणुव्वया'[4]।
अंसुपुण्णेहिं नयणेहिं उरं मे परिसिंचई॥

२९—अन्नं पाणं च ण्हाणं च गन्धमल्लविलेवणं।
'मए नायमणाय वा'[5] सा बाला नोवभुंजई॥

३०—खणं पि मे महाराय! पासाओ वि[6] न फिट्टई।
न य दुक्खा विमोएइ एसा मज्झ अणाहया॥

३१—तओ हं एवमाहंसु दुक्खमा हु पुणो पुणो।
वेयणा अणुभविउं जे संसारम्मि अणन्तए॥

३२—सइं[7] च जइ मुच्चेज्जा वेयणा विउला इओ।
खन्तो दन्तो निरारम्भो पव्वए[8] अणगारियं॥

३३—एवं च चिन्तइत्ताणं पसुत्तो मि नराहिवा!।
परियट्टन्तीए राईए वेयणा मे खयं गया॥

३४—तओ कल्ले पभायम्मि आपुच्छित्ताण बन्धवे।
खन्तो दन्तो निरारम्भो पव्वइओऽणगारियं॥

३५—ततो हं नाहो जाओ अप्पणो य परस्स य।
सव्वेसिं चेव भूयाणं तसाण थावराण य॥

१—भाया (उ)।
२, ३—दुक्खाओ (ऋ), दुक्खाउ (उ)।
४—अणुत्तरमणुव्वया (उ, ऋ, वृ० पा०)।
५—तारिसं रोगमावन्ने (वृ० पा०)।
६—य (अ, आ, उ)।
७—सयं (उ, वृ०); सइय (अ)।
८—पव्वइए (उ)।

अत्त-पद

३६—अप्पा नई वेयरणी अप्पा मे कूडसामली ।
अप्पा कामदुहा धेणू अप्पा मे नन्दणं वणं ॥

३७—अप्पा कत्ता विकत्ता य दुहाण य सुहाण य ।
अप्पा मित्तममित्त च दुप्पट्ठियसुपट्ठिओ ॥

धम्मलोव-पद

३८—इमा हु अन्ना वि अणाहया निवा !
तमेगचित्तो निहुओ सुणेहि ।
नियण्ठधम्म लहियाण वी जहा
सीयन्ति एगे बहुकायरा नरा ॥

३९—जो पव्वइत्ताण महव्वयाइ
सम्म नो फासयई[1] पमाया ।
अनिग्गहप्पा य रसेसु गिद्धे
न मूलओ छिन्दइ बन्धण से ॥

४०—आउत्तया जस्स न अत्थि काइ
इरियाए भासाए तहेसणाए ।
आयाणनिक्खेवदुगुछणाए
न वीरजाय[2] अणुजाइ मग्गं ॥

४१—चिर पि से मुण्डरुई भवित्ता
अथिरव्वए तवनियमेहि भट्ठे ।
चिर पि अप्पाण किलेसइत्ता
न पारए होइ हु सपराए ॥

१—[illegible] (उ ऋ)।
२—[illegible] (वृ)।

४२—'पोल्ले व'[1] मुट्ठी जह से असारे
अयन्तिए कूडकहावणे वा।
राढामणी वेरुलियप्पगासे
अमहग्घए होइ य जाणएसु॥

४३—कुसीललिंग इह धारइत्ता
इसिज्झय जीविय वूहइत्ता।
असजए सजयलप्पमाणे[2]
विणिघायमागच्छइ से चिरं पि॥

४४—'विस तु पीयं'[3] जह कालकूडं
हणाइ सत्थं जह कुग्गहीयं।
'एसे व'[4] धम्मो विसओववन्नो
हणाइ वेयाल इवाविवन्नो[5]॥

४५—जे लक्खण सुविण पउजमाणे
निमित्तकोऊहलसंपगाढे।
कुहेडविज्जासवदारजीवी
न गच्छई सरण तम्मि काले॥

४६—तमतमेणव उ से असीले
सया दुही विप्परियासुवेइ[6]।
नधावई नग्गतिरिक्खजोणिं
मोण विराहेत्तु असाहुरूवे॥

१—पल्लार (वृ० पा०)।
२—[illegible] (वृ० पा०)।
३—विसं पिबित्ता (अ, आ), विस पिवन्ती (वृ०)।
४—एसो वि (अ) एसो व (उ)।
५—[illegible] (वृ० पा०)।
६—° [illegible] (उ)।

४७—उद्देसिय कीयगडं नियागं
न मुचई किंचि अणेसणिज्जं ।
अग्गी विवा सव्वभक्खी भवित्ता
इओ चुओ गच्छइ कट्टु पाव ॥

४८—न त अरी कण्ठछेत्ता करेइ
ज से करे अप्पणिया दुरप्पा[1] ।
से नाहिई मच्चुमुह तु पत्ते
पच्छाणुतावेण दयाविहूणो ॥

४९—निरट्ठिया नग्गरुई उ तस्स
जे उत्तमट्ठ विवज्जासमेई ।
इमे वि से नत्थि परे वि लोए
दुहओ वि से भिज्जइ तत्थ लोए ॥

५०—एमेवऽहाछन्दकुसीलरूवे
मग्ग विराहेत्तु जिणुत्तमाण ।
कुररी विवा भोगरसाणुगिद्धा
निरट्ठसोया परियावमेइ ॥

निक्खेव-पद

५१—सोच्चाण मेहावि सुभासिय इम
अणुसासणं नाणगुणोववेय ।
मग्ग कुसीलाण जहाय सव्व
महानियण्ठाण वए पहेण ॥

१—दुरप्पा (क) ।

५२—चरित्तमायारगुणन्निए[1] तओ
अणुत्तरं सजम पालियाण ।
निरासवे सखवियाण कम्म
उवेइ ठाण विउलुत्तम धुवं ॥

५३—एवुग्गदन्ते वि महातवोधणे
महामुणी महापइन्ने महायसे ।
महानियण्ठिज्जमिण महासुय
से काहए महया वित्थरेण ॥

५४—तुट्ठो य सेणिओ राया इणमुदाहु कयजली ।
अणाहत्त जहाभूय सुट्ठु मे उवदसिय ॥

५५—तुज्झ सुलद्ध खु मणुस्सजम्म
लाभा सुलद्धा य तुमे महेसी! ।
तुब्भे सणाहा य सबन्धवा य
ज भे ठिया मग्गे जिणुत्तमाण ॥

५६—त सि नाहो अणाहाण सव्वभूयाण सजया! ।
खामेमि ते महाभाग! इच्छामि अणुसासिउ ॥

५७—पुच्छिऊण मए तुब्भ झाणविग्घो उ[2] जो कओ ।
निमन्तिओ[3] य भोगेहि त सव्व मरिसेहि मे ॥

५८—एव थुणित्ताण स रायसीहो
अणगारसीह परमाइ भत्तिए ।
सओरोहो य सपरियणो य[4]
धम्माणुरत्तो विमलेण चेयसा ॥

१—°गु[illegible] (उ)।
२—य (स)।
३—निम[illegible] (अ, [illegible] इ, उ)।
४—[illegible] (उ, आ, इ)।

५९—ऊससियरोमकूवो काऊण य पयाहिणं ।
अभिवन्दिऊण सिरसा अइयाओ[1] नराहिवो ॥

६०—इयरो वि गुणसमिद्धो
तिगुत्तिगुत्तो तिदण्डविरओ य ।
विहग इव विप्पमुक्को
विहरइ वसुहं विगयमोहो ॥

—त्ति बेमि ॥

*

१—अइट्टे (उ)।

एगविसइम अज्झयण

समुद्दपालीयं

उक्खेव-पद

१–चम्पाए पालिए नाम सावए आसि वाणिए।
महावीरस्स भगवओ सीसे सो उ महप्पणो॥

२–निग्गन्थे पावयणे सावए से विकोविए।
पोएण ववहरन्ते पिहुण्ड नगरमागए॥

३–पिहुण्डे ववहरन्तस्स वाणिओ देइ धूयर।
त ससत्त पइगिज्झ सदेसमह पत्थिओ॥

४–अह पालियस्स घरणी समुद्दमि पसवई।
अह 'दारए तहिं'[1] जाए समुद्दपालि त्ति नामए॥

५–खेमेण आगए चम्प सावए वाणिए घर।
सवड्ढई घरे तस्स दारए से सुहोइए॥

६–बावत्तरि कलाओ य सिक्खए[2] नीइकोविए।
जोव्वणेण य सपन्ने[3] सुरूवे पियदसणे॥

७–तस्स रूववइ भज्ज पिया आणेइ रूविणि।
पासाए कीलए रम्मे देवो दोगुन्दओ जहा॥

८–अह अन्नया कयाई पासायालोयणे ठिओ।
वज्झमण्डणसोभाग वज्झ पासइ वज्झग॥

९–त पासिऊण संविग्गो[1] समुद्दपालो इणमब्बवी।
अहोऽसुभाण कम्माणं निज्जाण पावग इम॥

१०–संबुद्धो सो तहिं भगवं 'पर संवेगमागओ'[2]।
आपुच्छऽम्मापियरो पव्वए[3] अणगारियं॥

११–'जहित्तु सगं च'[4] महाकिलेसं
महन्तमोह कसिणं भयावहं[5]।
परियायधम्मं चऽभिरोयएज्जा
वयाणि सीलाणि परीसहे य॥

महव्वय-पद

१२–अहिंस सच्च च अतेणगं च
तत्तो य 'बम्भ अपरिग्गहं च'[6]।
पडिवज्जिया पच महव्वयाणि
चरिज्ज धम्म जिणदेसिय विऊ॥

चरिया-पद

१३–सव्वेहिं भूएहि दयाणुकम्पी[7]
खन्तिक्खमे संजयबम्भयारी।
सावज्जजोग परिवज्जयन्तो
चरिज्ज भिक्खू सुसमाहिइन्दिए॥

१–सवेग (उ ऋ, वृ०)।
२–परम° (उ)।
३–पव्वइए (उ)।
४–जहित्तु सगथ (वृ०), जहित्तु ऽसगथ (चू०), जहित्त, सगथ° (सु); जहित्तु सग च, जहाय सग च (वृ० पा०)।
५–[illegible] (वृ०, चू०)।
६–[illegible] परिग्गह च (वृ० पा०)।
७–[illegible] (वृ० पा०)।

१४–कालेण कालं विहरेज्ज रट्ठे[1]
बलाबल जाणिय अप्पणो य[2] ।
सीहो व सद्देण न संतसेज्जा
वयजोग सुच्चा न असब्भमाहु ॥

१५–उवेहमाणो उ परिव्वएज्जा
पियमप्पियं सव्व तितिक्खएज्जा ।
न सव्व सव्वत्थऽभिरोयएज्जा
न यावि पूयं गरहं च संजए ॥

१६–अणेगछन्दाइह[3] माणवेहिं
जे भावओ संपगरेइ[4] भिक्खू ।
भयभेरवा तत्थ उइन्ति[5] भीमा
दिव्वा मणुस्सा अदुवा तिरिच्छा ॥

१७–परीसहा दुव्विसहा अणेगे
सीयन्ति जत्था बहुकायरा नरा ।
से तत्थ पत्ते न वहिज्ज भिक्खू
संगामसीसे इव नागराया ॥

१८–सीओसिणा दंसमसा य फासा
आयंका विविहा फुसन्ति देहं ।
अणाउलो[1] तत्थऽहियासएज्जा
रयाइं[2] खेवेज्ज पुरेकडाइं ॥

१९—पहाय रागं च तहेव दोसं
मोहं च भिक्खू सययं वियक्खणो।
मेरु व्व वाएण अकम्पमाणो
परीसहे आयगुत्ते सहेज्जा॥

२०—अणुन्नए नावणए महेसी
न यावि पूयं गरहं च संजए।
स उज्जुभावं पडिवज्ज संजए
निव्वाणमग्गं विरए उवेइ॥

२१—अरइरइसहे पहीणसंथवे
विरए आयहिए पहाणवं।
परमट्ठपएहिं चिट्ठई
छिन्नसोए अममे अकिंचणे॥

२२—विवित्तलयणाइ भएज्ज ताई[1]
निरोवलेवाइ असंथडाइं।
इसीहि चिण्णाइ महायसेहिं
काएण फासेज्ज परीसहाइं॥

२३—सन्नाणनाणोवगए[2] महेसी
अणुत्तरं चरिउं धम्मसंचयं।
अणुत्तरेनाणधरे[3] जससी
ओभासई सूरिए वन्तलिक्खे[4]॥

१—°या (अ)।
२—सन्नाईण° (अ); सन्नाण° (वृ० पा०) सन्नाण° (वृ०)।
३—°णुत्तरे° (वृ० पा०)।
४—°[illegible] (उ)।

१४–कालेण कालं विहरेज्ज रट्ठे[1]
बलाबलं जाणिय अप्पणो य[2] ।
सीहो व सद्देण न संतसेज्जा
वयजोग सुच्चा न असब्भमाहु ॥
१५–उवेहमाणो उ परिव्वएज्जा
पियमप्पियं सव्व तितिक्खएज्जा ।
न सव्व सव्वत्थऽभिरोयएज्जा
न यावि पूयं गरहं च संजए ॥
१६–अणेगछन्दामिह[3] माणवेहिं
जे भावओ संपगरेइ[4] भिक्खू ।
भयभेरवा तत्थ उइन्ति[5] भीमा
दिव्वा मणुस्सा अदुवा तिरिच्छा ॥
१७–परीसहा दुव्विसहा अणेगे
सीयन्ति जत्था बहुकायरा नरा ।
से तत्थ पत्ते न वहिज्ज भिक्खू
संगामसीसे इव नागराया ॥
१८–सीओसिणा दंसमसा य फासा
आयंका विविहा फुसन्ति देहं ।
अकुक्कुओ[1] तत्थऽहियासएज्जा
रयाइं[1] खेवेज्ज पुरेकडाइं ॥

बाइसम अज्झयण

रहनेमिज्जं

उक्खेव-पद

१—सोरियपुरंमि नयरे आसि राया महिड्ढिए।
वसुदेवे त्ति नामेण रायलक्खणसंजुए ॥

२—तस्स भज्जा दुवे आसी रोहिणी देवई तहा।
तासिं दोण्ह पि दो पुत्ता इट्ठा रामकेसवा ॥

३—सोरियपुरंमि नयरे आसी राया महिड्ढिए।
समुद्दविजए नामं रायलक्खणसंजुए ॥

४—तस्स भज्जा सिवा नाम तीसे पुत्तो महायसो।
भगवं अरिट्ठनेमि त्ति लोगनाहे दमीसरे ॥

५—सोऽरिट्ठनेमिनामो उ लक्खणस्सरसंजुओ[1]।
अट्ठसहस्सलक्खणधरो गोयमो कालगच्छवी ॥

निव्वाण-पद

६—वज्जरिसहसंघयणो समचउरंसो झसोयरो।
तस्स राईमई कन्नं भज्जं जायइ केसवो ॥

७—अह सा रायवरकन्ना सुसीला चारुपेहिणी।
सव्वलक्खणसंपुन्ना[2] विज्जुसोयामणिप्पभा ॥

८—अहाह जणओ तीसे वासुदेवं महिड्ढियं।
इहागच्छउ कुमारो जा से कन्नं ददामि हं ॥

१—सरस्सर० (उ, बृ० पा०)।
२—०सम्पन्ना (उ ऋ)।

बाइसम अज्झयण

रहनेमिज्जं

उक्खेव-पद

१—सोरियपुरमि नयरे आसि राया महिड्ढिए ।
वसुदेवे त्ति नामेणं रायलक्खणसंजुए ॥

२—तस्स भज्जा दुवे आसी रोहिणी देवई तहा ।
तासिं दोण्हं पि दो पुत्ता इट्ठा रामकेसवा ॥

३—सोरियपुरमि नयरे आसी राया महिड्ढिए ।
समुद्दविजए नामं रायलक्खणसंजुए ॥

४—तस्स भज्जा सिवा नाम तीसे पुत्तो महायसो ।
भगवं अरिट्ठनेमि त्ति लोगनाहे दमीसरे ॥

५—सोऽरिट्ठनेमिनामो उ लक्खणस्सरसंजुओ[1] ।
अट्ठसहस्सलक्खणधरो गोयमो कालगच्छवी ॥

निव्वाण-पदं

६—वज्जरिसहसंघयणो समचउरंसो झसोयरो ।
तस्स राईमई कन्नं भज्जं जायइ केसवो ॥

७—अह सा रायवरकन्ना सुसीला चारुपेहिणी ।
सव्वलक्खणसंपुन्ना[2] विज्जुसोयामणिप्पभा ॥

८—अहाह जणओ तीसे वासुदेवं महिड्ढियं ।
इहागच्छऊ कुमारो जा से कन्नं दलामि हं ॥

१—[illegible]स्सर° (उ, वृ० पा०)।
२—°[illegible] (उ ऋ)।

९—सव्वोसहीहि ण्हविओ कयकोउयमगलो ।
दिव्वजुयलपरिहिओ आभरणेहिं विभूसिओ[1]॥

१०—मत्त च गन्धहत्थिं[2] वासुदेवस्स जेट्ठगं ।
आरूढो सोहए अहियं सिरे चूडामणी जहा ॥

११—'अह ऊसिएण'[3] छत्तेण चामराहि य सोहिए ।
दसारचक्केण य सो सव्वओ परिवारिओ ॥

१२—चउरगिणीए सेनाए रइयाए जहक्कमं ।
तुरियाण सन्निनाएण दिव्वेण गगणं फुसे ॥

१३—एयारिसीए इड्ढीए जुईए उत्तिमाएं य ।
नियगाओ भवणाओ निज्जाओ वण्हिपुगवो ॥

१४—अह सो तत्थ निज्जन्तो दिस्स पाणे भयद्दुए ।
वाडेहिं पजरेहिं च सन्निरुद्धे[4] सुदुक्खिए ॥

सवेग-पद

१५—जीवियन्त तु सपत्ते मंसट्ठा भक्खियव्वए ।
पासेत्ता से महापन्ने सारहिं [illegible]व्ववी ॥

१६—कस्स अट्ठा 'इमे पाणा'[5] एए [illegible]
वाडेहिं पंजरेहिं [illegible]

१७—अह सारही तओ [illegible]
तुज्झं [illegible]

१—विभूसई (ऋ) ।
२—°हत्थि च (अ, आ, इ,
३—से ओसिएण (वृ० पा० ,
४—वद्धरुद्धे (वृ० पा०) ।
५—वहुपाणे (वृ० पा०) ।

१८—सोऊण तस्स[1] वयणं बहुपाणिविणासणं[2] ।
चिन्तेइ से महापन्ने साणुक्कोसे जिएहि उ ॥

१९—जइ मज्झ कारणा एए 'हम्मिहिंति बहू'[3] जिया।
न मे एयं तु निस्सेसं परलोगे भविस्सई ॥

२०—सो कुण्डलाण जुयलं
सुत्तगं च महायसो ।
आभरणाणि य सव्वाणि[4]
सारहिस्स पणामए ॥

अभिनिक्खमण-पद

२१—मणपरिणामे य कए
देवा य जहोइयं समोइण्णा[5] ।
सव्वड्ढीए सपरिसा
निक्खमणं तस्स काउं जे ॥

२२—देवमणुस्सपरिवुडो
सीयारयणं[6] तओ समारूढो ।
निक्खमिय बारगाओ
रेवययंमि ट्ठिओ भगवं ॥

२३—उज्जाणं संपत्तो
ओइण्णो उत्तिमाओ सीयाओ[7] ।
साहस्सीए परिवुडो
अह निक्खमई उ चित्ताहिं ॥

१—तस्स सो (उ, ऋ)।
२—बहुपाणि° (बृ०)
३—हम्मंति सुबहू (उ, ऋ बृ०) हम्मिहिंति सुबहू (बृ० पा०)
४—[illegible] (उ, ऋ)।
५—समोइण्णा (बृ० पा०)।
६ ७—सीया° (ऋ)

२४—अह से सुगन्धगन्धिए[1] तुरियं मउयकुंचिए[2] ।
सयमेव लुचई केसे पंचमुट्ठीहिं[3] समाहिओ ॥

आसीवाय-पद

२५—वासुदेवो य ण भणइ लुत्तकेसं जिइन्दियं ।
इच्छियमणोरहे तुरिय पावेसू[4] तं दमीसरा ! ॥
२६—नाणेण दसणेण च चरित्तेण तहेव[5] य ।
खन्तीए मुत्तीए[6] वड्ढमाणो भवाहि य ॥
२७—एव ते रामकेसवा दसारा य बहू जणा ।
अरिट्ठणेमि वन्दित्ता अइगया बारगापुरिं ॥

राईमई-पद

२८—सोऊण रायकन्ना पव्वज्ज सा जिणस्स उ ।
नीहासा य निराणन्दा सोगेण उ समुत्थया[7] ॥
२९—राईमई विचिन्तेइ धिरत्थु मम जीविय ।
जा हं तेण परिच्चत्ता 'सेय पव्वइउं'[8] मम ॥
३०—अह सा भमरसन्निभे[9] कुच्चफणगपसाहिए[10] ।
सयमेव लुचई केसे धिइमन्ता ववस्सिया[11] ॥

१—सुगंधि° (ऋ, वृ०)।
२—मओए° (अ)।
३—पचमुट्ठाहिं (वृ०)।
४—पावसु (वृ०)।
५—तवेण (सु)।
६—मुत्तीए चेव (उ)।
७—समुत्थिया (अ), समुच्छया (आ)।
८—सेउ पव्वइउ (ऋ), से ओ पव्वइओ (उ) सेउ पव्वइय (अ)।
९—°सकासे (अ)।
१०—°फलग° (अ)।
११—वि तवस्सिया (अ)।

३१—वासुदेवो य णं भणइ लुत्तकेसं जिइन्दियं ।
संसारसागरं घोरं तर कन्ने ! लहुं लहुं ॥

३२—सा पव्वइया सन्ती पव्वावेसी[1] तहिं बहुं ।
सयणं परियणं चेव सीलवन्ता बहुस्सुया ॥

३३—गिरिं रेवययं[2] जन्ती वासेणुल्ला उ अन्तरा ।
वासन्ते अन्धयारंमि अन्तो लयणस्स सा ठिया ॥

३४—चीवराइं विसारन्ती जहा जाय त्ति पासिया ।
रहनेमी भग्गचित्तो पच्छा दिट्ठो य तीइ वि ॥

३५—भीया य सा तहिं दट्ठु एगन्ते संजयं तयं ।
बाहाहिं काउ संगोफं वेवमाणी निसीयई ॥

३६—अह सो वि रायपुत्तो समुद्दविजयंगओ ।
भीयं पवेवियं दट्ठु इमं वक्कं उदाहरे ॥

३७—रहनेमी अहं भद्दे ! सुरूवे ! चारुभासिणि ! ।
ममं[3] भयाहि सुयणू ! न ते पीला भविस्सई ॥

३८—एहि ता भुंजिमो भोए माणुस्सं खु सुदुल्लहं ।
'भुत्तभोगा तओ' [4] पच्छा जिणमग्गं चरिस्सिमो ॥

३९—दट्ठूण रहनेमिं तं भग्गुज्जोयपराइयं ।
राईमई असम्भन्ता अप्पाणं संवरे तहिं ॥

४०—अह सा रायवरकन्ना सुट्ठिया नियमव्वए ।
जाई कुलं च सीलं च रक्खमाणी तयं वए ॥

४१—जइ सि रूवेण वेसमणो ललिएण नलकूवरो ।
तहा वि ते न इच्छामि जइ सि सक्खं पुरन्दरो ॥

१—[illegible] (उ) ।
२—[illegible] (उ) ।
३—[illegible] (बृ० पा०) ।
४—[illegible] (उ ऋ) [illegible] (बृ०) ।

[पक्खदे जलियं जोइ धूमकेउं दुरासयं ।
नेच्छन्ति वतय भोत्तु कुले जाया अगंधणे ॥][1]

४२—धिरत्थु ते जसोकामी! जो त जीवियकारणा ।
वन्तं इच्छसि आवेउ सेयं ते मरणं भवे ॥

४३—अह च भोयरायस्स त च सि अन्धगवण्हिणो ।
मा कुले गन्धणा होमो सजम निहुओ चर ॥

४४—जइ तं काहिसि भावं जा जा दिच्छसि नारिओ ।
वायाविद्धो व्व हढो अट्ठिअप्पा भविस्ससि ॥

४५—गोवालो भण्डवालो[2] वा
जहा तद्दव्वऽणिस्सरो ।
एव अणिस्सरो तं पि
सामण्णस्स भविस्ससि ॥

[कोह माण निगिण्हित्ता माय लोभ च सव्वसो ।
इन्दियाइ वसे काउ अप्पाण उवसहरे ॥][3]

४६—तीसे सो वयण सोच्चा संजयाए सुभासियं ।
अकुसेण जहा नागो धम्मे सपडिवाइओ ॥

४७—मणगुत्तो वयगुत्तो कायगुत्तो जिइन्दिओ ।
सामण्ण निच्चल फासे जावज्जीव दढव्वओ ॥

४८—उग्ग तव चरित्ताण जाया दोण्णि वि केवली ।
सव्व कम्म खवित्ताण सिद्धि पत्ता अणुत्तर ॥

१—यह श्लोक चूर्णि और वृहद्द वृत्ति में व्याख्यात नहीं है ।
२—दंडपाणो (वृ० पा०) ।
३—यह श्लोक चूर्णि और वृहद्द वृत्ति में व्याख्यात नहीं है ।

निक्खेव-पद

४९–एवं करेन्ति संबुद्धा पण्डिया पवियक्खणा ।
विणियट्टन्ति भोगेसु जहा सो पुरिसोत्तमो ॥
—त्ति बेमि ॥

*

तेविंसइम अज्झयण

केसिगोयमिज्जं

उक्खेव-पद

१—जिणे पासे त्ति नामेण 'अरहा लोगपूइओ ।
सबुद्धप्पा य सव्वन्नू धम्मतित्थयरे जिणे'[1] ॥
२—तस्स लोगपईवस्स आसि सीसे महायसे ।
केसीकुमारसमणे विज्जाचरणपारगे ॥
३—ओहिनाणसुए बुद्धे सीससघसमाउले ।
गामाणुगाम रीयन्ते सावत्थि नगरिमागए ॥
४—तिन्दुय नाम उज्जाण तम्मी नगरमण्डले ।
फासुए सिज्जसथारे तत्थ वासमुवागए ॥
५—अह तेणेव कालेण धम्मतित्थयरे जिणे ।
भगवं वद्धमाणो त्ति सव्वलोगम्मि विस्सुए ॥
६—तस्स लोगपईवस्स आसि सीसे महायसे[2] ।
भगव गोयमे नाम विज्जाचरणपारगे ॥
७—बारसगविऊ बुद्धे सीससघसमाउले ।
गामाणुगाम रीयन्ते से वि सावत्थिमागए ॥
८—कोट्ठग नाम उज्जाण तम्मी नयरमण्डले ।
फासुए सिज्जसथारे तत्थ वासमुवागए ॥
९—केसीकुमारसमणे गोयमे य महायसे ।
उभओ वि तत्थ विहरिंसु अल्लीणा[3] सुसमाहिया ॥

१— अरिहा लोगविस्सुए ।
सव्वन्नू सव्वदस्सी य धम्मतित्थस्स देसए ॥ (वृ० पा०) ।
२—महिड्ढिए (अ) ।
३—अलीणा (वृ० पा०) ।

१०–उभओ सीससंघाणं संजयाणं तवस्सिणं ।
तत्थ चिन्ता समुप्पन्ना गुणवन्ताण ताइणं ॥
११–केरिसो वा इमो धम्मो ? इमो धम्मो व केरिसो ? ।
आयारधम्मपणिही इमा वा सा व केरिसी ? ॥
१२–चाउज्जामो य जो धम्मो जो इमो पंचसिक्खिओ ।
देसिओ वद्धमाणेण पासेण य महामुणी ॥
१३–अचेलगो य जो धम्मो जो इमो सन्तरुत्तरो ।
एगकज्जपवन्नाणं विसेसे किं नु कारण ? ॥
१४–अह ते तत्थ सीसाणं विन्नाय पवितक्किय ।
समागमे कयमई उभओ केसिगोयमा ॥
१५–गोयमे पडिरूवन्नू सीससघसमाउले ।
जेट्ठ कुलमवेक्खन्तो तिन्दुय वणमागओ ॥
१६–केसीकुमारसमणे गोयम दिस्समागय ।
पडिरूव पडिवत्ति सम्म सपडिवज्जई ॥
१७–पलाल फासुय तत्थ पचम कुसतणाणि य ।
[illegible] निसेज्जाए खिप्प सपणामए ॥

२२–पुंच्छ भन्ते! जहिच्छं ते केसिं गोयममब्बवी ।
तओ केसी अणुन्नाए गोयमं इणमब्बवी ॥

चाउज्जाम-पद

२३–चाउज्जामो य जो धम्मो जो इमो पंचसिक्खिओ ।
देसिओ वद्धमाणेण पासेण य महामुणी ॥

२४–एगकज्जपवन्नाण विसेसे कि नु कारणं ? ।
धम्मे दुविहे मेहावि! कह[1] विप्पच्चओ न ते ? ॥

२५–तओ केसिं बुवंतं तु गोयमो इणमब्बवी ।
पन्ना समिक्खए धम्मं तत्त तत्तविणिच्छयं[2] ॥

२६–पुरिमा उज्जुजडा[3] उ वक्कजडा य पच्छिमा ।
मज्झिमा 'उज्जुपन्ना य'[4] तेण धम्मे दुहा कए ॥

२७–पुरिमाण दुव्विसोज्झो उ
चरिमाणं दुरणुपालओ ।
कप्पो मज्झिमगाण तु
सुविसोज्झो सुपालओ ॥

२८–साहु गोयम! 'पन्ना ते'[5]
छिन्नो मे संसओ इमो ।
अन्नो वि संसओ मज्झं
तं मे कहसु गोयमा! ॥

१—कहिं (अ) ।
२—° विणिच्छिय (उ, ऋ) ।
३—उज्जुकडा (अ) ।
४—उज्जुपन्नाओ (उ, ऋ) ।
५—पन्नाए (वृ० पा०) ।

अचेलग-पद

२९–अचेलगो य जो धम्मो जो इमो सन्तरुत्तरो।
देसिओ वद्धमाणेण पासेण य महाजसा[1] ॥

३०–एगकज्जपवन्नाण विसेसे किं नु कारण ? ।
लिंगे दुविहे मेहावि! कह विप्पच्चओ न ते ? ॥

३१–केसिमेव वुवाण तु गोयमो इणमब्बवी।
विन्नाणेण समागम्म धम्मसाहणमिच्छियं ॥

३२–पच्चयत्थ च लोगस्स नाणाविहविगप्पण ।
जत्तत्थ गहणत्थं च लोगे लिंगप्पओयण ॥

३३–अह भवे पइन्ना उ मोक्खसब्भूयसाहणे[2] ।
नाण च दसण चेव चरित्त चेव निच्छए॥

३४–साहु गोयम! पन्ना ते छिन्नो मे ससओ इमो।
अन्नो वि ससओ मज्झ त मे कहसु गोयमा! ॥

विजय-पद

३९—साहु गोयम! पन्ना ते छिन्नो मे संसओ इमो।
अन्नो वि संसओ मज्झ तं मे कहसु गोयमा! ॥
४०—दीसन्ति बहवे लोए पासबद्धा सरीरिणो।
मुक्कपासो लहुब्भूओ कह त विहरसी? मुणी! ॥

पास-पद

४१—ते पासे सव्वसो छित्ता निहन्तूण उवायओ।
मुक्कपासो लहुब्भूओ विहरामि अहं मुणी! ॥
४२—पासा य इइ के वुत्ता? केसी गोयममब्बवी।
केसिमेवं बुवत तु गोयमो इणमब्बवी ॥
४३—रागद्दोसादओ तिव्वा नेहपासा भयंकरा।
ते छिन्दित्तु जहानाय विहरामि जहक्कम ॥
४४—साहु गोयम! पन्ना ते छिन्नो मे संसओ इमो।
अन्नो वि ससओ मज्झ त मे कहसु गोयमा! ॥

लया-पद

४५—अन्तोहियियसभूया लया चिट्ठइ गोयमा!।
फलेइ विसभक्खीणि[1] सा उ उद्धरिया कह? ॥
४६—त लय सव्वसो छित्ता उद्धरित्ता समूलियं।
विहरामि जहानाय मुक्को मि विसभक्खणं ॥
४७—लया य इइ का वुत्ता? केसी गोयममब्बवी।
केसिमेव बुवत तु गोयमो इणमब्बवी ॥
४८—भवतण्हा लया वुत्ता भीमा भीमफलोदया।
तमुद्धरित्तु[2] जहानाय विहरामि महामुणी! ॥

१—विसभक्खीण (वृ०)।
२—तमुच्छित्त (उ, ऋ), तमुद्धरित्ता (आ)।

४९–साहु गोयम ! पन्ना ते छिन्नो मे संसओ इमो ।
अन्नो वि संसओ मज्झं तं मे कहसु गोयमा ! ॥

अग्गी-पद

५०–संपज्जलिया घोरा अग्गी चिट्ठइ गोयमा ! ।
जे डहन्ति सरीरत्था[1] कहं विज्झाविया तुमे ? ॥
५१–महामेहप्पसूयाओ गिज्झ वारि जलुत्तमं ।
'सिंचामि सययं देहं'[2] सित्ता नो व डहन्ति मे ॥
५२–अग्गी य इइ के वुत्ता केसी गोयममब्बवी ।
केसिमेवं बुवंतं तु गोयमो इणमब्बवी ॥
५३–कसाया अग्गिणो वुत्ता सुयसीलतवो जलं ।
सुयधाराभिहया सन्ता भिन्ना हु न डहन्ति मे ॥
५४–साहु गोयम ! पन्ना ते छिन्नो मे संसओ इमो ।
अन्नो वि संसओ मज्झं तं मे कहसु गोयमा ! ॥

उम्मग्ग-पद

५९—साहु गोयम! पन्ना ते छिन्नो मे ससओ इमो।
अन्नो वि संसओ मज्झं तं मे कहसु गोयमा! ॥

कुप्पह-पद

६०—कुप्पहा बहवो लोए जेहिं नासन्ति जंतवो।
अद्धाणे कह वट्टन्ते त न नस्ससि? गोयमा!॥

६१—जे य मग्गेण गच्छन्ति 'जे य उम्मग्गपट्ठिया'[1]।
ते सव्वे विइया मज्झ तो न नस्सामहं[2] मुणी॥

६२—मग्गे य इइ के वुत्ते? केसी गोयममब्बवी।
केसिमेव बुवत तु गोयमो इणमब्बवी॥

६३—कुप्पवयणपासण्डी सव्वे उम्मग्गपट्ठिया।
सम्मग्ग तु जिणक्खाय एस मग्गे हि[3] उत्तमे॥

६४—साहु गोयम! पन्ना ते छिन्नो मे ससओ इमो।
अन्नो वि ससओ मज्झ तं मे कहसु गोयमा!॥

दीव-पद

६५—महाउदगवेगेण वुज्झमाणाण पाणिण।
सरण गई पइट्ठा य दीव 'क मन्नसी?'[4] मुणी!॥

६६—अत्थि एगो महादीवो वारिमज्झे महालओ।
महाउदगवेगस्स गई तत्थ न विज्जई॥

६७—दीवे य इइ के वुत्ते? केसी गोयममब्बवी।
केसिमेव वुवत तु गोयमो इणमब्बवी॥

१—जे उम्मग्ग पइट्ठिया (अ)।
२—नस्सामिह (अ)।
३—हे (अ)।
४—कम्नुणसी (अ)।

६८—जरामरणवेगेण वुज्झमाणाण पाणिणं ।
धम्मो दीवो 'पइट्ठा य'[1] गई सरणमुत्तमं ॥

६९—साहु गोयम ! पन्ना ते छिन्नो मे संसओ इमो ।
अन्नो वि संसओ मज्झं त मे कहसु गोयमा ! ॥

नावा-पद

७०—अण्णवसि महोहंसि नावा विपरिधावई ।
जंसि गोयममारूढो कह पार गमिस्ससि ? ॥

७१—जा उ अस्साविणी[2] नावा
न सा पारस्स गामिणी ।
जा निरस्साविणी नावा
सा उ पारस्स गामिणी ॥

७२—नावा य इइ का वुत्ता ? केसी गोयममब्बवी ।
केसिमेव वुवतं तु गोयमो इणमब्बवी ॥

७३—सरीरमाहु नाव त्ति जीवो वुच्चइ नाविओ ।
संसारो अण्णवो वुत्तो जं तरन्ति महेसिणो ॥

७४—साहु गोयम ! पन्ना ते छिन्नो मे संसओ इमो ।
अन्नो वि संसओ मज्झं त मे कहसु गोयमा ! ॥

उज्जोय-पदं

७५—अन्धयारे तमे घोरे चिट्ठन्ति पाणिणो बहू ।
को करिस्सइ उज्जोयं सव्वलोगंमि पाणिणं ? ॥

७६—उग्गओ विमलो भाणू सव्वलोगप्पभंकरो ।
सो करिस्सइ उज्जोयं सव्वलोगंमि पाणिणं ॥

१—[illegible] (अ)।
२—[illegible] (बृ० वृ०)।

७७—भाणू य इइ के वुत्ते ? केसी गोयममब्बवी ।
केसिमेवं बुवंतं तु गोयमो इणमब्बवी ॥

७८—उग्गओ खीणसंसारो सव्वन्नू जिणभक्खरो ।
सो करिस्सइ उज्जोयं सव्वलोयंमि पाणिणं ॥

७९—साहु गोयम ! पन्ना ते छिन्नो मे संसओ इमो ।
अन्नो वि संसओ मज्झं तं मे कहसु गोयमा ! ॥

ठाण-पद

८०—सारीरमाणसे दुक्खे बज्झमाणाणं[1] पाणिणं ।
खेमं सिवमणाबाहं ठाणं किं मन्नसी मुणी ? ॥

८१—अत्थि एगं धुवं ठाणं लोगग्गमि दुरारुहं ।
जत्थ नत्थि जरा मच्चू वाहिणो वेयणा तहा ॥

८२—ठाणे य इइ के वुत्ते ? केसी गोयममब्बवी ।
केसिमेवं बुवंतं तु गोयमो इणमब्बवी ॥

८३—निव्वाणं ति अबाहं ति सिद्धी लोगग्गमेव य ।
खेमं सिवं अणाबाहं जं चरन्ति महेसिणो ॥

८४—तं ठाणं सासयंवासं लोगग्गंमि दुरारुहं ।
जं संपत्ता न सोयन्ति भवोहन्तकरा मुणी ॥

८५—साहु गोयम ! पन्ना ते छिन्नो मे संसओ इमो ।
नमो ते संसयाईय ! सव्वसुत्तमहोयही ! ॥

८६—एवं तु संसए छिन्ने केसी घोरपरक्कमे ।
'अभिवन्दित्ता सिरसा गोयमं तु महायसं'[2] ॥

१—वज्झमानान (वृ० पा०) ।
२—वंदित्त, पंजलिउडो गोतम तु महामुणी (चू०) ।

८७—'पञ्चमहव्वयधम्मं पडिवज्जइ भावओ ।
पुरिसस्स पच्छिममी[1] मग्गे तत्थ सुहावहे ॥'[2]

निक्खेव-पद

८८—केसीगोयमओ निच्चं तम्मि आसि समागमे ।
सुयसीलसमुक्करिसो महत्थऽत्थविणिच्छओ ॥

८९—तोसिया परिसा सव्वा 'सम्मग्गं [3]समुवट्ठिया'[4] ।
'संथुया ते पसीयन्तु'[5] भयवं केसिगोयमे ॥

—त्ति बेमि ॥

*

१—पच्छिमम्सी (अ) ।

२—पंच महव्वय जुत्त भावतो पडिवज्जिया ।
धम्म पुरिमस्स पच्छिममि मग्गे सुहावहे ॥ (चू०) ।

३—पज्जुवट्ठिया (बृ० पा०) ।

४—सम्मत्तं पज्जुवत्थिया (चू०) ।

५—संजुता ते पदीसतु (चू०) ।

चउवीसइमं अज्झयणं

पवयण-माया

उक्खेव-पद

१—अट्ठ पवयणमायाओ समिई गुत्ती तहेव य ।
पंचेव य समिईओ तओ गुत्तीओ आहिया ॥
२—इरियाभासेसणादाणे उच्चारे समिई इय ।
मणगुत्ती वयगुत्ती कायगुत्ती य[1] अट्ठमा ॥
३—एयाओ अट्ठ समिईओ समासेण वियाहिया ।
दुवालसंगं जिणक्खायं मायं जत्थ उ पवयणं ॥

समिइ-पद

४—आलम्बणेण कालेण मग्गेण जयणाइ य ।
चउकारणपरिसुद्धं संजए इरियं रिए ॥
५—तत्थ आलंवणं नाणं दंसणं चरणं तहा ।
काले य दिवसे वुत्ते मग्गे उप्पहवज्जिए[2] ॥
६—दव्वओ खेत्तओ चेव कालओ भावओ तहा ।
जयणा[3] चउव्विहा वुत्ता तं मे कित्तयओ सुण ॥
७—दव्वओ चक्खुसा पेहे जुगमित्तं च खेत्तओ ।
कालओ जाव रीएज्जा उवउत्ते य भावओ ॥
८—इन्दियत्थे विवज्जित्ता सज्झायं चेव पंचहा ।
तम्मुत्ती तप्पुरक्कारे उवउत्ते इरियं[4] रिए ॥

१—उ (अ) ।
२—दुप्पह वज्जिए (अ) ।
३—जायणा (ऋ) ।
४—रियं (ऋ) ।

९—'कोहे माणे य मायाए लोभे य उवउत्तया'।
हासे भए मोहरिए विगहासु तहेव य ॥'[2]

१०—एयाइं अट्ठ ठाणाइं परिवज्जित्तु संजए।
असावज्ज मियं काले भासं भासेज्ज पन्नवं ॥

११—'गवेसणाए गहणे य परिभोगेसणा य जा।
आहारोवहिसेज्जाए एए तिन्नि विसोहए ॥'[3]

१२—उग्गमुप्पायणं पढमे बीए सोहेज्ज एसणं।
परिभोयमि चउक्क विसोहेज्ज जय जई ॥

१३—ओहोवहोवग्गहिय भण्डग दुविह मुणी।
गिण्हन्तो निक्खिवन्तो य पउजेज्ज इम विहिं ॥

१४—चक्खुसा पडिलेहित्ता पमज्जेज्ज जयं जई।
आइए निक्खिवेज्जा वा दुहओ वि समिए सया ॥

१५—उच्चार पासवण खेल सिंघाणजल्लियं।
आहार उवहिं देह अन्नं वावि तहाविह ॥

१६—अणावायमसलोए अणावाए चेव होइ सलोए।
आवायमसंलोए आवाए चेय सलोए ॥

१७—अणावायमसलोए परस्सऽणुवघाइए।
समे अज्झुसिरे यावि अचिरकालकयमि य ॥

१८—वित्थिण्णे दूरमोगाढे नासन्ने बिलवज्जिए।
तसपाणबीयरहिए उच्चाराईणि वोसिरे ॥

१—उवउत्तओ (अ)।

२—कोहे य माणे य माया य लोभे य तहेव य।
हास भय मोहरीए विकहा य तहेव य ॥ (वृ० पा०)।

३—गवेसणाए गहणेणं परिभोगेसणाणि य।
आहारमुवहिं सेज्ज एए तिन्नि विसोहिय ॥ (वृ० पा०)।

१९—एयाओ पच समिईओ समासेण वियाहिया ।
एत्तो य तओ गुत्तीओ वोच्छामि अणुपुव्वसो ॥

गुत्ति-पद

२०—सच्चा तहेव मोसा य सच्चामोसा तहेव य ।
चउत्थी असच्चमोसा मणगुत्ती चउव्विहा ॥
२१—सरम्भसमारम्भे आरम्भे य तहेव य ।
मण पवत्तमाण तु नियत्तेज्ज जय जई ॥
२२—सच्चा तहेव मोसा य सच्चामोसा तहेव य ।
चउत्थी असच्चमोसा वइगुत्ती चउव्विहा ॥
२३—सरम्भसमारम्भे आरम्भे य तहेव य ।
वय पवत्तमाण तु नियत्तेज्ज जय जई ॥
२४—ठाणे निसीयणे चेव तहेव य तुयट्टणे ।
उल्लघणपल्लघणे इन्दियाण य जुजणे ॥
२५—सरम्भसमारम्भे आरम्भम्मि तहेव य ।
काय पवत्तमाण तु नियत्तेज्ज जय जई ॥

निक्खेव-पद

२६—एयाओ पच समिईओ चरणस्स य पवत्तणे ।
गुत्ती नियत्तणे वुत्ता असुभत्थेसु सव्वसो ॥
२७—एया पवयणमाया जे सम्मं आयरे मुणी ।
से खिप्प सव्वससारा विप्पमुच्चइ पण्डिए ॥

—त्ति बेमि ॥

पञ्चविंसइमं अज्झयणं

जन्नइज्जं

[illegible]

१—माहणकुलसंभूओ आसि विप्पो महायसो ।
जायाई जमजन्नंमि जयघोसे त्ति नामओ ॥
२—इन्दियग्गामनिग्गाही मग्गगामी महामुणी ।
गामाणुगामं रीयन्ते पत्ते वाणारसिं पुरिं ॥
३—वाणारसीए[1] बहिया उज्जाणंमि मणोरमे ।
फासुए सेज्जसंथारे तत्थ वासमुवागए ॥
४—अह तेणेव कालेणं पुरीए तत्थ माहणे ।
विजयघोसे त्ति नामेण जन्नं जयइ वेयवी ॥
५—अह से तत्थ अणगारे मासक्खमणपारणे ।
विजयघोसस्स जन्नंमि भिक्खमट्ठा[2] उवट्ठिए ॥
६—समुवट्ठियं तहिं सन्तं जायगो पडिसेहए ।
न हु दाहामि ते भिक्खं भिक्खू जायाहि अन्नओ ॥
७—जे य वेयविऊ विप्पा जन्नट्ठा य 'जे दिया'[3] ।
जोइसंगविऊ जे य जे य धम्माण पारगा ॥
८—जे समत्था समुद्धत्तुं परं अप्पाणमेव य ।
तेसिं अन्नमिणं देयं भो भिक्खू सव्वकामियं ॥
९—सो 'एव तत्थ'[4] पडिसिद्धो जायगेण महामुणी ।
न वि रुट्ठो न वि तुट्ठो उत्तमट्ठगवेसओ ॥

१—वाणारसीय (अ, वृ०) ।
२—भिक्खस्स अट्ठा (वृ० पा०) ।
३—जिइदिया (आ) ।
४—तत्थ एव (वृ०) ।

१०—नऽन्नट्ठं पाणहेउं वा न वि निव्वाहणाय वा ।
तेसिं विमोक्खणट्ठाए इमं वयणमब्बवी ॥

मुख-पदं

११—नवि जाणसि वेयमुहं नवि जन्नाण जं मुहं ।
नक्खत्ताण मुहं जं च जं च धम्माण वा मुहं ।
१२—जे समत्था समुद्धत्तुं परं अप्पाणमेव य ।
न ते तुमं वियाणासि अह जाणासि तो भण ॥
१३—तस्सऽक्खेवपमोक्खं च अचयन्तो तहिं दिओ ।
सपरिसो पंजली होउं पुच्छई तं महामुणिं ॥
१४—वेयाणं च मुहं बूहि बूहि जन्नाण जं मुहं ।
नक्खत्ताण मुहं बूहि बूहि धम्माण वा मुहं ॥
१५—जे समत्था समुद्धत्तुं परं अप्पाणमेव य ।
एयं मे संसयं सव्वं साहू कहय[1] पुच्छिओ ॥
१६—अग्गिहोत्तमुहा वेया जन्नट्ठी वेयसां मुहं ।
नक्खत्ताण मुहं चन्दो धम्माणं कासवो मुहं ॥
१७—'जहा चन्दं गहाईया चिट्ठन्ती पंजलीउडा ।
वन्दमाणा नमंसन्ता उत्तमं मणहारिणो ॥'[2]
१८—अजाणगा जन्नवाई विज्जामाहणसंपया ।
गूढा[3] सज्झायतवसा भासच्छन्ना इवऽग्गिणो ॥

माहण पदं

१९—जो लोए बम्भणो वुत्तो अग्गी वा महिओ जहा ।
सया कुसलसंदिट्ठं तं वयं बूम माहणं ॥

१—कहह (उ)।
२—जहा चन्दं गहाईये चिट्ठन्ती पंजलीउडा ।
वन्दमाणा वदंती उत्तममणहारिणो [उत्तमणगारिणो] ॥ (वृ० पा०)।
३—गुत्ता (वृ०), गूढा (वृ० पा०)।

२०–जो न सज्जइ आगन्तु पव्वयन्तो न सोयई[1] ।
रमए अज्जवयणमि त वयं बूम माहण ॥

२१–जायरूवं जहामट्ठं[2] निद्धन्तमलपावग ।
रागद्दोसभयाईय त वयं बूम माहणं ॥

[तवस्सियं किस दन्त अवचियमंससोणियं ।
सुव्वयं पत्तनिव्वाणं त वयं बूम माहणं ॥][3]

२२–तसपाणे वियाणेत्ता सगहेण 'य थावरे'[4] ।
जो न हिंसइ तिविहेणं[5] त वयं बूम माहण ॥

२३–कोहा वा जइ वा हासा लोहा वा जइ वा भया ।
मुसं न वयई जो उ त वय बूम माहण ॥

२४–चित्तमन्तमचित्त वा अप्प वा जइ वा बहुं ।
न गेण्हइ अदत्त जो तं वयं बूम माहण ॥

२५–दिव्वमाणुसतेरिच्छं जो न सेवइ मेहुणं ।
मणसा कायवक्केण त वय बूम माहणं ॥

२६–जहा पोम जले जायं नोवलिप्पइ वारिणा ।
एव अलित्तो[6] कामेहि तं वय बूम माहण ॥

२७–अलोलुय मुहाजीवी[7] अणगार अकिंचणं ।
असंसत्त गिहत्थेसु त वय बूम माहणं ॥

१—सुव्वइ (उ) ।
२—महामट्ठ (बृ०), जहामट्ठ (बृ० पा०) ।
३—यह श्लोक बृहद्वृत्ति में व्याख्यात नहीं है ।
४—सथावरे (बृ० पा०) ।
५—एय तु (बृ०), विविहेण (बृ० पा०) ।
६—अलित्त (आ, इ, सु) ।
७—मुहाजीवि (बृ० पा०) ।

[जहित्ता पुव्वसंजोग नाइसंगे[1] य बन्धवे ।
जो न सज्जइ एएहिं[2] तं वयं बूम माहणं ॥][3]

२८—पसुबन्धा[4] सव्ववेया[5] जट्ठं च पावकम्मुणा ।
न त तायन्ति दुस्सीलं कम्माणि बलवन्ति ह ॥

२९—न वि मुण्डिएण समणो न ओंकारेण बम्भणो ।
न मुणी रण्णवासेण कुसचीरेण न तावसो ॥

३०—समयाए समणो होइ बम्भचेरेण बम्भणो ।
नाणेण य मुणी होइ तवेणं होइ तावसो ॥

३१—कम्मुणा बम्भणो होइ कम्मुणा होइ खत्तिओ ।
वइस्सो कम्मुणा होइ सुद्दो हवइ[6] कम्मुणा ॥

३२—एए 'पाउकरे बुद्धे'[7] जेहिं होइ सिणायओ ।
सव्वकम्मविनिम्मुक्क त वय बूम माहणं ॥

३३—एव गुणसमाउत्ता जे भवन्ति दिउत्तमा ।
ते समत्था उ उद्धत्तु पर अप्पाणमेव य ॥

धुइ-पद

३४—एव तु संसए छिन्ने विजयघोसे य माहणे[8] ।
'समुदाय तय तं तु'[10] जयघोसं महामुणिं ॥

१—[illegible] (क)।
२—[illegible] (क) एएसु (उ)।
३—यह श्लोक बृहद् वृत्ति में पाठान्तर रूप में स्वीकृत है।
४—पसुबद्धा (बृ० पा०)।
५—[illegible] (उ)।
६—[illegible] (उ) [illegible] उ (बृ०)।
७—[illegible] (बृ० पा०)।
८—[illegible] (बृ०) [illegible] (बृ० पा०)।
९—तओ (उ, [illegible] क)।
१०—[illegible] तओ तं तु (बृ० पा०), समादाय तयं तं व (उ)।

३५—तुट्ठे य विजयघोसे इणमुदाहु कयजली।
माहणत्त जहाभूय सुट्ठु मे उवदसिय ॥

३६—तुब्भे जइया जन्नाण तुब्भे वेयविऊ विऊ।
जोइसगविऊ तुब्भे तुब्भे धम्माण पारगा ॥

३७—तुब्भे समत्था उद्धत्तु पर अप्पाणमेव य।
तमणुग्गह करेहऽम्ह[1] भिक्खेण[2] भिक्खुउत्तमा ॥

सवोहि-पदं

३८—न कज्ज मज्झ भिक्खेण खिप्प निक्खमसू दिया।
मा भमिहिसि भयावट्टे[3] घोरे[4] ससारसागरे ॥

३९—उवलेवो होइ भोगेसु अभोगी नोवलिप्पई।
भोगी भमइ ससारे अभोगी विप्पमुच्चई ॥

४०—उल्लो सुक्को य दो छूढा गोलया मट्टियामया।
दो वि आवडिया कुड्डे जो उल्लो सोतत्थ[5] लग्गई ॥

४१—एव लग्गन्ति दुम्मेहा जे नरा कामलालसा।
विरत्ता उ न लग्गन्ति जहा सुक्को उ गोलओ ॥

निक्खेव-पद

४२—एव से विजयघोसे जयघोसस्स अन्तिए।
अणगारस्स निक्खन्तो धम्मं 'सोच्चा अणुत्तरं'[6] ॥

१—करे अम्म (अ, इ)।
२—भिक्खूणं (बृ०)।
३—भवावत्ते (बृ० पा०)।
४—दीहे (बृ० पा०)।
५—सोऽत्थ (बृ०, ऋ)।
६—सोच्चाण केवल (बृ० पा०)।

४३—खवित्ता पुव्वकम्माइं संजमेण तवेण य।
जयघोसविजयघोसा सिद्धिं पत्ता अणुत्तरं ॥

—त्ति बेमि ॥

*

छव्वीसइम अज्झयण

सामायारी

सामायारी-पद

१–सामायारिं पवक्खामि सव्वदुक्खविमोक्खणिं ।
जं चरित्ताण निग्गन्था तिण्णा संसारसागरं ॥

२–पढमा आवस्सिया नाम बिइया य[1] निसीहिया ।
आपुच्छणा य तइया चउत्थी पडिपुच्छणा ॥

३–पंचमा छन्दणा नाम इच्छाकारो य छट्ठओ ।
सत्तमो मिच्छकारो य[2] तहक्कारो य अट्ठमो ॥

४–अब्भुट्ठाणं नवमं, दसमा उवसंपदा ।
एसा दसंगा साहूणं सामायारी पवेइया ॥

५–गमणे आवस्सियं कुज्जा ठाणे कुज्जा निसीहियं ।
आपुच्छणा सयंकरणे परकरणे पडिपुच्छणा ॥

६–छन्दणा दव्वजाएणं इच्छाकारो य सारणे ।
मिच्छाकारो य निन्दाए तहक्कारो य[3] पडिस्सुए ॥

७–अब्भुट्ठाणं गुरुपूया अच्छणे उवसंपदा ।
'एवं दुपंचसंजुत्ता'[4] सामायारी पवेइया ॥

चरिया-पद

८–पुव्विल्लंमि चउब्भाए आइच्चंमि समुट्ठिए ।
भण्डयं पडिलेहित्ता वन्दित्ता य तओ गुरुं ॥

१–होइ (उ) ।
२–उ (आ, इ) ।
३–× (उ) ।
४–एसा दसंगा साहूणं (वृ० पा०) ।

९—पुच्छेज्जा पंजलिउडो किं कायव्वं मए इहं ? ।
इच्छं निओइउं भन्ते ! वेयावच्चे व सज्झाए ॥

१०—वेयावच्चे निउत्तेण कायव्वं अगिलायओ ।
सज्झाए वा निउत्तेण सव्वदुक्खविमोक्खणे ॥

दिवसचरिया-पद

११—दिवसस्स चउरो भागे कुज्जा भिक्खू वियक्खणो ।
तओ उत्तरगुणे कुज्जा दिणभागेसु चउसु वि ॥

१२—पढमं पोरिसिं सज्झायं बीयं झाणं झियायई ।
तइयाए भिक्खायरियं पुणो चउत्थीए सज्झायं ॥

१३—आसाढे मासे दुपया पोसे मासे चउप्पया ।
चित्तासोएसु मासेसु तिपया हवइ पोरिसी ॥

१४—अंगुलं सत्तरत्तेण पक्खेण य दुअंगुलं ।
वड्ढए हायए वावी मासेणं चउरंगुलं ॥

१५—आसाढबहुलपक्खे भद्दवए कत्तिए य पोसे य ।
फग्गुणवइसाहेसु य नायव्वा[1] ओमरत्ताओ ॥

१६—जेट्ठामूले आसाढसावणे छहिं अंगुलेहिं पडिलेहा ।
अट्ठहिं बीयतियमी तइए दस अट्ठहिं चउत्थे ॥

रत्तिचरिया-पद

१७—रत्तिं पि चउरो भागे भिक्खू कुज्जा वियक्खणो ।
तओ उत्तरगुणे कुज्जा राइभाएसु चउसु वि ॥

१८—पढमं पोरिसिं सज्झायं
बीयं झाणं झियायई ।
तइयाए निद्दमोक्खं तु
चउत्थी भुज्जो[2] वि सज्झायं ॥

१—बोद्धव्वा (आ) ।
२—पुणो (अ) ।

१९—जं नेइ जया रत्तिं
नक्खत्तं तंमि नहचउब्भाए।
संपत्ते विरमेज्जा
सज्झायं पओसकालम्मि ॥

पडिलेहण-पद

२०—तम्मेव य नक्खत्ते
गयणचउब्भागसावसेसंमि ।
वेरत्तियं पि कालं
पडिलेहित्ता मुणी कुज्जा ॥

२१—पुव्विल्लंमि चउब्भाए पडिलेहित्ताण भण्डयं।
गुरु वन्दित्तु सज्झायं कुज्जा दुक्खविमोक्खणं ॥

२२—पोरिसीए चउब्भाए वन्दित्ताण तओ गुरुं।
अपडिक्कमित्ता कालस्स भायणं पडिलेहए ॥

पडिलेहणविहि-पद

२३—मुहपोत्तियं[1] पडिलेहित्ता पडिलेहिज्ज गोच्छगं।
गोच्छगलइयंगुलिओ वत्थाइं पडिलेहए ॥

२४—उड्ढं थिरं अतुरियं पुव्वं वा वत्थमेव पडिलेहे।
तो बिइयं पप्फोडे तइयं च पुणो पमज्जेज्जा ॥

२५—अणच्चावियं अवलियं
अणाणुबन्धिं अमोसलिं[2] चेव ।
छप्पुरिमा नव खोडा
[3]पाणीपाणविसोहणं[4] ॥

१—मुहपत्ति (आ, इ, उ, ऋ)।
२—अमोसल (अ), आमोसलिं (बृ०)।
३—पाणीपाणि० (बृ०)।
४—°पमज्जण (आ, बृ० पा०), °पमज्जणया (ओघनिर्युक्ति ४२५)

२६—आरभडा सम्मद्दा
वज्जेयव्वा य मोसली तइया ।
पप्फोडणा चउत्थी
विक्खित्ता वेइया छट्ठा ॥

२७—पसिढिलपलम्बलोला
एगामोसा अणेगरूवधुणा[1] ।
कुणइ पमाणि पमायं
संकिए गणणोवगं कुज्जा ॥

२८—अणूणाइरित्तपडिलेहा
अविवच्चासा तहेव य ।
पढमं पयं पसत्थं
सेसाणि उ अप्पसत्थाइं ॥

२९—पडिलेहणं कुणन्तो
मिहोकहं कुणइ जणवयकहं वा ॥
देइ व पच्चक्खाणं
वाएइ सयं पडिच्छइ वा ॥

३०—पुढवीआउक्काए
तेऊवाऊवणस्सइतसाण ।
पडिलेहणापमत्तो
छण्हं पि विराहओ होइ ॥

आहार-पद

[पुढवीआउक्काए तेऊवाऊवणस्सइतसाण ।
पडिलेहणआउत्तो छण्हं आराहओ होइ ॥][2]

१—अणेगरूवधुया (वृ० पा०) ।
२—यह गाथा केवल (अ) प्रति में ही है ।

३१—तइयाए पोरिसीए भत्त पाण गवेसए ।
छण्हं अन्नयरागम्मि कारणमि समुट्टिए ॥

३२—वेयणवेयावच्चे
इरियट्ठाए य संजमट्ठाए ।
तह पाणवत्तियाए
छट्ठ पुण धम्मचिन्ताए ॥

अणाहार-पद

३३—निग्गन्थो धिइमन्तो
निग्गन्थी वि न करेज्ज छहिं चेव ।
ठाणेहिं उ इमेहिं
अणइक्कमणा य से होइ ॥

३४—आयंके उवसग्गे[1]
तितिक्खया बम्भचेरगुत्तीसु ।
पाणिदया तवहेउं
सरीरवोच्छेयणट्ठाए ॥

विहार-पद

३५—अवसेस भण्डग गिज्झा चक्खुसा पडिलेहए ।
परमद्धजोयणाओ विहार विहरए मुणी ॥

३६—चउत्थीए पोरिसीए निक्खिवित्ताण भायणं ।
सज्झाय तओ कुज्जा सव्वभावविभावणं[2] ॥

संझा-पद

३७—पोरिसीए चउब्भाए वन्दित्ताण तओ गुरुं ।
पडिक्कमित्ता कालस्स सेज्जं तु पडिलेहए ॥

१—उवसग्गे (उ) ।
२—सव्वदुक्खविमोक्खणं (वृ० पा०) ।

३८—पासवणुच्चारभूमिं च पडिलेहिज्ज जयं जई।
काउस्सग्गं तओ कुज्जा सव्वदुक्खविमोक्खणं ॥

पडिक्कमण-पद

३९—देसिय च अईयार चिन्तिज्ज अणुपुव्वसो।
नाणे[1] दंसणे चेव चरित्तम्मि तहेव य ॥

४०—पारियकाउस्सग्गो वन्दित्ताण तओ गुरुं।
देसियं तु अईयारं आलोएज्ज जहक्कमं ॥

४१—पडिक्कमित्तु निस्सल्लो वन्दित्ताण तओ गुरुं।
काउस्सग्ग तओ कुज्जा सव्वदुक्खविमोक्खणं ॥

४२—पारियकाउस्सग्गो वन्दित्ताण तओ गुरुं।
'थुइमंगलं च काऊण'[2] कालं संपडिलेहए ॥

४३—'पढम पोरिसिं सज्झायं बीय झाणं झियायई।
तइयाए निद्दमोक्ख तु सज्झाय तु चउत्थिए ॥'[3]

४४—'पोरिसीए चउत्थीए कालं तु पडिलेहिया।
सज्झाय तओ कुज्जा अबोहेन्तो असंजए ॥'[4]

४५—पोरिसीए चउब्भाए 'वन्दिऊण तओ गुरु'[5]।
पडिक्कमित्तु कालस्स कालं तु पडिलेहए ॥

४६—आगए कायवोस्सग्गे सव्वदुक्खविमोक्खणे।
काउस्सग्ग तओ कुज्जा सव्वदुक्खविमोक्खणं ॥

१—नाणे य (आ), नाणमि (उ)।
२—सिद्धाण सथव किच्चा (वृ० पा०)।
३—पढमा पोरसि सज्झाय वीए झाण झियायति।
ततियाए निद्दमोक्ख च चउभाए चउत्थए ॥ (वृ० पा०)।
४—काल तु पडिलेहित्ता अवोहिंतो असंजए।
कुज्जा मुणी य सज्झाय सव्वदुक्खविमोक्खणं ॥ (वृ० पा०)।
५—से से वंदित्त, ते गुरू (वृ० पा०)।

४७–राइय च अईयार चिन्तिज्ज अणुपुव्वसो ।
नाणंमि दसणमी य चरित्तमि तवमि य ॥
४८–पारियकाउस्सग्गो वन्दित्ताण तओ गुरु ।
राइयं तु अईयार आलोएज्ज जहक्कम ॥
४९–पडिक्कमित्तु निस्सल्लो वन्दित्ताण तओ गुरु ।
काउस्सग्गं तओ कुज्जा सव्वदुक्खविमोक्खण ॥
५०–किं तव पडिवज्जामि एव तत्थ विचिन्तए ।
काउस्सग्गं तु पारित्ता वन्दई य तओ गुरु ॥
५१–पारियकाउस्सग्गो वन्दित्ताण तओ गुरु ।
तव सपडिवज्जेत्ता[1] करेज्ज सिद्धाण सथवं ॥

निक्खेव-पदं

५२–एसा सामायारी समासेण वियाहिया ।
ज चरित्ता वहू जीवा तिण्णा ससारसागर ॥
—त्ति वेमि ॥

*

१—च पडिवज्जित्ता (अ) ।

सत्तावीसइम अज्झयण

खलुंकिज्जं

१—थेरे गणहरे गग्गे मुणी आसि विसारए ।
आइण्णे गणिभावम्मि समाहि पडिसंधए ॥

२—वहणे वहमाणस्स[1] कन्तार अइवत्तई ।
जोए वहमाणस्स ससारो अइवत्तई ॥

३—खलुके जो उ जोएइ विहम्माणो किलिस्सई[2] ।
असमाहिं च वेएइ तोत्तओ य से भज्जई ॥

४—एग डसइ पुच्छमि एग विन्धइऽभिक्खण ।
एगो भजइ समिल एगो उप्पहपट्ठिओ ॥

५—एगो पडइ पासेण निवेसइ निवज्जई ।
उक्कुद्दइ उप्फिडई सढे वालगवी वए ॥

६—माई मुद्धेण पडइ कुद्धे गच्छइ पडिप्पह ।
'मयलक्खेण चिट्ठई'[3] वेगेण य पहावई ॥

७—छिन्नाले छिन्दइ सेल्लि दुद्दन्तो भजए जुग ।
से वि य सुस्सुयाइत्ता[4] उज्जाहित्ता[5] पलायए ॥

८—खलुका जारिसा जोज्जा दुस्सीसा वि हु तारिसा ।
जोइया धम्मजाणम्मि भज्जन्ति धिइदुब्बला ॥

१—वाहयमाणस्स (अ, सु), वहणमाणस्स (ऋ)।
२—किलामई (वृ०), किलिस्सई (वृ० पा०)।
३—पलय (यल) ते ण चिट्ठिया (वृ० पा०)।
४—सुस्सुयत्ता (अ)।
५—उज्जुहित्ता (आ, वृ०, सु)।

९–इड्ढीगारविए एगे एगेऽत्थ रसगारवे।
सायागारविए एगे एगे सुचिरकोहणे ॥

१०–भिक्खालसिए एगे एगे ओमाणभीरुए थद्धे।
एग च[1] अणुसासम्मी हेऊहिं कारणेहि य ॥

११–सो वि अन्तरभासिल्लो दोसमेव पकुव्वई[2]।
आयरियाण त वयण पडिकूलेइ अभिक्खण ॥

१२–न सा मम वियाणाइ न वि[3] सा मज्झ दाहिई।
निग्गया होहिई मन्ने साहू अन्नोऽत्थ वच्चउ ॥

१३–पेसिया[4] पलिउचन्ति ते परियन्ति समन्तओ।
रायवेट्ठि[5] व मन्नन्ता करेन्ति भिउडि मुहे ॥

१४–वाइया सगहिया चेव 'भत्तपाणे य'[6] पोसिया।
जायपक्खा जहा हसा पक्कमन्ति दिसोदिसि ॥

१५–अह सारही विचिन्तेइ[7] खलुकेहि समागओ।
किं मज्झ दुट्ठसीसेहि अप्पा मे अवसीयई ॥

१६–जारिसा[8] मम सीसाउ तारिसा[9] गलिगद्दहा।
गलिगद्दहे चइत्ताण[10] दढ परिगिण्हइ[11] तव ॥

१—× (अ)।
२—पभासए (बृ० पा०)।
३—य (उ)।
४—पोसिया (बृ० पा०)।
५—रायाविट्ठ (अ)।
६—भत्तपाणेण (अ, आ, इ)।
७—हि चिंतेइ (अ)।
८—तारिसा (अ)।
९—जारिसा (अ)।
१०—जहित्ताणं (आ)।
११—पगिण्हामि (बृ०), परिगिण्हई (बृ० पा०)।

१७–मिउ मद्दवसंपन्ने गम्भीरे सुसमाहिए ।
विहरइ महि महप्पा सीलभूएण अप्पणा ॥
—त्ति बेमि ॥

*

अट्ठावीसइमं अज्झयणं

मोक्खमग्गगई

१–मोक्खमग्गगइं तच्चं सुणेह जिणभासियं ।
चउकारणसंजुत्तं नाणदंसणलक्खणं ॥

मग्ग-पद

२–नाणं च दंसणं चेव चरित्तं च तवो तहा ।
एस[1] मग्गो त्ति पन्नत्तो जिणेहिं वरदंसिहिं[2] ॥
३–नाणं च दंसणं चेव चरित्तं च तवो तहा ।
एयंमग्गमणुप्पत्ता[3] जीवा गच्छन्ति सोग्गइं ॥

नाण पद

४–तत्थ पंचविहं नाणं सुयं आभिनिबोहियं ।
ओहीनाणं तु तइयं मणनाणं च केवलं ॥
५–एयं पंचविहं नाणं दव्वाण य गुणाण य ।
पज्जवाणं च सव्वेसिं नाणं नाणीहि देसियं ॥

दव्व-पद

६–गुणाणमासओ दव्वं एगदव्वस्सिया गुणा ।
लक्खणं पज्जवाणं तु उभओ[4] अस्सिया भवे ॥
७–धम्मो अहम्मो आगासं कालो पुग्गलजन्तवो ।
एस लोगो त्ति पन्नत्तो जिणेहिं वरदंसिहिं ॥

१–एय (अ) ।
२–सव्वदंसिहिं (अ) ।
३–एव० (अ) ।
४–दुहओ (अ) ।

८–धम्मो अहम्मो आगासं दव्वं इक्किक्कमाहियं ।
अणन्ताणि य दव्वाणि कालो पुग्गलजन्तवो ॥

९–गइलक्खणो उ[1] धम्मो अहम्मो ठाणलक्खणो ।
भायणं सव्वदव्वाणं नहं ओगाहलक्खणं ॥

१०–वत्तणालक्खणो कालो जीवो उवओगलक्खणो ।
नाणेणं दंसणेणं च सुहेण य दुहेण य ॥

११–नाणं च दंसणं चेव चरित्तं च तवो तहा ।
वीरियं उवओगो य एयं जीवस्स लक्खणं ॥

१२–सद्दन्धयारउज्जोओ पहा 'छायातवे इ वा'[2] ।
वण्णरसगन्धफासा पुग्गलाणं तु लक्खणं ॥

१३–एगत्तं च पुहत्तं[3] च संखा संठाणमेव य ।
संजोगा य विभागा य पज्जवाणं तु लक्खणं ॥

नवतहिय-पद

१४–जीवाजीवा य बन्धो य पुण्णं पावासवो तहा ।
संवरो निज्जरा मोक्खो सन्तेए तहिया नव ॥

सम्मत्तरुइ-पद

१५–तहियाणं तु भावाणं 'सब्भावे उवएसणं ।
भावेणं सद्दहन्तस्स सम्मत्तं तं वियाहियं'[4] ॥

१–य (अ) ।
२–°तवेइ या (उ ऋ) °तवुत्ति वा (वृ०) ।
3–दुहत्तं (उ) ।
४– सब्भावे (वेणो) वएसणे ।
भावेन उ सद्दहणा सम्मत्तं होति आहियं ॥ (वृ० पा०) ।

१६–निसग्गुवएसरुई
आणारुई सुत्तबीयरुइमेव ।
अभिगमवित्थाररुई
किरियासंखेवधम्मरुई ॥

१७–भूयत्थेणाहिगया
जीवाजीवा य पुण्णपावं च ।
सहसम्मुइयासवसंवरो य[1]
रोएइ उ निसग्गो ॥

१८–जो जिणदिट्ठे भावे
चउव्विहे सद्दहाइ सयमेव ।
एमेव[2] नऽन्नह त्ति य
निसग्गरुइ त्ति नायव्वो ॥

१९–एए चेव उ[3] भावे
उवइट्ठे जो परेण सद्दहई ।
छउमत्थेण जिणेण व[4]
उवएसरुइ त्ति नायव्वो ॥

२०–रागो दोसो मोहो
अन्नाणं जस्स अवगयं होइ ।
आणाए रोयंतो
सो खलु आणारुई नाम ॥

१–उ (अ)।
२–एमेय (अ, उ, बृ०)।
३–हु (ऋ)।
४–य (ऋ)।

२१—जो सुत्तमहिज्जन्तो
सुएण ओगाहई उ सम्मत्तं ।
अंगेण बाहिरेण व[1]
सो सुत्तरुइ त्ति नायव्वो ॥

२२—एगेण अणेगाइं
पयाइ जो पसरई उ सम्मत्त ।
उदए व्व तेल्लबिन्दू
सो बीयरुइ त्ति नायव्वो ॥

२३—सो होइ अभिगमरुई
सुयनाणं जेण अत्थओ दिट्ठं ।
'एक्कारस अंगाइं'[2]
पइण्णगं[3] दिट्ठिवाओ य ॥

२४—दव्वाण सव्वभावा
सव्वपमाणेहि जस्स उवलद्धा ।
सव्वाहि नयविहीहि य
वित्थाररुइ त्ति नायव्वो ॥

२५—दंसणनाणचरित्ते
तवविणए सच्चसमिइगुत्तीसु[4] ।
जो किरियाभावरुई
सो खलु किरियारुई नाम ॥

१—य (ऋ) ।
२—इक्कारसमगाइं (उ, ऋ) ।
३—पइण्णय (अ) ।
४—सच्च° (अ) ।

२६—अणभिग्गहियकुदिट्ठी
सखेवरुइ त्ति होइ नायव्वो ।
अविसारओ पवयणे
अणभिग्गहिओ य सेसेमु ॥

२७—जो अत्थिकायधम्म
सुयधम्म खलु चरित्तधम्म च ।
सद्दहइ जिणाभिहिय
सो धम्मरुइ त्ति नायव्वो ॥

२८—परमत्थसथवो वा
सुदिट्ठपरमत्थसेवणा वा वि ।
वावन्नकुदसणवज्जणा
य सम्मत्तसद्दहणा ॥

२९—नत्थि चरित्त सम्मत्तविहूण
दसणे उ भइयव्व ।
सम्मत्तचरित्ताइं
जुगवं पुव्व व[1] सम्मत्त ॥

३०—नादसणिस्स नाण
नाणेण विणा न हुन्ति चरणगुणा ।
अगुणिस्स नत्थि मोक्खो
नत्थि अमोक्खस्स निव्वाणं ॥

३१—निस्संकिय निक्कखिय
निव्वितिगिच्छा अमूढदिट्ठी य ।
उववूह थिरीकरणे
वच्छल्ल पभावणे अट्ठ ॥

१—च (अ, उ, ऋ)।

चारित्त-पद

३२—सामाइयत्थ[1] पढमं छेओवट्ठावण भवे बीयं ।
परिहारविसुद्धीयं सुहुमं तह संपरायं च ॥

३३—अकसायं अहक्खायं छउमत्थस्स जिणस्स वा ।
एयं चयरित्तकरं चारित्तं होइ आहियं ॥

तव-पद

३४—तवो य दुविहो वुत्तो बाहिरब्भन्तरो तहा ।
बाहिरो छव्विहो वुत्तो एवमब्भन्तरो तवो ॥

निक्खेव-पद

३५—नाणेण जाणई भावे दंसणेण य सद्दहे ।
चरित्तेण निगिण्हाइ[2] तवेण परिसुज्झई ॥

३६—खवेत्ता पुव्वकम्माइं संजमेण तवेण य ।
सव्वदुक्खप्पहीणट्ठा पक्कमन्ति महेसिणो ॥

—त्ति बेमि ॥

*

१—सामाइयं च (उ, ऋ)।
२—निगिण्हति (बृ० पा०)।

एगूणतीसइम अज्झयण

सम्मत्तपरक्कमे

उक्खेव-पद

सू० १—'सुय मे आउस ! तेणं भगवया एवमक्खायं—इह खलु सम्मत्त-परक्कमे 'नाम अज्झयणे'[1] समणेणं भगवया महावीरेण कासवेण पवेइए ज सम्म सद्दहित्ता पत्तियाइत्ता रोयइत्ता फासइत्ता पालइत्ता[2] तीरइत्ता किट्टइत्ता सोहइत्ता आराहइत्ता आणाए अणुपालइत्ता बहवे जीवा सिज्झन्ति बुज्झन्ति मुच्चन्ति परिनिव्वायन्ति सव्वदुक्खाणमन्त करेन्ति। तस्स ण अयमट्ठे एवमाहिज्जइ त जहा --सवेगे १ निव्वेए २ धम्मसद्धा ३ गुरुसाहम्मियसुस्सूसणया ४ आलोयणया ५ निन्दणया ६ गरहणया ७ सामाइए ८ चउव्वीसत्थए ९ वन्दणए[3] १० पडिक्कमणे ११ काउस्सग्गे १२ पच्चक्खाणे १३ थवथुइमगले[4] १४ कालपडिलेहणया १५ पायच्छित्तकरणे १६ खमावणया १७ सज्झाए १८ वायणया[5] १९ पडिपुच्छणया २० परियट्टणया २१ अणुप्पेहा २२ धम्मकहा २३ सुयस्स आराहणया २४ एगग्गमणसनिवेसणया २५ सजमे २६ तवे २७ वोदाणे २८ सुहसाए २९ अप्पडिबद्धया ३० विवित्तसयणासणसेवणया ३१ विणियट्टणया ३२ सभोगपच्चक्खाणे ३३ उवहिपच्चक्खाणे ३४ आहारपच्चक्खाणे ३५ कसायपच्चक्खाणे ३६ जोगपच्चक्खाणे ३७ सरीरपच्चक्खाणे ३८ सहाय-

---

१—नाम मज्झयणे (अ, ऋ), नामज्झयणे (स, उ)।
२—पालइत्ता, पूरइत्ता (अ)।
३—वंदणे (अ)।
४—थय थुइ मगले (अ, ऋ), थण थुई मगले (उ)।
५—वायणाए (ऋ), वायणा (उ)।

पच्चक्खाणे ३९ भत्तपच्चक्खाणे ४० सब्भावपच्चक्खाणे ४१ पडिरूवया[1] ४२ वेयावच्चे ४३ सव्वगुणसपण्णया[2] ४४ वीयरागया ४५ खन्ती ४६ मुत्ती ४७ अज्जवे[3] ४८ मद्दवे[4] ४९ भावसच्चे ५० करण-सच्चे ५१ जोगसच्चे ५२ मणगुत्तया ५३ वयगुत्तया ५४ कायगुत्तया ५५ मणसमाधारणया ५६ वयसमाधारणया ५७ कायसमाधारणया ५८ नाणसपन्नया ५९ दसणसपन्नया ६० चरित्तसंपन्नया ६१ सोइन्दियनिग्गहे ६२ चक्खिन्दियनिग्गहे ६३ घाणिन्दियनिग्गहे ६४ जिब्भिन्दियनिग्गहे ६५ फासिन्दियनिग्गहे ६६ कोहविजए ६७ माणविजए ६८ मायाविजए ६९ लोहविजए ७० पेज्जदोसमिच्छा-दसणविजए ७१ सेलेसी ७२ अकम्मया ७३ ॥

सवेग-पद

सू० २—सवेगेण भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

सवेगेण अणुत्तर धम्मसद्ध जणयइ । अणुत्तराए धम्मसद्धाए सवेग हव्वमागच्छइ । अणन्ताणुबन्धिकोहमाणमायालोभे खवेइ । कम्म न बन्धइ । तप्पच्चइय च ण मिच्छत्तविसोहिं काऊण दसणाराहए भवइ । दसणविसोहीए य ण विसुद्धाए अत्थेगइए तेणेव भवग्गहणेण सिज्झइ । सोहीए य ण विसुद्धाए तच्च पुणो भवग्गहण नाइक्कमइ ॥

निव्वेय-पद

सू० ३—निव्वेएण भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

निव्वेएण दिव्वमाणुसतेरिच्छिएसु कामभोगेसु निव्वेयं हव्वमागच्छइ । सव्वविसएसु विरज्जइ सव्वविसएसु विरज्जमाणे

१—[illegible] (क) ।
२—°[illegible] (उ, ऋ, ह वृ०) ।
३—[illegible] (उ [illegible] वृ०) ।
४—[illegible] (उ [illegible] वृ०)
५—[illegible] (उ ऊ ह)

आरम्भपरिच्चाय[1] करेइ। आरम्भपरिच्चाय करेमाणे ससारमग्ग वोच्छिन्दइ सिद्धिमग्गे पडिवन्ने य भवइ ॥

धम्पसद्धा-पद

सू० ४–धम्मसद्धाए णं भन्ते। जीवे किं जणयइ ?

धम्मसद्धाए ण सायासोक्खेसु रज्जमाणे विरज्जइ। अगारधम्म च णं चयइ अणगारेए ण जीवे सारीरमाणसाण दुक्खाण छेयणभेयण-सजोगाईण वोच्छेय करेइ अव्वाबाह च सुहं निव्वत्तेइ[2] ॥

सुस्सूसणा-पद

सू० ५–गुरुसाहम्मियसुस्सूसणयाए ण भन्ते। जीवे किं जणयइ ?

गुरुसाहम्मियसुस्सूसणयाए ण विणयपडिवत्ति जणयइ। 'विणय-पडिवन्ने य ण'[3] जीवे अणच्चासायणसीले नेरइयतिरिक्खजोणिय-मणुस्सदेवदोग्गईओ निरुम्भइ। वण्णसजलणभत्तिबहुमाणयाए मणुस्सदेवसोग्गईओ निबन्धइ सिद्धिं सोग्गइ च विसोहेइ। पसत्थाइ च ण विणयमूलाइ सव्वकज्जाइ साहेइ। अन्ने य बहवे जीवे विणइत्ता भवइ ॥

आलोयणा-पद

सू० ६–आलोयणाए ण भन्ते। जीवे किं जणयइ ?

आलोयणाए ण मायानियाणमिच्छादसणसल्लाण मोक्खमग्ग-विग्घाण अणन्तससारवद्धणाण[4] उद्धरण करेइ। उज्जुभाव च[5] जणयइ। उज्जुभावपडिवन्ने[6] य ण जीवे अमाई इत्थीवेयनपुसगवेय च न बन्धइ। पुव्वबद्ध च ण निज्जरेइ ॥

१—आरम्भपरिग्गह° (अ)।
२—निव्वित्ते (ऋ)।
३—°पडिवन्नएण (ऋ)।
४—°वद्धमाणाण (अ)।
५—च ण (उ, ऋ, स)।
६—°पडिवन्नएण (ऋ)।

निदण-पद

सू० ७—निन्दणयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

निन्दणयाए णं पच्छाणुतावं जणयइ। पच्छाणुतावेणं विरज्जमाणे करणगुणसेढिं[1] पडिवज्जइ। करणगुणसेढिं 'पडिवन्ने य'[2] णं अणगारे मोहणिज्जं कम्मं उग्घाएइ ॥

गरहण-पद

सू० ८—गरहणयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

गरहणयाए णं अपुरक्कारं जणयइ। अपुरक्कारगए णं जीवे अप्पसत्थेहिंतो जोगेहिंतो नियत्तेइ[3] पसत्थजोगपडिवन्ने य णं अणगारे अणन्तघाइपज्जवे खवेइ ॥

सामाइय-पदं

सू० ९—सामाइएणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

सामाइएणं सावज्जजोगविरइं जणयइ ॥

चउव्वीसत्थव-पद

सू० १०—चउव्वीसत्थएणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

चउव्वीसत्थएणं दंसणविसोहिं जणयइ ॥

वन्दण-पद

सू० ११—वन्दणएणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

वन्दणएणं नीयागोयं कम्मं खवेइ। उच्चागोयं निबन्धइ। सोहग्गं च णं अप्पडिहयं आणाफलं निव्वत्तेइ दाहिणभावं च णं जणयइ ॥

पडिक्कमण-पद

सू० १२—पडिक्कमणेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

पडिक्कमणेणं वयछिद्दाइं पिहेइ। पिहियवयछिद्दे पुण जीवे निरुद्धासवे असबलचरित्ते अट्ठसु पवयणमायासु उवउत्ते अपुहत्ते[1] सुप्पणिहिए[2] विहरइ।

काउस्सग-पद

सू० १३—काउस्सग्गेणं भन्ते! जीवे किं जणयइ ?

काउस्सग्गेणं तीयपडुप्पन्न पायच्छित्तं विसोहेइ। विसुद्धपायच्छित्ते य जीवे निव्वुयहियए 'ओहरियभारो व्व'[3] भारवहे पसत्थज्झाणोवगए[4] सुहंसुहेणं विहरइ।

पच्चक्खाण-पद

सू० १४—पच्चक्खाणेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

पच्चक्खाणेण आसवदाराइं निरुम्भइ[5]।

थवथुइ-पदं

सू० १५—थवथुइमगलेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

थवथुइमंगलेण नाणदंसणचरित्तबोहिलाभं जणयइ। नाणदंसणचरित्तबोहिलाभसंपन्ने य ण जीवे अन्तकिरियं कप्पविमाणोववत्तिग आराहणं आराहेइ।

कालपडिलेहण-पदं

सू० १६—कालपडिलेहणयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

कालपडिलेहणयाए णं नाणावरणिज्जं कम्मं खवेइ।

१—अपमत्ते (बृ० पा०)।

२—सुप्पणिहिंदिए (बृ० पा०); सुप्पिणिहिए (अ, उ, ऋ)।

३—°भरुव्व (उ, ऋ)।

४—°ज्झाणज्झाइ (बृ० पा०)।

५—निरुम्भइ। पच्चक्खाणेग इच्छानिरोह जणयइ। इच्छानिरोहं गए य ण जीवे सव्वदव्वेसु विणीयतण्हे सीइभूए विहरइ। (इ, उ)।

पायच्छित्त-पद

सू० १७—पायच्छित्तकरणेण भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

पायच्छित्तकरणेणं पावकम्मविसोहिं जणयइ निरइयारे यावि भवइ। सम्मं च णं पायच्छित्तं पडिवज्जमाणे मग्गं च मग्गफलं च विसोहेइ आयारं च आयारफलं च आराहेइ ।

खमावण-पद

सू० १८—खमावणयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

खमावणयाए णं पल्हायणभावं[1] जणयइ। पल्हायणभावमुवगए य सव्वपाणभूयजीवसत्तेसु मित्तीभावमुप्पाएइ । मित्तीभावमुवगए यावि जीवे भावविसोहिं काऊण निब्भए भवइ ।

सज्झाय-पदं

सू० १९—सज्झाएण भन्ते! जीवे किं जणयइ ?

सज्झाएण नाणावरणिज्जं कम्मं खवेइ ।

सू० २०—वायणाए णं भन्ते! जीवे किं जणयइ ?

वायणाए णं निज्जरं जणयइ। सुयस्स य 'अणासायणाए वट्टए'[2]। सुयस्स अणासायणाए वट्टमाणे तित्थधम्मं अवलम्बइ। तित्थधम्मं अवलम्बमाणे महानिज्जरे महापज्जवसाणे भवइ।

सू० २१—पडिपुच्छणयाए णं भन्ते! जीवे किं जणयइ ?

पडिपुच्छणयाए णं सुत्तत्थतदुभयाइं विसोहेइ। कंखामोहणिज्जं कम्मं वोच्छिन्दइ ।

सू० २२—परियट्टणाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

परियट्टणाए णं वंजणाइं जणयइ वंजणलद्धिं च उप्पाएइ।

१—पल्हाएणत भाव (बृ०), पल्हायणभावं (बृ० पा०)।
२—अणुसज्जणाए वट्टइ (बृ० पा०)।

सू० २३—अणुप्पेहाए ण भन्ते! जीवे कि जणयइ ?

अणुप्पेहाए ण आउयवज्जाओ सत्तकम्मप्पगडीओ धणियबन्धणबद्धाओ सिढिलबन्धणबद्धाओ पकरेइ। दीहकालट्ठिइयाओ हस्सकालट्ठिइयाओ पकरेइ। तिव्वाणुभावाओ मन्दाणुभावाओ पकरेइ। 'बहुपएसग्गाओ अप्पपएसग्गाओ पकरेइ'[1]। आउयं च ण कम्म सिय बन्धइ सिय नो बन्धइ। 'असायावेयणिज्ज च णं कम्मं नो भुज्जो भुज्जो उवचिणाइ'[2] अणाइय च ण अणवदग्ग दीहमद्ध चाउरन्त संसारकन्तार खिप्पामेव वीइवयइ।

सू० २४—धम्मकहाए ण भन्ते! जीवे किं जणयइ ?

धम्मकहाए ण 'निज्जर जणयइ'[3]। 'धम्मकहाए ण पवयणं पभावेइ'[4]। पवयणपभावेणं जीवे आगमिसस्स भद्दत्ताए कम्म निबन्धइ।

सुय-पद

सू० २५—सुयस्स आराहणयाए ण भन्ते! जीवे किं जणयइ ?

सुयस्स आराहणयाएण खवेइ न य सकिलिस्सइ।

एगग्गमण-पद

सू० २६—एगग्गमणसनिवेसणयाए ण भन्ते! जीवे किं जणयइ ?

एगग्गमणसनिवेसणयाए णं चित्तनिरोह करेइ।

सजम-पद

सू० २७—सजमेण भन्ते! जीवे किं जणयइ ?

संजमेण अणण्हयत्त जणयइ।

१—बहुपएसग्गाओ अप्पपएसग्गाओ पकरेइ (बृ० पा०)।
२—साया वेयणिज्ज च ण कम्म भुज्जो भुज्जो उवचिणाइ (बृ० पा०)।
३—पवयण पभावेइ (बृ० पा०)।
४—× (बृ०)।

तव-पदं

सू० २८—तवेण भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

तवेणं वोदाण जणयइ ।

वोदाण-पद

सू० २९—वोदाणेण भन्ते! जीवे किं जणयइ ?

वोदाणेणं अकिरियं जणयइ । अकिरियाए भवित्ता तओ पच्छा सिज्झइ बुज्झइ मुच्चइ परिनिव्वाएइ सव्वदुक्खाणमन्तं करेइ ।

सुहसाय-पद

सू० ३०—सुहसाएण[1] भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

सुहसाएणं अणुस्सुयत्तं जणयइ । अणुस्सुयाए ण जीवे अणुकम्पए अणुब्भडे विगयसोगे चरित्तमोहणिज्ज कम्म खवेइ ।

अपडिबद्ध-पद

सू० ३१—अप्पडिबद्धयाए ण भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

अप्पडिबद्धयाए णं निस्संगत्त जणयइ । निस्संगत्तेण[2] जीवे एगे एगग्गचित्ते दिया य राओ य असज्जमाणे अप्पडिबद्धे यावि विहरइ ।

विवित्त-पद

सू० ३२—विवित्तसयणासणयाए[3] ण भन्ते । जीवे किं जणयइ ?

विवित्तसयणासणयाए णं चरित्तगुत्ति जणयइ । चरित्तगुत्ते य णं जीवे विवित्ताहारे दढचरित्ते एगन्तरए मोक्खभावपडिवन्ने अट्ठविहकम्मगण्ठि निज्जरेइ ।

१—सुहसाइयाएणं (बृ०), सुहसायाएणं, सुहसाएण (बृ० पा०) ; सुहसायाएण (अ, आ, इ, उ, ऋ) ।

२—निस्संगत्त गएणं (उ, ऋ) ।

३—० सयणासणसेवणयाए (आ, इ) ।

विनियट्टण-पदं

सू० ३३—विणियट्टणयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

विणियट्टणयाए ण पावकम्माण अकरणयाए अब्भुट्ठेइ। पुव्वबद्धाण य निज्जरणयाए त नियत्तेइ तओ पच्छा चाउरन्तं संसारकन्तार वीइवयइ।

पच्चक्खाण-पद

सू० ३४—सभोगपच्चक्खाणेण भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

संभोगपच्चक्खाणेण आलम्बणाइं खवेइ। निरालम्बणस्स य आययट्ठिया जोगा भवन्ति। सएण लाभेण संतुस्सइ[1] परलाभ 'नो आसाएइ'[2] नो तक्केइ नो पीहेइ नो पत्थेइ नो अभिलसइ। परलाभ अणासायमाणे[3] अतक्केमाणे अपीहेमाणे अपत्थेमाणे अणभिलसमाणे दुच्चं सुहसेज्जं उवसंपज्जित्ताण विहरइ।

सू० ३५—उवहिपच्चक्खाणेण भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

उवहिपच्चक्खाणेणं अपलिमन्थ जणयइ। निरुवहिए ण जीवे निक्कखे[4] उवहिमन्तरेण य न सकिलिस्सई।

सू० ३६—आहारपच्चक्खाणेण भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

आहारपच्चक्खाणेणं 'जीवियाससप्पओगं'[5] वोच्छिन्दइ[6]। जीवियाससप्पओग वोच्छिन्दित्ता जीवे आहारमन्तरेणं न सकिलिस्सइ।

१—तुस्सइ (उ, ऋ)।
२—'नो आसाएइ' व्याख्यात नहीं है (वृ०)।
३—अणस्सायमाणे (वृ०)।
४—'नक्कखे' एतच्च पद क्वचिदेव दृश्यते (वृ०)।
५—जीवियास विप्पओग (वृ० पा०)।
६—वोच्छिदिय (वृ० पा०)।

सू० ३७—कसायपच्चक्खाणेण भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

कसायपच्चक्खाणेणं वीयरागभावं जणयइ। वीयरागभावपडिवन्ने वि य णं जीवे समसुहदुक्खे भवइ।

सू० ३८—जोगपच्चक्खाणेण भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

जोगपच्चक्खाणेण अजोगत्तं जणयइ। अजोगी[1] णं जीवे नवं कम्मं न बन्धइ पुव्वबद्धं निज्जरेइ।

सू० ३९—सरीरपच्चक्खाणेण भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

सरीरपच्चक्खाणेणं सिद्धाइसयगुणत्तणं[2] निव्वत्तेइ। सिद्धाइसयगुणसंपन्ने य णं जीवे लोगग्गमुवगए परमसुही भवइ।

सू० ४०—सहायपच्चक्खाणेण भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

सहायपच्चक्खाणेण एगीभावं जणयइ। एगीभावभूए वि[3] य णं[4] जीवे एगग्गं भावेमाणे अप्पसद्दे[5] अप्पझंझे अप्पकलहे अप्पकसाए अप्पतुमंतुमे संजमबहुले संवरबहुले समाहिए यावि भवइ।

सू० ४१—भत्तपच्चक्खाणेण भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

भत्तपच्चक्खाणेणं अणेगाइं भवसयाइं निरुम्भइ।

सू० ४२—सब्भावपच्चक्खाणेण भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

सब्भावपच्चक्खाणेण अनियट्टिं[6] जणयइ। अनियट्टिपडिवन्ने[7] य अणगारे चत्तारि केवलिकम्मंसे खवेइ तं जहा वेयणिज्जं आउयं

१—अजोगीय (ऋ)।
२—°सयगुणत्त (उ, ऋ)।
३—× (उ, ऋ)।
४—× (उ, ऋ)।
५—× (बृ०)।
६—नियट्टिं (बृ० पा०)।
७—नियट्टि० (बृ० पा०)।

नामं गोय। तओ[1] पच्छा सिज्झइ, बुज्झइ, मुच्चइ, परिनिव्वाएइ सव्वदुक्खाणमन्तं करेइ।

पडिरूव-पद

सू० ४३—पडिरूवयाए णं भन्ते! जीवे किं जणयइ?

पडिरूवयाए णं लाघवियं जणयइ। लहुभूए णं[2] जीवे अप्पमत्ते पागडलिंगे पसत्थलिंगे विसुद्धसम्मत्ते सत्तसमिइसमत्ते सव्वपाणभूयजीवसत्तेसु वीससणिज्जरूवे अप्पडिलेहे[3] जिइन्दिए विउलतवसमिइसमन्नागए यावि भवइ।

वेयावच्च-पद

सू० ४४—वेयावच्चेण भन्ते! जीवे किं जणयइ?

वेयावच्चेणं तित्थयरनामगोत्तं कम्मं निबन्धइ।

सव्वगुणसपन्न-पद

सू० ४५—सव्वगुणसंपन्नयाए[4] णं भन्ते! जीवे किं जणयइ?

सव्वगुणसपन्नयाए णं अपुणरावत्तिं जणयइ। अपुणरावत्तिं पत्तए य[5] णं जीवे सारीरमाणसाणं दुक्खाणं नो भागी भवइ।

वीयराग-पद

सू० ४६—वीयरागयाए णं भन्ते! जीवे किं जणयइ?

वीयरागयाएणं 'नेहाणुबन्धणाणि तण्हाणुबन्धणाणि'[6] य वोच्छिन्दइ मणुन्नेसु[7] सद्दफरिसरसरूवगन्धेसु चेव विरज्जइ।

१—× (उ, ऋ)।
२—य ण (उ, ऋ)।
३—अप्पपडिलेहे (बृ० पा०)।
४—° सपुण्णयाए (अ, आ)।
५—× (उ, ऋ)।
६—° वधणाणि तण्हा वधणाणि (वृ०), नेहाणु वन्धाणि, तण्हाणु बन्धणाणि (बृ० पा०)।
७—मणुन्नामणुन्नेसु (अ)।

खंति-पदं

सू० ४७—खन्तीए ण भन्ते। जीवे किं जणयइ ?

खन्तीए ण परीसहे जिणइ।

मुत्ति-पद

सू० ४८—मुत्तीए ण भन्ते। जीवे कि जणयइ ?

मुत्तीए ण अकिंचणं जणयइ। अकिंचणे य जीवे अत्थलोलाणं[1] अपत्थणिज्जो भवइ॥

अज्जव-पदं

सू० ४९—अज्जवयाए ण भन्ते! जीवे किं जणयइ ?

अज्जवयाए ण काउज्जुयय भावुज्जुययं भासुज्जुययं अविसंवायणं जणयइ। अविसंवायणसपन्नयाए णं जीवे धम्मस्स आराहए भवइ।

मद्दव-पदं

सू० ५०—मद्दवयाए ण भन्ते। जीवे कि जणयइ ?

मद्दवयाए णं 'अणुस्सियत्त जणयइ। अणुस्सियत्ते णं जीवे मिउमद्दवसपन्ने अट्ठ मयट्ठाणाइ निट्ठवेइ'[2]।

सच्च-पद

सू० ५१—भावसच्चेणं भन्ते। जीवे किं जणयइ ?

भावसच्चेणं भावविसोहिं जणयइ। भावविसोहीए वट्टमाणे जीवे अरहन्तपन्नत्तस्स धम्मस्स आराहणयाए अब्भुट्ठेइ।

१—अत्थलोलाण पुरिसाण (आ, इ, उ, ऋ, स)।

२—अणुस्सुअत्त जणइ। अणुसुअपत्तेण जीवे मद्दवयाएण मिउ० (अ), मद्दवयाए ण मिउ० (उ, बृ०, ऋ), मद्द० अणुसियत्त जणेति, अणुस्सियत्ते ण जीवे मिउ० (बृ० पा०)।

अरहन्तपन्नत्तस्स धम्मस्स आराहणयाए[1] अब्भुट्टित्ता परलोगधम्मस्स[2] आराहए हवइ।

सू० ५२—करणसच्चेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

करणसच्चेणं करणसत्तिं जणयइ। करणसच्चे वट्टमाणे जीवे जहावाई तहाकारी यावि भवइ।

सू० ५३—जोगसच्चेणं भन्ते! जीवे किं जणयइ?

जोगसच्चेणं जोगं विसोहेइ।

सू० ५४—मणगुत्तयाए ण भन्ते! जीवे किं जणयइ ?

मणगुत्तयाए णं जीवे एगग्गं जणयइ। एगग्गचित्ते णं जीवे मणगुत्ते संजमाराहए भवइ।

गुत्ति-पद

सू० ५५—वयगुत्तयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

वयगुत्तयाए णं निव्वियारं[3] जणयइ। 'निव्वियारेणं जीवे'[4] वइगुत्ते अज्झप्पजोग'ज्झाणगुत्ते'[5] यावि भवइ।

सू० ५६—कायगुत्तयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

कायगुत्तयाए णं संवरं जणयइ। संवरेणं कायगुत्ते पुणो पावासवनिरोहं करेइ।

समाहारण-पद

सू० ५७—मणसमाहारणयाए ण भन्ते! जीवे किं जणयइ ?

मणसमाहारणयाए णं एगग्गं जणयइ। एगग्गं जणइत्ता नाणपज्जवे जणयइ। नाणपज्जवे जणइत्ता सम्मत्तं विसोहेइ मिच्छत्तं च निज्जरेइ।

१—आराहणयाए ण (ऋ)।
२—परलोगाराहए (बृ० पा०)।
३—निव्वियारत्त (अ, स)।
४—निव्वियारे ण जीवे वयगुत्तय जणयइ (बृ० पा०)।
५—°साहणजुत्ते (उ, ऋ, बृ०)।

सू० ५८—वयसमाहारणयाए णं भन्ते ! जीवे कि जणयइ ?

वयसमाहारणयाए ण वयसाहारणदंसणपज्जवे विसोहेइ। वयसाहारणदंसणपज्जवे विसोहेत्ता सुलहबोहियत्तं निव्वत्तेइ दुल्लहबोहियत्त निज्जरेइ।

सू० ५९—कायसमाहारणयाए णं भन्ते। जीवे किं जणयइ ?

कायसमाहारणयाए ण चरित्तपज्जवे विसोहेइ। चरित्तपज्जवे विसोहेत्ता अहक्खायचरित्त विसोहेइ। अहक्खायचरित्तं विसोहेत्ता चत्तारि केवलिकम्मंसे खवेइ। तओ पच्छा सिज्झइ बुज्झइ मुच्चइ परिनिव्वाएइ सव्वदुक्खाणमन्त करेइ।

सपन्नया-पद

सू० ६०—नाणसपन्नयाए ण भन्ते। जीवे किं जणयइ ?

नाणसपन्नायाए ण जीवे सव्वभावाहिगमं जणयइ। नाणसंपन्ने ण जीवे चाउरन्ते संसारकन्तारे न विणुस्सइ।

जहा सूई ससुत्ता
पडिया वि न विणस्सइ।
तहा जीवे ससुत्ते
संसारे न विणस्सइ॥

नाणविणयतवचरित्तजोगे संपाउणइ ससमयपरसमय[1] सघायणिज्जे भवइ।

सू० ६१—दंसणसपन्नयाए ण भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

दसणसंपन्नयाए णं भवमिच्छत्तछेयणं करेइ परं न विज्झायइ[2]। 'अणुत्तरेणं नाणदंसणेणं अप्पाणं संजोएमाणे सम्मं भावेमाणे विहरइ'[3]।

१—° समय विसारए य (अ)।

२—विज्झाइ (ऋ), वज्झाइ। पर आणाज्झायमाणे (अ)।

३—अप्पाण संजोएमाणे सम्म भावेमाणे अणुत्तरेण नाणदसणेणं विहरइ (अ), अनुत्तरेणं नाणदंसणेण विहरइ (बृ० पा०)।

सू० ६२—चरित्तसंपन्नयाए ण भन्ते! जीवे किं जणयइ ?

चरित्तसंपन्नयाए णं सेलेसीभाव जणयइ। 'सेलेसिं पडिवन्ने य अणगारे चत्तारि केवलिकम्मसे खवेइ। तओ पच्छा सिज्झइ बुज्झइ मुच्चइ परिनिव्वाएइ सव्वदुक्खाणमन्त करेइ'[1]।

इन्दियनिग्गह-पदं

सू० ६३—सोइन्दियनिग्गहेण भन्ते! जीवे किं जणयइ ?

सोइन्दियनिग्गहेण मणुन्नामणुन्नेसु सद्देसु रागदोसनिग्गहं जणयइ तप्पच्चइयं कम्म न बन्धइ पुव्वबद्ध च निज्जरेइ।

सू० ६४—चक्खिन्दियनिग्गहेण भन्ते! जीवे किं जणयइ ?

चक्खिन्दियनिग्गहेण मणुन्नामणुन्नेसु रूवेसु[2] रागदोसनिग्गहं जणयइ तप्पच्चइय कम्मं न बन्धइ पुव्वबद्धं च निज्जरेइ।

सू० ६५—घाणिन्दियनिग्गहेण भन्ते! जीवे किं जणयइ ?

घाणिन्दियनिग्गहेण मणुन्नामणुन्नेसु गन्धेसु रागदोसनिग्गहं जणयइ तप्पच्चइयं कम्म न बन्धइ पुव्वबद्ध च निज्जरेइ।

सू० ६६—जिब्भिन्दियनिग्गहेणं भन्ते! जीवे किं जणयइ ?

जिब्भिन्दियनिग्गहेणं मणुन्नामणुन्नेसु रसेसु रागदोसनिग्गहं जणयइ तप्पच्चइयं कम्मं न बन्धइ पुव्वबद्ध च निज्जरेइ।

सू० ६७—फासिन्दियनिग्गहेणं भन्ते! जीवे किं जणयइ ?

फासिन्दियनिग्गहेणं मणुन्नामणुन्नेसु फासेसु रागदोसनिग्गहं जणयइ तप्पच्चइय कम्म न बन्धइ पुव्वबद्धं च निज्जरेइ।

१—सेलेसी पडिवन्ने विहरइ (वृ०), सेलेसिं पडिवन्ने अणगारे चत्तारि केवलिकम्मसे खवेत्ति, ततो पच्छा सिज्झत्ति (वृ० पा०)।

२—चक्खिदिएसु (अ)।

कसायविजय-पदं

सू० ६८—कोहविजएणं भन्ते! जीवे किं जणयइ ?

कोहविजएणं खन्तिं जणयइ कोहवेयणिज्जं कम्मं न बन्धइ पुव्वबद्धं च निज्जरेइ।

सू० ६९—माणविजएणं भन्ते! जीवे किं जणयइ ?

माणविजएणं मद्दवं जणयइ माणवेयणिज्जं कम्मं न बन्धइ पुव्वबद्धं च निज्जरेइ।

सू० ७०—मायाविजएणं भन्ते! जीवे किं जणयइ ?

मायाविजएणं उज्जुभावं जणयइ मायावेयणिज्जं कम्मं न बन्धइ पुव्वबद्धं च निज्जरेइ।

सू० ७१—लोभविजएणं भन्ते! जीवे किं जणयइ ?

लोभविजएणं संतोसीभावं जणयइ लोभवेयणिज्जं कम्मं न बन्धइ पुव्वबद्धं च निज्जरेइ।

खवणा-पद

सू० ७२—पेज्जदोसमिच्छादंसणविजएणं भन्ते! जीवे किं जणयइ ?

पेज्जदोसमिच्छादंसणविजएणं नाणदंसणचरित्ताराहणयाए अब्भुट्ठेइ। 'अट्ठविहस्स कम्मस्स कम्मगण्ठिविमोयणयाए'[1] तप्पढमयाए जहाणुपुव्विं अट्ठवीसइविहं मोहणिज्जं कम्मं उग्घाएइ पंचविहं नाणावरणिज्जं नवविहं दंसणावरणिज्जं[2] पंचविहं अन्तरायं एए तिन्नि वि कम्मंसे जुगवं खवेइ। तओ पच्छा अणुत्तरं अणंतं कसिणं पडिपुण्णं निरावरणं वितिमिरं विसुद्धं लोगालोगप्पभावगं[3] केवल-

१—अट्ठविहकम्म विमोयणाए (बृ० पा०)
२—दंसणावरणं (उ, ऋ)।
३—लोगालोगसभावं (बृ० पा०)।

वरनाणदंसणं समुप्पाडेइ। जाव सजोगी भवइ ताव य इरियावहियं कम्मं बन्धइ सुहफरिसं दुसमयठिइयं। तं पढमसमए बद्धं बिइयसमए वेइयं तइयसमए निज्जिण्णं[1] तं बद्धं पुट्ठं उदीरियं वेइयं निज्जिण्णं सेयाले य अकम्म चावि भवइ।

सू० ७३—अहाउयं पालइत्ता अन्तोमुहुत्तद्धावसेसाउए[2] जोगनिरोहं करेमाणे सुहुमकिरियं अप्पडिवाइ सुक्कज्झाणं झायमाणे तप्पढमयाए 'मणजोगं निरुम्भइ २ त्ता वइजोग निरुम्भइ २ त्ता आणापाणुनिरोहं'[3] करेइ २ त्ता ईसि पंचरहस्सक्खरुच्चारद्धाए य णं अणगारे समुच्छिन्नकिरिय अनियट्टिसुक्कज्झाणं झियायमाणे वेयणिज्जं आउयं नामं गोत्तं च एए चत्तारि वि[4] कम्मसे जुगवं[5] खवेइ।

निक्खेव-पद

सू० ७४—तओ ओरालियकम्माइ च सव्वाहिं विप्पजहणाहि विप्पजहित्ता उज्जुसेढिपत्ते अफुसमाणगई उड्ढं एगसमएणं अविग्गहेण तत्थ गन्ता सागारोवउत्ते सिज्झइ बुज्झइ मुच्चइ परिनिव्वाएइ सव्वदुक्खाणमन्त करेइ[6]।

१—निविण्ण (अ)।

२—अतोमुहुत्तअद्धावसेसाए (बृ० पा०), अतोमुहुत्तावसेसाउए। (उ, ऋ, बृ० पा०)।

३—मणजोग निरुम्भइ वइजोग निरुम्भइ आणापाणुनिरोह करेइ (बृ०), मणजोग निरुम्भइ, वइजोग निरुम्भइ, कायजोग निरुम्भइ आणापाण ० (आ, इ)।

४—× (उ, ऋ)।

५—× (उ, ऋ)।

६—(क) इह च चूर्णिकृता—"सेलेसीए णं भन्ते! जीवे किं जणयइ? अकम्मय जणति, अकम्मयाए जीवा सिज्झंति" इति पाठः, पूर्वत्र च क्वचित्किञ्चित्पाठ-भेदेनाल्पा एव प्रश्ना आश्रिताः, अस्मिंस्तु भूयसीषु प्रतिषु यथाव्याख्यातपाठदर्शनादित्थमुन्नीतमिति (बृ० पा०)।

(ख) सेलेसीएण भन्ते! जीवे किं जणयइ? अकम्मयं जणति अकम्मयाए जीवा सिज्झंति वुज्झति मुच 'ति परिनिव्वायंति सव्वदुक्खाण अंतं करेंति (चू०)।

एस खलु सम्मत्तपरक्कमस्स अज्झयणस्स अट्ठे समणेणं भगवया महावीरेणं आघविए पन्नविए परूविए दंसिए[1] उवदंसिए।

—त्ति बेमि॥

*

१—दंसिए निदंसिए (वृ)।

तीसइमं अज्झयणं

तवमग्गगई

उक्खेव-पदं

१—जहा उ पावगं कम्मं रागदोससमज्जियं ।
खवेइ तवसा भिक्खू तमेगग्गमणो सुण ॥

२—पाणवहमुसावाया[1]
अदत्तमेहुणपरिग्गहा विरओ ।
राईभोयणविरओ
जीवो भवइ अणासवो ॥

३—पंचसमिओ तिगुत्तो अकसाओ जिइन्दिओ ।
अगारवो य निस्सल्लो जीवो होइ अणासवो ॥

४—एएसिं तु विवच्चासे[2] रागद्दोससमज्जियं ।
'जहा खवयइ भिक्खू'[3] 'तं मे एगमणो'[4] सुण ॥

५—जहा महातलायस्स सन्निरुद्धे जलागमे ।
उस्सिचणाए तवणाए कमेण सोसणा भवे ॥

६—'एव तु'[5] संजयस्सावि पावकम्मनिरासवे ।
भवकोडीसंचियं कम्म तवसा निज्जरिज्जइ ॥

तव-पद

७—सो तवो दुविहो वुत्तो बाहिरब्भन्तरो तहा ।
बाहिरो छव्विहो वुत्तो एवमब्भन्तरो तवो ॥

१—पाणिवह मुसावाए (उ, ऋ) ।
२—विवज्जासे (बृ९) ।
३—खवेइ ज जहा कम्म (उ, ऋ) , खवेइ तं जहा भिक्खु (बृ०) ।
४—त मे एगमणा (स) , तमेगग्गमणो (सु) ।
५—एमेव (अ) ।

बाहिरगतव-पद

८—अणसणमूणोयरिया
भिक्खायरिया य रसपरिच्चाओ।
कायकिलेसो सलीणया य
बज्झो तवो होइ ॥

९—इत्तिरिया मरणकाले[1] 'दुविहा अणसणा'[2] भवे।
इत्तिरिया सावकंखा निरवकंखा[3] बिइज्जिया ॥

१०—जो सो इत्तरियतवो
सो समासेण छव्विहो।
सेढितवो पयरतवो
घणो य 'तह होइ वग्गो य'[4] ॥

११—तत्तो य वग्गवग्गो उ पंचमो छट्ठओ पइण्णतवो।
मणइच्छियचित्तत्थो नायव्वो होइ इत्तरिओ ॥

१२—जा सा अणसणा मरणे दुविहा सा वियाहिया।
सवियारअवियारा[5] कायचिट्ठं पई भवे ॥

१३—अहवा 'सपरिकम्मा अपरिकम्मा'[6] य आहिया।
नीहारिमणीहारी आहारच्छेओ य दोसु वि ॥

१४—ओमोयरियं[7] पंचहा समासेण वियाहियं।
'दव्वओ खेत्तकालेणं'[8] भावेणं[9] पज्जवेहि य ॥

१—°कालाय (उ, ऋ)।
२—अणसणा दुविहा (उ, ऋ, बृ०)।
३—निरकखा उ (बृ०), निरवकखा उ (सु), निरवकखा (बृ० पा०)।
४—वग्गो चउत्थोउ (अ)।
५—सवियारमवियारा (उ, ऋ बृ०, सु)।
६—सपडिकम्मा अपडिकम्मा (अ)।
७—ओमोयरणं (अ, बृ० पा०, ऋ)।
८—खित्तओ काले (ऋ), खेत्त काले य (अ)।
९—भावओ (अ)।

१५—जो जस्स उ आहारो तत्तो ओम[1] तु जो करे ।
जहन्नेणेगसित्थाई एवं दव्वेण ऊ भवे ॥

१६—गामे नगरे तह रायहाणि- निगमे य आगरे पल्ली ।
खेडे कव्वडदोणमुह- पट्टणमडम्बसबाहे ॥

१७—आसमपए विहारे सन्निवेसे समायघोसे य ॥
थलिसेणाखन्धारे सत्थे सवट्टकोट्टे य ॥

१८—वाडेसु व रच्छासु व घरेसु वा एवमित्तिय खेत्त ।
कप्पइ उ एवमाई एव खेत्तेण ऊ भवे ॥

१९—पेडा य अद्धपेडा
गोमुत्तिपयगवीहिया चेव ।
सम्बुक्कावट्टाऽऽययगन्तु
पच्चागया छट्ठा ॥

२०—दिवसस्स पोरुसीण
चउण्ह पि उ जत्तिओ भवे कालो ।
एव चरमाणो खलु
कालोमाण मुणेयव्वो[2] ॥

२१—अहवा तइयाए पोरिसीए
ऊणाइ घासमेसन्तो ।
चउभागूणाए वा
एव कालेण ऊ भवे ॥

२२—इत्थी वा पुरिसो वा
अलंकिओ वाऽणलंकिओ वा वि ।
अन्नयरवयत्थो वा
अन्नयरेण व वत्थेण ॥

१—ऊण (अ) ।
२—मुणेयव्व (उ, ऋ) ।

२३—अन्नेण विसेसेण
वण्णेण भावमणुमुयन्ते उ ।
एवं चरमाणो खलु
भावोमाणं मुणेयव्वो[1] ॥

२४—दव्वे खेत्ते काले
भावम्मि य आहिया उ जे भावा ।
एएहि ओमचरओ
पज्जवचरओ भवे भिक्खू ॥

२५—अट्ठविहगोयरग्गं तु तहा सत्तेव एसणा ।
अभिग्गहा य जे अन्ने भिक्खायरियमाहिया ॥

२६—खीरदहिसप्पिमाई पणीय पाणभोयण ।
परिवज्जणं रसाणं तु भणिय रसविवज्जणं ॥

२७—ठाणा वीरासणाईया जीवस्स उ सुहावहा ।
उग्गा जहा धरिज्जन्ति कायकिलेसं तमाहियं ॥

२८—एगन्तमणावाए इत्थीपसुविवज्जिए ।
सयणासणसेवणया विवित्तसयणासण ॥

२९—एसो बाहिरगतवो समासेण वियाहिओ ।
अब्भिन्तर 'तव एत्तो'[2] वुच्छामि अणुपुव्वसो ॥

अब्भितरतव-पद

३०—पायच्छित्त विणओ
वेयावच्च तहेव सज्झाओ ।
'झाण च विउस्सग्गो'[3]
'एसो अब्भिन्तरो तवो'[4] ॥

१—मुणेयव्व (उ, ऋ) ।
२—तवो इत्तो (उ, ऋ) ।
३—झाण उस्सग्गो वि य (उ, ऋ, स) ।
४—अब्भिन्तरओ तवो होइ (उ, ऋ, स) ।

३१–आलोयणारिहाईयं पायच्छित्तं तु दसविहं ।
जे भिक्खू वहई सम्मं पायच्छित्तं तमाहियं ॥

३२–अब्भुट्ठाणं अंजलिकरणं तहेवासणदायणं ।
गुरुभत्तिभावसुस्सूसा विणओ एस वियाहिओ ॥

३३–आयरियमाइयम्मि[1] य वेयावच्चम्मि दसविहे ।
आसेवणं जहाथामं वेयावच्चं तमाहियं ॥

३४–वायणा पुच्छणा चेव तहेव परियट्टणा ।
अणुप्पेहा धम्मकहा सज्झाओ पंचहा भवे ॥

३५–अट्टरुद्दाणि वज्जित्ता झाएज्जा सुसमाहिए ।
धम्मसुक्काइं झाणाइं झाणं तं तु बुहा वए ॥

३६–सयणासणठाणे वा जे उ भिक्खू न वावरे ।
कायस्स विउस्सग्गो छट्ठो सो परिकित्तिओ ॥

निक्खेव-पद

३७–एवं तवं तु दुविहं जे सम्मं आयरे मुणी ।
'से खिप्पं सव्वसंसारा विप्पमुच्चइ पण्डिए'[2] ॥

—त्ति बेमि ॥

*

१—आयरिमाईए (उ, ऋ) ।
२—सो खवेत्तु रय अरओ नीरय तु गइ गए (बृ० पा०) ।

एगतीसइमं अज्झयणं

चरणविही

१—चरणविहिं पवक्खामि जीवस्स उ सुहावहं ।
जं चरित्ता बहू जीवा तिण्णा संसारसागरं ॥

२—एगओ विरइं कुज्जा एगओ य पवत्तणं ।
असंजमे नियत्तिं च संजमे य पवत्तणं ॥

३—रागद्दोसे य दो पावे पावकम्मपवत्तणे ।
जे भिक्खू रुम्भई निच्चं से न अच्छइ[1] मण्डले ॥

४—दण्डाणं गारवाणं च सल्लाणं च तियं तियं ।
जे भिक्खू चयई निच्चं से न अच्छइ[2] मण्डले ॥

५—दिव्वे य जे[3] उवसग्गे तहा तेरिच्छमाणुसे ।
जे भिक्खू सहई निच्चं से न अच्छइ[4] मण्डले ॥

६—विगहाकसायसन्नाणं झाणाणं च दुयं तहा ।
जे भिक्खू वज्जई निच्चं से न अच्छइ[5] मण्डले ॥

७—वएसु इन्दियत्थेसु 'समिईसु किरियासु य'[6] ।
जे भिक्खू जयई निच्चं से न अच्छइ मण्डले ॥

८—लेसासु छसु काएसु छक्के आहारकारणे ।
जे भिक्खू जयई निच्चं से न अच्छइ मण्डले ॥

९—पिण्डोग्गहपडिमासु भयट्ठाणेसु सत्तसु ।
जे भिक्खू जयई निच्चं से न अच्छइ मण्डले ॥

१, २—गच्छइ (अ, वृ० पा०) ।
३—× (उ, ऋ) ।
४, ५—गच्छइ (अ, वृ० पा०) ।
६—समीतीसु य तहेव य (वृ० पा०) ।

१०–मयेसु बम्भगुत्तीसु
जे भिक्खू जयई निच्चं
११–उवासगाणं पडिमासु
जे भिक्खू जयई निच्चं
१२–किरियासु भूयगामेसु
जे भिक्खू जयई निच्च
१३–गाहासोलसएहिं
जे भिक्खू जयई निच्च
१४–बम्भम्मि नायज्झयणेसु
जे भिक्खू जयई निच्च
१५–एगवीसाए सबलेसु
जे भिक्खू जयई निच्च
१६–तेवीसइ सूयगडे
जे भिक्खू जयई निच्च
१७–पणवीसणावणाहिं
जे भिक्खू जयई निच्च
१८–अणगारगुणेहिं च
जे भिक्खू जयई निच्चं
१९–पावसुयपसगेसु
जे भिक्खू जयई निच्चं
२०–सिद्धाइगुणजोगेसु
जे भिक्खू जयई निच्चं

१–देवेसु (वृ० पा०)।
२–पगु० (अ)।
३–उ (उ, ऋ, वृ)।
४–०णाणि (अ)।

२१–इइ एएसु ठाणेसु जे भिक्खू जयई सया ।
खिप्पं से सव्वसंसारा विप्पमुच्चइ पण्डिओ ॥
—त्ति बेमि ॥

*

बत्तीसइमं अज्झयण

पमायट्ठाणं

उक्खेव-पद

१—अच्चन्तकालस्स समूलगस्स
सव्वस्स दुक्खस्स उ जो पमोक्खो।
तं भासओ मे पडिपुण्णचित्ता
सुणेह एगग्गहियं[1] हियत्थं॥

२—नाणस्स सव्वस्स[2] पगासणाए
अन्नाणमोहस्स विवज्जणाए।
रागस्स दोसस्स य सखएण
एगन्तसोक्ख समुवेइ मोक्खं॥

३—तस्सेस मग्गो गुरुविद्धसेवा
विवज्जणा बालजणस्स दूरा।
'सज्झायएगन्तनिसेवणा य'[3]
सुत्तत्थसचिन्तणया धिई य॥

४—आहारमिच्छे मियमेसणिज्जं
सहायमिच्छे निउणत्थबुद्धिं[4]।
निकेयमिच्छेज्ज विवेगजोग्गं
समाहिकामे समणे तवस्सी॥

१—एगन्त० (बृ० पा०, सु)।
२—सच्चस्स (बृ० पा०, सु, पा)।
३—० निसेवणाए (बृ० पा०), ० निवेसणा य (बृ०)।
४—निउणेह० (बृ० पा०)।

५—न वा लभेज्जा निउण सहाय
गुणाहियं वा गुणओ सम वा।
एक्को वि पावाइ विवज्जयन्तो[1]
विहरेज्ज कामेसु असज्जमाणो ॥

तण्हा-पद

६—जहा य अण्डप्पभवा बलागा
अण्ड बलागप्पभवं जहा य।
एमेव मोहाययण खु तण्हं[2]
मोह च तण्हाययण वयन्ति ॥

७—रागो य दोसो वि य कम्मबीय
कम्म च मोहप्पभव वयन्ति।
कम्म च जाईमरणस्स मूल
दुक्ख च जाईमरण वयन्ति ॥

८—दुक्ख हय जस्स न होइ मोहो
मोहो हओ जस्स न होइ तण्हा।
तण्हा हया जस्स न होइ लोहो
लोहो हओ जस्स न किंचणाइ[3] ॥

उवाय-पद

९—राग च दोस च तहेव मोह
उद्धत्तुकामेण समूलजाल।
जे जे 'उवाया पडिवज्जियव्वा'[4]
ते कित्तइस्सामि अहाणुपुव्विं ॥

१—अणायरन्तो (वृ० पा०)।
२—तण्हा (अ)।
३—किंचनत्थि (वृ० पा०)।
४—अपाया परि० (वृ० पा०)।

१५—अदंसणं चेव अपत्थणं च
अचिन्तणं चेव अकित्तणं च ।
इत्थीजणस्सारियझाणजोग्गं
हियं सया बम्भवए[1] रयाणं ॥

१६—काम तु देवीहि विभूसियाहिं
न चाइया खोभइउं तिगुत्ता ।
तहा वि एगन्तहियं ति नच्चा
विवित्तवासो[2] मुणिणं[3] पसत्थो ॥

१७—मोक्खाभिकंखिस्स वि माणवस्स
संसारभीरुस्स ठियस्स धम्मे ।
नेयारिसं[4] दुत्तरमत्थि लोए
जहित्थिओ बालमणोहराओ ॥

१८—एए य संगे समइक्कमित्ता
सुहुत्तरा चेव भवन्ति सेसा ।
जहा महासागरमुत्तरित्ता
नई भवे अवि गंगासमाणा ॥

दुक्ख-पद

१९—कामाणुगिद्धिप्पभवं खु दुक्खं
सव्वस्स लोगस्स सदेवगस्स ।
जं काइयं माणसियं च किंचि
तस्सऽन्तगं गच्छइ वीयरागो ॥

१—बंभचेरे (उ, वृ० पा०, ऋ) ।
२—०भावो (उ, ऋ) ।
३—मुणिणो (अ) ।
४—न तारिसं (आ, इ, उ, ऋ) ।

२०—जहा य किंपागफला मणोरमा
रसेण वण्णेण य भुज्जमाणा।
'ते खुड्डए जीविय'[1] पच्चमाणा
एओवमा कामगुणा विवागे॥

२१—जे इन्दियाण विसया मणुन्ना
न तेसु[2] भाव निसिरे कयाइ।
न याऽमणुन्नेसु मण पि[3] कुज्जा
समाहिकामे समणे तवस्सी॥

२२—चक्खुस्स रूवं गहणं वयन्ति
तं रागहेउं तु मणुन्नमाहु।
तं दोसहेउं अमणुन्नमाहु
समो य जो तेसु स वीयरागो॥

रूव-पद

२३—रूवस्स चक्खु गहण वयन्ति
चक्खुस्स रूवं गहणं वयन्ति।
रागस्स हेउ समणुन्नमाहु[4]
दोसस्स हेउं अमणुन्नमाहु[5]॥

२४—रूवेसु जो गिद्धिमुवेइ तिव्वं[6]
अकालियं पावइ से विणासं[7]।
रागाउरे से जह वा पयंगे
आलोयलोले समुवेइ मच्चु॥

१—ते जीविय खुद्दए (अ), ते जीवियं खुदति (बृ० पा०), ते खुद्दए जीविय (सु)।
२—तेसि (अ)।
३—तु (अ)।
४—तमणुण्णमाहु (बृ० पा०)।
५—तऽमणुण्णमाहु (बृ० पा०)।
६—निच्च (अ)।
७—किलेसं (बृ० पा०)।

२५–जे यावि दोसं समुवेइ तिव्वं[1]
तंसि क्खणे से 'उ उवेइ दुक्खं'[2]।
दुद्दन्तदोसेण सएण जन्तू
न किंचि रूवं अवरज्झई से॥

२६–एगन्तरत्ते[3] रुइरंसि रूवे
अतालिसे से कुणई पओसं।
दुक्खस्स संपीलमुवेइ बाले
न लिप्पई तेण मुणी विरागो॥

२७–रूवाणुगासाणुगए[4] य जीवे
चराचरे हिंसइ ऽणेगरूवे।
चित्तेहि ते परितावेइ बाले
पीलेइ अत्तट्ठगुरू किलिट्ठे॥

२८–रूवाणुवाएण[5] परिग्गहेण
उप्पायणे रक्खणसन्निओगे[6]।
वए विओगे य कहिं सुहं से ?
संभोगकाले य अतित्तिलाभे[7]॥

२९–रूवे अतित्ते य परिग्गहे य
सत्तोवसत्तो न उवेइ तुट्ठिं।
अतुट्ठिदोसेण दुही परस्स
लोभाविले आययई अदत्तं॥

१—निच्च (वृ०, अ)।
२— समुवेंति सव्व (वृ० पा०)।
३—०रत्तो (अ)।
४—०वायाणुगए (वृ० पा०)।
५—०वाए य (अ), ०रागेण (वृ० पा०), ०वाए ण (सु)।
६—०तन्निओगे (उ)।
७—अतित्त० (वृ०) पतित्ति० (वृ० पा०)।

३०—तण्हाभिभूयस्स अदत्तहारिणो
रूवे अतित्तस्स परिग्गहे य।
मायामुस वड्ढइ लोभदोसा
तत्थाऽवि दुक्खा न विमुच्चई से ॥

३१—मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ य
पओगकाले य दुही दुरन्ते।
एव अदत्ताणि समाययन्तो
रूवे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो ॥

३२—रूवाणुरत्तस्स नरस्स एव
कत्तो सुह होज्ज कयाइ किंचि ?।
तत्थोवभोगे वि किलेसदुक्खं
निव्वत्तई जस्स कएण दुक्ख ॥

३३—एमेव रूवम्मि गओ पओसं
उवेइ दुक्खोहपरंपराओ।
पदुट्ठचित्तो य[1] चिणाइ कम्मं
ज से पुणो होइ दुह विवागे ॥

३४—रूवे विरत्तो मणुओ विसोगो
एएण दुक्खोहपरपरेण।
न लिप्पए भवमज्झे वि सन्तो
जलेण वा पोक्खरिणीपलासं ॥

सद्द-पद

३५—सोयस्स सद्दं गहणं वयन्ति
त रागहेउं तु मणुन्नमाहु।
तं दोसहेउ अमणुन्नमाहु
समो य जो तेसु स वीयरागो ॥

१—उ (अ)।

३६—सद्दस्स सोयं गहणं वयन्ति
सोयस्स सद्दं गहणं वयन्ति ।
रागस्स हेउं समणुन्नमाहु
दोसस्स हेउं अमणुन्नमाहु ॥

३७—सद्देसु जो गिद्धिमुवेइ तिव्वं[1]
अकालियं पावइ से विणासं ।
रागाउरे हरिणमिगे व[2] मुद्धे[3]
सद्दे अतित्ते समुवेइ मच्चुं ॥

३८—जे यावि दोसं समुवेइ तिव्वं[4]
तंसि क्खणे से उ उवेइ दुक्खं ।
दुद्दन्तदोसेण सएण जन्तू
न किंचि सद्दं अवरज्झई से ॥

३९—एगन्तरत्ते रुइरंसि सद्दे
अतालिसे से कुणई पओसं ।
दुक्खस्स संपीलमुवेइ बाले
न लिप्पई तेण मुणी विरागो ॥

४०—सद्दाणुगासाणुगए य जीवे
चराचरे हिंसइ ऽणेगरूवे ।
चित्तेहि ते परियावेइ बाले
पीलेइ अत्तट्ठगुरू किलिट्ठे ॥

१—निच्चं (अ) ।
२—व्व (उ, ऋ) ।
३—मुद्धे (अ) ।
४—निच्चं (अ, वृ०) ।

४६—एमेव सद्दम्मि गओ पओसं
उवेइ दुक्खोहपरंपराओ।
पदुट्ठचित्तो य[1] चिणाइ कम्मं
जं से पुणो होइ दुहं विवागे ॥

४७—सद्दे विरत्तो मणुओ विसोगो[2]
एएण दुक्खोहपरंपरेण।
न लिप्पए भवमज्झे वि सन्तो
जलेण वा पोक्खरिणीपलासं ॥

गन्ध-पदं

४८—घाणस्स गन्धं गहणं वयन्ति
तं रागहेउं तु मणुन्नमाहु।
तं दोसहेउं अमणुन्नमाहु
समो य जो तेसु स वीयरागो॥

४९—गन्धस्स घाणं गहणं वयन्ति
घाणस्स गन्धं गहणं वयन्ति।
रागस्स हेउं समणुन्नमाहु
दोसस्स हेउं अमणुन्नमाहु ॥

५०—गन्धेसु[3] जो गिद्धिमुवेइ तिव्वं[4]
अकालियं पावइ से विणासं।
रागाउरे ओसहिगन्धगिद्धे
सप्पे बिलाओ विव निक्खमन्ते ॥

१—उ (अ)।
२—असोगो (अ)।
३—गंधस्स (अ, ऋ)।
४—निच्च (अ)।

५१—जे यावि दोसं समुवेइ तिव्वं[1]
तंसि क्खणे से उ उवेइ दुक्खं ।
दुद्दन्तदोसेण सएण जन्तू
न किंचि गन्धं अवरज्झई से ॥

५२—एगन्तरत्ते रुइरंसि गन्धे
अतालिसे से कुणई पओसं ।
दुक्खस्स संपीलमुवेइ बाले
न लिप्पई तेण मुणी विरागो ॥

५३—गन्धाणुगासाणुगए य जीवे
चराचरे हिंसइ ऽणेगरूवे ।
चित्तेहि ते परितावेइ बाले
पीलेइ अत्तट्ठगुरू किलिट्ठे ॥

५४—गन्धाणुवाएण[2] परिग्गहेण
उप्पायणे रक्खणसन्निओगे ।
वए विओगे य कहिं सुहं से ?
संभोगकाले य अतित्तिलाभे[3] ॥

५५—गन्धे अतित्ते य परिग्गहे य
सत्तोवसत्तो न उवेइ तुट्ठिं ।
अतुट्ठिदोसेण दुही परस्स
लोभाविले आययई अदत्तं ॥

१—निच्च (वृ०, अ) ।
२—°वाए य (अ), °गंगग (वृ० पा०) ; °वाए ण (स) ।
३—अतित्त° (वृ०) अनिनि° (वृ० पा०) ।

५६—तण्हाभिभूयस्स अदत्तहारिणो
गन्धे अतित्तस्स परिग्गहे य ।
मायामुस वड्ढइ लोभदोसा
तत्थावि दुक्खा न विमुच्चई से ॥

५७—मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ य
पओगकाले य दुही दुरन्ते ।
एव अदत्ताणि समाययन्तो
गन्धे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो ॥

५८—गन्धाणुरत्तस्स नरस्स एव
कत्तो सुह होज्ज कयाइ किंचि ? ।
तत्थोवभोगे वि किलेसदुक्ख
निव्वत्तई जस्स कएण दुक्ख ॥

५९—एमेव गन्धम्मि गओ पओस
उवेइ दुक्खोहपरपराओ ।
पदुट्ठचित्तो य[1] चिणाइ कम्म
ज से पुणो होइ दुह विवागे ॥

६०—गन्धे विरत्तो मणुओ विसोगो
एएण दुक्खोहपरंपरेण ।
न लिप्पई भवमज्झे वि सन्तो
जलेण वा पोक्खरिणीपलास ॥

रस-पद

६१—जिहाए रस गहण वयन्ति
त रागहेउ तु मणुन्नमाहु ।
त दोसहेउ अमणुन्नमाहु
समो य जो तेसु स वीयरागो ॥

१—उ (अ) ।

६२–रसस्स जिब्भं[1] गहणं वयंति
जिब्भाए रसं गहणं वयंति ।
रागस्स हेउं समणुन्नमाहु
दोसस्स हेउं अमणुन्नमाहु ॥

६३–रसेसु[2] जो गिद्धिमुवेइ तिव्वं[3]
अकालियं पावइ से विणासं ।
रागाउरे बडिसविभिन्नकाए
मच्छे जहा आमिसभोगगिद्धे[4] ॥

६४–जे यावि दोसं समुवेइ तिव्वं[5]
तंसि क्खणे से उ उवेइ दुक्खं ।
दुद्दन्तदोसेण सएण जन्तू
रसं न किंचि[6] अवरज्झई से ॥

६५–एगन्तरत्ते रुइरे रसम्मि
अतालिसे से कुणई पओसं ।
दुक्खस्स संपीलमुवेइ बाले
न लिप्पई तेण मुणी विरागो ॥

६६–रसाणुगासाणुगए य जीवे
चराचरे हिंसइ ऽणेगरूवे ।
चित्तेहि ते परितावेइ बाले
पीलेइ अत्तट्ठगुरू किलिट्ठे ॥

१—जीहा (उ, ऋ) ।
२—रसस्स (अ, ऋ) ।
३—निच्चं (अ) ।
४—० लोभगिद्धे (अ) ।
५—निच्च (वृ०, अ) ।
६—न किंचि रस्स (अ) ।

७७—जे यावि दोस समुवेइ तिव्व[1]
तसि क्खणे से उ उवेइ दुक्खं ।
दुद्दन्तदोसेण सएण जन्तू
न किंचि फास अवरज्झई से ॥

७८—एगन्तरत्ते रुइरसि फासे
अतालिसे से कुणई पओस ।
दुक्खस्स संपीलमुवेइ बाले
न लिप्पई तेण मुणी विरागो ॥

७९—फासाणुगासाणुगए य जीवे
चराचरे हिंसइ ऽणेगरूवे ।
चित्तेहि ते परितावेइ बाले
पीलेइ अत्तट्ठगुरू किलिट्ठे ॥

८०—फासाणुवाएण[2] परिग्गहेण
उप्पायणे रक्खणसन्निओगे ।
वए विओगे य कहिं सुहं से ?
संभोगकाले य अतित्तिलाभे[3] ॥

८१—फासे अतित्ते य परिग्गहे य
सत्तोवसत्तो न उवेइ तुट्ठिं ।
अतुट्ठिदोसेण दुही परस्स
लोभाविले आययई अदत्त ॥

१—निच्चं (बृ० उ) ।
२—°वरए (उ) °रागेण (बृ० पा०) °वाएण (सु) ।
३—अतित्ति° (बृ०) अतित्ति° (बृ० पा०) ।

८२–तण्हाभिभूयस्स अदत्तहारिणो
फासे अतित्तस्स परिग्गहे य।
मायामुस वड्ढइ लोभदोसा
तत्थावि दुक्खा न विमुच्चई से॥

८३–मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ य
पओगकाले य दुही दुरन्ते।
एवं अदत्ताणि समाययन्तो
फासे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो॥

८४–फासाणुरत्तस्स नरस्स एव
कत्तो सुह होज्ज कयाइ किंचि?।
तत्थोवभोगे वि किलेसदुक्ख
निव्वत्तई जस्स कएण दुक्ख॥

८५–एमेव फासम्मि गओ पओस
उवेइ दुक्खोहपरपराओ।
पदुट्ठचित्तो य[1] चिणाइ कम्म
जं से पुणो होइ दुह विवागे॥

८६–फासे विरत्तो मणुओ विसोगो
एएण दुक्खोहपरपरेण।
न लिप्पई भवमज्झे वि सन्तो
जलेण वा पोक्खरिणीपलास॥

भाव-पदं

८७–मणस्स भाव गहण वयन्ति
तं रागहेउ तु मणुन्नमाहु।
त दोसहेउ अमणुन्नमाहु
समो य जो तेसु स वीयरागो॥

१–उ (अ)।

८८—भावस्स मण गहण वयन्ति
मणस्स भाव गहणं वयन्ति ।
रागस्स हेउ समणुन्नमाहु
दोसस्स हेउं अमणुन्नमाहु ॥

८९—भावेमु[1] जो गिद्धिमुवेइ तिव्वं[2]
अकालियं पावइ से विणास ।
रागाउरे कामगुणेसु गिद्धे
करेणुमग्गावहिए 'व नागे'[3] ॥

९०—जे यावि दोस समुवेइ तिव्वं[4]
तसि क्खणे से उ उवेइ दुक्खं ।
दुद्दन्तदोसेण सएण जन्तू
न किंचि भाव अवरज्भई से ॥

९१—एगन्तरत्ते रुइरसि भावे
अतालिसे से कुणई पओस ।
दुक्खस्स सपीलमुवेइ बाले
न लिप्पई तेण मुणी विरागो ॥

९२—भावाणुगासाणुगए य जीवे
चराचरे हिंसइ ऽणेगरूवे ।
चित्तेहि ते परितावेइ बाले
पीलेइ अत्तट्ठगुरू किलिट्ठे ॥

१—भावे (अ), भावम्म (ऋ)।
२—निच्चं (उ)।
३—नाग व्व (उ)।
४—निच्च (बृ०, उ)।

९३—भावाणुवाएण[1] परिग्गहेण
उप्पायणे रक्खणसन्निओगे ।
वए विओगे य कहिं सुहं से ?
सभोगकाले य अतित्तिलाभे[2] ॥

९४—भावे अतित्ते य परिग्गहे य
सत्तोवसत्तो न उवेइ तुट्ठिं ।
अतुट्ठिदोसेण दुही परस्स
लोभाविले आययई अदत्त ॥

९५—तण्हाभिभूयस्स अदत्तहारिणो
भावे अतित्तस्स परिग्गहे य ।
मायामुसं वड्ढइ लोभदोसा
तत्थावि दुक्खा न विमुच्चई से ॥

९६—मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ य
पओगकाले य दुही दुरन्ते ।
एव अदत्ताणि समाययन्तो
भावे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो ॥

९७—भावाणुरत्तस्स नरस्स एव
कत्तो सुहं होज्ज कयाइ किंचि ? ।
तत्थोवभोगे वि किलेसदुक्ख
निव्वत्तई जस्स कएण दुक्ख ॥

१—°वाए य (अ), °रागेण (बृ० पा०); °वाए ण (सु)।
२—अतित्त° (बृ०), अतित्ति° (बृ० पा०)।

९८–एमेव भावम्मि गओ पओस
उवेइ दुक्खोहपरंपराओ ।
पदुट्ठचित्तो य[1] चिणाइ कम्म
ज से पुणो होइ दुह विवागे ॥
९९–भावे विरत्तो मणुओ विसोगो
एएण दुक्खोहपरपरेण ।
न लिप्पई भवमज्झे वि सन्तो
जलेण वा पोक्खरिणीपलास ॥

निक्खेव-पद

१००–एविन्दियत्था य मणस्स अत्था
दुक्खस्स हेउ मणुयस्स रागिणो ।
ते चेव थोव पि कयाइ दुक्ख
न वीयरागस्स करेन्ति किंचि ॥
१०१–न कामभोगा समय उवेन्ति
न यावि भोगा विगइ उवेन्ति ।
जे तप्पओसी य परिग्गही य
सो तेसु मोहा विगइ उवेइ ॥
१०२–कोह च माण च तहेव माय
लोह दुगुछ अरइ रइ च ।
हास भय सोगपुमित्थिवेय
नपुसवेय विविहे य भावे ॥
१०३–आवज्जई एवमणेगरूवे
एवविहे कामगुणेसु सत्तो ।
अन्ने य एयप्पभवे विसेसे
कारुण्णदीणे हिरिमे वइस्से ॥

१–उ (उ)।

१०४–कप्पं न इच्छिज्ज सहायलिच्छू
पच्छाणुतावेय[1] तवप्पभावं।
एवं वियारे अमियप्पयारे
आवज्जई इन्दियचोरवस्से॥

१०५–तओ से जायन्ति पओयणाइं
निमज्जिउं मोहमहण्णवम्मि।
सुहेसिणो दुक्खविणोयणट्ठा[2]
तप्पच्चयं[3] उज्जमए य रागी॥

१०६–विरज्जमाणस्स य इन्दियत्था
सद्दाइया[4] तावइयप्पगारा।
न तस्स सव्वे वि मणुन्नयं वा
निव्वत्तयन्ती अमणुन्नयं वा॥

१०७–एवं ससंकप्पविकप्पणासु[5]
संजायई समयमुवट्ठियस्स।
'अत्थे य संकप्पयओ'[6] तओ से
पहीयए कामगुणेसु तण्हा॥

१०८–स वीयरागो कयसव्वकिच्चो
खवेइ नाणावरणं खणेणं।
तहेव जं दंसणमावरेइ
जं चऽन्तरायं पकरेइ कम्मं॥

१–पच्छाणुतावेण (सु)।
२–दुक्ख विमोयणाय (वृ० पा०)।
३–तप्पच्चया (वृ० पा०)।
४–वण्णाइया (वृ० पा०)।
५–° विकप्पणासो (वृ० पा०)।
६–अत्थे असंकप्पयतो (वृ० पा०)।

१०९—सव्वं तओ जाणइ पासए य
अमोहणे होइ निरन्तराए।
अणासवे झाणसमाहिजुत्ते
आउक्खए मोक्खमुवेइ सुद्धे ॥

११०—सो तस्स सव्वस्स दुहस्स मुक्को
जं बाहई सययं जन्तुमेयं।
दीहामयविप्पमुक्को पसत्थो
तो होइ अच्चन्तसुही कयत्थो ॥

१११—अणाइकालप्पभवस्स एसो
'सव्वस्स दुक्खस्स पमोक्खमग्गो'[1]।
वियाहिओ जं समुविच्च सत्ता
कमेण अच्चन्तसुही भवन्ति ॥

—त्ति बेमि ॥

*

१—[illegible]

तेतीसइमं अज्झयणं

कम्मपयडी

उक्खेव-पदं

१—अट्ठ कम्माइं वोच्छामि आणुपुव्विं जहक्कम[1] ।
जेहिं बद्धो अयं जीवो संसारे परिवत्तए[2] ॥

कम्म-पद

२—नाणस्सावरणिज्ज दंसणावरण तहा ।
वेयणिज्ज तहा मोह आउकम्मं तहेव य ॥
३—नामकम्म च गोयं च अन्तराय तहेव य ।
एवमेयाइ कम्माइं अट्ठेव उ समासओ ॥

पयडि-पदं

४—नाणावरण पचविहं सुय आभिणिबोहिय ।
ओहिनाणं तइयं मणनाण च केवल ॥
५—निद्दा तहेव पयला
निद्दानिद्दा य पयलपयला य ।
तत्तो य थीणगिद्धी उ
पचमा होइ नायव्वा ॥
६—चक्खुमचक्खुओहिस्स
दसणे केवले य आवरणे ।
एव[3] तु नवविगप्प
नायव्व दसणावरणं ॥

१—सुणेह मे (बृ० पा०) ।
२—परिभम्मए (बृ० पा०) ।
३—एय (अ) ।

७—वेयणीय पि य[1] दुविह
सायमसायं च आहियं।
सायस्स उ बहू भेया
एमेव असायस्स वि॥

८—मोहणिज्ज पि दुविह दसणे चरणे तहा।
दसणे तिविह वुत्त चरणे दुविह भवे॥

९—सम्मत्त चेव मिच्छत्त सम्मामिच्छत्तमेव य।
एयाओ तिन्नि पयडीओ मोहणिज्जस्स दसणे॥

१०—'चरित्तमोहण कम्म दुविह तु वियाहिय'[2]।
'कसायमोहणिज्ज' तु नोकसाय तहेव य॥

११—सोलसविहभेएण कम्म तु कसायज।
सत्तविह नवविह वा कम्म नोकसायज॥

१२—नेरइयतिरिक्खाउ मणुस्साउ तहेव य।
देवाउय चउत्थ तु[3] आउकम्म चउव्विह॥

१३—नाम कम्म तु दुविह सुहमसुह च आहियं[4]।

१६–एयाओ मूलपयडीओ उत्तराओ य आहिया ।
पएसग्गं खेत्तकाले य भाव चादुत्तरं सुण ॥

पएस-पदं

१७–सव्वेसिं चेव कम्माण पएसग्गमणन्तग ।
गण्ठियसत्ताईय[1] अन्तो सिद्धाण आहिय ॥

१८–सव्वजीवाण कम्म तु सगहे छद्दिसागय ।
सव्वेसु वि पएसेसु सव्व सव्वेण वद्धगं ॥

ठिइय-पद

१९–उदहीसरिनामाण तीसई कोडिकोडिओ ।
उक्कोसिया ठिई होइ अन्तोमुहुत्त जहन्निया ॥

२०–आवरणिज्जाण दुण्ह पि वेयणिज्जे तहेव य ।
अन्तराए य कम्मम्मि ठिई एसा वियाहिया ॥

२१–उदहीसरिनामाण सत्तरिं कोडिकोडिओ ।
मोहणिज्जस्स उक्कोसा अन्तोमुहुत्त जहन्निया ॥

२२–तेत्तीस सागरोवमा उक्कोसेण वियाहिया ।
ठिई उ आउकम्मस्स अन्तोमुहुत्त जहन्निया ॥

२३–उदहीसरिनामाण वीसई कोडिकोडिओ ।
नामगोत्ताण उक्कोसा अट्ठ मुहुत्ता जहन्निया ॥

अणुभाग-पद

२४–सिद्धाणऽणन्तभागो य[2] अणुभागा हवन्ति उ ।
सव्वेसु वि पएसग्ग सव्वजीवेसु ऽइच्छिय[3] ॥

१–गण्ठि सत्ताणाइ (वृ० पा०) ।
२–X (उ, ऋ) ।
३–त्त इच्छिय (उ, सु) . अहिच्छिय (स) ।

निक्खेव-पद

२५–तम्हा एएसि कम्माण अणुभागे वियाणिया।
एएसि संवरे चेव खवणे य जए बुहे॥

—त्ति बेमि॥

चउतीसइम अज्झयण

लेसज्झयणं

उक्खेव-पद

१—लेसज्झयण पवक्खामि आणुपुव्विं जहक्कम ।
छण्ह पि कम्मलेसाण अणुभावे सुणेह मे ॥

२—नामाइ वण्णरसगन्ध- फासपरिणामलक्खण ।
ठाण ठिइं गइ चाउ लेसाण तु सुणेह मे ॥

लेसा-पद

३—किण्हा नीला य काऊ य तेऊ पम्हा तहेव य ।
सुक्कलेसा य छट्ठा उ[1] नामाइ तु जहक्कम ॥

वण्ण-पद

४—जीमूयनिद्धसकासा गवलरिट्ठगसन्निभा ।
खंजणणनयणनिभा किण्हलेसा उ वण्णओ ॥

५—नीलाऽसोगसकासा चासपिच्छसमप्पभा ।
वेरुलियनिद्धसकासा नीललेसा उ वण्णओ ॥

६—अयसीपुप्फसकासा कोइलच्छदसन्निभा ।
पारेवयगीवनिभा काउलेसा उ वण्णओ ॥

७—हिंगुलुयधाउसकासा तरुणाइच्चसन्निभा[2] ।
सुयतुण्डपईवनिभा[3] तेउलेसा उ वण्णओ ॥

८—हरियालभेयसकासा हलिद्दाभेयसनिभा[4] ।
सणासणकुसुमनिभा पम्हलेसा उ[5] वण्णओ ॥

१—य (उ, ऋ) ।
२—°च्चावि° (वृ० पा०) ।
३—सुयतुडगसकासा, सुयतुण्डालत्तदीवाभा (वृ० पा०) ।
४—°सप्पभा (अ, आ इ) ।
५—य (ऋ) ।

९—संखककुन्दसकासा खीरपूरसमप्पभा[1] ।
रययहारसकासा सुक्कलेसा उ[2] वण्णओ ॥

रस-पद

१०—जह कडुयतुम्बगरसो
निम्बरसो कडुयरोहिणिरसो वा ।
एत्तो वि अणन्तगुणो
रसो उ[3] किण्हाए नायव्वो ॥

११—जह तिगडुयस्स य रसो
तिक्खो जह हत्थिपिप्पलीए वा ।
एत्तो वि अणन्तगुणो
रसो उ नीलाए नायव्वो ॥

१२—जह तरुणअम्बगरसो
तुवरकविट्ठस्स[4] वावि जारिसओ ।
एत्तो वि अणन्तगुणो
रसो उ काऊए नायव्वो ॥

१३—जहपरिणयम्बगरसो
पक्ककविट्ठस्स वावि जारिसओ ।
एत्तो वि अणन्तगुणो
रसो उ[5] तेऊए नायव्वो ॥

१—खीरतूल° (वृ०), खीरधार°, खीरपूर° (वृ० पा०)।
२, ३—य (क)।
४—तुदर° (अ), तुवरु° (उ), अट्ठ° (वृ० पा०)।
५—य (क)।

१४—वरवारुणीए व रसो
विविहाण व आसवाण जारिसओ ।
'महुमेरगस्स व रसो
एत्तो पम्हाए[1] परएण'[2] ॥

१५—खज्जूरमुद्दियरसो
खीररसो खण्डसक्कररसो वा ।
एत्तो वि अणन्तगुणो
रसो उ[3] सुक्काए नायव्वो ॥

गन्ध-पद

१६—जह गोमडस्स गन्धो
सुणगमडगस्स[4] व जहा अहिमडस्स ।
'एत्तो वि'[5] अणन्तगुणो
लेसाण अप्पसत्थाण ॥

१७—जह सुरहिकुसुमगन्धो
गन्धवासाण[6] पिस्समाणाण[7] ।
'एत्तो वि'[8] अणन्तगुणो
पसत्थलेसाण तिण्ह पि ॥

१—पम्हाउ (अ) ।
२—एत्तो वि अणत गुणो रसो उ पम्हाए नायव्वो (वृ० पा०) ।
३—य (ऋ) ।
४—° मडस्स (उ, ऋ) ।
५—एत्तोउ (अ), इत्तो वि (उ, ऋ) ।
६—गधाण य (वृ० पा०) ।
७—पिस्समाणेण (अ) ।
८—एतोउ (अ) इत्तो वि (उ, ऋ) ।

फास-पद

१८—जह करगयस्स फासो
गोजिब्भाए व सागपत्ताण।
एत्तो वि अणन्तगुणो
लेसाण अप्पसत्थाणं॥

१९—जह बूरस्स व फासो
नवणीयस्स व सिरीसकुसुमाण।
एत्तो वि अणन्तगुणो
पसत्थलेसाण तिण्ह पि॥

परिणाम-पद

२०—तिविहो व नवविहो वा
सत्तावीसइविहेक्कसीओ वा।
दुसओ तेयालो वा
लेसाण होइ परिणामो॥

२१—पचासवप्पवत्तो[1]
तीहिं अगुत्तो छसु अविरओ य।
'तिव्वारम्भपरिणओ
खुद्दो साहसिओ नरो'[2]॥

२२—'निद्धन्धसपरिणामो निस्ससो अजिइन्दिओ'[3]।
एयजोगसमाउत्तो किण्हलेसं तु परिणमे॥

१—०प्पमत्तो (बृ), ०प्पवत्तो (बृ० पा०)।
२—निद्धन्धसपरिणामो निस्संसो अजिइन्दिओ। (बृ० पा०)।
३—तिव्वारम्भपरिणओ खुद्दो साहसिओ नरो॥ (बृ० पा०)।

२३—इस्साअमरिसअतवो अविज्जमाया 'अहीरिया य'[1]।
गेद्धी पओसे य सढे पमत्ते[2] रसलोलुए साय गवेसए य ॥

२४—आरम्भाओ[3] अविरओ खुद्दो साहस्सिओ नरो।
एयजोगसमाउत्तो नीललेसं तु परिणमे ॥

२५—वके वकसमायारे नियडिल्ले अणुज्जुए।
पलिउचग ओवहिए मिच्छदिट्ठी अणारिए ॥

२६—उप्फालगदुट्ठवाई[4] य तेणे यावि य मच्छरी।
एयजोगसमाउत्तो काउलेस तु परिणमे ॥

२७—नीयावित्ती अचवले अमाई अकुऊहले।
विणीयविणए दन्ते जोगव उवहाणव ॥

२८—पियधम्मे दढधम्मे वज्जभीरू हिएसए[5]।
एयजोगसमाउत्तो तेउलेस तु परिणमे ॥

२९—पयणुक्कोहमाणे य मायालोभे य पयणुए।
पसन्तचित्ते दन्तप्पा जोगव उवहाणव ॥

३०—तहा पयणुवाई[6] य उवसन्ते जिइन्दिए।
एयजोगसमाउत्तो पम्हलेस तु परिणमे ॥

३१—अट्टरुद्दाणि वज्जित्ता धम्मसुक्काणि झायए[7]।
पसन्तचित्ते दन्तप्पा समिए गुत्ते य गुत्तिहिं ॥

१—अहीरियगयाय (अ)।
२—य मत्ते (वृ० पा०)।
३—आरम्भओ (अ), आरम्भा (उ, ऋ)।
४—उफालदुट्ठवाई (अ) उप्फालग° (उ) उप्फाडग° (ऋ)।
५ —हियासए अणासए (वृ० पा०)।
६— ° याइ (अ)।
७—साहए (वृ०, सु), झायए (वृ० पा०)।

३२—सरागे वीयरागे वा[1] उवसन्ते[2] जिइन्दिए।
एयजोगसमाउत्तो सुक्कलेसं तु परिणमे॥

ठाण-पद

३३—असंखिज्जाणोसप्पिणीण[3]
उस्सप्पिणीण जे समया।
संखाईया[4] लोगा
लेसाण हुन्ति ठाणाइं॥

ठिइ-पद

३४—'मुहुत्तद्धं तु'[5] जहन्ना
तेत्तीस सागरा मुहुत्तऽहिया।
उक्कोसा होइ ठिई
नायव्वा किण्हलेसाए॥

३५—'मुहुत्तद्धं तु'[6] जहन्ना
दस उदही पलियमसंखभागमब्भहिया।
उक्कोसा होइ ठिई
नायव्वा नीललेसाए॥

३६—'मुहुत्तद्धं तु'[7] जहन्ना
तिण्णुदही पलियमसंखभागमब्भहिया।
उक्कोसा होइ ठिई
नायव्वा काउलेसाए॥

१—य (अ)।
२—[illegible] (बृ० पा०)।
३—[illegible] ओसप्पिणीण (अ)।
४—[illegible] (बृ० पा०)।
५—[illegible] (बृ० पा०)।
६—[illegible] (बृ० पा०)।
७—[illegible] (बृ० पा०)।

३७–'मुहुत्तद्धं तु'[1] जहन्ना
दोउदही पलियमसंखभागमब्भहिया ।
उक्कोसा होइ ठिई
नायव्वा तेउलेसाए ॥

३८–'मुहुत्तद्धं तु'[2] जहन्ना
दस 'होन्ति सागरा मुहुत्ताहिया'[3]।
उक्कोसा होइ ठिई
नायव्वा पम्हलेसाए ॥

३९–'मुहुत्तद्ध तु'[4] जहन्ना
तेत्तीसं सागरा मुहुत्तहिया ।
उक्कोसा होइ ठिई
नायव्वा सुक्कलेसाए ॥

४०–एसा खलु लेसाणं
ओहेण ठिई उ वण्णिया होइ ।
चउसु वि गईसु एत्तो
लेसाण ठिइं तु वोच्छामि ॥

४१–दस वाससहस्साइं
काऊए ठिई जहन्निया होइ ।
'तिण्णुदही 'पलिओवम
असंखभाग'[5] च उक्कोसा'[6] ॥

१—मुहुत्तद्धा उ (वृ० पा०) ।
२—मुहुत्तद्धा उ (वृ० पा०) ।
३—उदही हुंति मुहुत्तमब्भहिया (उ, ऋ) ।
४—मुहुत्तद्धा उ (वृ० पा०) ।
५—पलियमसंख भाग (सु) , पलियमसंखेज्ज भाग (वृ०) ।
६—उक्कोसा तिन्नुदही पलियमसंखेज्जभागमहिय (वृ० पा०) ।

४२–तिण्णुदही पलिय-
मसखभागा जहन्नेण नीलठिई ।
दस उदही 'पलिओवम
असखभाग'[1] च उक्कोसा ॥

४३–'दस उदही 'पलिय-
मसखभाग'[2] जहन्निया होइ ।
तेत्तीससागराइ उक्कोसा
होइ किण्हाए ॥'[3]

४४–एसा नेरइयाण
लेसाण ठिई उ वण्णिया होइ ।
तेण पर वोच्छामि
तिरियमणुस्साण देवाणं ॥

४५–अन्तोमुहुत्तमद्ध
लेसाण ठिई जहिं जहिं जा उ ।
तिरियाण नराण वा
वज्जित्ता केवल लेस ॥

४६–मुहुत्तद्ध तु जहन्ना
उक्कोसा होइ पुव्वकोडी उ ।
नवहि वरिसेहि ऊणा
नायव्वा सुक्कलेसाए ॥

) ॥

४७—एसा तिरियनराणं
लेसाण ठिई उ वण्णिया होइ ।
तेण परं वोच्छामि
लेसाण ठिई उ देवाणं ॥

४८—दस वाससहस्साइं
किण्हाए ठिई जहन्निया होइ ।
पलियमसंखिज्जइमो
उक्कोसा होइ किण्हाए ॥

४९—जा किण्हाए ठिई खलु
उक्कोसा सा उ समयमब्भहिया ।
जहन्नेणं नीलाए
'पलियमसंखं तु'[1] उक्कोसा ॥

५०—जा नीलाए ठिई खलु
उक्कोसा सा उ समयमब्भहिया ।
जहन्नेणं काऊए
पलियमसंखं च उक्कोसा ॥

५१—तेण परं वोच्छामि
तेउलेसा जहा सुरगणाणं ।
भवणवइवाणमन्तर-
जोइसवेमाणियाणं च ॥

१—पलियमसंखं च (उ, ऋ), पलियमसंखिज्ज (वृ०)।

४२–तिण्णुदही पलिय-
मसखभागा जहन्नेण नीलठिई ।
दस उदही 'पलिओवम
असखभाग'[1] च उक्कोसा ॥

४३–'दस उदही 'पलिय-
मसखभाग'[2] जहन्निया होइ ।
तेत्तीससागराइ उक्कोसा
होइ किण्हाए ॥'[3]

४४–एसा नेरइयाण
लेसाण ठिई उ वण्णिया होइ ।
तेण पर वोच्छामि
तिरियमणुस्साण देवाणं ॥

४५–अन्तोमुहुत्तमद्ध
लेसाण ठिई जहिं जहिं जा उ ।
तिरियाण नराण वा
वज्जित्ता केवल लेस ॥

४६–मुहुत्तद्ध तु जहन्ना
उक्कोसा होइ पुव्वकोडी उ ।
नवहि वरिसेहि ऊणा
नायव्वा सुक्कलेसाए ॥

४७—एसा तिरियनराणं
लेसाण ठिई उ वण्णिया होइ ।
तेण परं वोच्छामि
लेसाण ठिई उ देवाणं ॥

४८—दस वाससहस्साइ
किण्हाए ठिई जहन्निया होइ ।
पलियमसंखिज्जइमो
उक्कोसा होइ किण्हाए ॥

४९—जा किण्हाए ठिई खलु
उक्कोसा सा उ समयमब्भहिया ।
जहन्नेणं नीलाए
'पलियमसंख तु'[१] उक्कोसा ॥

५०—जा नीलाए ठिई खलु
उक्कोसा सा उ समयमब्भहिया ।
जहन्नेणं काऊए
पलियमसंखं च उक्कोसा ॥

५१—तेण पर वोच्छामि
तेउलेसा जहा सुरगणाणं ।
भवणवइवाणमन्तर-
जोइसवेमाणियाणं च ॥

१—पलियमसखं च (उ, ऋ), पलियमसखिज्ज (वृ०) ।

५२–पलिओवम[1] जहन्ना
उक्कोसा सागरा उ दुण्हऽहिया[2] ।
पलियमसखेज्जेण
होई भागेण[3] तेऊए ॥

५३–दस वाससहस्साइ
तेऊए ठिई जहन्निया होइ ।
दुण्णुदही पलिओवम
असखभाग च उक्कोसा ॥

५४–जा तेऊए ठिई खलु
उक्कोसा सा उ समयमब्भहिया ।
जहन्नेण पम्हाए दस उ
मुहुत्तऽहियाइ च उक्कोसा ॥

धम्मलेसा-पदं

५७—तेऊ पम्हा सुक्का
तिन्नि वि एयाओ धम्मलेसाओ।
एयाहि तिहि वि जीवो
सुग्गइं उववज्जई वहुसो[1] ॥

उववात-पद

५८—लेसाहिं सव्वाहि
पढमे समयम्मि परिणयाहिं तु।
'न वि कस्सवि उववाओ'[2]
परे भवे अत्थि[3] जीवस्स ॥

५९—लेसाहिं सव्वाहिं
चरमे समयम्मि परिणयाहिं तु।
'न वि कस्सवि उववाओ'[4]
परे भवे अत्थि[5] जीवस्स ॥

६०—अन्तमुहुत्तम्मि गए
अन्तमुहुत्तम्मि सेसए चेव।
लेसाहिं परिणयाहिं
जीवा गच्छन्ति परलोय ॥

१—× (उ, ऋ)।
२—न हु कस्सवि उववत्ति (वृ०)।
न वि° (वृ० पा०), न हु° (उ, ऋ, सु)।
३—भवइ (वृ०, सु)।
४—न हु कस्सवि उववत्ति (वृ०)।
५—भवइ (वृ०, सु)।

पणतीसइमं अज्झयण

अणगारमग्गगई

१—सुणेह 'मे एगग्गमणा'[1] मग्ग वुद्धेहि देसिय ।
जमायरन्तो भिक्खू दुक्खाणन्तकरो भवे ॥

२—गिहवास परिच्चज्ज पवज्जअस्सिओ[2] मुणी ।
इमे सगे वियाणिज्जा[3] जेहिं सज्जन्ति माणवा ॥

३—तहेव हिंस अलिय चोज्ज अवम्भसेवण ।
इच्छाकाम च लोभ च सजओ परिवज्जए ॥

४—मणोहर चित्तहर मल्लधूवेण वासिय ।
सकवाड पण्डुरुल्लोय मणसा वि न पत्थए ॥

५—इन्दियाणि उ भिक्खुस्स तारिसम्मि उवस्सए ।
दुक्कराइ निवारेउ[4] कामरागविवड्ढणे ॥

६—सुसाणे सुन्नगारे वा रुक्खमूले व एक्कओ[5] ।
पइरिक्के[6] परकडे वा वास तत्थऽभिरोयए ॥

७—फासुयम्मि अणावाहे इत्थीहिं अणभिद्दुए ।
तत्थ सकप्पए वास भिक्खू परमसजए ॥

८—न सय गिहाइ कुज्जा णेव अन्नेहिं कारए ।
गिहकम्मसमारम्भे भूयाण दीसई वहो ॥

१—मे एगग्गमणा (उ, ऋ) ।
२—पवज्जामस्सिए (उ, ऋ) ।
३—वियाणेत्ता (अ) ।
४—उ धारेउ (वृ०) , निवारेउ (वृ० पा०) ।
५—एगओ (उ, ऋ) एगया (वृ०) एकतो (वृ० पा०) ।
६—परक्के (वृ०) , पइरिक्के (वृ० पा०) ।

९–तसाण थावराण च सुहुमाण बायराण य ।
तम्हा गिहसमारम्भं सजओ परिवज्जए ॥
१०–तहेव भत्तपाणेसु पयण[1] पयावणेसु य ।
पाणभूयदयट्ठाए न पये न पयावए ॥
११–जलधन्ननिस्सिया जीवा[2] पुढवीकट्ठनिस्सिया[3] ।
हम्मन्ति भत्तपाणेसु तम्हा भिक्खू न पायए ॥
१२–विसप्पे सव्वओधारे बहुपाणविणासणे ।
नत्थि जोइसमे सत्थे तम्हा जोइ न दीवए ॥
१३–हिरण्ण जायरूव च मणसा वि न पत्थए ।
समलेट्ठुकचणे भिक्खू विरए कयविक्कए ॥
१४–किणन्तो कइओ होइ विक्किणन्तो य वाणिओ ।
कयविक्कयम्मि वट्टन्तो भिक्खू न भवइ तारिसो ॥
१५–भिक्खियव्व न केयव्व भिक्खुणा भिक्खवत्तिणा ।
कयविक्कओ महादोसो भिक्खावत्ती[4] सुहावहा ॥
१६–समुयाण उञ्छमेसिज्जा जहासुत्तमणिन्दिय ।
लाभालाभम्मि सतुट्ठे पिण्डवाय 'चरे मुणी'[5] ॥
१७–अलोले न रसे गिद्धे जिब्भादन्ते अमुच्छिए ।
न रसट्ठाए भुजिज्जा जवणट्ठाए महामुणी ॥
१८–अच्चण रयण चेव वन्दण पूयण तहा ।
इड्ढीसक्कारसम्माण मणसा वि न पत्थए ॥

१९—सुक्कझाण झियाएज्जा अणियाणे अकिचणे ।
वोसट्ठकाए विहरेज्जा जाव कालस्स पज्जओ ॥

२०—निज्जूहिऊण आहार कालधम्मे उवट्ठिए ।
जहिऊण[1] माणुस बोन्दि पहू दुक्खे विमुच्चई ॥

२१—निम्ममो निरहकारो वीयरागो अणासवो[2] ।
सपत्तो केवल नाण सासय परिणिव्वुए ॥

—त्ति बेमि ॥

*

१—चइऊण (उ, ऋ) ।
२—निरासवे (चू०) ।

छत्तीसइम अज्झयण

जीवाजीवविभत्ती

उक्खेव-पद

१—जीवाजीवविभत्तिं 'सुणेह मे'[1] एगमणा इओ।
जं जाणिऊण समणे[2] सम्मं जयइ संजमे॥

लोकालोक-पद

२—जीवा चेव अजीवा य एस लोए वियाहिए।
अजीवदेसमागासे अलोए से वियाहिए॥
३—दव्वओ खेत्तओ चेव कालओ भावओ तहा।
परूवणा तेसि भवे जीवाणमजीवाण य॥
४—रूविणो चेवऽरूवी य अजीवा दुविहा भवे।
अरूवी दसहा वुत्ता रूविणो वि चउव्विहा॥

अरूवि-अजीव-पद

५—धम्मत्थिकाए तद्देसे तप्पएसे य आहिए।
अहम्मे तस्स देसे य तप्पएसे य आहिए॥
६—आगासे तस्स देसे य तप्पएसे य आहिए।
अद्धासमए चेव अरूवी दसहा भवे॥
७—धम्माधम्मे य दोऽवेए[3] लोगमित्ता वियाहिया।
लोगालोगे य आगासे समए समयखेत्तिए॥
८—धम्माधम्मागासा तिन्नि वि एए अणाइया।
अपज्जवसिया चेव सव्वद्धं तु वियाहिया॥

१—मे सुणेह (बृ०)।
२—भिक्खू (उ ऋ बृ०), समणो (बृ० पा०)।
३—दोच्चेए (उ), दो वेय (ऋ)।

९—'समए वि सन्तइ पप्प एवमेव'[1] वियाहिए।
आएस पप्प साईए सपज्जवसिए वि य॥

रूवि अजीव-पद

१०—खन्धा य खन्धदेसा य तप्पएसा तहेव य।
परमाणुणो य बोद्धव्वा रूविणो य चउव्विहा॥
११—एगत्तेण पुहत्तेण खन्धा य परमाणुणो।
लोएगदेसे लोए य भइयव्वा ते उ खेत्तओ॥
इत्तो कालविभाग तु तेसि वुच्छं चउव्विह॥
१२—संतइ पप्प तेऽणाई अपज्जवसिया वि य।
ठिइ पडुच्च साईया सपज्जवसिया वि य॥
१३—असखकालमुक्कोस 'एग समय जहन्निया'[2]।
अजीवाण[3] य रूवीण ठिई एसा वियाहिया॥
१४—अणन्तकालमुक्कोस एग समय जहन्नय।
अजीवाण[3] य रूवीण अन्तरेय वियाहिय॥
१५—वण्णओ गन्धओ चेव रसओ फासओ तहा।
सठाणओ य विन्नेओ परिणामो तेसि पचहा॥
१६—वण्णओ परिणया जे उ पचहा ते पकित्तिया।
किण्हा नीला य लोहिया हालिद्दा सुक्किला तहा॥
१७—गन्धओ परिणया जे उ दुविहा ते वियाहिया।
सुब्भिगन्धपरिणामा दुब्भिगन्धा तहेव य॥
१८—रसओ परिणया जे उ पचहा ते पकित्तिया।
तित्तकडुयकसाया अम्बिला महुरा तहा॥

१९—फासओ परिणया जे उ अट्ठहा ते पकित्तिया ।
कक्खडा मउया चेव गरुया लहुया तहा ॥

२०—सीया उण्हा य निद्धा य तहा लुक्खा य आहिया ।
इइ फासपरिणया एए पुग्गला समुदाहिया ॥

२१—सठाणपरिणया जे उ पचहा ते पकित्तिया ।
परिमण्डला 'य वट्टा'[1] तसा चउरसमायया ॥

२२—वण्णओ जे भवे किण्हे भइए से उ गन्धओ ।
रसओ फासओ चेव भइए सठाणओ वि य ॥

२३—वण्णओ जे भवे नीले भइए से उ गन्धओ ।
रसओ फासओ चेव भइए सठाणओ वि य ॥

२४—वण्णओ लोहिए जे उ भइए से उ गन्धओ ।
रसओ फासओ चेव भइए सठाणओ वि य ॥

२५—वण्णओ पीयए जे उ भइए से उ गन्धओ ।
रसओ फासओ चेव भइए सठाणओ वि य ॥

२६—वण्णओ सुक्किले जे उ भइए से उ गन्धओ ।
रसओ फासओ चेव भइए संठाणओ वि य ॥

२७—गन्धओ जे भवे सुब्भी भइए से उ वण्णओ ।
रसओ फासओ चेव भइए सठाणओ वि य ॥

२८—गन्धओ जे भवे दुब्भी भइए से उ वण्णओ ।
रसओ फासओ चेव भइए सठाणओ वि य ॥

२९—रसओ तित्तए जे उ भइए से उ वण्णओ ।
गन्धओ फासओ चेव भइए सठाणओ वि य ॥

१—वट्टा य (क) ।

३०—रसओ कडुए जे उ भइए से उ वण्णओ।
गन्धओ फासओ चेव भइए संठाणओ वि य॥

३१—रसओ कसाए जे उ भइए से उ वण्णओ।
गन्धओ फासओ चेव भइए सठाणओ वि य॥

३२—रसओ अम्बिले जे उ भइए से उ वण्णओ।
गन्धओ फासओ चेव भइए सठाणओ वि य॥

३३—रसओ महुरए जे उ भइए से उ वण्णओ।
गन्धओ फासओ चेव भइए सठाणओ वि य॥

३४—फासओ कक्खडे जे उ भइए से उ वण्णओ।
गन्धओ रसओ चेव भइए सठाणओ वि य॥

३५—फासओ मउए जे उ भइए से उ वण्णओ।
गन्धओ रसओ चेव भइए सठाणओ वि य॥

३६—फासओ गुरुए जे उ भइए से उ वण्णओ।
गन्धओ रसओ चेव भइए सठाणओ वि य॥

३७—फासओ लहुए जे उ भइए से उ वण्णओ।
गन्धओ रसओ चेव भइए सठाणओ वि य॥

३८—फासओ सीयए जे उ भइए से उ वण्णओ।
गन्धओ रसओ चेव भइए सठाणओ वि य॥

३९—फासओ उण्हए जे उ भइए से उ वण्णओ।
गन्धओ रसओ चेव भइए सठाणओ वि य॥

४०—फासओ निद्धए जे उ भइए से उ वण्णओ।
गन्धओ रसओ चेव भइए सठाणओ वि य॥

४१—फासओ लुक्खए जे उ भइए से उ वण्णओ
गन्धओ रसओ चेव भइए संठाणओ वि

४२–परिमण्डलसंठाणे भइए से उ वण्णओ।
गन्धओ रसओ चेव भइए फासओ वि य॥

४३–सठाणओ भवे वट्टे भइए से उ वण्णओ।
गन्धओ रसओ चेव भइए फासओ वि य॥

४४–सठाणओ भवे तसे भइए से उ वण्णओ।
गन्धओ रसओ चेव भइए फासओ वि य॥

४५–सठाणओ य चउरसे भइए से उ वण्णओ।
गन्धओ रसओ चेव भइए फासओ वि य॥

४६–जे आययसठाणे भइए से उ वण्णओ।
गन्धओ रसओ चेव भइए फासओ वि य॥

४७–एसा अजीवविभत्ती समासेण वियाहिया।
इत्तो जीवविभत्तिं वुच्छामि अणुपुव्वसो॥

जीव-पद

४८–संसारत्था य सिद्धा य दुविहा जीवा वियाहिया[1]।
सिद्धा णेगविहा वुत्ता[2] तं मे कित्तयओ सुण॥

सिद्धजीव-पद

४९–इत्थी पुरिससिद्धा य तहेव य नपुंसगा।
सलिंगे अन्नलिंगे य गिहिलिंगे तहेव य॥

५०–उक्कोसोगाहणाए य जहन्नमज्झिमाइ य।
उड्ढं अहे य तिरियं च समुद्दम्मि जलम्मि य॥

५१–दस चेव नपुंसेसु[3] वीसं इत्थियासु य।
पुरिसेसु य अट्ठसयं समएणेगेण सिज्झई॥

१–[illegible]
२–[illegible]
३–[illegible]

५२—चत्तारि य गिहिलिंगे अन्नलिंगे दसेव य।
सलिंगेण य अट्ठसयं समएणेगेण सिज्झई॥
५३—उक्कोसोगाहणाए य सिज्झन्ते जुगवं दुवे।
चत्तारि जहन्नाए जवमज्झऽट्ठुत्तरं[1] सयं॥
५४—'चउरुड्ढलोए य दुवे समुद्दे
तओ जले वीसमहे तहेव[2]।
सयं च अट्ठुत्तर तिरियलोए
समएणेगेण उ 'सिज्झई उ'[3]॥'[4]
५५—कहिं पडिहया सिद्धा? कहिं सिद्धा पइट्ठिया?।
कहिं बोन्दि चइत्ताणं? कत्थ गन्तूण सिज्झई?॥
५६—अलोए पडिहया सिद्धा लोयग्गे य पइट्ठिया।
इहं बोन्दिं चइत्ताणं तत्थ गन्तूण सिज्झई॥
५७—बारसहिं जोयणेहिं सव्वट्ठस्सुवरिं भवे।
ईसीपब्भारनामा उ[5] पुढवी छत्तसंठिया॥
५८—पणयालसयसहस्सा जोयणाणं तु आयया।
तावइयं चेव वित्थिण्णा 'तिगुणो तस्सेव परिरओ'[6]॥
५९—अट्ठजोयणबाहल्ला सा मज्झम्मि वियाहिया।
परिहायन्ती चरिमन्ते मच्छियपत्ता तणुयरी॥

१—मज्झे अट्ठुत्तर (अ)।
२—तहेव य (अ)।
३—सिज्झइ धुव (उ, ऋ)।
४—चउरो उड्ढलोगम्मि वीसपहुत्त अहे भवे।
सय अट्ठोत्तर तिरिए एग समएण सिज्झइ॥
दुवे समुद्दे सिज्झंति सेस जलेसु तओ जणा।
एसा हु सिज्झणा भणिया पुव्वभावं पडुच्च उ॥ (वृ० पा०)।
५—× (उ, ऋ)।
६—तिउणो साहिय परिरय (वृ० पा०)।

६०–अज्जुणसुवण्णगमई
सा पुढवी निम्मला सहावेणं।
उत्ताणगछत्तगसंठिया य
भणिया जिणवरेहिं॥

६१–संखंककुन्दसंकासा पण्डुरा निम्मला सुहा।
सीयाए जोयणे तत्तो लोयन्तो उ वियाहिओ॥

६२–जोयणस्स उ जो तस्स[1] कोसो उवरिमो भवे।
'तस्स कोसस्स छब्भाए सिद्धाणोगाहणा भवे'[2]॥

६३–तत्थ सिद्धा महाभागा लोयग्गम्मि पइट्ठिया[3]।
भवप्पवंच उम्मुक्का सिद्धिं वरगइं गया॥

६४–उस्सेहो जस्स जो होइ भवम्मि चरिमम्मि उ[4]।
तिभागहीणा तत्तो य सिद्धाणोगाहणा भवे॥

६५–एगत्तेण साईया अपज्जवसिया वि य।
पुहुत्तेण अणाईया अपज्जवसिया वि य॥

६६–अरूविणो जीवघणा नाणदंसणसन्निया।
अउलं सुहं संपत्ता उवमा जस्स नत्थि उ॥

६७–लोएगदेसे[1] ते सव्वे नाणदंसणसन्निया।
संसारपारनिच्छिन्ना सिद्धिं वरगइं गया॥

संसारत्थजीव-पद

६८–संसारत्था उ जे जीवा दुविहा ते वियाहिया।
तसा य थावरा चेव थावरा तिविहा तहिं॥

६९—पुढवी आउजीवा य तहेव य वणस्सई ।
इच्चेए थावरा तिविहा तेसिं भेए सुणेह मे ॥

पुढवि-पद

७०—दुविहा पुढवीजीवा उ सुहुमा बायरा तहा ।
पज्जत्तमपज्जत्ता एवमेए[1] दुहा पुणो ॥

७१—बायरा जे उ पज्जत्ता दुविहा ते वियाहिया ।
सण्हा खरा य बोद्धव्वा सण्हा सत्तविहा तहिं ॥

७२—किण्हा नीला य रुहिरा य[2]
हालिद्दा सुक्किला तहा ।
पण्डुपणगमट्टिया
खरा छत्तीसईविहा ॥

७३—पुढवी य सक्करा वालुया य
उवले सिला य लोणूसे ।
'अयतम्बतउय'[3]-सीसग-
रुप्पसुवण्णे य वइरे य ॥

७४—हरियाले हिंगुलुए
मणोसिला सासगंजणपवाले ।
अब्भपडलऽब्भवालुय
वायरकाए मणिविहाणा ॥

१—एगमेगे (वृ० पा०) ।
२—× (अ) ।
३—अयद तउ य (अ) ; अय तउय तम्ब (उ, ऋ) ।

आउ-पद

८४—दुविहा आउजीवा उ सुहुमा बायरा तहा ।
पज्जत्तमपज्जत्ता एवमेए दुहा पुणो ॥
८५—बायरा जे उ पज्जत्ता पचहा ते पकित्तिया ।
सुद्धोदए य उस्से हरतणू महिया हिमे ॥
८६—एगविहमणाणत्ता सुहुमा तत्थ वियाहिया ।
सुहुमा सव्वलोगम्मि लोगदेसे य बायरा ॥
८७—सन्तइ पप्पऽणाईया[1] अपज्जवसिया वि य ।
ठिइ पडुच्च साईया सपज्जवसिया वि य ॥
८८—सत्तेव सहस्साइं वासाणुक्कोसिया भवे ।
आउट्ठिई आऊणं अन्तोमुहुत्तं जहन्निया[2] ॥
८९—असखकालमुक्कोसं अन्तोमुहुत्त जहन्निया ।
कायट्ठिई आऊण त कायं तु अमुचओ ॥
९०—अणन्तकालमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ।
विजढमि सए काए आऊजीवाण अन्तर ॥
९१—एएसिं वण्णओ चेव गन्धओ रसफासओ ।
सठाणादेसओ वावि विहाणाइ सहस्ससो ॥

वणस्सई-पद

९२—दुविहा वणस्सईजीवा सुहुमा वायरा तहा ।
पज्जत्तमपज्जत्ता एवमेए[3] दुहा पुणो ॥
९३—वायरा जे उ पज्जत्ता दुविहा ते वियाहिया ।
साहारणसरीरा य पत्तेगा य तहेव य ॥

१—°तेणाई (अ)।
२—जहन्नगा (अ)।
३—एवमेव (अ)।

९४–'पत्तेगसरीरा उ णेगहा ते पकित्तिया'[1]।
रुक्खा गुच्छा य गुम्मा य लया वल्ली तणा तहा॥

९५–लयावलया[2] पव्वगा[3] कुहुणा
जलरुहा ओसहीतिणा[4]।
हरियकाया य बोद्धव्वा
पत्तेया इति आहिया॥

९६–साहारणसरीरा उ णेगहा ते पकित्तिया।
आलुए मूलए चेव सिंगबेरे तहेव य॥

९७–हिरिली सिरिली सिस्सिरिली
जावई केदकन्दली[5]।
पलण्डूलसणकन्दे य
कन्दली य कुडुवए[6]॥

९८–लोहि णीहू य थिहू य कुहगा य तहेव य।
कण्हे य वज्जकन्दे य कन्दे सूरणए[7] तहा॥

९९–अस्सकण्णी य बोद्धव्वा सीहकण्णी तहेव य।
मुसुण्ढी य हलिद्दा य णेगहा एवमायओ॥

१००–एगविहमणाणत्ता सुहुमा तत्थ वियाहिया।
सुहुमा सव्वलोगम्मि लोगदेसे य बायरा॥

१०१—संतइं पप्पऽणाईया[1] अपज्जवसिया वि य ।
ठिइं पडुच्च साईया सपज्जवसिया वि य ॥

१०२—दस चेव सहस्साइं वासाणुक्कोसिया भवे ।
वणप्फईण[2] आउं तु अन्तोमुहुत्तं जहन्नगं ॥

१०३—अणन्तकालमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ।
कायठिई पणगाणं तं कायं तु अमुंचओ ॥

१०४—असंखकालमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ।
विजढंमि सए काए पणगजीवाण अन्तरं ॥

१०५—एएसिं वण्णओ चेव गन्धओ रसफासओ ।
संठाणादेसओ वावि विहाणाइं सहस्ससो ॥

१०६—इच्चेए थावरा तिविहा समासेण वियाहिया ।
इत्तो उ तसे तिविहे वुच्छामि अणुपुव्वसो ॥

१०७—तेऊ वाऊ य बोद्धव्वा उराला य तसा तहा ।
इच्चेए तसा तिविहा तेसिं भेए सुणेह मे ॥

तेउ-पद

१०८—दुविहा तेउजीवा उ सुहुमा बायरा तहा ।
पज्जत्तमपज्जत्ता एवमेए दुहा पुणो ॥

१०९—बायरा जे उ पज्जत्ता णेगहा ते वियाहिया ।
इंगाले मुम्मुरे अगणी अच्चि जाला तहेव य ॥

११०—उक्का विज्जू य बोद्धव्वा णेगहा एवमायओ ।
एगविहमणाणत्ता सुहुमा ते वियाहिया ॥

१११—सुहुमा सव्वलोगम्मि लोगदेसे[3] य बायरा ।
इत्तो कालविभागं तु तेसिं वुच्छं चउव्विहं ॥

१—°ठिईं (उ)।

२—[illegible]ईण (उ ऋ दृ०), [illegible]ईण (बृ० पा०)

३—[illegible]देसे (उ)।

१३२—वासाइं वारसे व उ उक्कोसेण वियाहिया।
वेइन्दियआउठिई अन्तोमुहुत्तं जहन्निया॥

१३३—सखिज्जकालमुक्कोसं अन्तोमुहुत्त जहन्नयं[1]।
वेइन्दियकायठिई त कायं तु अमुचओ॥

१३४—अणन्तकालमुक्कोस अन्तोमुहुत्त जहन्नयं।
वेइन्दियजीवाणं अन्तरेयं[2] वियाहियं॥

१३५—एएसिं वण्णओ चेव गन्धओ रसफासओ।
सठाणादेसओ वावि विहाणाइं सहस्ससो॥

तेइन्दिय-पद

१३६—तेइन्दिया उ जे जीवा दुविहा ते पकित्तिया।
पज्जत्तमपज्जत्ता तेसिं भेए सुणेह मे॥

१३७—कुन्थुपिवीलिउड्डसा उक्कलुद्देहिया तहा।
तणहारकट्ठहारा मालुगा पत्तहारगा॥

१३८—कप्पासऽट्ठिमिजा य तिंदुगा तउसमिंजगा।
सदावरी य गुम्मी य बोद्धव्वा इन्दकाइया॥

१३९—इन्दगोवगमाईया णेगहा एवमायओ।
लोगेगदेसे ते सव्वे न सव्वत्थ वियाहिया॥

१४०—संतइं पप्पणाईया अपज्जवसिया वि य।
ठिइं पडुच्च साईया सपज्जवसिया वि य॥

१२३—असखकालमुक्कोस अन्तोमुहुत्त जहन्नय ।
कायट्ठिई वाऊणं त काय तु अमुचओ ॥

१२४—अणन्तकालमुक्कोस अन्तोमुहुत्त जहन्नय ।
विजढमि सए काए वाउजीवाण अन्तर ॥

१२५—एएसिं वण्णओ चेव गन्धओ रसफासओ ।
सठाणादेसओ वावि विहाणाइ सहस्ससो ॥

१२६—ओराला तसा जे उ चउहा[1] ते पकित्तिया ।
वेइन्दियतेइन्दिय- चउरोपचिन्दिया चेव ॥

वेइन्दिय-पद

१२७—वेइन्दिया उ[2] जे जीवा दुविहा ते पकित्तिया ।
पज्जत्तमपज्जत्ता तेसिं भेए सुणेह मे ॥

१२८—किमिणो सोमगला चेव अलसा माइवाहया ।
वासीमुहा य सिप्पीया[3] सखा सखणगा[4] तहा ॥

१२९—पल्लोयाणुल्लया[5] चेव तहेव य वराडगा ।
जलूगा जालगा चेव चन्दणा य तहेव य ॥

१३०—इइ वेइन्दिया एए णेगहा एवमायओ ।
लोगेगदेसे ते सव्वे न सव्वत्थ वियाहिया ॥[6]

१३१—सतइ पप्पऽणाईया अपज्जवसिया वि य ।
ठिइ पडुच्च साईया सपज्जवसिया वि य ॥

१—चउव्विहा (ऋ) ।
२—य (अ, ऋ) ।
३—सप्पीया (आ, इ, ऋ) ।
४—सखलगा (अ) ; सखाणगा (उ) ।
५—पल्लोया° (आ), उल्लोया° (ऋ) ।
६—इस श्लोक के बाद इतना और है —
एगो काल विभाग तु तेसि वुच्छ चउव्विह ॥ (उ) ।

११२—संतइं पप्पऽणाईया अपज्जवसिया वि य।
ठिइं पडुच्च साईया सपज्जवसिया वि य॥
११३—तिण्णेव अहोरत्ता उक्कोसेण वियाहिया।
आउट्ठिई तेऊणं अन्तोमुहुत्तं जहन्निया॥
११४—असंखकालमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं।
कायट्ठिई तेऊणं तं कायं तु अमुंचओ॥
११५—अणन्तकालमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं।
विजढंमि सए काए तेउजीवाण अन्तरं॥
११६—एएसिं वण्णओ चेव गन्धओ रसफासओ।
संठाणादेसओ वावि विहाणाइं सहस्ससो॥

वाउ-पदं

११७—दुविहा वाउजीवा उ सुहुमा बायरा तहा।
पज्जत्तमपज्जत्ता एवमेए दुहा पुणो॥
११८—बायरा जे उ पज्जत्ता पंचहा ते पकित्तिया।
उक्कलियामण्डलिया- घणगुंजा सुद्धवाया य॥
११९—संवट्टगवाते य ऽणेगविहा[1] एवमायओ।
एगविहमणाणत्ता सुहुमा ते वियाहिया॥
१२०—सुहुमा सव्वलोगम्मि लोगदेसे[2] य बायरा।
इत्तो कालविभागं तु तेसिं वुच्छं चउव्विहं॥
१२१—संतइं पप्पऽणाईया अपज्जवसिया वि य।
ठिइं पडुच्च साईया सपज्जवसिया वि य॥
१२२—तिण्णेव सहस्साइं वासाणुक्कोसिया भवे।
आउट्ठिई वाऊणं अन्तोमुहुत्तं जहन्निया॥

१—ऽणेगहा (उ ऋ)।
२—लोगदेसे (ऋ)।

१२३—असखकालमुक्कोस अन्तोमुहुत्त जहन्नय ।
कायट्ठिई वाऊण त काय तु अमुचओ ॥
१२४—अणन्तकालमुक्कोस अन्तोमुहुत्तं जहन्नय ।
विजढमि सए काए वाउजीवाण अन्तर ॥

१२५—एएसि वण्णओ चेव गन्धओ रसफासओ ।
सठाणादेसओ वावि विहाणाइ सहस्ससो ॥
१२६—ओराला तसा जे उ चउहा[1] ते पकित्तिया ।
वेइन्दियतेइन्दिय- चउरोपचिन्दिया चेव ॥

वेइन्दिय-पद

१२७—वेइन्दिया उ[2] जे जीवा दुविहा ते पकित्तिया ।
पज्जत्तमपज्जत्ता तेसिं भेए सुणेह मे ॥
१२८—किमिणो सोमगला चेव अलसा माइवाहया ।
वासीमुहा य सिप्पीया[3] सखा सखणगा[4] तहा ॥
१२९—पल्लोयाणुल्लया[5] चेव तहेव य वराडगा ।
जलूगा जालगा चेव चन्दणा य तहेव य ॥

१३०—इइ वेइन्दिया एए णेगहा एवमायओ ।
लोगेगदेसे ते सव्वे न सव्वत्थ वियाहिया ॥[6]

१३१—सतइ पप्पऽणाईया अपज्जवसिया वि य ।
ठिइ पडुच्च साईया सपज्जवसिया वि य ॥

१—चउव्विहा (ऋ)।
२—य (उ, ऋ)।
३—सप्पीया (अ, इ, ऋ)।
४—संखला (अ) ; सखाणगा (उ)।
५—पल्लोया° (अ) वल्लोया° (ऋ)।
६—इस श्लोक के बाद इतना और है —
एसो [illegible] विभागा तु तेसिं दुविह चउव्विहा ॥ (उ)।

१३२—वासाइं बारसे व उ उक्कोसेण वियाहिया ।
बेइन्दियआउठिई अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥

१३३—सखिज्जकालमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं[1] ।
बेइन्दियकायठिई तं कायं तु अमुंचओ ॥

१३४—अणन्तकालमुक्कोस अन्तोमुहुत्त जहन्नय ।
बेइन्दियजीवाण अन्तरेय[2] वियाहियं ॥

१३५—एएसिं वण्णओ चेव गन्धओ रसफासओ ।
संठाणादेसओ वावि विहाणाइ सहस्ससो ॥

तेइन्दिय-पद

१३६—तेइन्दिया उ जे जीवा दुविहा ते पकित्तिया ।
पज्जत्तमपज्जत्ता तेसिं भेए सुणेह मे ॥

१३७—कुन्थुपिवीलिउड्डसा उक्कलुद्देहिया तहा ।
तणहारकट्ठहारा मालुगा पत्तहारगा ॥

१३८—कप्पासऽट्ठिमिंजा य तिंदुगा तउसमिंजगा ।
सदावरी य गुम्मी य बोद्धव्वा इन्दकाइया ॥

१३९—इन्दगोवगमाईया णेगहा एवमायओ ।
लोएगदेसे ते सव्वे न सव्वत्थ वियाहिया ॥

१४०—सतइ पप्पऽणाईया अपज्जवसिया वि य ।
ठिइ पडुच्च साईया सपज्जवसिया वि य ॥

१४१—एगूणपण्णऽहोरत्ता[3] उक्कोसेण वियाहिया ।
तेइन्दियआउठिई अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥

१—जहन्निया (अ) ।
२—°ण (अ) ।
३—एगूणवण्ण° (उ, ऋ) ।

१४२—सखिज्जकालमुक्कोस अन्तोमुहुत्त जहन्नय[1]।
तेइन्दियकायठिई त काय तु अमुचओ ॥

१४३—अणन्तकालमुक्कोस अन्तोमुहुत्त जहन्नय।
तेइन्दियजीवाण अन्तरेय वियाहिय ॥

१४४—एएसिं वण्णओ चेव गन्धओ रसफासओ।
सठाणादेसओ वावि विहाणाइ सहस्ससो ॥

चउरिन्दिय-पद

१४५—चउरिन्दिया उ जे जीवा दुविहा ते पकित्तिया।
पज्जत्तमपज्जत्ता तेसिं भेए सुणेह मे ॥

१४६—अन्धिया पोत्तिया चेव मच्छिया मसगा तहा।
भमरे कीडपयगे य ढिकुणे कुकुणे तहा ॥

१४७—कुक्कुडे सिंगिरीडी य नन्दावत्ते य विछिए।
डोले भिंगारी[2] य विरली अच्छिवेहए ॥

१४८—अच्छिले माहए[3] अच्छि-
रोडए विचित्ते चित्तपत्तए।
ओहिंजलिया जलकारी य
नीया तन्तवगाविय[4] ॥

१४९—इइ चउरिन्दिया एए णेगहा एवमायओ।
लोगस्स एग देसम्मि ते सव्वे परिकित्तिया ॥

१५०—संतइं पप्पऽणाईया अपज्जवसिया वि य।
ठिइं पडुच्च साईया सपज्जवसिया वि य॥

१५१—'छच्चेव य'[1] मासा उ उक्कोसेण वियाहिया।
चउरिन्दियआउठिई[2] अन्तोमुहुत्तं जहन्निया॥

१५२—सखिज्जकालमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं[3]।
चउरिन्दियकायठिई त कायं तु अमुचओ॥

१५३—अणन्तकालमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नय[4]।
'विजढमि सए काए'[5] अन्तरेय वियाहिय॥

१५४—एएसिं वण्णओ चेव गन्धओ रसफासओ।
'सठाणादेसओ वावि'[6] विहाणाइं सहस्ससो॥

पचिन्दिय-पदं

१५५—पचिन्दिया उ जे जीवा चउव्विहा ते वियाहिया।
नेरइयतिरिक्खा य मणुया देवा य आहिया॥

नेरइय-पद

१५६—नेरइया सत्तविहा पुढवीसु सत्तसू भवे।
रयणाभ सक्कराभा वालुयाभा य आहिया॥

१५७—पकाभा धूमाभा तमा तमतमा तहा।
इइ नेरइया एए सत्तहा परिकित्तिया॥

१५८—लोगस्स एगदेसम्मि ते सव्वे उ वियाहिया।
एत्तो कालविभाग तु वुच्छ तेसि चउव्विहं॥

१—छच्चेविउ (अ)।
२—चउरिंदिया य आउठिई (अ)।
३—जहन्निया (अ)।
४—जहन्निया (अ)।
५—चउरिन्दियजीवाण (उ)।
६—सठाण भेयओ या वि (अ)।

१७९–चउप्पया य परिसप्पा दुविहा थलयरा भवे ।
चउप्पया चउविहा ते मे कित्तयओ सुण ॥

१८०–एगखुरा दुखुरा चेव गण्डीपयसणप्पया ।
हयमाइगोणमाइ- गयमाइसीहमाइणो ॥

१८१–भुओरगपरिसप्पा य परिसप्पा दुविहा भवे ।
गोहाई अहिमाई य एक्केक्का णेगहा भवे ॥

१८२–लोएगदेसे ते सव्वे न सव्वत्थ वियाहिया ।
एत्तो कालविभाग तु वुच्छ तेसिं चउव्विह ॥

१८३–सतइ पप्पऽणाईया अपज्जवसिया वि य ।
ठिइ पडुच्च साईया सपज्जवसिया वि य ॥

१८४–पलिओवमाउ[1] तिण्णि उ उक्कोसेण वियाहिया ।
आउट्ठिई थलयराण अन्तोमुहुत्त जहन्निया ॥

१८५–पलिओवमाउ तिण्णि उ[2] उक्कोसेण तु साहिया ।
पुव्वकोडीपुहत्तेण अन्तोमुहुत्त जहन्निया ॥

१८६–कायठिई थलयराण अन्तर तेसिम भवे ।
कालमणन्तमुक्कोस अन्तोमुहुत्त जहन्नय ॥

१८७–एएसि वण्णओ चेव गधओ रसफासओ ।
सठाणादेसओ वावि विहाणाइ सहस्ससो ॥

१८८–चम्मे उ लोमपक्खी य तइया समुग्गपक्खिया ।
विययपक्खी य बोद्धव्वा पक्खिणो य चउव्विहा ॥

तिरिक्खजोणिय-पद

१७०–पचिन्दियतिरिक्खाओ दुविहा ते वियाहिया ।
सम्मुच्छिमतिरिक्खाओ[1] गब्भवक्कन्तिया तहा ॥

१७१–दुविहावि ते भवे तिविहा
जलयरा थलयरा तहा ।
खहयरा य बोद्धव्वा
तेसिं भेए सुणेह मे ॥

१७२–मच्छा य कच्छभा य गाहा य मगरा तहा ।
सुसुमारा य बोद्धव्वा पचहा[2] जलयराहिया ॥

१७३–लोएगदेसे ते सव्वे न सव्वत्थ वियाहिया ।
एत्तो कालविभागं तु वुच्छ तेसिं चउव्विह ॥

१७४–सतइ पप्पऽणाईया अपज्जवसिया वि य ।
ठिइं पडुच्च साईया सपज्जवसिया वि य ॥

१७५–एगा य पुव्वकोडीओ उक्कोसेण वियाहिया ।
आउट्ठिई जलयराण अन्तोमुहुत्त जहन्निया ॥

१७६–पुव्वकोडीपुहत्त तु उक्कोसेण वियाहिया ।
कायट्ठिई जलयराण अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥

१७७–अणन्तकालमुक्कोस अन्तोमुहुत्तं जहन्नय ।
विजढमि सए काए जलयराण तु अन्तर ॥

१७८–'एएसिं वण्णओ चेव गधओ रसफासओ ।
सठाणादेसओ वावि विहाणाइ सहस्ससो ॥'[3]

१—° तिरिक्खा य (उ) ।
२—पचविहा (अ) ।
३—× (अ, ऋ) ।

२१५–उवरिमाउवरिमा चेव इय गेविज्जगा सुरा।
विजया वेजयन्ता य[1] जयन्ता अपराजिया॥

२१६–सव्वट्ठसिद्धगा[2] चेव पचहाऽणुत्तरा सुरा।
इइ वेमाणिया देवा[3] णेगहा एवमायओ॥

२१७–लोगस्स एगदेसम्मि ते सव्वे परिकित्तिया।
इत्तो कालविभाग तु वुच्छ तेसिं चउव्विह॥

२१८–सतइ पप्पाऽणाईया अपज्जवसिया वि य।
ठिइ पडुच्च साईया सपज्जवसिया वि य॥

२१९–साहिय सागर एक्क उक्कोसेण ठिई भवे।
भोमेज्जाण जहन्नेण दसवाससहस्सिया॥

२२०–पलिओवममेग तु उक्कोसेण ठिई भवे।
वन्तराण जहन्नेण दसवाससहस्सिया॥

२२१–पलिओवम एग तु वासलक्खेण साहिय।
पलिओवमऽट्ठभागो जोइसेसु जहन्निया॥

२२२–दो चेव सागराइ उक्कोसेण वियाहिया[4]।
सोहम्ममि जहन्नेण एग च पलिओवम॥

२२३–सागरा साहिया दुन्नि उक्कोसेण वियाहिया।
ईसाणम्मि जहन्नेण साहिय पलिओवम॥

२२४–सागराणि य सत्तेव उक्कोसेण ठिई भवे।
सणकुमारे जहन्नेण दुन्नि ऊ सागरोवमा॥

२०६—असुरा नागसुवण्णा विज्जू अग्गी य आहिया ।
दीवोदहिदिसा वाया थणिया भवणवासिणो ॥

२०७—पिसायभूय जक्खा य
रक्खसा किन्नरा य किंपुरिसा ।
महोरगा य गन्धव्वा
अट्ठविहा वाणमन्तरा ॥

२०८—चन्दा सूरा य नक्खत्ता गहा तारागणा तहा ।
दिसाविचारिणो[1] चेव पंचहा[2] जोइसालया ॥

२०९—वेमाणिया उ जे देवा दुविहा ते वियाहिया ।
कप्पोवगा य बोद्धव्वा कप्पाईया तहेव य ॥

२१०—कप्पोवगा बारसहा सोहम्मीसाणगा तहा ।
सणकुमारमाहिन्दा बम्भलोगा य लन्तगा ॥

२११—महासुक्का सहस्सारा आणया पाणया तहा ।
आरणा अच्चुया चेव इइ कप्पोवगा सुरा ॥

२१२—कप्पाईया उ[3] जे देवा दुविहा ते वियाहिया ।
गेविज्जाऽणुत्तरा चेव गेविज्जा नवविहा तहिं[4] ॥

२१३—हेट्ठिमाहेट्ठिमा चेव हेट्ठिमामज्झिमा तहा ।
हेट्ठिमा उवरिमा चेव मज्झिमाहेट्ठिमा तहा ॥

२१४—मज्झिमामज्झिमा चेव मज्झिमाउवरिमा तहा ।
उवरिमाहेट्ठिमा चेव उवरिमामज्झिमा तहा ॥

१—°ठया° (आ, उ, ऋ)।
२—पंचविहा (अ)।
३—य (ऋ)।
४—तहा (ऋ)।

२१५–उवरिमाउवरिमा चेव इय गेविज्जगा सुरा ।
विजया वेजयन्ता य[1] जयन्ता अपराजिया ॥

२१६–सव्वट्ठसिद्धगा[2] चेव पंचहाऽणुत्तरा सुरा ।
इइ वेमाणिया देवा[3] णेगहा एवमायओ ॥

२१७–लोगस्स एगदेसम्मि ते सव्वे परिकित्तिया ।
इत्तो कालविभाग तु वुच्छ तेसिं चउव्विह ॥

२१८–सतइ पप्पाऽणाईया अपज्जवसिया वि य ।
ठिइं पडुच्च साईया सपज्जवसिया वि य ॥

२१९–साहिय सागरं एक्क उक्कोसेण ठिई भवे ।
भोमेज्जाण जहन्नेण दसवाससहस्सिया ॥

२२०–पलिओवममेग तु उक्कोसेण ठिई भवे ।
वन्तराण जहन्नेण दसवाससहस्सिया ॥

२२१–पलिओवम एग तु वासलक्खेण साहिय ।
पलिओवमऽट्ठभागो जोइसेसु जहन्निया ॥

२२२–दो चेव सागराइ उक्कोसेण वियाहिया[4] ।
सोहम्ममि जहन्नेण एग च पलिओवम ॥

२२३–सागरा साहिया दुन्नि उक्कोसेण वियाहिया[5] ।
ईसाणम्मि जहन्नेण साहिय पलिओवम ॥

२२४–सागराणि य सत्तेव उक्कोसेण ठिई भवे ।
सणकुमारे जहन्नेण दुन्नि ऊ सागरोवमा ॥

१–× (अ) ।
२–° सिद्धिगा (अ) ।
३–एए (उ, ऋ) ।
४–ठिई भवे (आ, स) ।
५–ठिई भवे (आ, स) ।

२२५–साहिया सागरा सत्त उक्कोसेण ठिई भवे।
माहिन्दम्मि जहन्नेण साहिया दुन्नि सागरा॥
२२६–दस चेव सागराइं उक्कोसेण ठिई भवे।
बम्भलोए जहन्नेण सत्त ऊ सागरोवमा॥
२२७–चउद्दस[1] सागराइ उक्कोसेण ठिई भवे।
लन्तगम्मि जहन्नेण दस ऊ सागरोवमा॥
२२८–सत्तरस सागराइं उक्कोसेण ठिई भवे।
महासुक्के जहन्नेण चउद्दस सागरोवमा॥
२२९–अट्ठारस सागराइ उक्कोसेण ठिई भवे।
सहस्सारे जहन्नेण सत्तरस सागरोवमा॥
२३०–सागरा अउणवीस तु उक्कोसेण ठिई भवे।
आणयम्मि जहन्नेण अट्ठारस सागरोवमा॥
२३१–वीस तु सागराइ उक्कोसेण ठिई भवे।
पाणयम्मि जहन्नेण सागरा अउणवीसई॥
२३२–सागरा इक्कवीस तु उक्कोसेण ठिई भवे।
आरणम्मि जहन्नेण वीसई सागरोवमा॥
२३३–बावीस सागराइ उक्कोसेण ठिई भवे।
अच्चुयम्मि जहन्नेण सागरा इक्कवीसई॥
२३४–तेवीस सागराइ उक्कोसेण ठिई भवे।
पढमम्मि जहन्नेण बावीस सागरोवमा॥
२३५–चउवीस सागराइ उक्कोसेण ठिई भवे।
बिइयम्मि जहन्नेण तेवीस सागरोवमा॥
२३६–पणवीस सागराइ उक्कोसेण ठिई भवे।
तइयम्मि जहन्नेण चउवीस सागरोवमा॥

१–चउद्दसओ (अ)।

२३७—छव्वीस सागराइं उक्कोसेण ठिई भवे ।
चउत्थम्मि जहन्नेण सागरा पणुवीसई ॥
२३८—सागरा सत्तवीस तु उक्कोसेण ठिई भवे ।
पंचमम्मि जहन्नेण सागरा उ छवीसई ॥
२३९—सागरा अट्ठवीस तु उक्कोसेण ठिई भवे ।
छट्ठम्मि जहन्नेण सागरा सत्तवीसई ॥
२४०—सागरा अउणतीस तु उक्कोसेण ठिई भवे ।
सत्तमम्मि जहन्नेण सागरा अट्ठवीसई ॥
२४१—तीस तु सागराइं उक्कोसेण ठिई भवे ।
अट्ठमम्मि जहन्नेण सागरा अउणतीसई ॥
२४२—सागरा इक्कतीसं तु उक्कोसेण ठिई भवे ।
नवमम्मि जहन्नेण तीसई सागरोवमा ॥
२४३—तेत्तीस सागराउ उक्कोसेण ठिई भवे ।
चउसु पि विजयाईसु जहन्नेणेक्कतीसई[1] ॥
२४४—अजहन्नमणुक्कोसा[2] तेत्तीस सागरोवमा ।
महाविमाण सव्वट्ठे ठिई एसा वियाहिया ॥
२४५—जा चेव उ[3] आउठिई देवाण तु वियाहिया ।
सा तेसिं कायठिई जहन्नुक्कोसिया[4] भवे ॥
२४६—अणन्तकालमुक्कोस अन्तोमुहुत्त जहन्नय ।
विजढमि सए काए देवाण हुज्ज अन्तर ॥[5]

१—जहन्ना इक्कतीसई (उ, ऋ) ।
२—° मणुक्कोस (अ, ऋ) ।
३—य (अ) ।
४—जहन्नमु ° (ऋ, वृ०) ।
५—इस श्लोक के बाद दो श्लोक और हैं :—

अणतकालमुक्कोस वासपुहत्त जहन्नग ।
आणयादीण कप्पाण गेविज्जाण तु अतर ॥
सखिज्जसागरुक्कोस वासपुहत्त जहन्नग ।
अणुत्तराण देवाण अतर तु वियाहिय ॥ (उ) ।

२४७—एएसिं वण्णओ चेव गन्धओ रसफासओ।
'संठाणादेसओ वावि'[1] विहाणाइं सहस्सओ ॥

२४८—संसारत्था य सिद्धा य इइ जीवा वियाहिया।
रूविणो चेव ऽरूवी य अजीवा दुविहा वि य ॥

२४९—इइ जीवमजीवे य सोच्चा सद्दहिऊण य।
सव्वनयाण अणुमए रमेज्जा संजमे मुणी ॥[2]

संलेहणा-पद

२५०—तओ बहूणि वासाणि सामण्णमणुपालिया।
इमेण कमजोगेण अप्पाणं संलिहे मुणी ॥

२५१—बारसेव उ वासाइं
संलेहुक्कोसिया[3] भवे।
संवच्छरं मज्झिमिया[4]
छम्मासा[5] य जहन्निया[6] ॥

२५२—पढमे वासचउक्कम्मि विगईनिज्जूहणं[7] करे।
बिइए वासचउक्कम्मि विचित्तं तु तवं चरे ॥

२५३—एगन्तरमायामं कट्टु संवच्छरे दुवे।
तओ संवच्छरद्धं तु नाइविगिट्ठं तवं चरे ॥

१—संठाण भेयओ या वि (अ)।
२—श्लोक क्रमांक २४८, २४९ के स्थान पर चूर्णि में निम्न दो श्लोक हैं —
जीवमजीवे एते णच्चा सद्दहिऊण य।
सव्वन्नूमयमतमी जएज्जा संजमे विदू ॥
पमत्थंसंराज्झाणोवगए काल किच्चा ण संजए।
सिद्धे वा सासए भवति देवे वावि महड्ढिए ॥
३—संलेहुक्कोसगो (वृ० पा०)।
४—मज्झिमगो (वृ० पा०) मज्झमिया (ऋ)।
५—छम्मास (अ)।
६—जहन्नग। (वृ० पा०)।
७—विगइ० (वृ०), विगई० (वृ० पा०)।

२६५—नाणस्स केवलीणं
धम्मायरियस्स सघसाहूणं ।
माई अवण्णवाई
किब्बिसियं भावण कुणइ ॥

२६६—अणुबद्धरोसपसरो
तह य निमित्तमि होइ पडिसेवि ।
एएहि कारणेहि
आसुरिय भावण कुणइ ॥

२६७—सत्थग्गहण विसभक्खण च
जलण च जलप्पवेसो य ।
अणायारभण्डसेवा
जम्मणमरणाणि बन्धन्ति ॥

निक्खेव-पद

२६८—इइ पाउकरे बुद्धे नायए परिनिव्वुए ।
छत्तीस उत्तरज्झाए भवसिद्धीयसमए[1] ॥
—त्ति बेमि ॥

*

१—०सवुडे (वृ० पा०) ।

२६०—जिणवयणे अणुरत्ता
जिणवयणं जे करेन्ति भावेण ।
अमला असंकिलिट्ठा
ते होन्ति परित्तसंसारी ॥

२६१—बालमरणाणि बहुसो
अकाममरणाणि चेव य बहूणि[1] ।
मरिहिन्ति[2] ते वराया
जिणवयणं जे न जाणन्ति ॥

२६२—बहुआगमविन्नाणा
समाहिउप्पायगा[3] य गुणगाही ।
एएण कारणेणं
अरिहा आलोयणं सोउं ॥

२६३—कन्दप्पकोक्कुइयाइं[4] तह
सीलसहावहासविगहाहिं[5] ।
विम्हावेन्तो य परं
कन्दप्पं भावणं कुणइ ॥

२६४—मन्ताजोगं[6] काउं
भूईकम्मं च जे पउंजन्ति ।
सायरसइड्ढिहेउं
अभिओगं भावणं कुणइ ॥

१—बहुयाणि (इ, उ, ऋ, स) ।
२—मरिहिंति (उ), मरिहिति (ऋ) ।
३—°गुणायगा (अ) ।
४—°कक्कुयाइं (वृ०, सु) ।
५—°हस्स° (वृ०, सु) ।
६—मंत° (ऋ) ।

परिशिष्ट-१

दसवेआलिय शब्दसूची

दसवेआलिय शब्द-सूची

[१—अव्यय और सर्वनाम के साक्ष्य-स्थल का निर्देश प्राय: एक बार किया गया है।

२—रूपान्तरो को एक साथ किया है। जैसे—कोअ(ग, य), चद(न्द)।

३—तारांकित शब्द धातुएँ है। उनके रूप उनके नीचे निर्देशचिह्न (डैश) के बाद है।

४—सस्कृत छाया केवल समान शब्दो की ही दी गई है।]

१—शब्द के सामने दी हुई पहली सख्या अध्ययन और अध्ययन सख्या के वाद कोष्ठगत सख्या उद्देश्य का द्योतन करती है। वाद की सख्या श्लोक की द्योतक है। 'सू०' सूत्र के लिए प्रयुक्त है। 'चू०' चूलिका का संकेत है।

अहिज्जिउ	४	सू० १ से ३
अहिज्जित्ता	९(४)	३
अहिट्ठ *		
-अहिट्ठए	८	६१
	९(४)	२
-अहिट्ठेज्जा	९(४)	सू० ६,८
-अहिट्ठिज्जासि	१ चू०	१८
अहिट्ठग	६	५४,६२
अहिय (अहित)	९(१)	४
अहिय (अधिक)	२ चू०	१०
अहियगामिणी	८	४७
अहियास *		
-अहियासए	५(२)	६
	८	२६
-अहियासे	८	२७
अहुणाधोय	५(१)	७५
अहुणोवलित्त	५(१)	२१
अहे	६	३३
अहो	५(१)	९२
	६	२२

आ

आ	१ चू०	९
आइ	६	४६
	७	७

१८
१८
९१
१
९०,९६
१५
९६
३६,३७,३९
२३
५६
७१
२
१९
१९
१९
७
७
३

आणव *		
-आणवेइ	२ चू०	११
आणा	१०	१
आणुपुव्वी	८	१
आणुलोमिआ	७	५६
आभिओग	९(२)	५,१०
आभोएत्ताण	५(१)	८९
आम	५(१)	७०
	५(२)	२३
आमग	३	७,८
	५(१)	७०
	५(२)	१९,२१,२२,
		२४
	८	१०
आमिया	५(२)	२०
आमुस *		
-आमुसेज्जा	४	सू० १९
-आमुसावेज्जा	४	सू० १९
आमुसत	४	सू० १९
आय	१ चू०	१८
आयइ	१ चू०	१
आयक	१ चू०	सू० १
आयय	९(४)	५
आययट्ठि	५(२)	३४
आययट्ठिय	९(४)	२
आययण	६	१५

आयर *		
-आयरति	६	१५,२१
आयरिय	५(२)	४०,४५
	८	३३,६०
	९(१)	४,५,
		११,१२
		१७
	९(२)	१२,१६
	९(३)	१
आया *		
-आयए	५(२)	३१
आयाण	५(१)	२६
आयाय	५(१)	८८
आयार	६	५०,६०
	९(३)	२
	९(४)	१
	९(४)	सू० ७
	२ चू०	४
	७	१३
	८	४९
आयारगोयर	६	२,४
आयारपणिहि	८	
	८	१
आयारभावतेण	५(२)	४६
आयारमत	९(१)	३
आयारसमाहि	९(४)	सू० ३,७
	९(४)	५

उ

ऊ

ख

दुच्चर	६	५
दुच्चिण्ण	१ चू०	सू० १
दुज्झ	७	२४
दुट्ठ	७	५५,५६
दुत्तोसअ	५(२)	३२
दुन्नामधेज्ज	१ चू०	१३
दुप्पउत्त	२ चू०	१४
दुप्पजीवि	१ चू०	सू० १
दुप्पडिक्कंत	१ चू०	सू० १
दुप्पडिलेहग	५(१)	२०
	६	५५
दुबुद्धि	९(२)	१९
दुम	१	२
	९(२)	१
दुमपुप्फिया	१	
दुम्मइ	५(२)	३९
दुम्मणिय	९(३)	८
दुरहिट्ठिय	६	४,१५
दुरासय	२	६
	६	३२
दुरुत्त	९(३)	७
दुरुत्तर	६	६५
	९(२)	२३
दुरुद्धर	९(३)	७
दुरुहमाण	५(१)	६८
दुरुह	४	२८
दुल्लभ	१ चू०	सू० १
दुल्लह	४	२६
	५(१)	१००
दुव्वाई	९(२)	३
दुव्विहिय	१ चू०	१२
दुस्समा	१ चू०	सू० १
दुस्सह	३	१४
दुस्सेज्जा	८	२७
दुह	९(२)	५,७,१०
	१ चू०	१४,१५
	२ चू०	१६
दुहअ	७	१४
दुहओ	९(२)	२१
दूरओ	५(१)	१२,१६
	६	५८
देंतिय	५(१)	२८,३१,३२,४१,४३,४४,४६,४८,५०,५२,५४,५८,६०,६२,६४,७२,७४,७९
	५(२)	१५,१७,२०
देव	१	१
	४	सू० ९
	७	५०,५२
	९(२)	१०,११
	९(४)	७

नीलिआ	७	३४
नीसा (दे०)	५(१)	४५
नीसेस	५(१)	८८
नु	२	१
	६(१)	५
नेउणिय	६(२)	१३
नेरइय	४	सू० ६
	१ चू०	१५
नो	२	४

प

पइरिक्कया	२ चू०	५
पइट्ठिय	४	सू० २२
पईव	६	३४
पउज *		
-पउजे	८	४०
	६(१)	१२
	६(३)	२,३
पउत्त	५(१)	६७
पउम	५(२)	१४,१६
पउमग	६	६३
पओअ	६(२)	१६
पओय	७	५२
पक	१ चू०	७
पच	३	११
पच्च	४	सू० १७
	६(३)	१४
	१०	५
पचम	४	सू० १५
पचिंदिय	४	सू० ६
	७	२१
पजलि	६(१)	१२
पंडग	७	१२
पडिय	२	११
	५(२)	२६,२७
	६(४)	१
	१ चू०	११
पत	५(२)	३४
पसुखार	३	८
पकुव्व *		
-पकुव्वई	५(२)	३२
	६(२)	१६
पक्क	७	३२,३४,४२
पक्कम *		
पक्कमति	३	१३
पक्खओ	८	४५
पक्खद *		
-पक्खदे	२	६
पक्खलत	५(१)	५
पक्खि	७	२२

पुप्फ	१	२ से ४
	५(१)	२१,५७
	५(२)	१४,१६
	८	१५
	६(२)	१
पुम	७	२१
	६(३)	१२
पुरओ	५(१)	३
	८	४५
पुरक्कार	१ चू०	सू० १
पुरत्थ	८	२८
पुराण	६(४)	४
	१०	७
पुरिस	५(२)	२६
	७	१६,२०
पुरिसकारिया	५(२)	६
पुरिसोत्तम	२	११
पुरेकड	६	६७
	७	५७
	८	६२
	६(३)	१५
पुरेकम्म	५(१)	३२
	६	५३
[illegible]	१०	१६
[illegible]	३	१५
[illegible]	५(२)	३

पुव्वरत्त	२ चू०	१२
पूव्वि	५(१)	६१
	१ चू०	सू० १
पूअ *		
-पूययामि	६(१)	१३
-पूयति	५(२)	४५
	६(२)	१५
पूइअ	५(२)	४३
पूइकम्म	५(१)	५५
पूइम	१ चू०	४
पूई	५(१)	७८,७६
	५(२)	२२
पूय	५(१)	७१
पूयण	१०	१७
	२ चू०	६
पूयणट्ठि	५(२)	३५
पेच्छ *		
-पेच्छइ	८	२०
पेम	८	२६,५८
पेह *		
-पेहेइ	६(४)	२
पेहमाण	५(१)	३
पेहा	२	४
पेहाए	७	२६,३०
	८	१३
पेहिय	८	५७

मेहावि	८	१४
	६(१)	१७
	६(३)	१४
मेहुण	४	सू० १४
	६	१६,६४
मोक्ख	४	१५,१६
	५(१)	६२
	६(१)	५,७,६,१०
	६(२)	२,२२
	१ चू०	सू० १
मोसा	६	१२
मोह	१ चू०	८

य

य	१	[illegible]
याण *		
-याणई	८	१२
याणाइ	८	१२
	५(२)	४७

र

रइवक्का	१ चू०	
[illegible]	१ चू०	१६
[illegible]	१ चू०	८
रण्ण	४	सू० १३,१५
रम *		
-रमतो	१ चू०	६
-रमे	८	४१
-रमेज्ज	१ चू०	११
-रमेज्जा	६(१)	१०
रय (रत)	१	३,५
	४	२७
	५(२)	२६
	६	१,१७,६७
	७	४६
	८	४१,६२
	६(३)	५,१४
	६(४)	३ से ५
	१०	६,१२,१४,१६
	१ चू०	१० ११
रय (रजस्)	४	२०,२१
	५(१)	७२
	६(३)	१५
रयहरण	८	सू० २३
रस	१	२
	५(२)	३६,४२
	६(२)	१
	१०	१७

लज्जा	९(१)	१३
लज्जासम	६	२२
लद्ध	२	३
	५(१)	९७
	२ चू०	२
लद्धुं	५(२)	३१,३३
	८	१,२९
	९(३)	४
लद्धूण	५(२)	४७
लभ *		
-लभामो	१	४
-लभिही	५(२)	४८
-लभेज्जा	२ चू०	१०
लभित्ता	१०	८,९
लभित्तु	९	२८
लयण	८	५१
लया	९	मू० ८
ललिइंदिय	९(२)	१८
लव *		
-लवे	७	४०,४८
	८	५२
-लवेज्ज	७	१७
	८	२१
[illegible]	५(१)	९७
[illegible]	८	५७
लह *		
-लहइ	८	४२
-लहई	७	५५
लहुत्त	५(२)	१२
लहुभूयविहारी	३	१०
लहुस्सग	१ चू०	सू० १
लाइम	७	३४
लाभ	८	२२,३०
	१०	१९
लाभमट्ठिअ	५(१)	९४
लुद्ध	५(२)	३२
लूस *		
-लूसए	५(१)	६८
लूसिए	१०	१३
लूहवित्ती	५(२)	३४
	८	२५
लेलुं	४	सू० १८
	८	४
लेव	५(१)	४५
	५(२)	१
लोअ (ग)	१	३
	४	२२,२३,२५
	६	५,८,१२,१५
	७	४८,५७
	९(२)	७
	२ चू०	३,१५

विरेयण	३	९
विलिह*		
-विलिहावेज्जा	८	सू० १८
-विलिहेज्जा	८	सू० १८
विलिहंत	८	सू० १८
विवज्ज*		
-विवज्जए	५(१)	१५,७५
	५(२)	४९
	७	४,७
	८	४१,४६,५५
-विवज्जयामि	२ चू०	१३
-विवज्जेज्जा	५(१)	३९
	६	२४
विवज्जअ	५(२)	४१,४३
विवज्जइत्ता	१०	१९
विवज्जंत	६	८६
विवज्जण	२ चू०	५,६
विवज्जयंत	१०	३
	२ चू०	१०
विवज्जिय	६	५५
	८	५१
[illegible]	५(२)	८
[illegible]	८	५७
[illegible]	५(२)	३३
[illegible]	९(२)	८
[illegible]	६	५३
	[illegible]	[illegible]

विवित्त	८	५२
विवित्तचरिया	२ चू०	—
विविह	५(१)	३९
	५(२)	२७,३३
	६	२७,३०,४१,४४
	८	१०,१२
	९(४)	४
	१०	८,९,१२
	१ चू०	१८
विस	८	५६
	९(१)	६
	१ चू०	१२
विसम	५(१)	४
विसय	८	५८
विसीअ*		
-विसीएज्ज	५(२)	२६
विसीदंत	२	१
विसुज्झ*		
-विसुज्झई	८	६२
विसुद्ध	९(३)	८
विसोत्तिया	५(१)	९
विसोहिठाण	९(१)	१३
विह	९(४)	सू० ४
विहंगम	१	३

सिज्झ*		
-सिज्झति	३	१४
सिणाण	३	२
	५(१)	२५
	६	६०,६३
सिणाय*		
-सिणायति	६	६२
सिणायंत	६	६१
सिणेह	८	१५
सित्त	९(२)	१२
सिद्ध	४	२५
	९(४)	७
सिद्धि	४	२४,२५
	६	६८
	९(१)	१७
सिद्धिमग्ग	३	१५
	८	३४
[illegible]	९(२)	१३,१५
[illegible]	२	८
	५(१)	२८,४०,४८
		८२,८८
	५(२)	१२,३१,३३
	६	१८,५२
	[illegible]	२८
	८	३५,४८
	[illegible]	[illegible]

सिर	९(१)	८,१२
सिरी	९(२)	४
	१ चू०	१२
सिला	४	१८
	५(१)	६५
	८	४,६
सिलेस	५(१)	४५
सिलोग	९(४)	सू० ४ से ७
	१ चू०	सू० १
सिव	७	५१
सिहि	९(१)	३
सीईभूय	८	५९
सीओदय	६	५१
	८	६
	१०	२
सीय	६	६२
	७	५१
	८	२७
सील	९(१)	१४,१६
सीस	४	सू० २३
	९(१)	९
सीह	९(१)	८,९
सुअलंकिय	८	५४
सुइ	८	३२
सुउद्धर	९(३)	७
सुए	१०	८

*

उत्तरज्झयण शब्द-सूची

[१—अव्यय और सर्वनाम के साक्ष्य-स्थल का निर्देश प्राय एक बार किया गया है।

२—रूपान्तरो को एक साथ लिया है। जैसे—लोअ(ग, य), चद(न्द)।

३—ताराकित शब्द धातुएँ है। उनके रूप उनके नीचे निर्देशचिह्न (डैश) के बाद है।

४—सस्कृत छाया केवल समान शब्दो की ही दी गई है।]

१—इस कोष्ठक की सख्याएँ अध्ययन की सूचक हैं।
२—इस कोष्ठक का सख्याएँ श्लोक अथवा 'सू०' सूत्र की सूचक हैं।

न

पइट्ठा	२३	६५,६८
पइट्ठिय	३६	५५,५६,६३
पइण्णग	२८	२३
पइण्ण	३०	११
पइण्णवाइ	११	९
पइण्णि	६	९
पइन्न	२०	५३
पइन्ना	२३	३३
पइरिक्क	२	२३
	३५	६
पईव	२३	२,६
	३४	७
पउज *		
-पउजन्ति	८	१३
	३६	२६४
-पउजेज्ज	२४	१३
पउजमाण	२०	४५
पउमगुम्म	१३	१
पउर	८	१
	३२	११
पउस्स *		
-पउस्सइ	१५	११
-पउस्से	४	११
प[illegible]	३३	१८
	[illegible]	५,६,१०

पएसग्ग	२९	सू० २३
	३३	१६,१७,२४
पओग	२९	सू० ३६
	३२	३१,४४,५७,७०,८३,९६
पओयण	२३	३२
	३२	१०५
पओस	८	२
	३२	२६,३३,३९,४६,५२,५९,६५,७२,७८,८५,९१,९८
	३४	२३
पओस *		
-पओसए	२	११,२६
पओसकाल	२६	१९
पक	१	४८
	२	१७,३६
पकजल	१३	३०
पकाभा	३६	१५७
पख	१४	३०
पच	१	४७
	११	३
	१२	४२
	१७	२०
	१९	१०,४३,८८

वुद्ध	१०	३६,३७
	११	१३
	१४	५१
	१८	२१,२४,३२
	२३	३,७
	२५	३२
	३५	१
	३६	२६८
वुद्धपुत्त	१	७
वुद्धि	८	५
	१३	३३
	३२	४
वुव्वुय	१९	१३
वुवन्त	२३	२१,२२,२५, ३१,३६,४२, ४७,५१,५७, ६२,६७,७२, ७७,८२
वुसाण	२३	३१
[illegible]	३०	३५
	३३	२५
[illegible]		
[illegible]	९	६,८,११, १३,१७,१९, २३,२५,२७, २९,३१,३३,

अब्बवी	९	३७,३९,४१, ४३,४५,४७, ५०
	१२	५
	१३	४
	१९	९
	२०	३१
	२१	९
	२२	१५
	२३	२१,२२,२५, ३१,३७,४२, ४७,५२,५७, ६२,६७,७२, ७७,८२
	२५	१०
-आह	१६	सू० ३ से १२
	२२	८
-आहसु	२	४५
	२०	३१
-आहु	१२	२५
	२१	१४
-चिंत	१९	२४,४४,७५
-बूम	२५	१९ से २७, ३२
-बृहि	२५	१४
बुर	३४	१९

य

र

रायपुत्त	१५	९
	२२	३६
रायरिसि	९	५,६,८,११, १३,१७,१९, २३,२५,२७, २९,३१,३३, ३७,३९,४१, ४३,४५,४७, ५०,५२,५९, ६२
	१८	५०
रायवेट्ठि	२७	१३
रायगिह	२०	५८
रायराणी	२	१८
	३०	१६
[illegible]	१९	९६
[illegible] *		
[illegible]	२४	४,८
-[illegible]	२४	७
[illegible]	२	१४
	२३	३,७
	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]
	[illegible]	[illegible]
	[illegible]	[illegible]
	[illegible]	[illegible]
	[illegible]	[illegible]

रुइर	३२	२६,३९,५२, ६५,७८,९१
रुक्ख	१२	८
	१४	२९
	३६	९४
रुक्खमूल	२	२०
	१९	७८
	२०	४
	३५	६
रुट्ठ	२५	९
रुद्द	३०	३५
	३४	३१
रुद्ध	१९	६३
रुप्प	९	४८
	३६	७३
रुम्भ *		
-रुम्भई	३१	३
रुयग	३६	७५
रुहिर	१२	२५,२९
	१९	७०
	३६	७२
रूव	३	१५
	४	११
	६	११
	९	६,५५
	१२	६

*

नामानुक्रम

व्यक्तियों के नाम

धातु और रत्न

वनस्पति

प्राणि

दस	१९	३१
नदावत्त	३६	१४७
नाग	१४	४८
नीय	३६	१४८
पत्तहारग	३६	१३७
पयग	३२	२४
पल्लोय	३६	१२९
पारेवय	३४	६
पिवीलि	३६	१३७
पोत्तिय	३६	१४६
बलागा	३२	६
बिराल	३२	१३
ममर	३६	४६
भारुड	४	६
भिंगारी	३६	१४७
भुजग	१४	३४
मगर	३६	१७२
मच्छ	३६	१७२
मच्छिय	३६	१४६
मसग	३६	१४६
महिस	३२	७६
माइवाहय	३६	१२८
मालुग	३६	१३७
माहअ	३६	१४८
मिग	३२	१३७
मूसग	३२	१३
रोहियमच्छ	१४	३५
रोज्झ	१९	५६
लोमपक्खि	३६	१८८
वराडग	३६	१२९
वसह	११	१९
वासीमुह	३६	१२८
विचित्त	३६	१४८
विच्छिअ	३६	१४७
वियपक्खि	३६	१८८
विग्ली	३६	१४७
वीदसअ	१९	६५
सख	३६	१२८
सखणग	३६	१२८
सदावरी	३६	१३८
समुग्गपक्खि	३६	१८८
सिंगिरिडी	३६	१४७
सिप्पी	३६	१२८
सीह	३६	१८०
सुसुमार	३६	१७२
सुणग	३४	१६
सुय	३४	७
सुवण्ण	१४	४७
सोमगल	३६	१२८
हस	१४	३३

*

शुद्धि और आपूरक पत्र-१

मूल पाठ

दशवैकालिक

पृष्ठ	श्लोक	अशुद्ध	शुद्ध
१४	५।३	कमं	कम्मं
१५	११।२	पावग ?	पावग
२१	३१	(एवं ३४।।)	(एव)
२९	६३	(एव ६३।।)	(एव)
२७	८६।४	पडिक्कम्मे	पडिक्कमे
३३	९७।९	ईमं	इमं
३८	३८।२	कवल	कंवलं
४६	२८।३	नाभो	नाभी
४९	९३।३	अवक्किय °	अविक्किय °
५०	१।१	क्षयार °	आयार °
५०	४।१	भित्ति	भित्ति
५०	८।२	व	वा
५२	१।१	सिक्ख	सिक्खे
६१	४।३	° मज्जनि	° मज्जति
७५	२०।३	निक्खम्म	निक्खम्म
८२	३।२	गया	गओ
८३	१२।३	कि	किं

उत्तराध्ययन

पृष्ठ	श्लोक	अशुद्ध	शुद्ध
८८	६।३	मर्गागि	मर्गांगि
१०२	१६।९	वोहि	वोहि्
१२२	३।१	मे	मो
१२३	१७।३	गायग्गिमि	गायग्गिमि
१२६	९८।१	° त्पन्न	° त्पन्न
१२७	१८।१	उत्तमो	उत्तमा
१२९	३०।१	नवउग्गिनय	नवउंग्गिनय

पृष्ठ	श्लोक	अशुद्ध	शुद्ध
१४२	१५।१	भावधरा	भारधरा
१४२	१६।४	दहामु	दाहामु
१५२	२३।४	° मेव	° मेव
१५८	१८।२	तेल्लामहा तिलेसु	तेल्ल महातिलेसु
१७०	प ८	कुडुन्तसि	कुडुन्तरमि
१७३	१३।१	गत °	गत्त °
१७५	१।२	सुणिता	मुणित्ता
१७९	१०।१	अहम्मीति	अहमस्सीति
१८२	४०।२	भरह	भरह
१८३	४७।१	सवीर °	सोवीर °
१८९	४१।३	निहुय	निहुयं
१९०	५०।२	° वालुए	° वालुए
१९३	७७।२	मिगे	मिगो
२०६	४।१	धरणी	धरणी
२३२	१३।४	महानुणि	महामुणि
२३४	३४।३	लय	तय
२३८	१०।३	निउत्ते ण	निउत्ते ण
२३९	२४।२	वा	ता
२४३	४७।३	य	×
२४४	७।४	उज्जाहित्ता	उज्जहित्ता
२४७	४।३	तु	×
२४९	२०।३	रीयतो	रीयन्तो
२५५	प ६	अणगारेए	अणगारे
२५९	सू०२४	पभावेण	पभावे ण
२५९	सू०२५	खवेइ	अन्नाण खवेइ
२६६	सू०६०	विणुस्सइ	विणस्सइ
२६९	सू०७४	कम्माड	कम्माइ
२७५	३७।१	एव	एय
२७७	१७।१	° णावणाहिं	° भावणाहि
३०५	४।३	खजणण °	खजणजण °

पृष्ठ	श्लोक	अशुद्ध	शुद्ध
३०६	१०।१	कडुय	कड्डय
३१७	१	'मे एगग्गमणा'	मेगग्गमणा
३३०	६५।१	लयावलया	लयावलय
३४९	२६६।३	कारणेहि	कारणेहिं

शुद्धि और आपूरक पत्र-२

पाठान्तर

दशवैकालिक

पृष्ठ	श्लोक	अशुद्ध	शुद्ध
२	पा० १	कइज्हं	कइऽहं
३	पा० ६	सपत्ना (अ,ज)	सपत्ना (अ,ज), सबुद्धा (आ)
४	पा० १	(अ)	(आ)
५	पा० ८	(क,ख,)	(क,ग॰)
७	पा० ४	(जिचू पा०, जिचू पा०)	(अचू पा० जिचू पा०)
७	सू० ६	एसो'[1] खलु	एसो खलु[5]
८	पा० १	(अचू)	(अचू सू० १०-२२)
१०	सू० १५	'गामे वा'[1] नगरे वा रण्णे[2] वा	'गामे वा नगरे वा रण्णे[1] वा'[2]
१०	पा० १	×(क,ख,ग,घ, हाटी०)	अरण्णे (अचू)
१०	पा० २	अरण्णे (अचू)	×(क,ख,ग,घ, हाटी०)
११	सू० १८	सलागाए वा'[3]	सलागाए वा सलागहत्येण वा'[3]
१२	पा० ३	उज्जावेज्जा	उज्जालावेज्जा
१४	पा० १	इडगसि वा	डंडगसि वा
१८	पा० ६	कट्ठं	कट्ठं
२१	पा० ४	६—हारताल ° ७—हिंगोलए ° १४—सोरट्ठिय °	६—हरिताल ° ७—हिंगोलुय ° १४—सोरट्ठिय °
२३	पा०२	(अ,ज)	(अ)
२७	८४।३	वा वि	'वा वि'[1]
२७	८४।४	'वा वि'[1]	वा वि
३१	पा०२	(आ,जा,ह)	(आ,जा,हा)
३६	पा०२	(आ,ज)	(अ,ज)

उत्तराध्ययन

पृष्ठ	स्थल	अशुद्ध	शुद्ध
८७	पा०२	जाहित्ताण (बृ०,चू०)	जहित्ताणं (बृ०,चू०), चइत्ताणं (बृ०पा०)
८८	पा०७	(बृ०,चू०)।	(बृ०,चू०), अप्पाचेव दमेयव्वो (बृ०पा०)।
८९	पा०१	(अ,उ,म,)	(अ,उ,ऋ)
९२	पा०१,२	(चू०पा०)	(चू०)
९२	पा०३	(अ,उ,ऋ), कित्ती ति(ऋ)।	(अ,उ), कित्ती य(बृ०)।
१०३	पा०२	(बृ०पा०,चू०पा०)।	(ऋ,बृ०पा०,चू०पा०)
१०३	पा०७	पीहाति	पीहति
१०९	पा०२	आधा °	आघा °
११०	पा०२	(चू०,बृ०पा०)	(चू०पा०,बृ०)
१११	पा०१	(सु)	('स(
११९	पा०१ पं०४	(चू०)	(चू०पा०)
११९	पा०२	सेबए णिसेबए	सेवए' णिसेवए
१३२	पा०३	(उ,म,बृ०),	(उ,ऋ,बृ०),
१३६	अ०११	बहुस्सुयपुज्जा	बहुस्सुयपुज्ज
१३७	१५।२	'निहिय दुहओ'[२]	'निहिय दुहओ वि'[२]
१४७	पा०२	सुसंबुडा	सुसवुडा
१४७	पा०४	बोसट्ठ °	वोसट्ठ °
१५०	पा०५	वित्तधण °	चित्तधण °
१८२	पा०८		× (आ,इ,स)
१८३	४७।२	चेच्चा[३]	'चेच्चा रज्ज'[३]
१८५	पा०३		× (आ,इ,सु,चू०)
१८८	३४।४	° पालिउ	° पालिउ[३]
१८८	३७।१	वालुयाकवले[३]	वालुयाकवले[४]
१८८	३७।२	उ[४]	उ[५]
			३—पालिया (अ,आ,इ,उ,सु)
१८८	पा०	३—	४—
१८८	पा०	४—	५—
१९९	पा०१२	पा० टि० ७	पा० टि० ८

पृष्ठ	स्थल	अशुद्ध	शुद्ध
२००	पा०४	अणुत्तरमणुव्वया (उ, ऋ,वृ०पा०)	अणुरत्तमणुव्वया(उ,ऋ), अणुत्तरमणुव्वया (वृ० पा०)
२०७	पा०४	जहिज्ज सग्गंथ(वृ०), जहित्तुऽमंगंथ (चू०), जहित्तु सगंथ ° (सु)	जहित्तु सग्गथ (वृ०), जहित्तुऽसगंथ (चू०), जहित्तु संगंथ (सु)
२१४	पा०८	से ओ	सेओ
२१६	पा०१,३		× (अ,इ,ऋ,स,सु)
२४२	पा०५	से से 'गुरू'	सेसे गुरु
२४८	पा०७	° तवेइ या	तवे इ या
२५५	सू०६ पं०४	उज्जुभावपडिवन्ने[६]	'उज्जुभाव पडिवन्ने य ण'[१]
२५६	सू०७ पं०३	'पडिवन्ने य'[५]	'पडिवन्ने य ण'[२]
२६१	सू०३४ पं०५	अणासायमाणे[३]	अणासायमाणे
२६१	सू०३५ पं०३	निक्कंखे[४]	निक्कखे[३]
२६१	सू०३६ पं०२	जीवियासंसप्पओग[५]	जीवियासंसप्पओग[४]
२६१	सू०३६ पं०२	वोच्छिन्दइ[६]	वोच्छिन्दइ
२६१	सू०३६ पं०३	वोच्छिन्दित्ता	वोच्छिन्दित्ता[५]
२६१	पा०	२—'नो आभाएइ' ··(वृ०)	२–× (उ,ऋ,वृ०)
		३—	×
		४—	३—
		५—	४—
		६—	५—
२६३	पा०६	वन्धाणि	बन्धणाणि
२६५	सू०५१ पं०५	परलोगधम्मस्स[२]	'परलोगधम्मस्स आराहए'[२]
२६५	सू०५५ पं०२	'निव्वियारेणं जीवे'[४]	'निव्वियारे· ·'झाणगुत्ते'[५]
	पा०	४—	५—
	पा०	५—	४—
२६६	पा०६	(वृ० पा०)	(वृ०)
२७२	[illegible]	'दव्वओ खेत्तकालेणं'[८]	खेत्तकालेण[८]
२७२	पा०१	° कालाय	° काला य
२७२	पा०८	चउत्थोउ	चउत्थो उ

पृष्ठ	स्थल	अशुद्ध	शुद्ध
२८४	२५।२	'उ उवेइ दुक्ख'[२]	'उवेइ दुक्ख'[२]
३०२	१०।३	'कसायमोहणिज्ज'[३]	'कसायमोहणिज्ज तु'[३]
३०३	२४।४	जीवेसु ऽइच्छियं[३]	जीवेसुऽइच्छियं[३]
३०३	पा०	३-स इच्छियं (उ,सु), अहिच्छियं (स)	३-जीवे स इच्छियं (अ,सु), जीवे अहिच्छियं (स)
३०५	६।२	कोइलच्छदसन्निभा	कोइलच्छदसन्निभा[२]
३०५	७।२	तरुणाइच्चसन्निभा[२]	तरुणाइच्चसन्निभा
३०५	पा०२	° च्छावि °	° च्छवि °
३०६	६।४	उ[२]	उ
३०६	१०।४	उ[३]	उ[२]
३०६	१२।२	तुवरकविट्ठस्स[४]	तुवरकविट्ठस्स[३]
३०६	पा०२		×
३०६	पा०	२,३—	२—
३०६	पा०	४—	३—
३०६	पा०	५—	४—
३०६	२६।१	उप्फालगदुट्ठवाई[४]	'उप्फालगदुट्ठवाई य'[४]
३१२	पा०३	पलियमसख	पलियअसंख
३१५	पा०४		न हु कस्सवि उववत्ति (बृ०)। न वि० (बृ० पा०), न हु ° (उ,ऋ,सु)।
३४५	पा०५ पं०४	वियाहिय	वियाहिया
३४६	पा०२	२४८,२४९	२४८ से २६८
३४८	२६१।२	बहुणि[१]	'य बहूणि'[१]

शुद्धि और आपूरक पत्र-३

उत्तराध्ययन शब्द-सूची

पृष्ठ	स्थल	अशुद्ध	शुद्ध
९३		अइमत्त	अइमन्त
९४	अंत	२८।४१,५८,६१,७३, २९।सू०१	२९।सू०१,२८,४१, ५८,६१,७३
९५		अंतरमासिल्ल	अंतरभासिल्ल
९६	अकिंचण	१४।१५	×
९६			अकिञ्च १४।१५
९७	अगारि	२७।२२	७।२२
९७		अग्ग *	अग्घ *
९८		अजाणमाग	अजाणमाण
१०४	अणुभाग	३४।१	३४।६१
१०४		अणुरत्त	अणूरत्त
१०६		अतिति	अतित्ति
१०६	अत्थ (अर्थ)	२९।सू०२,४८	२९।सू०२१,४८
१०७	अदत्त	३२।४२ से ४४,	३२।४२,४४
१०९	अप्प(आत्मन्)	१४।४९	१४।४८
१११		अवभचरि	अवभचारि
१११		अब्भाइय	अब्भाहय
१११		-अब्भट्ठे इ	-अब्भुट्ठे इ
१११		अब्भुट्ठिच्चा	अब्भुट्ठित्ता
११२		अभिगमरूड	अभिगमरुड
११२	अभिभूय (अभिभूय)	१५।१३	१५।१२
११४		अलित	अलित्त
११७	असण (अशन)	२।३०	२।३
११८	असमायावियणिज्ज	२०।४२	×
११८			असमाय १९।१४,२२, २०।४२
११८		अस्मविर्णो	अम्माविणी
११९		अहिमया	अहिंसया

पृष्ठ	स्थल	अशुद्ध	शुद्ध
१२०		अहुणेववन्न	अहुणोववन्न
१२०	आइ	(दे०)	(दि)
		२९।सू०३	२९।सू०४
१२१	आउकम्म	३२।२,	३३।२
१२१	आउट्टिइ	३६।१३२ से १४१	३६।१३२,१४१
१२१		आगन्तु	आगन्तु
१२३		-आमन्नयामो	-आमन्तयामो
१२३		आमीस	आमोस
१२३	आयय *		-आययन्ति ३।७
१२३	-आयरे	२४।७	२४।२७
१२३	आयहिअ	२१।१२	२१।२१
१२४	आराहणया	२९।सू०४९	२९।सू०५१
१२४		आरूह *	आरुह *
१२४		-आरूहइ	-आरुहइ
१२७		-अहारेज्जा	-आहारेज्जा
१२८		इक्कत्तीसइ	इक्कतीसइ
१२९	ईसाणग	३६।२१	३६।२१०
१३०	उक्कोस	३४।४६ से ५०	३४।४६,४८ से ५०
१३०	उग्ग	१८।५०	१५।९,१८।५०
१३१	उज्जाण	१८।३४	१८।३,४
१३१			उज्जुपन्न २३।५६
१३१	उज्जुभाव	२९।सू०६,	२९।सू०१,
१३१		उज्जेय (उद्योत)	उज्जोय (उद्योत)
१३२	उत्तम	१८।४१	१८।४०
१३२	उदग(क,अ)	८।८	८।९
१३२	उदहि		३६।२०६
१३३		उद्धतुकाम	उद्धत्तुकाम
१३३	उरग	१४।४७,३६,१८१	१४।४७,३६।१८१
१३४		उल्लघन	उल्लंघण
१३४	उवट्ठिअ(य)	२०।२२	२०।८,२२
१३५	-उवलिप्पई	२५।३९	२५।२६,३९

पृष्ठ	स्थल	अशुद्ध	शुद्ध
१३७	एक्क	१३१३	१३१३,२३
१३७	एग	१।२६,३३	१।२६,३३,२।१८,५।१,५,२०, ६।८,७।१४,१५,८।७,९।३४,४९, १४।१,१९।८३
१३७	एगत	१९।३८	×
१३७	एगग्ग	२९। सू० ३१,	२९।सू० ३६,
१४३	कम्म	३३।१,	३३।१,३
१४३			कम्मगण्ठि २९।सू० ३२,७२
१४३	कम्मपयडि	२९।सू०२३	२९।सू० ३३ ३३
१४३	कर	१३।२७	१३।२७,१४।८
१४७	काय	३२।८१,८२,८६ ३६।९०,१०३	३६।८१,८२,८६,९०,१०३
१४७	कारण	९।२६, से ३३ ४४,	९।२६,३१,३३ ४४,
१४८	काल	२६।३७,	२६।३७,४२,३३।१३
१४९	कासी	१८।४८	/
१४९			कासीराय १८।४८
१४९	किन्नर	१६।६	१६।१६
१५१	कुदसण	२८।१८	२८।२८
१५१	कुदिट्ठि	२८।३६	२८।३६
१५१	कुल	२०।४०,४२	२०।४०,४३
१५६	गअ	९।३,१०,३६,३७	९।३ १०।३८,[illegible] १७
१६८		चिट्टमाण	चिट्ठमाण
१६९	छत्त	१८।४२	×
१७५	जाणित्ता	१।३४	१।४३
१७८		जीवाजीवविभक्ति	जीवाजीवविभत्ति
१९८	देविंद	९।२३,२७,	९।२३,२५,२७,
२०२		वारेह	-वारेह
२०७		-नामइ	-नासेइ
२०७		निक्खमे	-निक्खमे
२०८	-निज्जरेइ	२९।सू०३७,	२९।सू०३८,

पृष्ठ	स्थल	अशुद्ध	शुद्ध
२०६		निद्दहे *	निद्दह *
२१६	-पगरेह	१२।३६	×
२२०		पडिसविक्ख *	पडिसविक्ख
२२२		पन्मवय	पन्नवय
२४१		-फ से	-फासे
२४६		-अब्बवी	-अब्वंवि
२५३		भुज	भुज *
२५३	-भुजिज्जा	३५।१५	३५।१७
२५४		जभुयिा	भुजिया
२६०	मल	२५।११	२५।२१
२६८	मोह	२० ,	२०।६०
२७३	रेवयय	२२।२२,२३	२२।३३
२८६	विमोयणया	२६।सू०७१	२६।सू०७२
२६१		विवज्ज त	विवज्जयत
२६२		विस	विसम
२६४		वुकक्स	वुक्कस
२६६		सजअ (संजय)	सजअ (सजय)
३०१		-सतसन्ति	-संतसन्ति
३०५	सत्त (सत्व)	१४।१८,४३	१४।१८,४२
३१७	-सिज्झन्ति	२६।सू०१	×
३२७	हरिएस	१ ।२७	१२।३७